Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय दलित साहित्य

सारिका

मई १९

समांतर कहानी
विशेषांक-

आम आदमी के
आसपास
आज की रचना

3/6/75
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय

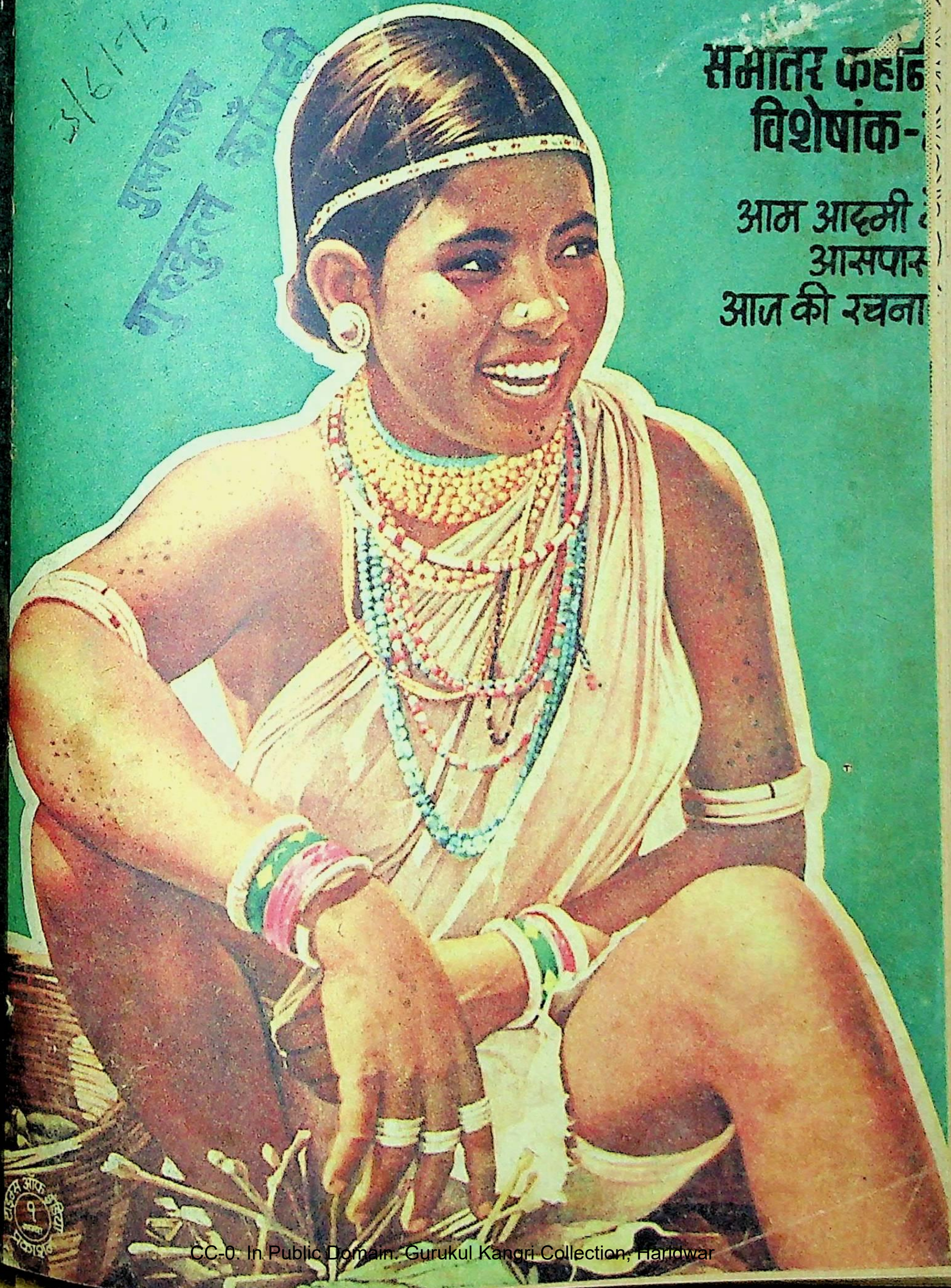

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वो दो जो मेरी साँसों में बसा करते हैं—

एक तुम...

एक बिनाका ग्रीन...

सच, बिनाका ग्रीन की निर्मल ताज़गी में बसीं मेरी साँसें... और मेरी हर साँस में समाए तुम! मुझे तुमसे प्यार है... मुझे बिनाका ग्रीन से प्यार है क्योंकि क्लोरोफ़िलयुक्त बिनाका ग्रीन में पाये जाने वाले प्राकृतिक गंधनाशक से मेरी साँसों में फूल खिल जाते हैं...

आह! वह बहार... तुम्हारे साथ गुज़रे वह सुनहरे क्षण... वह महका महका सा मेरी साँसों का मधुबन!

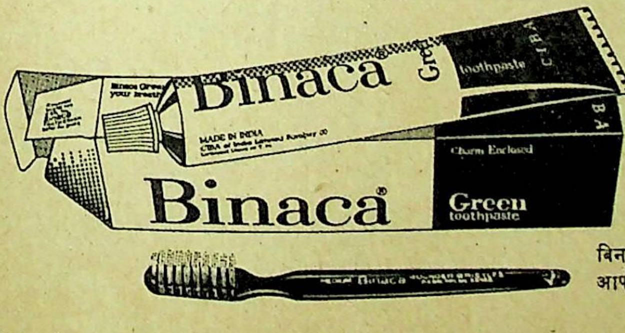

CIBA-GEIGY

महकी साँसों का मधुबन

बिनाका टूथब्रश की गोल बनायी गयी नोकें आपके मसूड़ों को छिलने से बचाती हैं।

Rediffusion CG/194/i hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

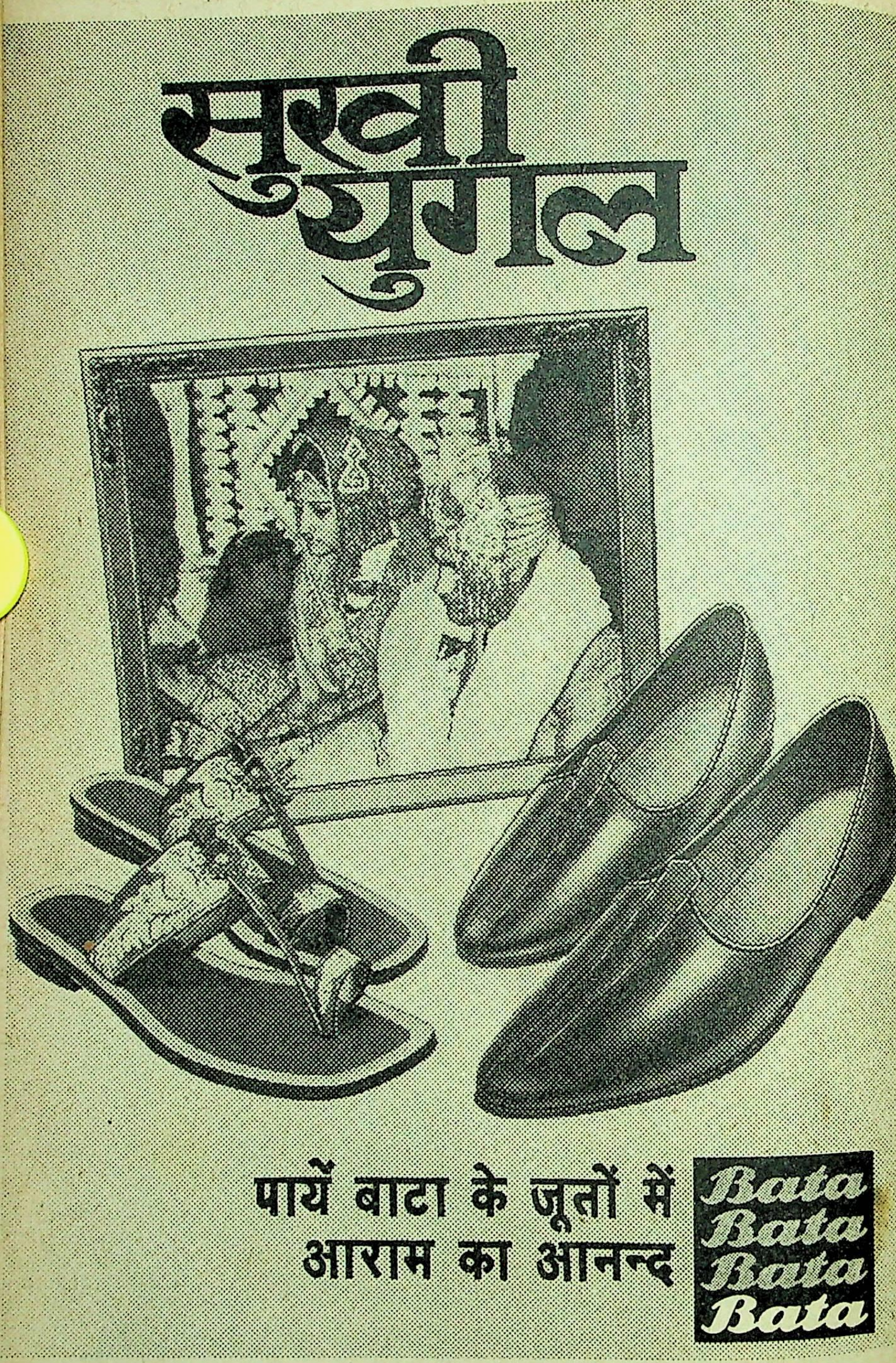

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स की 800वीं पुस्तक

उर्दू की बेहतरीन शायरी
सम्पादक
प्रकाश पंडित
मूल्य : रु० 3.00

पिछले अठारह वर्षों में हिन्द पॉकेट बुक्स ने निरन्तर विभिन्न विषयों का स्वस्थ साहित्य भारतवासियों को दिया है

आज 800वीं पुस्तक के प्रकाशन पर हम अपने करोड़ों पाठकों को धन्यवाद देते हैं

कुछ अन्य लोकप्रिय हिन्द पॉकेट बुक्स

उपन्यास

निर्मला	मुंशी प्रेमचन्द	2·50
सुखदा	जैनेन्द्रकुमार	3·00
दादा कामरेड	यशपाल	4·00
अनाड़ी	उपेन्द्रनाथ अश्क	3·00
शतरंज के मोहरे	अमृतलाल नागर	4·00
अपने खिलौने	भगवतीचरण वर्मा	5·00
नरक	मन्मथनाथ गुप्त	4·00
पुष्पगंधा	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	4·00
कलंक-मुक्ति	रेणु	2·50
गोली	आचार्य चतुरसेन	5·00
रति विलाप	शिवानी	3·00
भैरवी चक्र	गुरुदत्त	6·00
भंवर	भैरवप्रसाद गुप्त	3·50
कांचघर	भ्रमर	2·50
कार्निवाल	कृशन चन्दर	3·00
एरियल	अमृता प्रीतम	2·00
एक चादर मैली सी	राजेन्द्रसिंह बेदी	3·00

जीवनोपयोगी

अनमोल मोती		3·00
सफलता के आठ साधन		3·00
भावनाओं के चमत्कार		3·00
महापुरुषों की सूक्तियां		3·00

सेक्स-स्वास्थ्य

स्त्री-पुरुष	डॉ. लक्ष्मीनारायण	3·00
सेक्स की तकनीक	,,	3·00
यौवन और स्वास्थ्य	,,	3·00

जीवनी-संस्मरण

गुरुजी गोलवलकर		3·00
स्वामी विवेकानन्द		3·00
राजा राममोहन राय		3·00
मेरी कहानी	नेहरू	5·00
महारानी	जरमनी दास	5·00

काव्य-शायरी

मधुशाला	बच्चन	3·00
तुम्हारे लिए	नीरज	3·00
गीतांजलि	टैगोर	3·00
शे'र-ओ-शायरी	सं० प्रकाश पण्डित	3·00

रोमांटिक उपन्यास

कटी पतंग	गुलशन नन्दा	5·00
सोने की लंका	,,	3·00
झील के उस पार	,,	3·00
शराफत	शेखर	3·00
तेरे मेरे चेहरे	,,	3·00
कुंवारी सुहागिन	,,	3·00
बाजी	मीनाक्षी माथुर	3·00
आग बनी सुहाग	,,	3·00
दिल और दर्द	,,	3·00

वैज्ञानिक उपन्यास

सूरज की भेंट	प्रो० दिवाकर	3·00
नक्षत्रों का युद्ध	,,	3·00
समय के स्वामी	,,	3·00
शुक्र ग्रह पर धावा	,,	3·00

जासूसी उपन्यास

काला धाल	कर्नल रंजीत	3·00
हत्यारे की पत्नी	,,	3·00
11 बजकर 12 मिनट	,,	3·00
खूनी सिक्के	,,	3·00

हिन्द पॉकेट बुक्स सभी पुस्तक-विक्रेताओं के यहां मिलती हैं। यदि प्राप्ति में कठिनाई हो तो घर बैठे मनपसन्द पुस्तकें प्राप्त करने के लिए

हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा संचालित
घरेलू लाइब्रेरी योजना
(बुक-क्लब)

के सदस्य बनिए तथा प्रतिमास 12 रुपये की पुस्तकें 8 रुपये में प्राप्त कीजिए। मासिक पत्रिका 'साहित्य संगम' निःशुल्क

नीचे दिए कूपन या किसी पोस्टकार्ड पर यहां दी गई पुस्तकों में से अपनी पसन्द की 12 रुपये की पुस्तकों के नाम लिखकर भेज दें। हम आपको सदस्य बनाकर वी० पी० पैकेट से पुस्तकें भेजनी शुरू कर देंगे। डाक-व्यय के दो रुपये भी वी० पी० राशि में जोड़कर दस रुपये की वी० पी० भेजा करेंगे। केवल पहली वी० पी० में सदस्यता-शुल्क के दो रुपये भी जोड़े जाएंगे (जो आपकी अमानत के रूप में हमारे पास जमा रहेंगे)। इस प्रकार पहली वी० पी० बारह रुपये की होगी।

अब तक लाखों पुस्तक-प्रेमी इस योजना के सदस्य बन चुके हैं।

घरेलू लाइब्रेरी योजना (बुक-क्लब) सदस्यता-कूपन

नाम ____________ 1 ______
पता ____________ 2 ______
____________ 3 ______
मुझे घरेलू लाइब्रेरी योजना का सदस्य बनाएं। शुल्क के 2 रुपये पहली वी० पी० में जोड़कर 12 रुपये की वी० पी० से पुस्तकें भिजवा दें। 4 ______
5 ______

घरेलू लाइब्रेरी योजना-बुक-क्लब (ध), जी० टी० रोड, दिल्ली-110032

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लि. जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ मार्गो ही वह साबुन है जो सफाई के अलावा कुछ और भी करता है। क्या जाड़ा, क्या गर्मी यह चमड़ी को हर मौसम में स्वाभाविक बनाये रखता है !

क्योंकि केवल मार्गो में ही नीम तेल मिला होता है

मार्गो साबुन की मक्खन जैसी झाग में भरी रहती है प्राकृतिक नीम तेल—चमड़ी को मुलायम रखने वाला एक ऐसा तत्व जो चमड़ी को तेजवान व स्वस्थ बनाये रखता है। नीम के कीटाणुनाशक तत्व रोग के कीटाणुओं को तो दूर रखते ही हैं साथ ही मार्गो आपकी चमड़ी को हर मौसम में नर्म, मुलायम और बेदाग़ रखता है। और मार्गो में गन्धरहित नीम तेल के साथ ऐसा सुगन्धित उपादान मिला रहता है जो आपको घण्टों तरोताज़ा बनाये रखता है। सुस्निग्ध मार्गो पूरे परिवार के लिये बेहतर है।

मार्गो सोप

आपकी चमड़ी को हमेशा मुलायम व चिकना बनाये रखता है !

CCM 4183

कैलकटा केमिकल का एक उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारिका

कहानियों और कथा-जगत की संपूर्ण पत्रिका।

मई, १९७५

वर्ष : १५; पूर्णांक : १६९

समांतर कहानी विशेषांक-८
भारतीय दलित साहित्य

कहानियां

बंधु माधव : और इनसानियत मर गयी : १२
प्र. ई. सोनकामले : यादों के पखेरू : २४
प्रकाश न. खरात : तड़प : २८
अविनाश डोलस : डायरी के कुछ पन्ने : ३२
योगीराज वाघमारे : नये सूरज की खेज में : ३६
ओ. पी. शर्मा : इंतजार : ४४
गुरबचनसिंह भुल्लर : बोरे की रगड़ : ४८
मधुमंगेश कर्णिक : धर्म : ५२
गुरबख्शसिंह : चंडीदास : ६०
काजी अब्दुल सत्तार : घिस्सू : ६४

नाटक

गंगाधर पानतावणे : मृत्युशाला : १६

रिपोर्ताज

अरुणा लोखंडे : अकालग्रस्त दलित : ५६
नरेंद्र नीरव : चनवा का ओढ़ार : ७१

विशिष्ट लेख

बाबूराव बागूल : दलित साहित्य : उद्देश्य और वैचारिकता : ७५

भेंट-वार्ता :

अमृता प्रीतम : कहानी एक ब्याह की : ७२

लघुकथाएं

रतनलाल सोनग्रा : उसारीलाल उर्फ उस्मान, बुद्धिवादी की स्वतंत्रता : ६२
शेख जनुल आब्दीन : एक पाव चावल : ६३

विशिष्ट संकलन

पुराणकाल और शूद्र : ५८
टिप्पणियां : ३५, ३९, ४३, ५५, ६९
घटनाकथाएं : ८७

स्थायी स्तंभ

पाठकीय : ८, मेरा पन्ना : १०, कबिरा खड़ा बजार में : हरिशंकर परसाई : २०, चंद सतरें और : अनीता औलक : ८४, विविधा : ८९

संपादक : कमलेश्वर
- मुख्य उप-संपादक :
आनंदप्रकाश सिंह
- उप-संपादक :
अवधनारायण मुद्गल, सुदीप
- कार्यालय सहयोगी :
श्रीनाथ पांडेय , देवचंद्र झा, भिकाजी शिर्के.

पाठकों के लिए सूचना

मीनाकुमारी की डायरी हम इस अंक में नहीं दे पा रहे और न अगले अंक में ही दे पायेंगे, इसका कारण गुलजार जी की अत्यधिक व्यस्तता है. 'सारिका' के जो स्थायी स्तंभ कुछ समय के लिए स्थगित कर दिये गये थे, उन्हें आप अगस्त '७५ अंक से फिर पढ़ सकेंगे. वे स्तंभ हैं —गर्दिश के दिन, गुस्ताखियां, आद्यकथाकार, कृतियां आदि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकीय

समांतर कहानी विशेषांक —४ और ५

'सारिका' के जनवरी और फरवरी अंक पढ़ने का मौका मिला. यों तो ऐसी पत्रिकाएं बहुत पढ़ीं, मगर 'सारिका' को सबसे आगे बुलंदी पर पाया है. इसे पढ़ कर मैं एक महीने के लिए बस नशे में हो जाता हूं. सिर्फ एक कहानी रोज पढ़ता हूं. फरवरी अंक में जो कहानियां पसंद आयी हैं, वे हैं **'तीसरी सांस'** (कामतानाथ), **'अन्न और स्वप्न'** (नवतेजसिंह), **'जलते हुए डैने'** (हिमांशु जोशी), **'जाने किस बंदरगाह पर'** (सतीश जायसवाल) तथा **'छुट्टी का एक दिन'** (अकुलेश परिहार).

☐ **कृष्णकुमार, भटिंडा**

दुष्यंतजी की दस्तावेजी गजलें बहुत ही ठंडे अंदाज में बड़ी गरम बात कह रही हैं. आज का लेखक सामान्य आदमी के कितने पास रह-जी रहा है, इसकी गवाह हैं **'सारिका'** की कहानियां. सीधे-सादे ढंग से कही सीधी-सच्ची बात. **'जमीन का आखिरी टुकड़ा'** से चल कर **'जुलूस'** तक की यात्रा में कोई कहानी ऐसी नहीं लगी, जिसे कम वजनदार कहा जाये. **'यह सब अंतहीन'**, **'इजारेदारी'**, **'इंतजार'** और **'जबरा मारे रोने न दे'** वर्षों तक याद रहने वाली कहानियां हैं. **'जमीन का आखिरी टुकड़ा'** हमारे गांव से कस्बे तक, हर दूसरे महीने, आने वाले आदमी की कहानी है. दो आने में बिकता ऊंट एक हजार में क्यों खरीदा? एक ऐसा प्रश्न है जो आज भी अपना उत्तर खोज रहा है और हर उत्तर देने वाले का मुंह हर बगल वाला बंद कर रहा है. **'मेरा पन्ना'** हमारी सब की बात कहता है.

☐ **सूरज खरे, भोपाल**

समांतर कहानी विशेषांकों की शृंखला में 'सारिका' अपनी कहानियों के माध्यम से आज की विकट परिस्थितियों का वास्तविक चित्रण करने में सदा की ही तरह सफल रही है. आज का आम आदमी, पूंजीपति वर्ग द्वारा बनायी गयी परिस्थितियों में (**'सूखा'**) कितना विवश हो कर रह गया है, कि वह आज अपने अधिकारों के लिए भी नहीं लड़ सकता! सब कुछ जानते हुए भी कुछ न कर पाने की विवशता (**'चूहेदानी'**) में त्रस्त है. आज उसकी बांहों को इतना कमजोर कर दिया गया है कि वह चाह कर भी उन्हें उठा नहीं सकता, कुछ कह भी नहीं सकता. अपनी नौकरी की खातिर किराये की बेटी को किसी के बिस्तर पर बिछाना पड़ता है (**'तपती हुई जमीन'**.) दो रोटियों के लिए उसे कुछ गलत हो रहा है को देख कर भी आंख बंद कर लेनी पड़ती है (**'शहादतनामा'**.)

'इतिहास जब नंगा होता है, तो संपूर्ण संघर्ष के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाता. आज इतिहास पूरी तरह नंगा है. उसकी नग्नता को अब न दोगली राजनीति ढंक सकती है न दोगला साहित्य' (**'मेरा पन्ना'**.) और आज यही दोगला साहित्य मजदूर की हर आवाज को दबा देने में पूंजीपति वर्ग का साथ दे रहा है. इस संपूर्ण संघर्ष के लिए किसी छोटू के पिता को छोटू के मरने का दुख नहीं, दुख है उसके बगैर कुछ किये मर जाने का (**'आंदोलन'**.)

कैसी विवशता है? इस व्यवस्था के खिलाफ बोलने वाले हर व्यक्ति को जेल में ठूंस दिया जाता है या... (**'गुस्से में आदमी'** व **'जुलूस'**) लेकिन कब तक?

☐ **साबिर हुसेन, सीतापुर**

समांतर कहानी विशेषांक—४ और ५ पढ़ने के बाद निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि **'सारिका'** ने अपनी दिशा तलाश ली है. आज के जलते सवालों पर बातचीत का सिलसिला जारी कर एक महत्वपूर्ण काम किया है. जन सामान्य की लड़ाई का पक्ष ले कर यह सिद्ध कर दिया है कि 'समाज' को समझने और बदलने में साहित्य की अहम भूमिका है. जब परिवर्तन के लिए लड़ाई हो तो आप सड़क के किनारे खड़े हो कर नहीं कह सकते कि 'हमें इससे कोई मतलब नहीं.' तटस्थता अपने आप में एक बड़ी राजनीति है. कमलेश्वर जी ने मानसिकता के सवाल पर (जनवरी, '७५) यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है. जब तक हमारी मानसिकता नहीं बदलती, क्रांति का कोई अर्थ नहीं. जहां तक कहानियों का सवाल है, **'जमीन का आखिरी टुकड़ा'** (इब्राहीम शरीफ), **'चूहेदानी'** (रमेश गुप्त) **'यंत्रपुरुष'** (सुरेश सेठ), **'सजा'** (हृदय लानी) **'हरिजन-सेवक'** (मधुकर सिंह), **'जुलूस'** (बल्लभ सिद्धार्थ) बेहद सशक्त कहानियां हैं. हां फरवरी अंक निश्चय ही जनवरी अंक के मुकाबले कमजोर है. **'सारिका'** के सामने एक सुनिश्चित योजना है और सही अर्थों में **'सारिका'** साहित्य और सामाजिक यथार्थ के जुड़ाव का दूसरा नाम बनती जा रही है.

☐ **विनोदकुमार, हिनू, रांची**

'सारिका' के जनवरी और फरवरी अंक जरा ध्यान से पढ़े. **'मेरा पन्ना'** के अंतर्गत अभिव्यक्त विचारों के अनुरूप **'सारिका'** कहानियां भी जुटा लेती है, इस को मैं कम नहीं मानता.

'सारिका' आम आदमी से जुड़ कर उसकी समग्रता को अभिव्यक्त करने का जो उत्तरदायित्व निभा रही है, यह न केवल **'सारिका'** बल्कि कहानी विधा के लिए भी अत्यंत शुभ है. मेरी समझ से कमलेश्वर जी की बातें साफ और दोटूक हैं और इसलिए उनके आगे प्रश्नचिह्न खड़ा करने का कोई औचित्य नहीं. जनवरी अंक में उनका यह कथन कि 'नया वर्ष आया है, पर यह शुभकामनाओं का वर्ष नहीं.' या फिर... 'आर्थिक चिंताओं से मुक्त हो कर आर्थिक इजारेदारी की लड़ाई लड़ने और आर्थिक चिंताओं से त्रस्त हो कर आर्थिक हितों के लिए लड़ाई लड़ने में जमीन-आसमान का अंतर है. लेकिन मुश्किल वहां खड़ी होती है, जब हम पूंजी या अर्थसंपदा को मात्र बंटवारे का उपादान मान लेते हैं. मिश्रित और दोगली अर्थव्यवस्था ने ही हमें यह दूषित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिकोण दिया है. दरअसल मैं यह समझता हूं कि हमारी लड़ाई वास्तव में मिश्रित और दोगली अर्थ-व्यवस्था से है, इस बात को नकारने का कोई अर्थ नहीं. इन तथ्यों को इब्राहीम शरीफ, मधुकर सिंह, अजित पुष्कल और हृदय लानी ने बड़ी ईमानदारी से अभिव्यक्ति का आकार दिया है.

फरवरी अंक की कहानियों की जीवंतता ने मुझे और ज्यादा अभिभूत किया है. 'आदमी को भून कर' खाने का जो सिलसिला और-और तीव्र होता जा रहा है, उसके खिलाफ तो अधिकांश कहानीकारों ने कहानी को एकदम ही सार्थक और संघर्षशील हथियार के रूप में स्वीकार किया है.

कमलेश्वरजी के इस कथन को कि 'यथार्थ से आंखें मूंद कर हम बेहद जोशीले स्वर में कह सकते हैं कि कल क्रांति होने वाली है. . . कि मजदूर-किसान अब ज्यादा सहन करने वाले नहीं हैं. यह सही है कि सब के धीरज का बांध टूट चुका है, पर यह भी सही है कि सबके संस्कारों में दरार तक नहीं पड़ी है' को समग्रता में **'मदारी'** शीर्षक कहानी बड़ी जीवंतता से अभिव्यक्त करती है. राम सुरेश को बधाई. वैसे कामतानाथ की कहानी **'तीसरी सांस'** बड़ी ईमानदारी से लिखी गयी आज के संदर्भों की कहानी है. मुद्राराक्षस एवं हिमांशु जोशी की कहानियां **'निहत्थे'** एवं **'जलते हुए डैने'** का कथ्य भी अत्यंत ही ईमानदारी से रचा गया है. अकुलेश परिहार की कहानी **'छुट्टी का एक दिन'** दोगली और मिश्रित व्यवस्था में जीते हुए साधारण आदमी की छटपटाहट का बड़ा मार्मिक एवं सजीव चित्र प्रस्तुत करती है.

डा. रामवचन राय की टिप्पणी कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है. आज भी हमारे समाज के फैलाव में व्यक्ति की श्रेष्ठता का कारण उसका कुल-गोत्र है. आजादी के बाद संविधान में दलितों के निमित्त जो सुविधाएं रखी गयीं, वे मात्र वंचना ही साबित हुईं. मधुकर सिंह की कहानी **'हरिजन-सेवक'** इस संदर्भ में बड़ी महत्वपूर्ण कहानी है.

☐ **जगदीश विकल, चंपारन**

एक पाठक का पत्र

आज से छह वर्ष पहले **'सारिका'** की एक पुरानी फटी प्रति प्राप्त हुई थी. मुश्किल से तीन कहानियां साबुत थीं. फिर भी ऐसा लगा जैसे कोई आपबीती सुना रहा हो. तब से **'सारिका'** के लिए बेचैन रहता हूं. घर भी ऐसी जगह है, २० मील दूर रेलवे जंक्शन या ५० मील दूर जिला जा कर चक्कर लगाता हूं, तब कहीं हाथ आती है. हायर सेकंडरी के बाद कोयला खान में मजदूर हुआ. मजदूरी और पढ़ाई की रस्साकशी में मिली बी. ए. की डिग्री और नौकरी से छुट्टी. नौकरी छूटी तो लगा खान के अफसरों की अफसरी में मैं शहीद (**'शहादतनामा'**) हो गया. दौड़-धूप में मिली एल. डी. टी. की नौकरी (अध्यापक की.) एम. ए. प्रीवियस हो गया. फाइनल कर रहा हूं. पर अफसरी, लालफीताशाही से कानून और काम ऐसे मिले कि चापलूसी, घूसखोरी के नये रिश्ते पैदा हो गये हैं. एक तरफ रोटी खींचती है, दूसरी तरफ जी-हजूरी की पुकार है. सही है. **'गुन न हिरानो गुन गाहक हिरानो है.'** ☐ **मुरारीलाल वर्मा, शहडोल**

फरवरी अंक आद्योपांत पढ़ गया. कुछ कहानियां जो कि आम आदमी की घुटन, अभावग्रस्तता, निरीहता का सफल, सजीव एवं संवेदनात्मक चित्रण प्रस्तुत करती हैं, यथार्थ के बिल्कुल समांतर लगीं. यों तो सभी कहानियों का अपना अलग-अलग प्रभाव है, फिर भी विशिष्टता की दृष्टि से देखने पर **'तीसरी सांस'** (कामतानाथ), **'जलते हुए डैने'** (हिमांशु जोशी), **'एक चालू आदमी'** (दिनेश पालीवाल), **'निहत्थे'** (मुद्राराक्षस), **'एक बिछा हुआ आदमी'** (विभुकुमार) इत्यादि को आसानी से रेखांकित किया जा सकता है. अंक की शेष कहानियां भी रोचक एवं आम आदमी की किसी-न-किसी छटपटाहट, मनोवैज्ञानिकता तथा असमर्थता का दर्शन कराती हैं. **'मेरा पन्ना'** को 'आम आदमी का पन्ना' या 'हम सब का पन्ना' कहना अनुचित न होगा. वैसे इसे 'मोटी तोंदों का कच्चा चिट्ठा' कहा जा सकता है.

☐ **सईद अहमद मलिक, हरदोई**

'समांतर कहानी विशेषांक–५' पढ़ा. कुछ को छोड़ कर सभी कहानियां दिल को छूने वाली थीं. पढ़ने के बाद निष्कर्ष यही निकला कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के पहले जो लड़ाई 'चालू लोगों' ने छेड़ी थी, वह आज भी चल रही है. कौन कहता है हमें सन् '४७ में आजादी मिल गयी थी? आज भी **'दर्द की मछली'** की नसीबो, एक हरिजन औरत को साहब के सामने पेश किया जाता है; **'जलते हुए डैने'** के शिव 'दा को देश-सेवा व सत्य बोलने के 'अपराध' में स्कूल से निकाल दिया जाता है व काल-कोठरी में सड़ाया जाता है. सुखबीर जैसा सामान्य आदमी भी नहीं बचा है. वह व्यवस्था के खिलाफ भी कुछ नहीं बोलता है, लेकिन पुलिस अपनी असमर्थता छिपाने के लिए उसे भी ढाल बनाती है और पारसनाथ जैसे कर्तव्य-परायण छात्रों को व्यवसाय की राजनीति का शिकार बनना पड़ता है. और अंत में दिनेश पालीवाल को बधाई देना नहीं भूलूंगा, जिन्होंने 'चालू' और 'पेशल' में अंतर बताया है. इस कहानी को पढ़ने के बाद लगता है कि इस अंक की सभी कहानियों के पात्र एक ही हैं और वे हैं 'चालू' और 'पेशल'.

☐ **पवनकुमार जैन, रांची**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा पन्ना

आज का यथार्थ : समांतर संसार–८

सोचने के लिए सवाल यह था कि मानव-कल्याण की इतनी खूबसूरत पैरवी करने वाला देश इतने बड़े अकल्याणकारी यातना-शिविर में क्यों बदल गया है? भारतीय चिंतन और विचार-धाराओं की मानवकल्याणकारी दृष्टि के इतने विराट जलप्लावन के बावजूद यह महादेश मानवीय मूल्यों की सतह पर इतना बंजर क्यों हो गया है? क्या सिर्फ यह मान लिया जाये कि कुछ दुष्टों या कुछ दुष्ट वर्गों ने इन विचार-बीजों को रोपा नहीं जाने दिया है? ऐसा नहीं हुआ है . . . प्रतिरोध चाहे जितना रहा हो, पर आज भी औसत भारतीय इन विराट कल्याणकारी मूल्यों से अपरिचित नहीं है, जो उसे ही केंद्र में रख कर रूपायित किये गये और उसी के लिए निरूपित किये गये. फिर कारण क्या है कि 'विचार और मूल्य' आम आदमी के हित में अपनी भूमिका को कारगर नहीं बना पाये? दर्शन, धर्म और साहित्य की सारी शपथें क्यों व्यर्थ चली गयीं? क्या यह मान लिया जाये कि मूलतः मनुष्य अन्यायी, अत्याचारी, हिंसक, विचारविहीन, अनैतिक और बर्बर है? या कि उसके कोमल, सुंदर संवेगों और न्याय-बुद्धि का कोई अस्तित्व नहीं है! कि मनुष्य स्वयं अपना ही दुश्मन है! या कि वह अपनी संस्कृति और कलाओं को उस बर्बर और आदिम भावना-शून्य जानवर के रूप में क्षणिक सुख के लिए जन्म देता हो, जो अपनी ही संतान की भ्रूण-हत्या करने या होते देखने में सुख पा सकता हो! नहीं, मनुष्य ने इतनी मनुष्यता का परिचय जरूर दिया है कि वह अपनी संस्कृति और कलाओं को ले कर एक बेहतर जिंदगी जीना चाहता है.

तब यह विरोध और अवरोध क्यों पैदा होता है कि मानव-कल्याण के सारे विचार और मूल्य आम आदमी के पक्ष में सक्रिय नहीं हो पाते?

यहीं पर यह मूल प्रश्न अटका हुआ है कि यदि मनुष्य स्वयं अपना दुश्मन नहीं है, तो अपना दोस्त क्यों नहीं है? यानी चिंतन के स्तर पर यह प्रश्न अटका हुआ है कि यदि साहित्य (विचार और मूल्य) आदमी का दुश्मन नहीं है, तो उसका दोस्त क्यों नहीं है? साहित्य जो विचार, मूल्य और संवेदना देता है, वे मनुष्य के काम क्यों नहीं आ पाते? आदमी अगर अपनी जिंदगी का नक्शा बदलना चाहता है और एक व्यवस्था की मारक स्थितियों से उबर कर एक बेहतर व्यवस्था को निर्मित करना चाहता है, तो उसके लिए साहित्य की कोई कारगर भूमिका क्यों नहीं रह जाती? साहित्य क्यों उसकी इस संघर्षपूर्ण जययात्रा में मात्र तमाशबीन की तरह शामिल होता है? या कि तमाशबीन की तरह शामिल हुआ माना जाता है?

इसका सारा दोष स्वयं साहित्य का है. क्योंकि सदियों से हमारा साहित्य विचारों और मूल्यों को बड़ी-बड़ी मानव-शुभ की शपथें बना कर सिर्फ प्रस्तावों के रूप में पेश करता रहा है, उन्हें अमली जामा पहनाने या पहनाये जाने से गुरेज करता रहा है. इसीलिए हम साहित्य को समाज का दर्पण मानने की खुशफहमी का शिकार होते रहे हैं. यानी यह मानते रहे हैं कि साहित्य सिर्फ एक संवेदनात्मक अक्स है. इसके आगे साहित्य की सौंदर्यवादी-कलावादी व्याख्याएं शुरू हो जाती हैं और हम साहित्य को काठ का टुकड़ा मान कर उसकी लंबाई-चौड़ाई और गहराई नापने लगते हैं. उसे एक निष्क्रिय प्रतिबिंब मान कर बैठ जाते हैं या ज्यादा-से-ज्यादा एक बौद्धिक विचार के रूप में ग्रहण कर लेते हैं. हम तथ्य-कथन तक जा कर रुक जाते हैं, उसके आगे तथ्य-कथन का क्या होता है, इससे सरोकार नहीं रखते. भारतीय दार्शनिक और साहित्यिक चिंतन इसीलिए महामूल्यों और विराट कल्याणकारी परिकल्पनाओं के बावजूद सिर्फ एक खूबसूरत और उजले कफन के रूप में मरते हुए आदमी की प्रतीक्षा में दूकानों में बिक्री के लिए मौजूद रहता है. इसीलिए यदि असमान संघर्ष में मरता हुआ आदमी साहित्य से इनकार कर दे, तो ज्यादती क्या है? इसमें आदमी का दोष क्या है? कोई आदमी अपनी आत्मा के लिए कफन नहीं खरीदता! साहित्य जब तक आदमी की आत्मा का लिबास नहीं बनता, तब तक उसकी नियति 'निष्क्रिय प्रतिबिंब' बने रहने की ही है या ज्यादा-से-ज्यादा 'बौद्धिक विचार' बन जाने की!

और फिर ऐसे दौर में, जहां आदमी की आत्मा के लिए सब तरह के कफन ही तैयार किये जा रहे हों, तब साहित्य को शंका की दृष्टि से न देखा जाये, यह असंभव है.

अभी तक साहित्य के कारगर होने के दो ही संबोध हमारे सामने हैं— एक वह जो 'बौद्धिक विचार' और कलात्मक उत्स तक पहुंच कर साहित्य के कर्म की इतिश्री स्वीकार लेता है और दूसरा वह, जो साहित्य को व्यर्थ मानते हुए भी लड़ने वाली फौजों के लिए वर्दीधारी बैंड बजाने वाले दस्ते के रूप में शामिल रखना चाहता है.

इन दोनों संबोधों ने साहित्य की सही भूमिका को शंकास्पद बना रखा है, क्योंकि ये दोनों संबोध आधारभूत रूप से 'निष्क्रियता-वादी' हैं. अरस्तू से ले कर आचार्य नगेंद्र तक साहित्य के पुरोहित चाहे जो कुछ कहते रहें, पर यह तय है कि कलामूल्यों की दृष्टि से महान होते हुए भी कालिदास की कविता न तो क्रांति को रोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है और न वर्दीधारी वीरतावादी होते हुए भी भूषण की कविता क्रांति को ला सकती है. यहीं यह समझ लेना भी जरूरी है कि किसी भी क्रांति के लिए कालिदास की कला और भूषण के शौर्यवाद को इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखे बगैर नकार देने की भी जरूरत नहीं है.

★ ★

इन दोनों संबोधों से अलग क्या साहित्य के लिए कोई और विकल्प हो सकता है, जो साहित्य की आत्मा (उसकी रचनात्मकता) को खंडित न होने दे और आम आदमी की खंडित आत्मा के लिए क्रांति की रचना कर सके? जो क्रांति के महाद्वार तक आदमी के धड़ और सिर को अलग-अलग न पहुंचा कर मुर्जस्सिम आदमी को पहुंचा सके? जो विचार और श्रम के बीच विभाजक रेखा न खींच कर श्रममूलक विचार और विचारमूलक श्रम से अभिषेकित सामान्य जन को उसके पूरे सम्मान और प्राप्य के साथ प्रतिष्ठित कर सके और हर सदी में बार-बार झूठी हो गयी शपथों-संकल्पों को यथासंभव साकार कर सके?

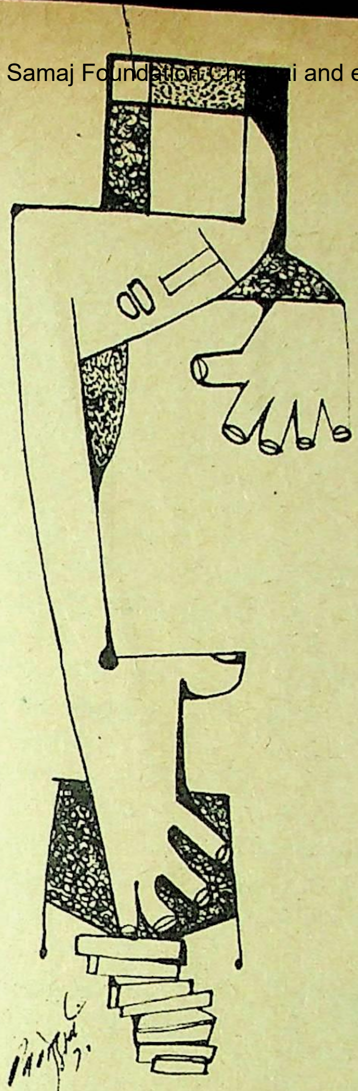

● विनोद

साहित्य की इस भूमिका के निर्धारण और स्पष्टीकरण की जरूरत इसलिए भी जरूरी है कि जब आज का लेखक एक तरफ 'साहित्य की आत्मा को खंडित होने से बचाना' चाहता है तो 'रचना की स्वायत्तता' की बात उठने का भ्रम पैदा होता है, जो अंततः उसे 'कलावादी मूल्यों' पर ले जा कर पटक देता है; दूसरी ओर जब आज का लेखक 'मनुष्य की खंडित आत्मा के लिए क्रांति की रचना' की बात करता है तो 'वर्दीधारी बैंड बजाने वाले दस्ते' में शामिल हुए बगैर उसे राजनीति से इनकार करने वाले के रूप में लांछित किया जाता है! जबकि आज की सही रचना और रचनाकार राजनीति से अलग होने को अपराध मानता है! आज की हर सही रचना और रचनाकार का संकट और संताप यही है!

असल में, पूछा जाये तो उपरोक्त दोनों ही (संकट और संताप वाले) दृष्टिकोण एकांगी हैं, क्योंकि ये मनुष्य और उसके समयगत यथार्थ से निरपेक्ष हैं. एकांगी इस लिए भी हैं कि एक रचना को कला-मूल्यों पर कसता है तो दूसरा मात्र राजनीतिक मूल्यों पर!

और तब आज का लेखक 'क्रांति की मानसिकता के निर्माण' की भूमिका तक जा कर रुक जाता है—या रोक दिया जाता है. आज का लेखक जब स्वयं ही सामान्य जन है तो वह 'मानसिकता के निर्माण' के आगे की अपनी भूमिका को अनिर्धारित कैसे छोड़ सकता है?

और यहीं पर आज का वह सबसे नाजुक सवाल आता है कि क्या साहित्य रचनात्मक रहते हुए भी क्रांति की भूमिका (अन्य लड़ाकू वर्गों के साथ) निभा सकता है? इसका सीधा और साफ़ उत्तर यही है कि मानसिकता-निर्माण के आगे की भूमिका को भी सिर्फ़ सही रचनात्मक साहित्य ही निभा सकता है. वह साहित्य, जो क्रांति के निर्णय की मात्र उत्तेजना से व्याप्त है, निर्णय-क्षुब्धता की प्रतीति तक जा कर रुक सकता है, उससे आगे वही साहित्य सक्रिय हो सकता है जो (क्रांति को एक तात्कालिक निर्णय भर न मान कर) क्रांति के प्रति और पक्ष में लिये गये 'मानसिकता-निर्माण' के दायित्व को क्रांति के प्रति संपूर्ण आस्था में तब्दील करता है.

यथार्थ के अनुभव से अर्थ, अर्थ से विचार, विचारों से निर्णय, निर्णयों से मानसिकता-निर्माण और मानसिकता से आगे क्रांति में ही (अंध आस्था का नहीं) वैज्ञानिक आस्था का केंद्रीकरण!

जाहिर है कि ऐसी रचना की व्याख्या 'रचना' के प्रश्नों से नहीं की जा सकती. ऐसी रचना की व्याख्या सिर्फ़ राजनीति के सपाट प्रश्नों से भी नहीं की जा सकती. क्योंकि ऐसी रचना क्रांति के राजनीतिक परिवर्तन में शामिल होते हुए सांस्कृतिक परिवर्तन की महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा करती है. क्रांति के प्रति वैज्ञानिक आस्था से समर्पित रचना ही विषमता-मूलक सांस्कृतिक सवालों के सर्वव्यापी राजनीतिक उत्तर दे सकती है और प्रतिक्रिया-प्रेरित राजनीति के सवालों के सर्वव्यापी सांस्कृतिक उत्तर! और ज़ब मनुष्य को आर्थिक-सामाजिक के साथ-साथ अपने सांस्कृतिक उत्तर भी साहित्य से मिलने लगते हैं, तब शपथों और संकल्पों को व्यवहार में आते देर नहीं लगती. इसी भूमिका की तैयारी में दलित और समांतर साहित्य लगे हुए हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इनसानियत मर गयी

□ बंधु माधव

बनगांव! एक पहाड़ी पर बसा देहात. सामने हरी-भरी, घनी झाड़ियां, हरे-हरे पत्ते. बीच से कल-कल बहने वाला झरना. हमेशा बहने वाला. कुओं-बावड़ियों पर सदा कूकने वाली रहटों की ध्वनि. उसका पानी पी-पी कर फसल और आदमी बिल्कुल पुष्ट. जोशीले भैंसों की तरह. कोई चिंता नहीं. कोई गम नहीं. पूरी आबादी आबाद.

लेकिन जहां गांव, वहां गंदी बस्ती! अमीरी की मस्ती में गरीबी की गर्द चलेगी ही. गरीबी को पेट होता है, आबरू होती है, मनुष्यता भी होती है, इसकी अमीरी को कहां फिक्र! अमीरी अपनी मस्ती में मगन और मस्ती उतारने के लिए गरीबों की आबरू रहती है हाथ में, जैसे आंगन की सब्जी —कोई भी आये और उठा ले. न कोई दर्द और दुख. झुको—कहने पर झुकना ही चाहिए, नहीं तो खैर नहीं. कोई कहां फरियाद करे? कौन न्याय देगा?

और फिर एक बात. . .बनगांव के एक मंत्री महोदय भी थे. शासन में उनका बोलबाला था. मिनिस्टर के लोगों का क्या कहना! एक तो नादान बंदर और हाथ में सत्ता की मशाल, जो किसीके घर पर भी रख दे. फिर कौन जिये, कौन मरे, किसे इतनी चिंता?

मंत्री महोदय के घर से ही चल रही थी बनगांव के चौधरी की गद्दी और उस गद्दी पर विराजमान था दाजी चौधरी का कुलदीपक——बाजीराव. भरपूर जवान. गांव के चार-पांच गुंडों को पाले हुए. देसी ठर्रा चढ़ा कर मस्त, मानो मदनमस्त वृषभराज. उसे कौन रोके? कौन आगे आये और सींगों को झेले?

लेकिन उसके पिता दाजी साहब बहुत महान थे. लाखों के आदमी थे. पर कहते हैं न, सूरज के पेट में

उद्‌वानी आर्लोकान के सौजन्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

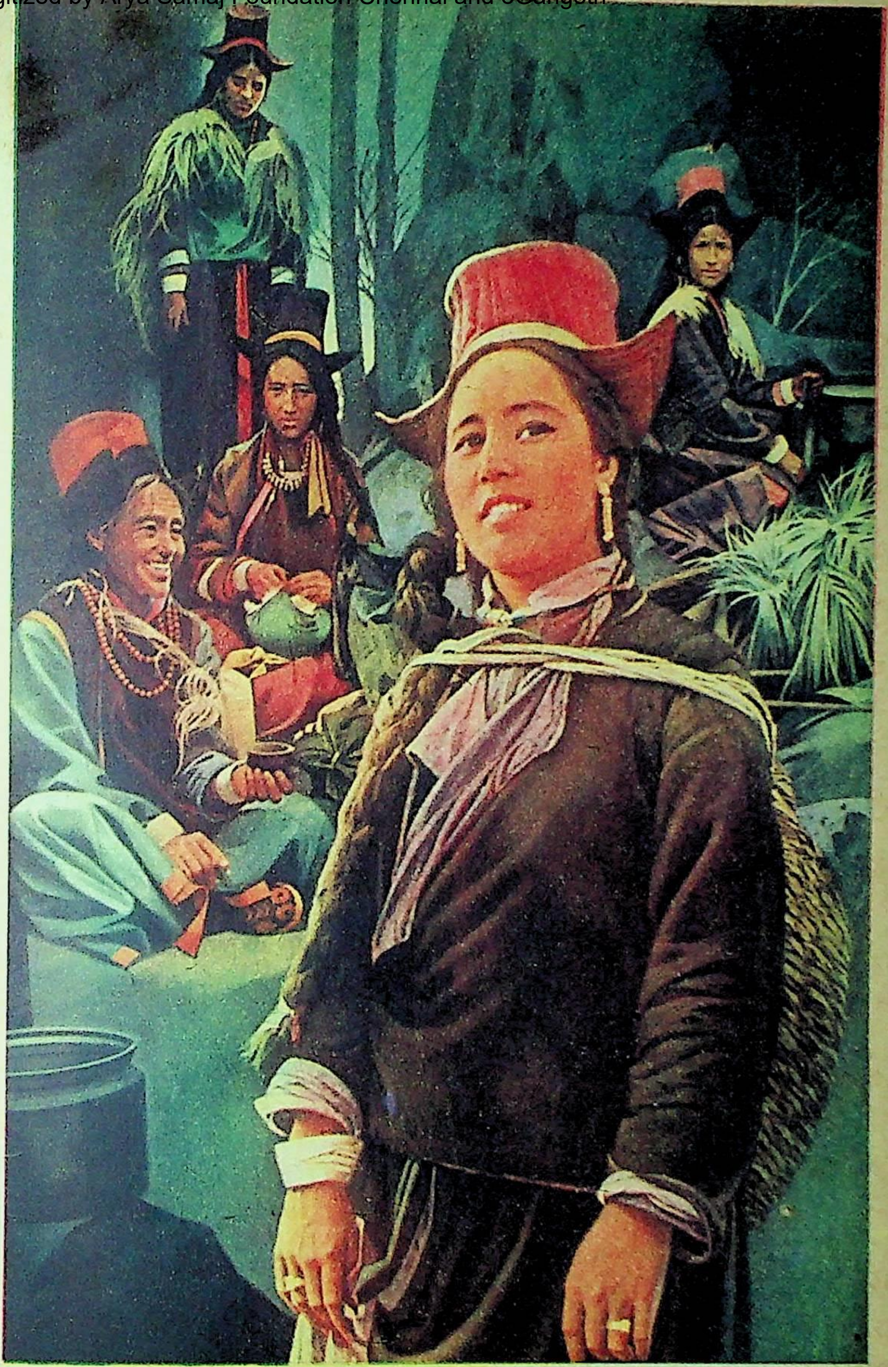

अडवानी आलीकान के सौजन्य से

सनीचर! बिल्कुल वैसे ही. लेकिन दाजी साहब का गौरव था अनूठा. आदमी भी थे दुनियादारी से अलग. बहुत पढ़े-लिखे न थे, लेकिन छत्रपति साहू महाराज की बैठक में बैठते. जोतिबा फुले से भी चर्चा कर लेते थे. वर्ताव बिल्कुल सीधा. किसी पर कोई जुल्म नहीं होने देते. गांव का चौधरी गांव की जनता का माई-बाप. फिर बच्चे चमार के हों या कहार-जुलाहों के, सभी उसके बच्चे. ऐसी उसकी आन. कहते थे— जनम भी सभी का समान, मरण भी समान, फिर कौन ऊंचा, कौन नीचा? जैसी कथनी, वैसी करनी.

मरते वक्त अपने बाजीराव और सभी लोगों को बुला कर उन्होंने अंतिम बात कही—सुनो, आज अपना मराठा राज है. लेकिन यह कैसे हुआ? साहू महाराज के पुण्यप्रताप से. जोतिबा फुले की कर्मनिष्ठा से. लेकिन यह सब हमारे मंत्री-राजा भूल गये. गरीबों पर होने वाले जुल्मों की कहीं फरियाद नहीं. कहते हैं बहुत, करते कुछ नहीं. अगर ऐसा ही चलता रहा, तो यह राज ज्यादा दिन टिकने वाला नहीं. महाबली रावण का राज चला गया, वहां तुम्हारी क्या हालत होगी? तुम रावण मत बनो, राम बनो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाजी साहब गये और बाजीराव के लिए मैदान साफ हो गया. पहले तो बना चौधरी. फिर बना गांव का सरपंच. उसकी आंखें मानो सातवें आसमान को छूने लगीं. जिसके हाथ में शासन, वही शिकारी और यह शिकारी शिकार करने लगा. जिसको भी मन मांगे. उसीका शिकार. उस शिकारी के मन में आया करे मोगरा चमारन का शिकार. गोरा-गोरा अंग यौवन से भरा. मोगरा—मोतीराम चमार की विधवा और मानो आंगन की सब्जी. लेकिन यह सब्जी कैसे तोड़े? बाजीराव ने हिकमत लड़ायी.

मोगरा चमारन का पति मोतीराम भारत-चीन युद्ध में लड़ते-लड़ते मारा गया था. उसे वीरगति मिली थी. देश के लिए उसने प्राणों का बलिदान दिया था. विधवा मोगरा वीर-पत्नी थी. उसे खुश करने के लिए, उसके सम्मान के लिए सरपंच ने सभा का आयोजन किया.

बाजीराव दाजी साहब चौधरी उस सभा में गौरव से बोले—विधवा मोगरा. . नहीं. मोगराबाई मोतीराम चमार महान वीर-पत्नी है, इसके वीर पति ने शूर-वीरों की तरह इस देश के लिए प्राणों का बलिदान दिया है. ऐसे महान वीर की महान पवित्र, अति पवित्र वीर पत्नी मोगराबाई का हम आज सम्मान करते हैं. इसलिए मुझे और सारे गांव वालों को बड़ा आनंद हो रहा है. अभिमान से हमारी छातियां फूल रही हैं. भुजाएं फड़क रही हैं. धन्य-धन्य वह बनगांव का चमार मोतीराम और धन्य-धन्य वह चमारन मोगराबाई! कौन कहता है मोगरा विधवा हो गयी? उसके पीछे हम सब हैं. हम उसका सब कुछ संभाल लेंगे. . .!

सभा में तालियों की जोरदार गड़गड़ाहट हुई. बाजीराव पाटील चिल्लाये—बोलो मोतीराम चमार की जय! बोलो मोगरा चमारन की जय! और पूरा गांव उस जय-जयकार में सम्मिलित हो गया.

मोगरा दिल-ही-दिल में सहम गयी उसे कुछ अलग गंध आ रही थी. इसके पीछे जरूर कोई दांव होगा. . .

और उसी दिन आधी रात को उसके दरवाजे पर किसीने दस्तक दी. अपने खास शागिर्दों रामू-शामू के साथ बाजीराव मोगरा के घर का दरवाजा टक-टक बजा रहा था.

मोगरा चमक कर उठी. एक क्षण घबरायी और उसने अंदर से पूछा—कौन है?

बाहर से आवाज आयी—सरपंच बाजीराव चौधरी . . .

घबरा कर उसने दरवाजा खोला. अचरज से उसने पूछा—चौधरी साब. . .आप?

—हां, हम

—इस समय. . .मेरे पास . . .?

—यही समय तो ठीक है तुम्हारे पास आने के लिए! चौधरी बेशरमी से उसकी ओर बढ़ा. मोगरा का बेटा शिवाजी उससे चिपक गया. मोगरा थर-थर कांपती खड़ी रही. वह कुछ बोल नहीं पायी बाजीराव ने उसका हाथ पकड़ लिया. वह चिल्ला पड़ी. चीख उठी.

—चिल्लाओ मत! चिल्ला कर रंग में भंग मत करो! मेरी सुनो, तुम्हारी काया को मैं कंचन कर दूंगा. आज मैंने तुम्हारा सम्मान किया, सारे गांव में तुम्हारा नाम हो गया. फिर मोगरा का पल्लू पकड़ कर बाजीराव बिनती करने लगा—मोगरा, इनकार मत करना, तुझे गहनों से लाद दूंगा. . .

पल्लू को झटका दे कर मोगरा फिर चीख उठी—दाजीबा. . .देवरजी. . .!

मोगरा का चचेरा देवर पिराजी और भाई नामा दौड़ कर आये और बाजीराव चौधरी को देख कर चकित रह गये. सारी बात समझ में आ गयी, तब पिराजी नम्रतापूर्वक बोला— चौधरी, आज आधी रात को आप इस गरीब के घर पर आये! आज मोगरा भाभी का आपने सम्मान किया और आज ही. . .? चौधरी सारा गांव आपकी जय-जयकार कर रहा है कि बाजीराव दाजीसाहब के रास्ते पर चल रहे हैं. लेकिन आपको यह क्या सूझा? बाहर आपके रामू-शामू खड़े हैं. .

—पिर्या, ज्यादा बातें मत करो, मैं चौधरी हूं. . सरपंच हूं. . .फिर भी मैं मोगरा के घर आया हूं. . .उसे भी मेरा सम्मान करना चाहिए या नहीं? चौधरी शराब के नशे में बक रहा था.

चौधरी के पैर छूते हुए पिराजी ने अकुला कर कहा—चौधरी, हम गरीब हैं. . .छोटी जात वाले, पर हमारी भी आबरू है. हमारी आबरू को हाथ न लगाओ. आप ही ऐसा करने लगे तो हम कहां जायें? आपके पिता दाजी चौधरी आपको, हमको, सभी को कह गये हैं— तुम रावण मत बनो, राम बनो. . .!

—चुप! चौधरी का पारा चढ़ गया—मतलब यह तुम्हारी भाभी सीता है? और मैं रावण? पिर्या! जबान ज्यादा मत चलाओ वरना उसे जड़ से उखाड़ दूंगा! क्या समझते हो? सरकार में मंत्री भी हमारे घराने का है. मैं कुछ भी करूं, मेरा कौन क्या बिगाड़ सकता है! तुम देखना चाहते हो बाजीराव चौधरी की हिम्मत!

—चौधरी, ऐसा मत कहो. चौधरी-कुल को बट्टा मत लगाओ. माई-बाप की तरह हमारे रक्षक बनो!

—समझा. . .समझा! मुझे ज्यादा ज्ञान मत दे. सुन. . .सुन कान खोल कर, मुझे बाजीराव चौधरी कहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं! तेरी इस भाभी मोगरा को बेआबरू कर गांव भर में जुलूस नहीं निकाला, तो. . .

और चौधरी शराब के नशे में झूमते चले गये.

मोगरा क्रोध से भर उठी. देवर पिराजी और भाई नामा सांत्वना देने लगे. बेटा शिवाजी मां से चिपक कर रोने लगा.

रात भर बाजीराव चौधरी और उनके शागिद रामू-शामू को नींद नहीं आयी. बोतलों पर बोतलें फूट रही थीं. अलग-अलग योजनाएं बन रही थीं.

मोगरा को भी रात भर नींद नहीं आयी. वह बार-बार करवटें बदल रही थी. . .अब इस गांव में रहने में खतरा था. . .बरबादी. . .आबरू लिये बगैर यह लोग चुप नहीं बैठ सकते! कैसा है मेरा नसीब! भगवान, अब तू ही रक्षक है! क्या करूं? क्या जान दे दूं? फिर मेरे बेटे शिवाजी का क्या होगा? और कोई भाई नहीं!

दूसरे दिन शाम को मोगरा हमेशा की तरह नदी पर पानी लाने गयी. कंटीली झाड़ियों से हो कर नदी को रास्ता जाता था. मोगरा बावरी-सी चल रही थी. माथे पर मटकी थी. शिकार की टोह में छिप कर बैठे चौधरी के शागिद रामू-शामू एकदम उसके सामने आये और सेवरी का भुसा उड़ाते हुए बोले——रांड, हमारा भूसा चुरा कर ले जाती है? शाम के समय चोरी करती है? यह कह कर, सेवरी की छड़ियां निकाल कर उसे मारने लगे. मोगरा रोती-चिल्लाती रही, लेकिन गांव कुछ दूर था, किसीको सुनाई नहीं देता था.

शामू चिल्लाया——रांड, तुझे नंगा करके गांव में से तेरा जुलूस निकालेंगे! यह कह कर शामू ने उसकी साड़ी खींच ली. रामू ने चोली फाड़ डाली.

शर्म से मोगरा जमीन पर उलटी हो गयी. उसकी देह पर छड़ियों की मार जारी थी. उसने अकुलाकर कहा——शामू दादा. . .रामू दादा, मैं तुम्हारी धरम बहन हूं. . .मुझे मारो-- पीटो, पर मुझे बेआबरू मत करो. . .

——तू चमार और हम चौधरी . . .तू हमारी बहन कैसी? तेरा नंगा जुलूस निकालना है हमें! चौधरी को इनकार करती है? कौन है तू? चल, ऐसी नंगी चल, सारे गांव को देखने दे यह जुलूस . . .!

और जोर-जोर से वे उसे पीट रहे थे और खींच रहे थे. चौपाल की ओर घसीट रहे थे. . .घसीट रहे थे. . .

शर्म के मारे मोगरा ने गरदन झुका ली थी. शामू-रामू पूरी ताकत से उसके हाथ बांध कर, हाथों पर संभालते हुए उसे धकेल-धकेल कर चला रहे थे. बीच-बीच में वह शर्म से नीचे गिर जाती. नीचे गिरने पर वे लातें मार-मार कर उसे फिर उठाते. उसका सारा शरीर लहू-लुहान हो गया था. वह बेहोश ही थी.

सभी गांव वाले बेशर्मी से देख रहे थे, किसीके दिल में कोई कसक नहीं थी. मानवता की भावना किसीके मन में नहीं आयी, उलटे किसी ने कहा——चोरी करती है. . .ढेढ़-चंडाल बहुत सिर पर चढ़ गये . . .अच्छा किया, यह नंगा जुलूस ले जाओ चौपाल पर.

——लातों के भूत बातों से नहीं मानते! कोई बोला. किसी और ने कहा——बाजीराव चौधरी से हम कहते थे, ढेढ़-चंडालों को सिर पर मत बिठाओ, पैरों की जूती पैरों में ठीक है. इनसानियत की आबरू. . .

अचानक बूढा मुल्ला सामने से आया, वह तड़प कर चिल्लाया —— माइयो, ऐसा मत करो. . .औरत जात को ऐसा मत करो! चोरी की है, तो कोई दूसरी सजा दो, लेकिन औरत के साथ ऐसा वर्ताव मत करो. . .ये खुदा को मंजूर नहीं होगा. . .खुदा के लिए ऐसा मत करो!

—ऐ खुदावाले! हट बाजू. .! यह कहते हुए किसीने बूढे मुल्ला के सिर पर लाठी मार दी. उसे धकेल दिया. वह रास्ते के किनारे लुढ़क कर गिर पड़ा.

उसे देख कर एक स्कूली बच्चा चिल्लाया——बोलो छत्रपति शिवाजी महाराज की जय!

चौपाल पर सत्यशोधक समाज की सभा चल रही थी. बाजीराव चौधरी उसके अध्यक्ष थे. सत्यशोधक समाज के नेता दादा साहब देसाई भाषण कर रहे थे. आज महाराष्ट्र में मराठों का राज है. यह कैसे हुआ? कोल्हापुर के छत्रपति शाहू महाराज की पुण्याई से. . महात्मा जोतिबा फुले की सुधारक परंपरा से, यह हमें भूलना नहीं चाहिए. देश की स्वतंत्रता कायम रखनी हो, तो याद रखें, हम सब भारतीय एक हैं. भाई-भाई हैं. कोई अमीर नहीं, कोई गरीब नहीं, कोई ऊंच नहीं, कोई नीच नहीं. यह समता की, बंधुता की, मानवता की सीख हमें आत्मसात करनी चाहिए. इसके बिना देश का कोई भविष्य नहीं. नहीं तो. . .

अचानक सभा के एक कोने में खलबली हुई. दादा साहब की नजर वहां गयी. एक नंगी औरत उन्हें दिखाई दी और वह चिल्लाये ——यह क्या बात है?

——मोगरा चमारन है यह. . .भूसा चुराते हमने इसे पकड़ा है, इसलिए नंगा जुलूस निकाल कर हम इसे चौपाल पर लाये हैं. चौधरी, दो इसे सजा!

——केवल भूसा चुराने पर औरत का नंगा जुलूस निकाला? और सारे गांव वालों ने देखा? आपसे देखा कैसे गया? अरे, तुम इनसान हो या शैतान? शैतान भी इतना नीच काम नहीं करेगा! बाजीराव, आप हैं इस गांव के चौधरी. . .दाजी चौधरी का यह गांव. . .एक मंत्री महोदय का गांव. . .इस गांव में एक गरीब स्त्री की ऐसी बेइज्जती? क्या इनसानियत मर गयी है?. .

दादा साहब नीचे गिर पड़े. बाजीराव चौधरी अपराधी मुद्रा में उन्हें पंखा झलने लगे. सभा में गड़बड़ी मच गयी. किसीने मोगरा के शरीर पर कंबल डाल दिया. पिराजी ने मोगरा को वहां से झट उठा लिया.

और उसी दिन आधी रात को बेटे शिवाजी को साथ ले कर आंसू भरी आंखों से मोगरा ने वह गांव छोड़ दिया. जनम भर के लिए इतनी बेआबरू हो गयी थी कि अब गांव में किसीको मुंह नहीं दिखा सकती थी. सूरज उगने के पहले वह उस गांव से दूर, बहुत दूर चली जाना चाहती थी. कहां? कहां? अंधेरे से उजाले की ओर या अंगारों से कहीं दूर कांटों में. . .?

फिर भी मां-बेटे हाथ-में-हाथ डाले चल रहे थे अपमान के संताप से जलते हुए. . .आवेश से तपते हुए आगे. . .आगे चले जा रहे थे. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्युशाला

गंगाधर पानतावणे

(परदे के पीछे घंटा बज रहा है. घंटा बजते समय परदा खुलता है. घंटा बजाने वाला काला-कलूटा पुरुष रंगमंच पर दिखलाई देता है. केवल उसके चेहरे पर प्रकाश है. घंटा बजाने पर. . .)

कमंडलु : सज्जनो, मेरा नाम है कमंडलु. यह है मृत्युशाला. इसे हम मृत्युदेवता का दरबार कहते हैं. मैं हूं इस शाला का एक अंग. मुझे असंख्य लोगों की जानकारी रखनी पड़ती है, अर्थात पृथ्वीलोक से आये हुए लोगों की. यहां किसी को भी तुच्छ नहीं देखा जाता. किसी का अहंकार, किसी की अमीरी, किसी की विद्वत्ता, किसी का अधिकार, यहां कुछ भी काम नहीं आता. पाप और पुण्य का विचार हम यहां गौण मानते हैं. यहां की आत्माओं की अपनी एक अलग ही दुनिया है. उसमें सभी आत्माएं रम जाती हैं. स्वयं को भूल जाती हैं. लेकिन एक मजे की बात बताऊं आप को—— यहां आत्माएं कभी-कभी पृथ्वीलोक के जीवन पर विचार करने लगती हैं. गतकालीन सुख-दुख की याद करने लगती हैं. और फिर चिढ़ती हैं, गुस्सा करती हैं, रोती हैं, हंसती हैं, लेकिन यह सब कुछ होता है एक क्षण मात्र के लिए. जीवन के बारे में विचार करना कितनी अजीब बात होती है! देखिए न, मृत्यु के बाद भी उसका स्मरण हो आता है. इस मृत्युशाला में कितनी घटनाएं, कितने प्रसंग! एक-एक अपने-आप में विचित्र! यहां अमीर हैं, गरीब हैं, डॉक्टर हैं, वकील हैं, प्राध्यापक हैं, अधिकारी हैं और न जाने कितने प्रकार के लोग हैं, किंतु सब-के-सब अतृप्त. मैंने कहा न, उनकी अपनी एक दुनिया होती है. बिल्कुल सही है यह बात. (एक पंछी आवाज करते हुए ऊपर से निकल जाता है.) हां, अब रात्रि का मध्याह्न हो गया है. मृत्युदेवता के पधारने का समय हो चुका है. (कमंडलु घंटा बजाता है और हथौड़ी कंधे पर रख कर खड़ा हो जाता है. इतने में घोड़े पर बैठने का अभिनय करते हुए एक काला-कलूटा व्यक्ति——मृत्युदेवता—— प्रवेश करता है. प्रविष्ट काला व्यक्ति—— मृत्युदेवता—— कोने में खड़ा हो जाता है. एक दूसरा काले रंग का व्यक्ति आ कर घोड़े को अश्वशाला में ले जाने का अभिनय करते हुए वहां से निकल जाता है.)

मृत्युदेवता : कमंडलु!

कमंडलु : आज्ञा, महाराज!

मृत्युदेवता : दरबार का कोई नया समाचार?

कमंडलु : सब कुछ शांत है, महाराज! यह कोई, धरती पर के मदोन्मत्त राजा का दरबार थोड़े ही है, यह तो मृत्युदेवता का दरबार है!

मृत्युदेवता : बस. . . बस, यह तुम्हारी स्तुति हमें अकसर मोह में खींचती है. हम पूछते हैं, अतृप्त आत्माएं शांत हो गयीं न?

कमंडलु : महाराज, पृथ्वी पर जिंदगी बिता कर आने वालों की आदतें एकदम थोड़े ही समाप्त होने वाली हैं! मृत्युशाला की आदतें डालने में उन्हें कुछ समय तो लगेगा ही.

मृत्युदेवता : हां, हां, तुम्हारे कथन में निश्चय ही सचाई है. लेकिन कमंडलु, उन सबके मानस तो ठीक हैं न? किसी के मन का संतुलन तो नहीं गया. . .?

कमंडलु : वैसे तकलीफ तो होती है कुछ को.

मृत्युदेवता : क्या कहते हैं वे?

कमंडलु : महाराज, धरती उनके पैर के नीचे थी, ऐसी भावना है हरेक की. कुछ नमूने देखिए, महाराज! उनमें से वह जो भूरी आंखों की ऊंची-सी, दुबली-पतली औरत है, कहती है, मैं झांसी की रानी हूं. वह मुच्छड़ हृष्ट-पुष्ट आदमी कहता है, मैं राव बाजी पेशवा हूं. और दिन भर ब्राह्मणभोज के बारे में बोलता रहता है. उनमें से एक कहता है, मैं गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक छत्रपति शिवाजी हूं. एक आग्रह करता है कि मुझे लोकमान्य तिलक कहो. (हंसते हुए) मजे की बात तो यह है कि वह सुरवार वाला औलिया कहता है, मैं कोंडाणा किला हूं. किस-किसको समझाया जाये!

मृत्युदेवता : अच्छा, तो यह मृत्युशाला फिलहाल धरती का अजायबघर ही बन गयी है! इन सब की विवरण-पत्रिका तो तैयार है न?

कमंडलु : हां, महाराज (थोड़ा-सा अस्वस्थ हो कर).

मृत्युदेवता : अंदर से यह कैसी आवाज आ रही है?

कमंडलु : पृथ्वीलोक का ईर्ष्या-द्वेष यहां फिर शुरू हो गया होगा.

मृत्युदेवता : लगता है, पृथ्वीलोक वाला अपना घमंड अभी तक ये भूले नहीं हैं. शोर मचाने वालों को अभी दरबार में हाजिर करो.

कमंडलु : जैसी आज्ञा, महाराज. (रंगमंच पर अंधेरा हो जाता है. फिर धीरे-धीरे प्रकाश. एक आसन पर मृत्युदेवता बैठे हैं. कमंडलु घंटा बजाता है. मथुरा तेजी से रंगमंच पर प्रवेश करती है.)

मृत्युदेवता : आइए, आपका स्वागत है.

मथुरा : पुरुषों द्वारा किया हुआ किसी स्त्री का स्वागत मुझे पसंद नहीं है.

मृत्युदेवता : किससे बात कर रही हैं, आप यह जानती हैं न?

मथुरा : आप भी शायद जानते होंगे कि आप किससे बात कर रहे हैं. इस आत्मा को मथुरा के नाम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है. ब्राह्मणकुलोत्पन्ना. देवता के गोठण की, जिला रत्नागिरि की रहने वाली. . .

मृत्युदेवता : आप अत्यंत सुखी परिवार की हैं न?

मथुरा : जी हां. पिता शास्त्री. बाल्यावस्था तथा युवावस्था सुख में बीती. पिता धर्मपरायण थे, इसलिए सब कुछ ठीक रहा. हम छुआछूत मानते थे. दक्षिणा लेते थे. पोथीनिष्ठा हमने जिंदगी भर बनाये रखी. पूजापाठ आदि भी. कितने प्रवाह, कितने चढ़ाव-उतार. मैं बड़ी हो गयी तो मुझे माता-पिता ने एक कसाई के गले में बांध दिया.

मृत्युदेवता : कसाई के गले में?

मथुरा : कसाई नहीं तो और क्या! ब्राह्मण हो कर भी कसाई ही था वह. माता-पिता की इच्छा का विरोध न कर सकी मैं. चुपचाप पति को स्वीकार किया. व
मुझे किसी से भी सुख प्राप्त नहीं हुआ. एकदम असह
बन गयी. जलती रही. पति ने मेरी भावनाओं को मह
नहीं दिया. सुसंस्कृत खानदान की थी मैं, इसलिए चुप र
किसीको कभी कष्ट नहीं दिया मैंने.

मृत्युदेवता : मथुराबाई, फिर पति की हत्या व
की आपने?

मथुरा : (हिचकियां भरती हुई) महाराज, ऐ
घटित हुआ है मेरे हाथ से. लेकिन करती भी क्य
देव-ब्राह्मण के सामने ली गयी सौगंध को तोड़ दे
पड़ा मुझे. उसके सिवा कोई दूसरा रास्ता ही नहीं थ
वह मेरी छाती पर मेरे ही घर में एक औरत ले आ
मैं कैसे सहन करती यह सब! (हिचकियां) ए

अडवानी आर्किकान के सौजन्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणकुल पुरुष ने एक नीच क्षत्रिय कुल की स्त्री से संबंध रखा और वह भी खुले आम. छि: छि !

मृत्युदेवता : लेकिन क्षत्रिय...

मथुरा : क्या क्षत्रियकुल हीन कुल नहीं होता? या वर्ण व्यवस्था का कोई अर्थ नहीं ? वर्ण-व्यवस्था निर्माण की भगवान कृष्ण ने. यह बात गीता में स्पष्ट कही गयी है. कृष्ण थे अनार्य. लेकिन हम आर्यों ने उन्हें अपना मान लिया. इतनी विशाल दृष्टि और कहां मिलेगी! कृष्ण की गीता मालूम है न आपको? अर्जुन युद्ध नहीं करना चाहता था. वह बुद्धिमान था. उसे वर्ण-संकर का डर था. और हमारे पति एक नीच परस्त्री से संबंध रखने लगे थे. कितना घोर पाप !

मृत्युदेवता : पाप?

मथुरा : पाप नहीं तो और क्या! सब कुछ अपनी आंखों से देखा है मैंने. कुछ भी शेष नहीं रखा था उन्होंने.

मृत्युदेवता : (कमंडलु से) कमंडलु, मथुराबाई के पति को बुलाओ. (कमंडलु घंटा बजाता है. भाल पर टीका, धोती, आंखों पर ऐनक, सिर पर टोपी, कोट पहने व्यक्ति का प्रवेश.)

मृत्युदेवता : मथुराबाई, पहचानती हैं न इन्हें? (मथुराबाई चुप रहती हैं.)

व्यक्ति : लेकिन मैं पहचानता हूं इसे. मेरी धर्मपत्नी. इसी ने हत्या की थी मेरी. मैं ने कितना सहन किया. लेकिन महाराज, सहनशक्ति की भी कोई सीमा होती है. इसने...

मथुरा : (गुस्से में) आपकी हरकतें मैंने चलने नहीं दीं, यही न? हीन खानदान की औरत के साथ कुछ करते समय कुछ भी बुरा कैसे नहीं महसूस हुआ आपको?

नरसोपंत : अरेरे, यह क्या बोल रही हो मथू! वह असहाय प्रौढ़ औरत...

मथुरा : शरीर-संबंध के लिए उम्र की कोई शर्त नहीं होती. कितनी धूल झोंकोगे मेरी आंखों में !

नरसोपंत : उससे मेरा शरीर-संबंध ? वह मेरे दोस्त की विधवा बहन थी. आश्रम में देने की दृष्टि से मैं उसे अपने घर ले आया. इसमें मेरा क्या अपराध? तुम तो जानती ही हो, उसका अपना नजदीक का कोई रिश्तेदार नहीं था.

मथुरा : इसका मतलब यह तो नहीं था न कि आप रात्रि के समय उसके कमरे में जाते रहें.

नरसोपंत : कितना झूठ बोलती हो तुम. तुम्हारे कमरे के सिवा और किसी औरत के कमरे में कभी प्रवेश नहीं किया मैंने, तुम्हारी कसम लेकर कहता हूं.

मथुरा : झूठ! एकदम झूठ! मृत्यु के बाद भी मेरा मजाक ! मेरा भाग्य ही बुरा है !

मृत्युदेवता : यहां भाग्य की बात कहने से कोई लाभ नहीं मथुराबाई.

मथुरा: महाराज, मेरे पिताजी ने कभी महार-मांगों की छाया तक पड़ने नहीं दी मुझ पर. मैंने भी ऐसा ही किया. और इन्होंने? इन्होंने किसी भी प्रकार के बंधन का पालन नहीं किया. अपना अस्तित्व, अपना व्यक्तित्व, अपना धर्म, अपना कर्तव्य, किसी की भी चिंता नहीं की इन्होंने. इतना ही नहीं इन्होंने एक महार के लड़के को संस्कृत पढ़ायी.

नरसोपंत : महार भी मानव ही होता है न ! क्या एकनाथ महाराज ने महार के बच्चे को कंधे पर नहीं उठा लिया था?

मृत्युदेवता : नहीं, महार के बच्चे को कभी कंधे पर नहीं उठाया. एकनाथ ने. यह घटना झूठ है.

नरसोपंत : वह कुछ भी हो, किंतु महार के बच्चे को मैंने संस्कृत पढ़ायी है. इसमें किसी भी प्रकार की गलती नहीं लगती मुझे.

मथुरा : महार के बच्चे को संस्कृत पढ़ाकर हमारी देववाणी को भ्रष्ट किया है आपने!

नरसोपंत : संस्कृत पढ़ाने से क्या वह भाषा भ्रष्ट हो सकती है ? फिर भ्रष्ट भाषा को देववाणी कैसे कहेंगे? कितनी झूठी कल्पना है तुम्हारी !

मृत्युदेवता : कमंडलु, इस विषय से संबंधित सायनक को दरबार में हाजिर करो.

कमंडलु : जो आज्ञा महाराज! (कमंडलु घंटा बजाता है. घंटा बजते ही एक काला व्यक्ति सायनाक, उम्र पच्चीस, प्रणिपात करके हुए प्रवेश करता है.)

सायनक : जोहार, माईबाप, जोहार!

मृत्युदेवता : हमारे दरबार में यह जोहार मंजूर नहीं है हमें.

सायनक : गलती हो गयी, महाराज! क्षमा कीजिए. बेअदबी के लिए सजा भोगने के लिए तैयार हूं मैं. सजा भोगने की आदत है महाराज हमें.

मृत्युदेवता : लेकिन सजा देने की आदत नहीं है इस दरबार को. मैंने सुना है, तुमसे कोई गुनाह हुआ है. संस्कृत देवभाषा है, यह जानते हो तुम ?

सायनक : जी हां, महाराज, हमें ऐसे बताया गया है.

मृत्युदेवता : मथुराबाई का आरोप है कि नरसोपंत से तुमने संस्कृत सीख कर, मनू का कानून भंग किया है. तुम्हारा क्या कहना है?

मथुरा : वह क्या कहेगा, मैं कहती हूं, ब्राह्मण बनना चाहता था यह ! कलियुग में शूद्रों के लिए कोई बंधन ही नहीं रहा है ! लेकिन कौआ कभी हंस थोड़े ही बन सकता है !

सायनक : माताजी, आप कठोर बोल रही हैं. कितनी निर्दयता से आघात कर रही हैं !

मथुरा : निर्दयता! शूद्रों के साथ क्या कभी सौम्य भाषा में बोला जाता है ?

मृत्युदेवता : मथुराबाई , हमारे दरबार में सब आत्माओं का समान स्थान है . ब्राह्मण और शूद्र में भेद नहीं मानते हम. सायनक , मथुराबाई द्वारा लगाये गये आरोपों के संबंध में कुछ कहना है तुम्हें ?

सायनक : महाराज, ज्ञानपिपासा को भी क्या कभी बंधन लगाया जा सकता है? संस्कृत पढ़ने की, सीखने की खूब इच्छा थी मेरी . नरसोपंत मिले मुझे. धन्य हो गया मैं. ज्ञान के द्वार बंद थे. मेरे माता-पिता के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद शब्द वर्ज्य था. वेद शब्द ... पढ़ने पर भी कड़ी से-कड़ी सजा होती थी उन्हें. नरसोपंत ने धीरज दिया मुझे. वेद यानी ज्ञान. यह ज्ञान एक को स्वेच्छा से मिले और एक को बिलकुल नहीं...

मथुरा : (गुस्से में) सायनाक ...(क्षण भर के बाद) अरेरे.! मेरी जिह्वा भ्रष्ट हो गयी! शास्त्राज्ञा पर-पुरुष का नाम नहीं लेना चाहिए हमें. और यह है शूद्र! अब प्रायश्चित करना पड़ेगा मुझे! महाराज प्रायश्चित लेने के लिए क्या मुझे ब्रह्मवृंद उपलब्ध होगा?

मृत्युदेवता : मथुराबाई, ऐसा ब्रह्मवृंद अपने दरबार में हम नहीं रखते. पृथ्वी पर की प्रायश्चित की भाषा वर्ज्य मानते हैं यहां हम. नरसोपंत, मथुराबाई के बारे में कुछ कहना है आपको?

नरसोपंत : क्या-क्या कहूं! कितना कहूं! इसके शास्त्र से तंग आ गया था मैं. मरते दम तक इसने तकलीफ दी मुझे. यह नहीं खाना, वह नहीं खाना, यह विधि करना, वह विधि नहीं करना. इस दिशा की ओर मुह करना, उस ओर नहीं करना, इसे दान करो, उसे मत करो. और मैं आधुनिकता में विश्वास करने वाला मानव. समय के साथ मानव को बदलना चाहिए, यह मेरा मत. मेरा हर एक कार्य इसे भ्रष्ट लगता था और इसलिए... (अस्वस्थ हो जाता है.)

मृत्युदेवता : एकदम क्यों रुक गए, नरसोपंत?

नरसोपंत : और इसने खाने में जहर दे दिया मुझे.

मथुरा : जहर नहीं तो क्या अमृत देती! धर्म का नाश करने वालों के लिए इससे कम और कोई सजा नहीं थी.

नरसोपंत : मनु ने भी ब्राह्मण को देहांत की सजा नहीं बतायी, मथू!

मथुरा : लेकिन तुम्हारा आचार-व्यवहार ब्राह्मण जैसा था ही नहीं. शूद्र को लजाने जैसा था.

सायनाक : माताजी, हमारी जाति का उद्धार करने में ही आपको धन्यता महसूस होती है क्या? यह सहन नहीं करेंगे हम. प्रजातंत्र ने भाषण तथा मत की स्वतंत्रता दी है हमें, आंबेडकर बाबा ने अपने स्वाभिमान की सीख दी है हमें, यह कैसे भूल सकता हुं मैं!

मथुरा : कौन आंबेडकर?

सायनाक : आप कैसे समझेंगी यह! मनु के झंडे को सलाम करनेवाला मानव नहीं था वह (रौद्र हास्य हंस कर, क्रोध से बोलने लगता है) मानव की प्रतिष्ठा खत्म करनेवाला, मानव को पैरों तले कुचल डालने वाला वह मनु. मनु के केवल स्मरण मात्र से मेरे शरीर में अग्नि निर्माण होती है. आंबेडकर बाबा ने मनुस्मृति जलायी. क्यों जलायी, कोई करता है इस पर विचार?

मथुरा : मनुस्मृति जलाने से क्या होगा! हमारे मानस तो बदल नहीं सकेंगे कभी.

सायनाक : यही तो जीत है मनु की. गीता के आत्मा जैसे शास्त्र से काट नहीं सकते मनुस्मृति को. अग्नि भी जला नहीं सकती उसे. मात्र चमत्कार हुआ. एक चमत्कार ही कहूंगा उसे मैं. संघर्ष करने, अन्याय के विरोध में लड़ने को तैयार हुए हमारे मानस.

नरसोपंत : सायनाक, आंबेडकर को जानता था ... उनकी एक सभा में भी उपस्थित था मैं. प्रचं... था वह मानव. उसकी वाचा में अंगार था. सारा समा... बदल दिया उस महापुरुष ने.

मथुरा : आप चुप बैठिए, शूद्रस्तुति करना ध... शास्त्र में मना है. आंबेडकर के पागलपन से बहक ग... आप भी!

सायनाक : महाराज, धर्म की इस बेड़ी से मान... घुटन-सी महसूस करता रहा. अध्यात्म से प्रेम करनेवा... इस देश ने कभी मानव को पहचाना ही नहीं.

मृत्युदेवता : सायनाक, तुम्हारी वेदना समझ सकत... हूं मैं, लेकिन इसका कोई इलाज नहीं.

सायनाक : महाराज मैंने इस देश को अंतःकरण... प्रेम किया है. देश को छोड़ कर जाने की बात सोची ... नहीं. यहीं पर हमारे पुरखों ने जिंदगी बितायी. इस दे... को अपना माना. किंतु इस देश की पुरोहितशाही ने पंख... हीन कर दिया मुझे. मिली मुझे केवल दासता. दास... को कौन स्वीकार करेगा? लेकिन हुआ वही. मे... हजारों पीढ़ियों ने चुपचाप स्वीकार किया उसक... अब जाग गयी है पीढ़ी मेरी. उसे अपने अभिमान ... पंख निकले. जीवन का अर्थ समझ में आया. अप... दासता से मुक्ति के लिए सब कुछ करने को तैयार ... गये हम. क्रांति को आलिंगनबद्ध किया हमने. यह स... कुछ हुआ, लेकिन आज भी अपनी पुरानी परंपरा क... पालन करने में गौरव मानता है यह मेरा देश! (थोड़... देर शांति, फिर अंदर से शोर.)

मृत्युदेवता : कमंडलु, फिर शोर आरंभ हुआ ... देखो, क्या चल रहा है अंदर (कमंडलु बाहर जाता है... सायनाक, तुम्हारा दर्द मैं समझ सकता हूं. शोषण औ... दुःख की भी एक मर्यादा होती है, लेकिन पृथ्वीलो... को उसकी कोई चिंता नहीं! (कमंडलु आता है.)

कमंडलु : महाराज, क्षत्रिय और वैश्य का संघ... चल रहा है. क्षत्रिय कहते हैं, हम श्रेष्ठ हैं, और वैश्य कहते... हैं हम.

मृत्युदेवता : उनके नेताओं को दरबार में हाजि... करो.

कमंडलु : जो आज्ञा, महाराज! (घंटा बजाता है... अमरसिंह और पुरुषोत्तम का प्रवेश)

मृत्युदेवता : (उन्हें संबोधित कर) मृत्युशाला मे... आपको कोई असुविधा हुई है क्या?

अमरसिंह : महाराज, यह कहता है, मैं क्षत्रिय से श्रेष्ठ हूं.

पुरुषोत्तम : महाराज, हम वैश्य हैं. देश को आर्थिक मजबूती हमी ने प्राप्त करायी, व्यापार पर ही कोई देश जीता है. शिवाजी महाराज साहूकारों को हमेशा खुश रखते थे. किंतु ढाल-तलवार को यह कहां मालूम!

अमरसिंह : ढाल-तलवार की उपेक्षा करने से तराजू बड़ी महत्ता प्राप्त नहीं कर सकती, पुरुषोत्तम. ब्राह्मण के बाद क्षत्रिय ही श्रेष्ठ है. हम देश के लिए लड़ते हैं. मर मिटते हैं. तुम पेट के लिए लड़ते हो. इस

(आगे पृष्ठ ४० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबिरा खड़ा बजार में (१५)

• हरिशंकर परसाई

इस बार कबीर की भेंट राजनारायण सिंह से

कबीर घबड़ा उठा. मैंने कनछेदी से कहा—अरे कनछेदी गजब हो गया. राजनारायण सिंह की चिट्ठी आयी है. लिखा है—क्यों बे कबीर के बच्चे, तू सबसे मिल रहा है, पर अभी तक मेरे पास क्यों नहीं आया? मैं भी काशी का और मैं भी काशी का और तू काशी वाले राजनारायण से नहीं मिला. ७–८ दिन में मैं ही तेरे घर आता हूं. या तो तुझे पीटूंगा या तेरे दरवाजे पर अनशन कर दूंगा.

कनछेदी ने कहा—कबीरदास पहली गाड़ी से जाओ. अगर वह यहां आ गया तो पता नहीं इस मुहल्ले का क्या होगा! वह इस किस्म का आदमी है कि— उलट-पलट लंदा सब जारी.

कबीर काशी पहुंचा और राजनारायण का दरवाजा खटखटाया तो भीतर से आवाज आयी—ठहर न बे ! हम दंड पेल रहे हैं.

* *

कबीर बाहर बैठा रहा. थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला और राजनारायण ने कहा—अब आओ. वे पसीने से लथपथ थे.

मैंने कहा—मैं कबीरदास हूं. आपकी चिट्ठी मिली तो एकदम भागा चला आया. पर आपने इतनी कठोर और क्रोधभरी चिट्ठी मुझे क्यों लिखी?

राजनारायण ने कहा—जब वह चिट्ठी लिखी, तब मेरा 'मूड' बहुत खराब था. उस दिन संसद में इस इंदिरा के बिगड़ैल बेटों ने मुझे बोलने नहीं दिया था. बार-बार 'हूट' करते थे. गुस्से में था इसलिए वैसी चिठ्ठी लिख दी होगी.

मैंने कहा—आप हिंदीभक्त हैं, मगर 'मूड' और 'हूट 'अंगरेजी' शब्द बोलते हैं.

राजनारायण ने कहा—इस रानी इंदिरा के रहते हिंदी कहां पनप सकती है ? मगर डाक्टर साहब (डा. लोहिया) भी 'रिपोर्ट' की हिंदी 'रपट' बना लेते थे.

मैंने कहा—तभी आप लोग रपट गये. पार्टी के हिस्से हो गये. आप लोकदल में चले गये. खैर, इस उम्र में भी आप इतने दंड पेलते हैं?

राजनारायण ने कहा—दंड पेले बिना संसदीय कर्म कैसे होगा? अभी तो मुझे शीर्षासन करना है.

और वे शीर्षासन करने लगे.

निपटे तो बोले—शीर्षासन का राजनीतिक फायदा यह है कि इसमें हर चीज उलटी दिखती है. और सफल राजनीति के लिए चीजें उलटी दिखना जरूरी है.

कबीर ने कहा—तो आपकी राजनीति यही है कि सीधी चीजें उलटी दिखें?

राजनारायण ने कहा—और क्या? सीधा ही दिखे तो राजनीति क्या हुई? जब कभी लिमये या जार्ज सीधा देखने लगते, मैं डांट देता—ए, उलटा देखो, वरना पार्टी से निकल जाओ.

वे बाथरूम गये. लौटे तो थाली में जलेबियां ले आये. खाने बैठे तो पूछा—कबीर, जलेबी खाओगे?

मैंने कहा—नहीं, आप खाइये !

राजनारायण ने क्रोध से कहा—अबे खा साधु, नहीं तो एक झापड़ा मार दूंगा! सिर्फ तीन जलेबी लेना, वरना मेरी खूराक कम पड़ जायगी.

कबीर ने तीन जलेबियां लीं और घबड़ा कर निगल गया.

जलेबी खा कर राजनारायण भीतर गये और दूध का लोटा ले आये. भाप निकल रही थी. वे पीने को हुए, तो मैंने कहा—भाप निकल रही है. थोड़ा ठंडा कर लीजिए.

राजनारायण ने कहा—कुनकुना दूध कायर पीते हैं. उनकी राजनीति कुनकुनी होती है. डाक्टर साहब उबलती हुई राजनीति पीते थे, मैं उबलता हुआ दूध पीता हूं. साधु, तुम आसन, ध्यान, योग वगैरह करते हो?

कबीर ने कहा—नहीं करता. अपना तो यह है कि—

साधो, सहज समाधि भली,
जहं-जहं डोलौं सोइ परिकरमा,
जो-जो करौं सो सेवा,
जब सोवौं तब करौं दंडवत,
पूजौं और न देवा।

राजनारायण ने कहा—अरे, काशी में रह कर यह सब नहीं किया? तभी तो 'द्विज' तुमसे नफरत करते थे.

कबीर ने कहा—हां यह सही है. पर मैंने भी तो द्विजों की चमड़ी उधेड़ी है.

राजनारायण ने कहा—और यही मैं भी करता हूं. द्विजों की चमड़ी उधेड़ता हूं. डाक्टर साहब 'वर्ण संघर्ष' पर बड़ा जोर देते थे. पर पता नहीं जोशी-फोशी जैसे 'द्विज' पार्टी में कैसे आ गये?

कबीर ने कहा—तुम तो डाक्टर लोहिया को बात-बात में इस तरह याद करते हो, जैसे कोई विधवा भावुक हो कर कहती है—वे कहते थे कि बिब्बो, तुम्हें नीली साड़ी बहुत अच्छी लगती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनारायण ने कहा—अपनी प्रकृति के अनुसार कबीर तुमने उदाहरण ऊटपटांग दे दिया. पर सच है कि डाक्टर साहब राम थे, और मैं उनका हनुमान था. एक बार लिमये से उनके कुछ मतभेद हो गये, तो मैंने उन्हें लिखा कि मैं लिमये को ठीक कर दूंगा.

जो राउर अनुशासन पावौं,
कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ।

ऐसा हमारा संबंध था. तुम ठीक कहते हो. तुमने अपने को 'राम की बहुरिया' कहा है, हम डाक्टर साहब की बहुरिया थे. रुको, तुम्हें चाय पिलाता हूं.

★ ★

उन्होंने चाय बुलवाई. मेरे लिए कप-बसी में और अपने लिए केतली में. मैं चाय पीने लगा. पर देखता क्या हूँ कि केतली की टोंटी नाक में लगाकर वे नाक से गरम चाय पी गये.

मैंने कहा—कमाल है! गर्म चाय नाक से पीते हो.

राजनारायण ने कहा—और नहीं तो क्या? चाय ठंडी करके मुंह से पीऊं तो मेरा नाम राजनारायण सिंह कैसे होगा? और समाजवादी क्रांति कैसे आयेगी? अरे साधु, समाजवाद फूंक-फूंक कर नहीं पिया जाता. वह उबलता हुआ उड़ेला जाता है.

इतने में एक आदमी कोई शिकायत ले कर आया. राजनारायण ने शिकायत सुनी और गुस्से में कहा—मुझसे क्यों शिकायत करते हो? जाओ अपनी उसी दिल्ली वाली रानी के पास. वोट उसे दोगे, प्रधान मंत्री उसे बनाओगे और शिकायत मुझसे करोगे! जाओ, पहले उससे इस्तीफा दिलाओ, तब मुझसे बात करो.

राजनारायण ने एक फूहड़ शब्द भी कहा था, जो छपने लायक नहीं है.

वह आदमी भाग खड़ा हो गया.

मैंने कहा—जन समस्याओं का हल क्या आप इसी तरह करते हैं?

राजनारायण ने कहा—हां, ये हरामजादे वोट तो उसे देंगे और अपनी तकलीफ राजनारायण से कहेंगे.

कबीर ने पूछा—प्रधान मंत्री से आप लोग इतना क्यों चिढ़ते हैं?

राजनारायण ने कहा— यह नेहरू खानदान है. इस नेहरू खानदान ने देश का नाश कर दिया.

कबीर ने पूछा—मोतीलाल नेहरू ने भी?

राजनारायण ने कहा—मोतीलाल नहीं, मोतीलाल के परदादों ने भी. यह खानदान ही विनाशकारी है. जब तक यह खानदान राजनीति में है, तब तक देश का नाश होता रहेगा. डाक्टर साहब कहते थे कि इस जवाहरलाल नेहरू ने हमारी क्रांतिकारिता को मार डाला.

कबीर ने कहा—पर क्रांतिकारिता एक क्या, सौ नेहरुओं से नहीं मरती.

राजनारायण ने कहा—तभी तो राजनारायण अभी भी चौबीसों घंटे क्रांतिकारी है. बताऊं?

और वे उचककर अलमारी पर चढ़ गये और टेबल पर कूद पड़े. कहा—देखा, ये है लगातार क्रांति!

कबीर ने पूछा—संसदीय जीवन आपका कैसा है?

राजनारायण ने कहा—अरे, मेरा संसदीय जीवन बहुत पुराना है. मेरी तारीफ ब्रिटेन के प्रधान मंत्री एटली ने भी की थी. मैं तब उत्तर प्रदेश विधान सभा का सदस्य था. एटली विधान सभा की कार्यवाही देख रहे थे. मैं पूरे 'मूड' में था— संसदीय' 'मूड' में. मैं कुर्सी के ऊपर खड़ा हो गया और चिल्लाने लगा. अध्यक्ष ने कहा—बाहर निकल जाओ तो मैं कुर्सी के नीचे घुस गया. अब विधान सभा के गार्ड मुझे बाहर निकालने की कोशिश कर रहे हैं और मैं निकल नहीं रहा हूं. बड़ा मजा आया! बाद में एटली ने तारीफ की. नेहरू से कहा—आपकी विधान सभा तो बड़ी जीवंत है. हमारी

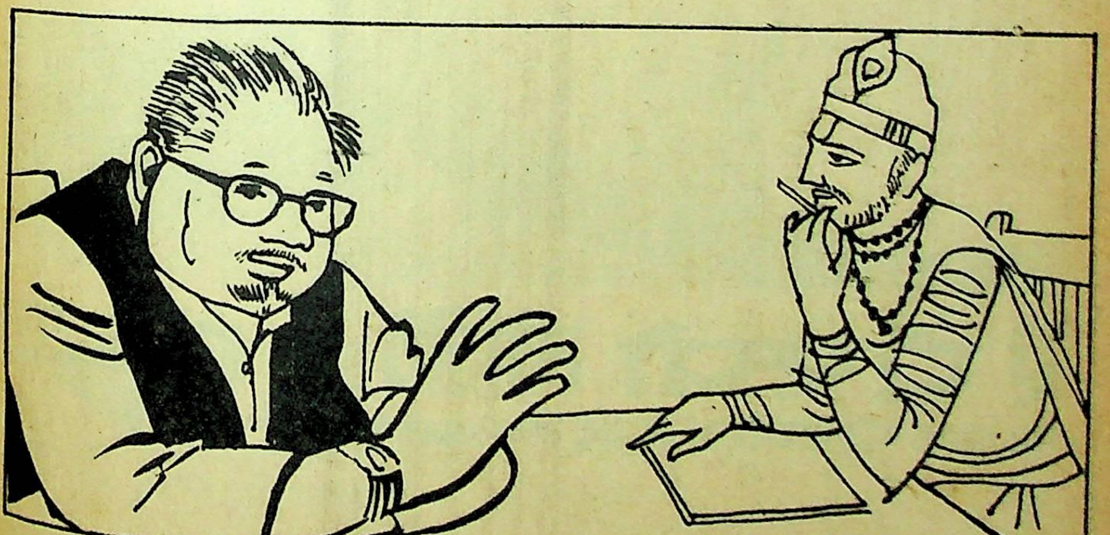

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कई खुशियों के पल होते हैं

सरदर्द को आपकी खुशियां बिगाड़ने न दीजिये

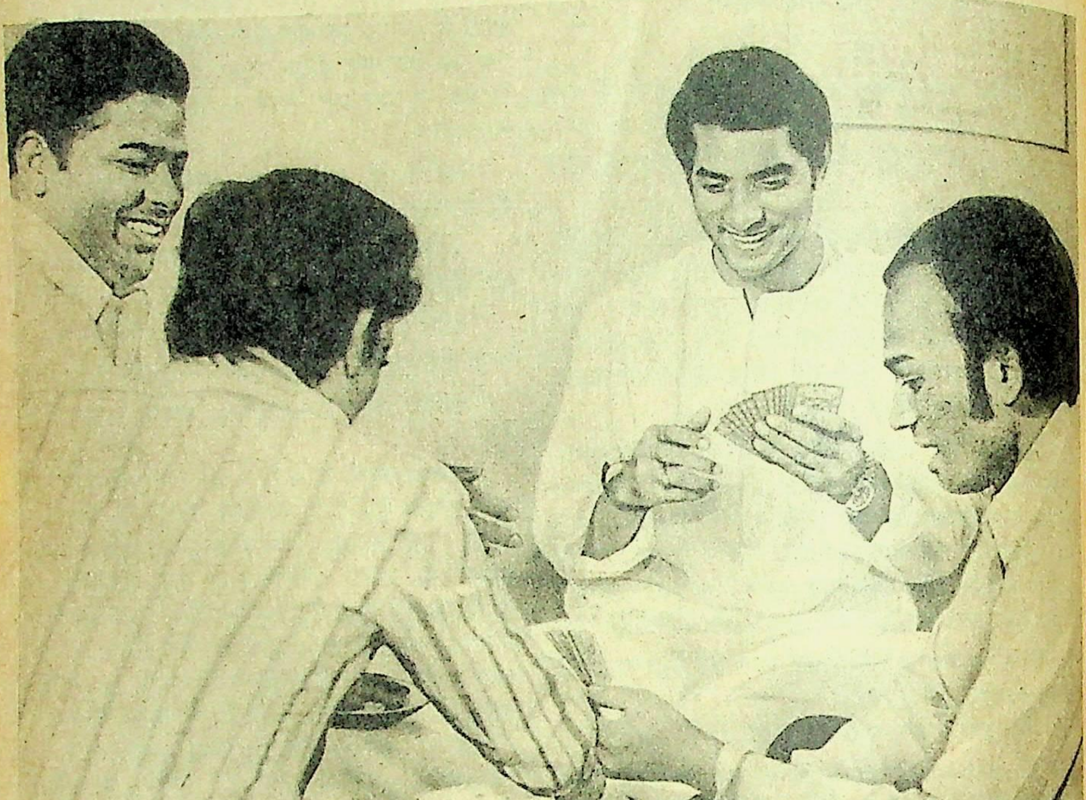

२ ऐस्प्रो लीजिये

ASPRO

माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो दर्द को जल्दी खींच निकालता है

ASPRO
Nicholas

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसद के अधिवेशन बड़े नीरस होते हैं.

कबीर ने पूछा—[illegible] यह तारीफ थी?

राजनारायण ने कहा—और नहीं तो क्या था?

मैंने कहा—अरे पहलवान, यह व्यंग्य था, मजाक था कि हमारी संसद में गंभीर विचार होते हैं और तुम्हारे यहां हुल्लड़!

राजनारायण ने कहा—तुम मूर्ख हो! कुछ नहीं समझते, वह मेरी तारीफ थी इसीलिए अपने इस संसदीय कार्य को मैं चालू रखे हुए हूं. अध्यक्ष कहता है—बैठ जाओ, मैं नहीं बैठता. अध्यक्ष कहता है—निकल जाओ, मैं नहीं निकलता और कुर्सी के नीचे घुस जाता हूं.

कबीर ने पूछा—क्या तुम संसद की कार्यसूची पढ़ते हो? संसद में उठने वाले विषयों का अध्ययन करते हो?

राजनारायण ने कहा—यह सब वे बुद्धू लिमये और जार्ज करते हैं. बैठे हैं. पढ़ रहे हैं. सोच रहे हैं. अपना यह है कि दंड पेले, जलेबी खाई, दूध पिया और संसद में पहुंच गये. और जो भी विषय उठा, उसी पर चिल्लाने लगे. मेरे फेफड़े बहुत ताकतवर हैं. विषय से अपने को मतलब नहीं. विषय चाहे जो भी हो.

हमें तो हंगामा करना है.

कबीर ने कहा—पर संसद की मर्यादा होती है.

राजनारायण ने कहा—काहे की मर्यादा? जब तक वह मल्लिका सिंहासन पर बैठी है, तब तक कोई मर्यादा रह नहीं सकती.

कबीर ने कहा—पर राजनारायण, तुम्हें, तुम्हारे गुट और तुम्हारे समाजवाद को वह चौधरी चरणसिंह लील गया.

राजनारायण ने कहा—भई, बात यह है कबीर, कि उसके पास ज़ाठ नेता बहुत हैं. और हमें बनाना है इंदिरा विरोधी मोर्चा! तो हम उसी के साथ हो गये. पर जिस दिन चाहूंगा, उस चौधरी को पछाड़ कर नेता हो जाऊंगा.

★ ★

मैंने पूछा—तुम्हारा कैसा समाजवाद है?

राजनारायण ने कहा—इंदिरा का विरोध करना ही समाजवाद है.

मैंने कहा—पर इंदिरा अपने को और अपनी पार्टी को समाजवादी कहती हैं.

राजनारायण ने कहा—खाक समाजवादी हैं! डाक्टर साहब कहते थे कि जब तक यह जवाहरलाल नेहरू है, तब तक समाजवाद नहीं आ सकता. नेहरू गये तो यह मल्लिका आ गयी. जब तक नेहरू खानदान है तब तक समाजवाद आ ही नहीं सकता.

कबीर ने पूछा—अगर लिमये प्रधान मंत्री हो जायें तो तुम क्या करोगे?

राजनारायण ने कहा—तब भी मैं विरोध करूंगा. नारा लगाऊंगा—लिमये परिवार ने देश का नाश कर दिया. मैं हमेशा विरोध करूंगा.

मैंने पूछा—तुमने कार्ल मार्क्स पढ़ा है?

राजनारायण ने कहा—नहीं पढ़ा. क्यों पढ़ें? डाक्टर साहब तो थे.

मैंने पूछा—डाक्टर लोहिया ने जो लिखा है, वह पढ़ा है?

वे बोले—वह भी नहीं पढ़ा. जब डाक्टर साहब हमारे साथ थे तब उनका लिखा क्यों पढ़ें? अभी तुमने कार्ल मार्क्स की बात की. ये कम्यूनिस्ट कार्ल मार्क्स को गुरु मानते हैं. ये बदमाश कांग्रेस में घुस गये हैं. बाहर से उनकी पार्टी और भीतर से ये घुसपैठिये उस रानी का दिमाग खराब कर रहे हैं. उसे गलत रास्ते पर चलाते हैं.

मैंने पूछा—जयप्रकाश नारायण का आंदोलन कैसा है?

वे बोले—बहुत अच्छा है. मैं तो उनका समर्थक हूं.

मैंने पूछा—क्या इसलिए कि वे क्रांति लाना चाहते हैं?

वे बोले—नहीं, इसलिए कि जयप्रकाश इंदिरा गांधी को तंग कर रहे हैं. हमें तो इस सुरसा को खत्म करना है, राजनीति से. और यह मैं ही करूंगा—

जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा,
तासु दुगुन कपि रूप दिखावा।

मैंने पूछा—अभी क्या कार्यक्रम है?

—बस संसद का सत्र खत्म होते ही विश्वविद्यालय के फाटक पर अनशन शुरू कर दूंगा. उधर हमारी यूनियन है!

★ ★

—अब चलूं. संसद में आज मेरा हुल्लड़ का प्रोग्राम है—जय बजरंगबली—तोड़ दुश्मन की नली!

मैंने कहा—यह जरूरी थोड़े ही है कि प्रश्न के घंटे में ही हुल्लड़ का संसदीय कार्य करो. दिन भर पड़ा है.

राजनारायण ने कहा—हां, सो तो ठीक है. एक बात कहना भूल गया. तुम भी काशी के, तुलसीदास भी काशी के, भारतेंदु भी काशी के और मैं भी काशी का हो गया. फिर भारत की राजधानी काशी क्यों न हो? मैं संसद में इस बारे में एक बिल लाऊंगा कि भारत की राजधानी काशी हो. तुम्हारा गालिब से अच्छा स्मारक बनवाऊंगा.

कबीर ने कहा—बिल तो लोकसभा में आता है और तुम हो राज्य-सभा में.

वे बोले—हां, यह कठिनाई है. खैर, आगे देखा जायेगा. पर एक बात कहता हूं. भारतेंदु ने कहा था—प्यारे हरिचंद की कहानी रह जायगी. मैं कहता हूं प्यारे राजनारायण की कहानी रह जायगी!

कबीर ने बिदा ली.

लौटा तो कनछेदी ने पूछा—मिल आये?

मैंने कहा—मिल गया.

कनछेदी ने कहा—साधु, तुमने मुहल्ले का बड़ा भला किया. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यादों के पखेरू

★ प्र. ई. सोनकामळे

ऐसा हुआ. मैं गांव से दूर था. दूर से मतलब है बहन के घर गया था. यानी कि घर से बाहर उस छोटी-सी दहलीज में. बचपन से ही मेरी यह आदत थी, जो कोई भी मुझे कुछ करने को कहता, मैं सहर्ष तत्पर रहता. इसी तरह एक दिन मुझे जीजाजी ने ऊंट चराने के लिए जंगल में भेजा. छोटा-सा मैं और अच्छा जानवर. जब वह चरता, तब मेरी आंखें चौकन्नी-सी उसके पीछे रहतीं. पर जिसका कोई इलाज करने वाला न हो, उसे बेइलाज कह कर छोड़ दिया जाता है, उसी प्रकार मुझे जंगल जाना ही पड़ता था. मैं कांटों से भरे जंगल में गया.

ऊंट महाराज ने पास ही के एक बगीचे की जाली में अपना सिर जो फंसा लिया तो निकालने का नाम ही न लें. मैं घबराया, खूब चिल्लाया—हट पीछे, हट पीछे, आ बेटा आ, चु चु. नकेल काफी लंबी थी, कभी थोड़ी ढीली छोड़ता, फिर कसता. पर होता क्या? वह ऊंट क्रोधित हो उठा व मुझ बच्चे की बौखलायी हुई आवाज के बीच कांटों भरी जाली में मैं भी उसके साथ घिसटता गया और सारे कांटे भरभरा कर मेरे शरीर में चुभ गये. मैं चिल्लाया. पर वहां कौन सुनता? मैं सहम कर रह गया. ऊंट चुपचाप निकल आता, तो अच्छा न होता क्या!

उस वीरान जंगल में मैं 'आगे नाथ न पीछे पगहा' वाली स्थिति में था. मेरा वेश ऐसा कि कुर्ता पहले से फटा हुआ, जर-जर-सा था (मलमल का न सही पुराना था) ब्राह्मणी मैना माई ने दिया था. वहां पर मैं बहन के बदले में गोबर उठाता था और उसके बदले में जो कुछ वह सुथना आदि देती थी मैं ले लेता था. इसीलिए वह बुरी तरह फट गया. मुझे रोना आने लगा.

ऐसे ही मैं छोटे से बड़ा होता चला गया. लोग चैन में थे, मैं बेचैन. लोग मजे में थे और मैं सजा में. लोग महल-सी हवेली में और मैं झोपड़ी में. मुझे अच्छा नहीं लगता था पर कर ही क्या सकता था, कोई उपाय भी न था. चारों तरफ दुख-ही-दुख दिखाई पड़ता था. जब कभी मैं पेड़ के नीचे अकेला बैठता तो मन बह उठता, तब लगता था दुनिया में सभी लोग सुखी नहीं हैं, मुझ जैसे भी बहुत से ह, किंतु तब यह विचार दिलासा नहीं देता था. तब यूं महसूस होता था कि मुझे थोड़ा बहुत भजन करना चाहिए, शायद मन को थोड़ी शांति मिले.

और तब कभी तुकाराम या कबीर के भजन या मारुड़ या कलगीतुय, पर कोई भी भजन पूरा नहीं आता था, थोड़ा बहुत दिल इसी प्रकार बहल जाता था. और रात को गांव की भजन मंडली का भजन सुनता था, और दूर नहाने की जगह या पाखाने के पास की जगह पर बैठ कर सुनता था. गाता भी था और उसीमें आनंद भी आता था. कभी वे प्रसाद के रूप में नारियल या सीरा, गुड़ या पंजीरी देते थे. मैं उसी में खुश हो जाता था. मेरी बड़ी इच्छा थी कि कोई मुझे ढोल या मंजीरा बजाने के लिए दे. मगर कौन देगा मुझे? मैं अछूत था. हरिजन था. जो भजन उस वक्त मैं सुनता था उसे उसी लय में होठों-ही-होठों में दुहराता था और याद करने की कोशिश करता था. यही रोज की दिनचर्या हो गयी थी. कोई कहता था मैं बहुत कुछ सीख चुका हूं. बड़ा मुखिया बनने वाला हूं. किंतु मैं ज्यादातर चुप रहता था. कभी किसी से लड़ाई नहीं की. कोई मारता भी था तो किसी से नहीं कहता था. कहूं भी तो क्या, कल उसीसे पाला पड़ने वाला है. तभी लोग कभी-कभी कहते थे जाने दो परदेसी है, बेचारा बनवासी. यह गंगाबाई के महराज के भाई का लड़का है. बहुत गुणवान है. इन्हीं गुणों की वजह से तो वह किसी के पेट का हिस्सा खाता है. कोई ऐसा कहता तो कोई इस प्रकार——आजकल जरा अकड़ के चलना सीख गया है. बड़ा कलेक्टर बन गया है. पढ़-लिख गया है तो क्या हमारी बराबरी का हो गया है, भिखमंगा! निकल यहां से. समझदार को पट्टी उल्लू को गद्दी. यह देखो! ऐसा बहुत-सी औरतें कहती थीं. वह सब बताने बैठूं तो लंबा इतिहास है किंतु, एक घटना आप सबको बताता हूं. उस वक्त मैं छोटा था पर बहन कहती, जाओ बाबा, शाम के लिए कुछ मांग कर ले आओ, अपने लिए तथा अपने छोटों के लिए. दूसरे बच्चों की तरह मुझे भी कभी ना बोलने की इच्छा होती थी. पेटू, उस पर काम चोर! बहन झिड़कती—खाता तो भीख का है और दिमाग राजाओं का है!

मैं ही हमेशा रोटी मांगने जाता था (बहन की या भाई की, किसी की भी बारी हो) पर कभी-कभी वह मेरे साथ आ जाती थी क्योंकि घनगरबाड़ी में इतने फर्राट और बदमाश कुत्ते थे कि भौंकते हुए मेरे पीछे पड़ जाते. इसी वजह से मैं उस बाड़ी में जाता नहीं था. किंतु दूसरे मुखिया की दहलीज पर से खुड़खुड़ी की लकड़ी बजाता था, अगर नहीं बजती तो लगता था कि काम नहीं बनेगा. अगर ऐसा होता था तो फिर रोटी मांगने के लिए मुझे जोरों से आवाज लगानी पड़ती थी. क्योंकि एक औरत थी जो थोड़ी बहरी थी. उसका नाम था शाबू बाई. वह कहती, जोर से क्यों नहीं बोलता ! खूसट ! कुछ खाया नहीं है क्या ? मैं पुन: आवाज लगता—ओ मेरे माई बाप ! कुछ खाने को मिल जाय. . .जरा दूर से लेना. अभी छोटा है तू. थोड़ा-सा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

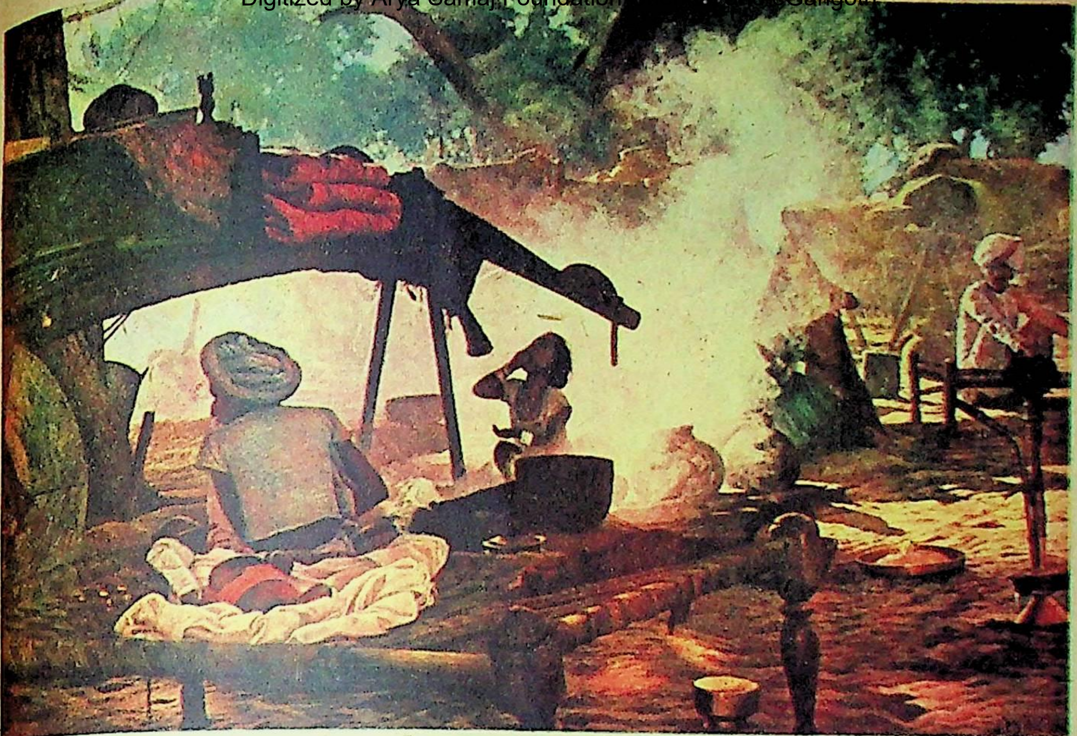

अडवानी आर्लीकान के सौजन्य से

नजदीक, वह कहती और मुझे बड़ा अच्छा लगता.

एक बार क्या हुआ, मैं ऐसे ही रोटी मांगने गया एक धनी के घर. सात अन्न की बनी रोटी, जिस पर फफूंदी लगी थी, एक औरत ने मेरी झोली में डाली. उसकी यह इच्छा थी कि उसके घर के ऊपर जो बुरे उतार-चढ़ाव हैं वह सब मुझ पर आ जायें. किंतु जब मैं घर आया, और बुआ ने वह रोटी का टुकड़ा देखा तो वह बोली, क्यों रे, किसने दिया तुझे यह टुकड़ा? मैंने कोई जवाब नहीं दिया. वह बड़बड़ाने लगी, मेरे भाई का बच्चा किसी तरह से यहां रह रहा है. यह लोगों की नजर में खटकता है. जब मैंने उन्हें बताया कि किसने यह टुकड़ा दिया तो उन्हें बहुत बुरा लगा. उन्होंने सारे गांव में ढिंढोरा पीट दिया. मैं पुनः उस गली में एक बार रोटी मांगने गया तो वह औरत गुस्से से तमतमाती मुझ पर फट पड़ी और बोली, परदेसी के ऐसे ही चोचले होते हैं. तू रोटी मांगने आता है या मेरी बदनामी करने? मैं घवड़ा गया क्योंकि वह औरत पूरी जट थी और मैं उसकी अपेक्षा बच्चा, तिस पर अछूत. दूसरे के गांव में हूं, यह सोच कर मैं चलने लगा. किंतु वह बोली—ओ रे, ठहर जरा, मेरा छौना, तेरे ये लक्षण. खबरदार. जो तू अब मेरे दरवाजे पर रोटी मांगने आया! मेरी आंखें छलछला आयीं और मैं आगे बढ़ गया.

अब दूसरा एक प्रसंग सुनाता हूं, जरा ध्यान दे कर सुनिएगा. एक बार ऐसा हुआ कि मैं शहडोल की पाठशाला में सातवीं कक्षा का विद्यार्थी था. दीवाली की छुट्टी नजदीक आ गयी थी. वहां एक गुरू जी थे जिनका नाम वासुदेव राव पिपले था. वह हम लोगों को अंग्रेजी पढ़ाते थे. वह बहुत ही उमदा व होशियार थे. उन्होंने कहा—बच्चो ! अपनी छुट्टी की दिनचर्या की डायरी लिख कर लाना, अच्छा. मुझे लगा, मास्टर पागल हैं, कुछ भी बोलते हैं. मुझे जंगल जाना पड़ेगा फिर मैं रोजनामचा किस तरह से लिख सकूंगा. मैंने उनसे पूछा तो बोले—जो भी तुम करते हो वही लिखना.

मैं एक मुखिया पटेल के यहां सुबह (चार-पांच बजे) रास्ते पर का गोबर उठाने के काम के लिए रखा गया. अंधेरे में उठाना पड़ता था, अतः कभी-कभी आदमियों की टट्टी भी हाथों से उठा लेता था क्योंकि कुछ दिखाई नहीं देता था. जब नाक के पास हाथ जाता था तो बदबू से मन उबका उठता था. बाद में वैसे ही हाथों को मिट्टी से घिसता, तो गिने-गिने टुकड़े से गिरते थे. उन मुखिया साहब का नाम बैजनाथ पाटिल था. मैं उनको बैजनाथ बापू कहता था. वे थे राजा भोज और मैं था गंगू तेली. इसी तरह करते-करते छुट्टियां खत्म हो गयीं और उन्होंने मुझे एक कुरता दिया. मैं क्या लूंगा ऐसा पहले से मैंने कुछ भी तय नहीं किया था. मुझे लगता था उन्हें दया आयेगी तो पेट पालने के लिए सोच समझ कर ही मुझे देंगे. पर वे लोग तो बहुत ही बेकार निकले. वे मुझे खाना खिलाने घर ले जाते थे. किंतु स्त्रियां परोस कर ही नहीं देती थीं. और मैं टकटकी लगाये भोजन की प्रतीक्षा करता रहता था. उन्होंने जो मेरे लिए कुरता खरीदा था वह इतना छोटा था कि मुझे आता ही नहीं था. वह था एक रुपये का. मैंने कहा, मैं नहीं लूंगा इसे. बाईस दिन तक गोबर ढोता रहा, रोज के पांच-छह तसले और सिर्फ एक रुपये का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँतों के डाक्टरों की राय में

नियमित रूप से दाँत ब्रश करने और मसूढ़ों की मालिश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है

देखिए, फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट नियमित इस्तेमाल करनेवालों ने अपने आप क्या लिखा है:

'मुझे मसूढ़ों की तकलीफ़ थी और... आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, एलोपैथिक; हर तरह की दवाई ली लेकिन थोड़ी देर ही आराम मिला। अन्त में दाँतों के डाक्टर की सलाह अनुसार मैंने फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना शुरू किया। इससे आज भी मेरे दाँत और मसूढ़े इतने बढ़िया और मज़बूत हैं कि पूछिए मत।'

(सही) गोपालसिंह, कोटा

'...मेरी पत्नी को दाँतों में बड़ी पीड़ा थी ...लेकिन जबसे उसने फ़ोरहॅन्स इस्तेमाल करना शुरू किया, इतना अच्छा रहा कि अब किसी को भी दाँत या मसूढ़ों में तकलीफ़ होते ही वे फ़ोरहॅन्स लेने की सलाह देती हैं। वही क्यों, इंग्लैंड में मेरे भाई हैं न, उन्होंने भी भारत से फ़ोरहॅन्स के ६ ट्यूब भेजने के लिए बार बार लिखा है।'

(सही) टी.जी.एम्.डीसूज़ा, बम्बई

'...राजमुन्दरी में एक दाँतों के डाक्टर हैं ...उन्होंने मुझे दाँतों व मसूढ़ों की भलाई के लिए फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने की सलाह दी। मैंने फ़ौरन ऐसा ही किया। थोड़े ही समय में सांस की दुर्गन्ध जाती रही, मसूढ़े फिर अच्छे हो गए। तब से, सच मानिए, मैं ही नहीं मेरे पूरे परिवार के ९ लोग फ़ोरहॅन्स ही इस्तेमाल करते हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी यह आदत और हमारी यह आस्था पीढ़ियों तक चलती रहेगी।'

(सही) पी. जे. लाज़ार
चिराला, आन्ध्र प्रदेश

(इन पत्रों की फ़ोटोस्टॅट कॉपी आप जैफ़्री मैनर्स एण्ड कं. लि. के किसी भी कार्यालय में देख सकते हैं)

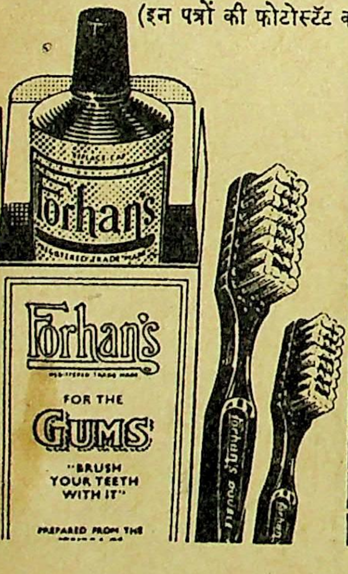

दाँतों की समुचित देखभाल के लिए रोज सवेरे और रात को फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट और फ़ोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए...और नियमित रूप से डाक्टर की सलाह भी लेते रहिए।

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका। अपनी प्रति * प्राप्त करने के लिए (डाक-खर्च के लिए) २५ पैसे के टिकट इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१ S.12

नाम: ______________ उम्र: ______

पता: ______________

* कृपया जिस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, आसामी, तामिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़

फ़ोरहॅन्स **दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट**

129 F 203 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र. ई. सोनकांबळे : मराठी कहानीकार

कुरता ? वह बोले, चल उठ यहां से, लेने का है तो लो नहीं एक खींच कर दूंगा गाल पर. उन्होंने कुरता मेरे छोटे जीजा जी के ऊपर फेंक दिया. मैं हिचकियां लेता हुआ गया. बहन बोली—क्यों गया था वहां रे? घर पर काम करने को कहेंगे तो तेरी जान जाती है.

रोज मैं यह सब डायरी में लिखता था. पाठशाला खुलने पर यह सब पढ़ कर गुरूजी मुझ पर इतने दयावान हो उठे कि जात-पांत का भेदभाव भूल कर उन्होंने कपड़े सिलवाये. कभी-कभी घर जा कर मुझे बचा-खुचा खाने को भी देते तथा अपने स्नान करने वाले लोटे से पानी पी लेने को कहते. वह औरत (उनकी पत्नी) नाक-भौं सिकोड़ लेती थी पर बोलती नहीं.

मैं पहली ही बार में मैट्रिक पास हो गया था. पिछला सब कुछ भूल कर प्रसन्न था. उन्नीस सौ साठ में मैट्रिक पास की सेकेंड क्लास में, अंग्रेजी में मुझे छप्पन नंबर मिले. लोगों ने कहा, औरंगाबाद जाओ, वहां सहूलियत मिलेगी. अछूतों के लिए खास कालेज है.

लोगों ने दो आने, चार आने, आठ आने करके करीब सत्रह रुपये कुछ पैसे इकट्ठा करके मुझे दिये. उन्हीं रुपयों में से मैंने दीदी को पांच रुपया दिये. (खाने के लिए जवारी नहीं थी इसलिए) मन भर आया, लोगों की दी हुई भीख में बहन का भी हिस्सा!

सुबह औरंगाबाद पहुंच गया. कुछ समझ में नहीं आ रहा था क्या करूं. इधर-उधर देखा तो सहसा जगलपुर के गुरू के लड़के से भेंट हो गयी. उसका नाम था मानुदास. उसने कहा, आओ इस टांगे पर बैठो. मैं बैठ गया. फिर साईंनाथ राईस प्लेट होटल पहुंचे. वह उतर गया . मैंने ही पैसे दिये क्योंकि उसके पास छुट्टे नहीं थे. उसने कहा, मैं बाद में पैसे देता हूं. आठ आने की चाय (तथा एक रुपया टांगे का चार्ज) उसने कहा, सीधे चले जाओ. उस गेट तक. मैं घूमता रहा, घूमता रहा. सुबह सात बजे औरंगाबाद पहुंचा था. परंतु अब चार बज रहे थे. आखिर कालेज मिल गया. मेरा दिल धक से रह गया, कालेज देख कर. चारों तरफ लड़के ही लड़के. ओ बाबा, कोई कोई तो खूब ठाठ बाट में था. मुझे लगा, मेरा नंबर लगेगा भी या नहीं किंतु किसी तरह हो गया. लाइन में लगा रहा अंत में [illegible] मिल ही गया. किंतु हृदय में धुकपुकी हो रही थी फार्म कैसे भरूं? पहचान के लड़के तो दिखाई पड़े किंतु व्यवहार अपरिचितों-सा. राजूर के भी एक आध लड़के मिले किंतु वे बड़े चालाक थे. क्लासमेट भी 'जरा ठहरो' कह कर टरका रहे थे. पर किसी प्रकार कालेज का काम हो गया. अब बोर्डिंग की बारी थी. किसीने बताया कि रेक्टर साहेब अपने ही जिले के हैं वहीं चलें. मैं और राजूर का यादव दोनों उनके कमरे पर गये. उन्होंने पूछा, कौन हो. हमने डरते-डरते जवाब दिया, अं अं, हम. कौन रे? गेट आउट वह चिल्लाये. हम बुरी तरह निराश हो गये. अंत में यह भी हो गया. रोज खाने को मिलता था. मुझे बड़ा आनंद आया क्योंकि अब तक इस तरह का खाना न देखा ही था न खाया ही था.

अब देखिए, एक शाम ऐसा हुआ कि हमारे बड़े सर बोर्डिंग में आये. मैं अपने कमरे में था. चारों तरफ कचरा छितरा हुआ था, जगह-जगह चिड़ियों के घोसले तथा खिड़कियों के कांच टूटे हुए थे. लोगों ने खुद बारदान लगाये थे. मैं रह गया था. शेंडे महादेव व गण वीर भी रह गये थे. मैं कमरा साफ करता था. उससे क्या होता. सर आये तो खूब रूवाब में, और बोले—क्यों रे, इस तरह से कैसे रह रहे हो? मेरे पास सिर्फ एक दरी थी जो राजूर की पाठशाला के एक मास्टर ने दी थी. वह फटी हुई दरी, और भीरु स्वभाव,उस पर कपड़े भी मजेदार. और उस दरी के नीचे था जैसे राशनिंग स्टोर. पास पास पड़ी हुई एक हाथ की फलियां और नीचे मूसा, मैंने उन्हें उतनी ही लंबाई में नीचे फैला रखा था. वह सर ने देखा और बोले, इसको उठाओ जरा. मैंने डरते-डरते उठाया. नीचे दिखाई दिये खाली खटमल ही खटमल बुलबुल बुल-बुल. उन्हें क्या महसूस हुआ पता नहीं. वह बोले—दूसरे दिन सबके साथ तुम भी दरखास्त दो मेरे नाम से. मुझे थरथराहट होने लगी. दस रुपया मिलेंगे. एक गद्दा ले लेना. मैं हैरान परेशान, उन रुपयों को वापस कैसे करूंगा. मन बहुत से उतार-चढ़ावों के मध्य ठिठकता रहा, समय पखेरू न जाने कब उड़ गया.

एम. ए. पास हो गया. बंबई से मुझे बुलावा आया. तुरंत इंटरव्यू के लिए पहुंचा . बड़े-बड़े अफसरों की निगाहें चेहरे पर कुछ पढ़ रही थीं. कई तरह के प्रश्न पूछे. किसीने कुछ किसीने कुछ पूछा. मैं वैसे ही बड़ा शर्मीला व संकोची था. पर पता नहीं मन में उस वक्त कहां से ऐसी शक्ति आ गयी कि जो भी मुंह में आया बेझिक बोलता गया जैसे चुप न रहने की कसम खा कर गया था. इंटरव्यू खत्म हो गया पर मुझे रोज लगता, पता नहीं क्या होगा, किस तरह से हागा.

बंबई से वापस गांव जाने के लिए स्टेशन आया, इतनी भीड़ कि तोबा. कहीं दूर जा कर गांव लौटने की यह पहली यात्रा थी, किसी तरह गाड़ी पर बैठा गांव जाने के लिए.तभी हर्ष वाणी-सी हुई, अंग्रेजी पढ़ाने वाले प्रोफेसर की तरह मैं अछूत लड़का कक्षा में फटाफट अंग्रेजी में बोल रहा हूं. ऐसा चित्र आंखों के समीप उभरने लगा और कब पलकें नींद से बोझिल हो गयीं पता नहीं. □□□

(अनुवाद : चित्रा मुद्गल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँतों के डाक्टरों की राय में

नियमित रूप से दाँत ब्रश करने और मसूढ़ों की मालिश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है

देखिए, फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट नियमित इस्तेमाल करनेवालों ने अपने आप क्या लिखा है:

'मुझे मसूढ़ों की तकलीफ़ थी और... आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, एलोपैथिक; हर तरह की दवाई ली लेकिन थोड़ी देर ही आराम मिला। अन्त में दाँतों के डाक्टर की सलाह अनुसार मैंने फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना शुरू किया। इससे आज भी मेरे दाँत और मसूढ़े इतने बढ़िया और मजबूत हैं कि पूछिए मत।'

(सही) गोपालसिंह, कोटा

'...मेरी पत्नी को दाँतों में बड़ी पीड़ा थी ...लेकिन जबसे उसने फ़ोरहॅन्स इस्तेमाल करना शुरू किया, इतना अच्छा रहा कि अब किसी को भी दाँत या मसूढ़ों में तकलीफ़ होते ही वे फ़ोरहॅन्स लेने की सलाह देती हैं। वही क्यों, इंग्लैंड में मेरे भाई हैं न, उन्होंने भी भारत से फ़ोरहॅन्स के ६ ट्यूब भेजने के लिए बार बार लिखा है।'

(सही) टी.जी.एम्.डीसूज़ा, बम्बई

'...राजमुन्दरी में एक दाँतों के डाक्टर हैं ...उन्होंने मुझे दाँतों व मसूढ़ों की भलाई के लिए फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करने की सलाह दी। मैंने फ़ौरन ऐसा ही किया। थोड़े ही समय में सांस की दुर्गन्ध जाती रही, मसूढ़े फिर अच्छे हो गए। तब से, सच मानिए, मैं ही नहीं मेरे पूरे परिवार के ९ लोग फ़ोरहॅन्स ही इस्तेमाल करते हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी यह आदत और हमारी यह आस्था पीढ़ियों तक चलती रहेगी।'

(सही) पी. जे. लाज़ार
चिराला, आन्ध्र प्रदेश

(इन पत्रों की फ़ोटोस्टॅट कॉपी आप जैफ़्री मैनर्स एण्ड कं. लि. के किसी भी कार्यालय में देख सकते हैं)

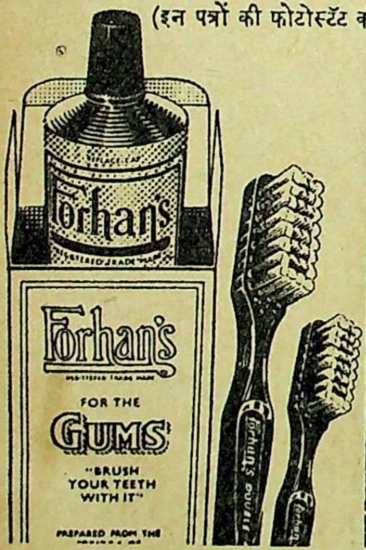

दाँतों की समुचित देखभाल के लिए रोज सवेरे और रात को फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट और फ़ोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए...और नियमित रूप से डाक्टर की सलाह भी लेते रहिए।

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका। अपनी प्रति * प्राप्त करने के लिए (डाक-खर्च के लिए) २५ पैसे के टिकट इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१ S.12

नाम: ________________ उम्र: ______

पता: ________________________

* कृपया जिस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: अंग्रेज़ी, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, आसामी, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़

फ़ोरहॅन्स **दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट**

129 F 203 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

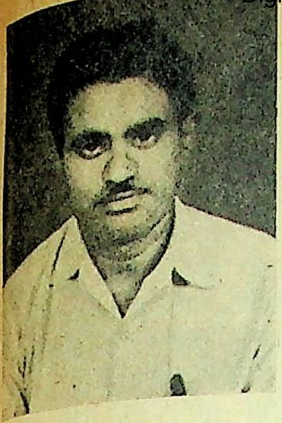

प्र. ई. सोनकांबळे : मराठी कहानीकार

कुरता ? वह बोले, चल उठ यहां से, लेने का है तो लो नहीं एक खींच कर दूंगा गाल पर. उन्होंने कुरता मेरे छोटे जीजा जी के ऊपर फेंक दिया. मैं हिचकियां लेता हुआ गया. बहन बोली—क्यों गया था वहां रे? घर पर काम करने को कहेंगे तो तेरी जान जाती है.

रोज मैं यह सब डायरी में लिखता था. पाठशाला खुलने पर यह सब पढ़ कर गुरूजी मुझ पर इतने दयावान हो उठे कि जात-पांत का भेदभाव भूल कर उन्होंने कपड़े सिलवाये. कभी-कभी घर जा कर मुझे बचा-खुचा खाने को भी देते तथा अपने स्नान करने वाले लोटे से पानी पी लेने को कहते. वह औरत (उनकी पत्नी) नाक-भौं सिकोड़ लेती थी पर बोलती नहीं.

मैं पहली ही बार में मैट्रिक पास हो गया था. पिछला सब कुछ भूल कर प्रसन्न था. उन्नीस सौ साठ में मैट्रिक पास की सेकेंड क्लास में, अंग्रेजी में मुझे छप्पन नंबर मिले. लोगों ने कहा, औरंगाबाद जाओ, वहां सहूलियत मिलेगी. अछूतों के लिए खास कालेज है.

लोगों ने दो आने, चार आने, आठ आने करके करीब सत्रह रुपये कुछ पैसे इकट्ठा करके मुझे दिये. उन्हीं रुपयों में से मैंने दीदी को पांच रुपया दिये. (खाने के लिए जवारी नहीं थी इसलिए) मन भर आया, लोगों की दी हुई भीख में बहन का भी हिस्सा!

सुबह औरंगाबाद पहुंच गया. कुछ समझ में नहीं आ रहा था क्या करूं. इधर-उधर देखा तो सहसा जगलपुर के गुरू के लड़के से भेंट हो गयी. उसका नाम था मानुदास. उसने कहा, आओ इस टांगे पर बैठो. मैं बैठ गया. फिर साईंनाथ राईस प्लेट होटल पहुंचे. वह उतर गया . मैंने ही पैसे दिये क्योंकि उसके पास छुट्टे नहीं थे. उसने कहा, मैं बाद में पैसे देता हूं. आठ आने की चाय (तथा एक रुपया टांगे का चार्ज) उसने कहा, सीधे चले जाओ. उस गेट तक. मैं घूमता रहा, घूमता रहा. सुबह सात बजे औरंगाबाद पहुंचा था. परंतु अब चार बज रहे थे. आखिर कालेज मिल गया. मेरा दिल धक से रह गया, कालेज देख कर. चारों तरफ लड़के ही लड़के. ओ बाबा, कोई कोई तो खूब ठाठ बाट में था. मुझे लगा, मेरा नंबर लगेगा भी या नहीं किंतु किसी तरह हो गया. लाइन में लगा रहा अंत में फार्म मिल ही गया. किंतु हृदय में धुकपुकी हो रही थी फार्म कैसे भरूं? पहचान के लड़के तो दिखाई पड़े किंतु व्यवहार अपरिचितों-सा. राजूर के भी एक आध लड़के मिले किंतु वे बड़े चालाक थे. क्लासमेट भी 'जरा ठहरो' कह कर टरका रहे थे. पर किसी प्रकार कालेज का काम हो गया. अब बोर्डिंग की बारी थी. किसीने बताया कि रेक्टर साहेब अपने ही जिले के हैं वहीं चलें. मैं और राजूर का यादव दोनों उनके कमरे पर गये. उन्होंने पूछा, कौन हो. हमने डरते-डरते जवाब दिया, अं अं, हम. कौन रे? गेट आउट वह चिल्लाये. हम बुरी तरह निराश हो गये. अंत में यह भी हो गया. रोज खाने को मिलता था. मुझे बड़ा आनंद आया क्योंकि अब तक इस तरह का खाना न देखा ही था न खाया ही था.

अब देखिए, एक शाम ऐसा हुआ कि हमारे बड़े सर बोर्डिंग में आये. मैं अपने कमरे में था. चारों तरफ कचरा छितरा हुआ था, जगह-जगह चिड़ियों के घोसले तथा खिड़कियों के कांच टूटे हुए थे. लोगों ने खुद वारदान लगाये थे. मैं रह गया था. शेंडे महादेव व गण वीर भी रह गये थे. मैं कमरा साफ करता था. उससे क्या होता. सर आये तो खूब रूवाब में, और बोले—क्यों रे, इस तरह से कैसे रह रहे हो? मेरे पास सिर्फ एक दरी थी जो राजूर की पाठशाला के एक मास्टर ने दी थी. वह फटी हुई दरी, और भीरु स्वभाव,उस पर कपड़े भी मजेदार. और उस दरी के नीचे था जैसे राशनिंग स्टोर. पास पास पड़ी हुई एक हाथ की फलियां और नीचे भूसा, मैंने उन्हें उतनी ही लंबाई में नीचे फैला रखा था. वह सर ने देखा और बोले, इसको उठाओ जरा. मैंने डरते-डरते उठाया. नीचे दिखाई दिये खाली खटमल ही खटमल बुलबुल बुल-बुल. उन्हें क्या महसूस हुआ पता नहीं. वह बोले—दूसरे दिन सबके साथ तुम भी दरखास्त दो मेरे नाम से. मुझे थरथराहट होने लगी. दस रुपया मिलेंगे. एक गद्दा ले लेना. मैं हैरान परेशान, उन रुपयों को बापस कैसे करूंगा. मन बहुत से उतार-चढ़ावों के मध्य ठिठकता रहा, समय पखेरू न जाने कब उड़ गया.

एम. ए. पास हो गया. बंबई से मुझे बुलावा आया. तुरंत इंटरव्यू के लिए पहुंचा . बड़े-बड़े अफसरों की निगाहें चेहरे पर कुछ पढ़ रही थीं. कई तरह के प्रश्न पूछे. किसीने कुछ किसीने कुछ पूछा. मैं वैसे ही बड़ा शर्मीला व संकोची था. पर पता नहीं मन में उस वक्त कहां से ऐसी शक्ति आ गयी कि जो भी मुंह में आया बेझिझक बोलता गया जैसे चुप न रहने की कसम खा कर गया था. इंटरव्यू खत्म हो गया पर मुझे रोज लगता, पता नहीं क्या होगा, किस तरह से हागा.

बंबई से वापस गांव जाने के लिए स्टेशन आया, इतनी भीड़ कि तोबा. कहीं दूर जा कर गांव लौटने की यह पहली यात्रा थी, किसी तरह गाड़ी पर बैठा गांव जाने के लिए.तभी हर्ष वाणी-सी हुई, अंग्रेजी पढ़ाने वाले प्रोफेसर की तरह मैं अछूत लड़का कक्षा में फटाफट अंग्रेजी में बोल रहा हूं. ऐसा चित्र आंखों के समीप उभरने लगा और कब पलकें नींद से बोझिल हो गयीं पता नहीं. □□□

(अनुवाद : चित्रा मुद्गल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तड़प

□ प्रकाश न. खरात

कल से सुरेश की मनःस्थिति बिगड़ी हुई है. वह कालेज तो गया, लेकिन होने वाले लेक्चर्स में उसका मन नहीं लगा.

कल के प्रसंग से वह अस्वस्थ हो गया है. उससे क्या भूल हुई, यह उसकी समझ में नहीं आता. पिता ने जो कुछ कहा, समझाया, उसके विरुद्ध हम कभी गये क्या? और इस मोती सेठ की गली में स्थित चाल में हम छोटे से बड़े हुए. . .निकटतम संबंध हुए. . .चाल के लोगों को भी क्या हमसे समझदारी से पेश नहीं आना चाहिए?

चाल की दुर्दशा हो गयी . इसलिए बुरा लगता है. जीने के नीचे वाले बाबू सेठ का दारू व मटके का धंधा जोरों से चल रहा है. डीग्या, पक्या, जन्या, विन्या, इन जैसे, पांच-पच्चीस छोकरे बाबू सेठ के धंधे में हैं. उस चाल तथा सामने की शराबियों की चाल में हमेशा दंगा-फसाद होता रहता है. स्त्रियों एवं ऊंचे डील-डौल वाली लड़कियों को वहां से आते-जाते तकलीफ होती है.

जन्या चाल का दादा. . .सभी लोग उससे दबे हुए हैं. जन्या दादा ने चाल के बहुत से लड़कों को बुरे मार्ग पर लगाया और उनका अधःपतन करवाया. इसमें उसे कैसा संतोष मिलता है. आदमी को क्या इतनी दुष्ट बुद्धि से काम लेना चाहिए? इतना बदमाश होना चाहिए? चाल के बेकार युवक अशिक्षित लड़के 'जैसी भूमि होगी, वैसा ही वृक्ष उगेगा, के अनुसार अपने शिष्टाचार पर जा रहे हैं. मजिये खाने वाले मवाली हो रहे हैं.

बड़ों के दुर्व्यसन के कारण चाल के छोटे बच्चे भी बिगड़ गये हैं. कल के छोकरे लुक-छिप कर सिगरेट बीड़ी वगैरह किस ठाठ से फूंकते हैं ! चाल के पीछे, पड़ोस में, पांच-दस पैसे एक ओर जमाकर जोड़ पत्ता, मढ़ीकोट किस तरह खेलते हैं. हमने अपनी आंखों से देखा है. उनके माता पिता ने उन्हें जन्म दे कर खुली हवा में छोड़ दिया. . .

हमें पिता ने केवल अच्छी शिक्षा दी. हम महाविद्यालय में शिक्षण ले रहे हैं. इसका पूरा श्रेय माता-पिता को है. हम तो केवल निमित्त मात्र हैं. वे हमारे लिए तिल-तिल छिजते रहे हैं.

वैसे देखा जाये तो पिता सरकारी आफिस में पियून की नौकरी करते हैं. घर की परिस्थिति अत्यधिक शोचनीय है. कर्ज बढ़ गया है. पिता के वेतन के डेढ़-दो सौ रुपये साहूकार को देने और ब्याज-बट्टे में चले जाते हैं. दो-चार दिनों में ही खाने-पीने के लाले पड़ जाते हैं. मां को पुनः साहूकार के सामने हाथ फैलाना पड़ता है. तरंग आने पर साहूकार पैसे नहीं भी देता है. बदल जाता है. मां ने घर के तांबे-पीतल के बरतन बनिये के यहां गिरवी रख छोड़े हैं. लेकिन उसने कभी घर का चूल्हा बुझने नहीं दिया. एक-एक दिन बड़े कष्ट के साथ बिताना पड़ता है. प्रत्येक दिन के मनाने में मां को पास-पड़ोस के दरवाजे-दरवाजे भटकना पड़ता है.

लेकिन माता-पिता- का धैर्य भी खूब है. पिता जीवन भर कष्ट उठाते रहे हैं. पिता तरुणावस्था में नौकरी के लिए बंबई आये तब ढाबे पर खाते, फुटपाथ पर सोते थे. नंगे पैरों थक कर चूर होने तक बंबई में भटकते. भायखला की रिचर्डसन कंपनी में काम पर लगे तब उन्होंने लोहे की तप्त भट्ठी पर काम किया. भट्ठी पर काम करने वाले अच्छे तगड़े मजदूर भाग गये थे. भट्ठी पर काम करने के कारण पिता के हाथ खून के समान लाल सूर्ख हो जाते. दादाजी गांव से जब बंबई आये और उन्होंने पिता के हाथ देखे, तब वह खूब रोये. उन्होंने पिता से नौकरी छोड़ देने को कहा.

माता-पिता जीवनभर दरिद्रता की मार सह कर भी उससे मुक्त नहीं हो पाये. दुःख-दरिद्रता का सामना करके वे जीवनोन्मुख हो गये थे. हम तो इस शर्मिंदगी भरे जीवन को घिसट-घिसट कर जीने से तंग आ गये हैं. भविष्य किस प्रकार अस्पष्ट एवं जटिल बन गया है. कब बीच में ही पढ़ाई छोड़ देनी पड़ेगी. कुछ कहा नहीं जा सकता. पिता की संपूर्ण पीढ़ी का जीवन अज्ञान में बीता है. अज्ञान के अंधकार के कारण भोगे हुए दुःख और दरिद्रता अपने बच्चों के भाग्य में पड़े. इसलिए पिता ने पढ़ाने का निश्चय किया.

पिता के कथनानुसार, उन जैसे गरीब व्यक्ति के लिए सुरेश के लिए पैसे इकट्ठे करके रखना संभव नहीं है. किंतु वह सामर्थ्यानुसार उसे पढ़वाना चाहते हैं. इसीलिए उन्होंने हमें तीन वर्ष पूर्व कालेज में भेजा.

महाविद्यालय का जीवन मोहक होता है, यह सत्य है. जग-मग कपड़ों में आये हुए तरुण एवं उनके हाथ में हाथ डाल कर घूमने वाली सुंदर लड़कियां, साला जी जलता है. उनकी कैंटीन में होने वाली पार्टियां, कार में घूमना, पिक्चर्स देखना. . .बाप की कमाई पर वे मौज करते हैं. उनका मादक संसार हमसे बिल्कुल अलग है. उसमें आनंद-ही-आनंद है. इस वातावरण में हम बिल्ले बिल्ली के समान रह रहे हैं. हम यहां के वातावरण में एक रूप नहीं हो सकते.

कभी-कभी लगता है, पिता किसलिए पढ़ाने का मजाक कर रहे हैं. शिक्षा अमीरों के विलास की वस्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अडवानी आर्लीकान के सौजन्य से

बन गयी है. यह काम हम जैसे आलतू-फालतू लोगों का नहीं. माता-पिता को होने वाली तड़पन देखी नहीं जाती. लेकिन नौकरी-धंधा न होने के कारण कुछ करते नहीं बनता. अपरिचित की भांति घर की स्थिति दूर से मात्र देखते हुए रहना पड़ता है. इस कठिन परिस्थिति से निकलने के चिन्ह दिखाई नहीं देते. वास्तविकता यह है कि हम पिता की मदद करने के लिए हैं. परंतु जीवन की व्यर्थता के कारण जैसे निकम्मापन आ गया है. मन में विचार आता है, बाबू सेठ के धंधे पर काम से लग जायें. हम जैसे पढ़े-लिखे लड़के मिलने पर बाबू सेठ को आनंद होगा. लेकिन यह विचार मन में ही नष्ट हो जाता है. कर्ज तो पट जायेगा, लेकिन हीन भावना नहीं पट सकती.

आजकल पढ़ाई में मन ठीक से नहीं लग पाता है. मन इधर-उधर भटकता है. पिता बार-बार कहते हैं. 'सुरेश, मन लगा कर पढ़ो, समझे कि नहीं?' मां को भी वह हमेशा समझाते हैं. 'अरे, इस लड़के के सामने कभी काम-धंधे का और घर-खर्च की मुसीबत का रोना मत रोना इसके मन पर उसका बुरा असर पड़ेगा. जब लगेगा. तब लगेगा काम, इसको पढ़ने दो. . .

अब आराम से बैठने से काम नहीं चलेगा, ऐसा लगने लगा. कुछ भी करना चाहिए. इस अधःपतन पर किसी भी तरह से रोक लगनी चाहिए. पुनः एक बार फिर ऐसा विचार आता कि इस प्रतिकूल भूमि पर कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ों में दर्द ?

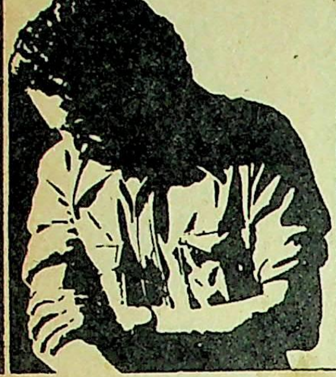

आयोडेक्स

मलिए, जो

पीड़ा हरे, अच्छा करे

दूसरे बाम पीड़ा से आराम
भले पहुंचाएं, आयोडेक्स
आराम पहुंचाने के साथ साथ
अच्छा भी करती है. क्योंकि
इसमें आयोडीन मिली है.

जोड़ों और मांसपेशियों की
पीड़ा के लिए एकमात्र बाम—
आयोडेक्स.

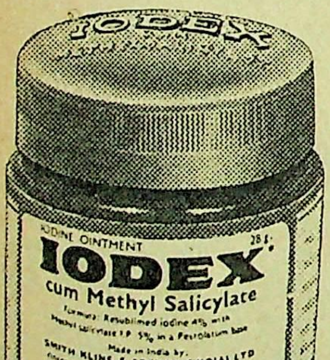

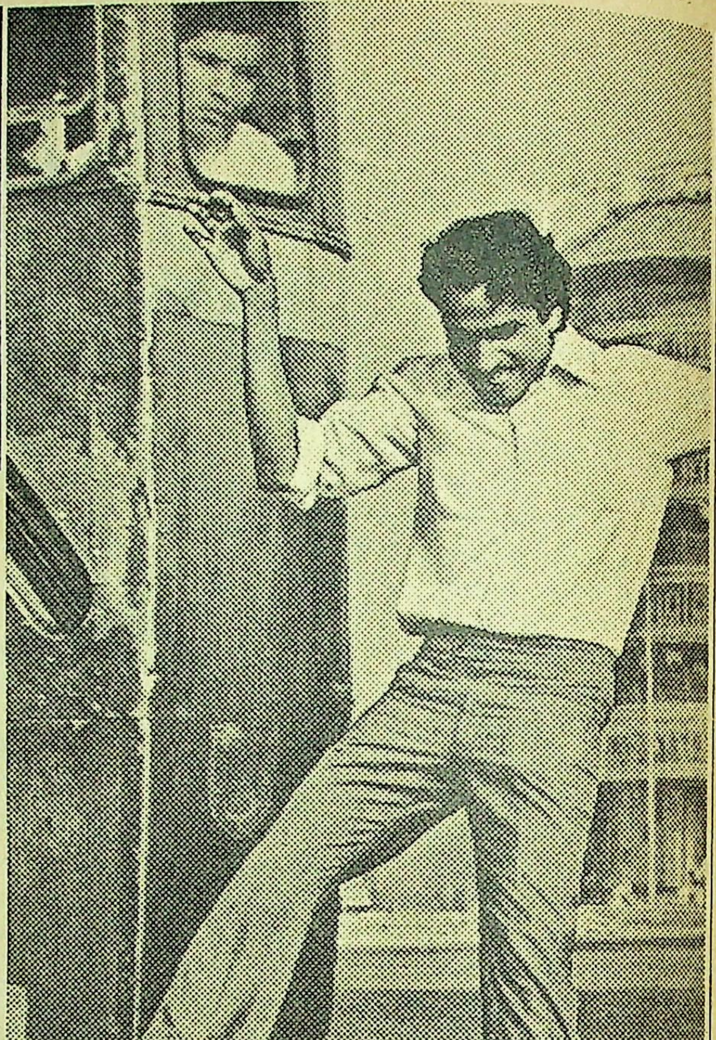

आयोडेक्स मलिए-अपने काम पर चलिए

लिंटास-IODEX-4-1 40 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा उपज सकता है क्या? परिस्थिति द्वारा निर्मित मनुष्य बदला जा सकता है क्या ? लेकिन ये बालक तो किसी भी प्रकार रुग्ण नहीं होने चाहिए. उनके संस्कार-क्षम मन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए. वे ही हमारे आशातंतु हैं. उनको निश्चित रूप में बदला जा सकता है. इच्छुनुसार शिष्टाचार दिया जा सकता है. कीचड़ में क्या कमल नहीं उगते. . . .?

रात के काम का विचार चाल के मित्रों तथा स्कूल के बच्चों को बतलाया. रमेश, विजय, चंद्रकांत. वसंत सभी को विचार बेहद पसंद आया. रात के ग्यारह बजे तक हम ईरानी रेस्टोरैंट में बात करते बैठे रहे. लड़कों ने अपनी योजना आगे रखी—चाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाया जाये. बच्चों की पढ़ाई के लिए क्लास चलाये जायें. योजना चालू करने का निर्णय लिया गया.

बाद में कार्यक्रम का आरंभ भी अच्छा हुआ. बच्चों ने चाल की सफाई की. आपस में चंदा जमा किया. बच्चों के पालकों से मिले. उन्होंने हमारे कार्य की सराहना की और हमारा साथ दिया. बच्चों ने उत्साह पूर्वक कार्य में भाग लिया. छोटे बच्चों के लिए रात के समय वर्ग शुरू किये गये.

चाल का स्वरूप अंशतः बदल रहा था. हमारी इच्छा के अनुसार होता जा रहा था. जन्या एक बार दस-बारह लड़कों को साथ में लिये रास्ते में मिला. वह मगरूर हो कर बोला—साला चाल के छोटे बच्चों को इकट्ठा करके कैसी दादागीरी करता है. पढ़ाना बंद करो, लोगों को तकलीफ होती है. नहीं मानेगा, मार खायेगा.

जन्या की धमकी से मन-ही-मन चिढ़ हो आयी. जवान रक्त सनसनाने लगा. यह रुग्ण आदमी हमें धमकाये? फिर भी क्रोधापमान बिना कुछ बोले चुपचाप पी गया. क्रोध के आवेग को दबा दिया. उसके समान तू-तू-मैं-मैं करना मुझे नहीं आता था. किंतु सहपाठी मित्रों पर मुझे दृढ़ विश्वास है. उस बंदर घुड़की से कोई डरने वाले थोड़े ही हैं.

रात को यह सब घटना मित्रों को सुनायी. अपेक्षा थी कि लड़के हमें धैर्य बंधायेंगे. अधिक कार्यक्षम हो कर मन लगा कर, काम करेंगे. पर वैसा हुआ नहीं. रमेश बोला, ऐसा है तो हम अपनी क्लास बंद कर देंगे. उसी के भाई-बंधु तो सीखने के लिए आते हैं. विजय बोला, सुरेश, हम यह सब उन्हींके लिए तो करते हैं. लेकिन इन मूर्खों को हमारी कदर है क्या? ऐसे नीच लोगों के लिए क्यों कष्ट उठाया जाये ?

उसी रात पिता ने हम पर वाग्बाण छोड़ा. घर के लोग खाने पर बैठे थे. खाते समय पिता ने कहा—सुरेश, छत पर छोकरों का स्कूल क्यों लगाता है. अब तेरी परीक्षा आ रही है. तुझे निश्चितता पूर्वक पढ़ाई करनी है. पढ़ाई पूरी होने पर बड़ा होने पर तुझे जो करना हो, करना, लेकिन पहले ठीक रास्ते पर लग और कल से छोकरों का स्कूल बंद कर दे.

मेरा स्वाभिमान उफन पड़ा—बाबा, तुम मेरा पालन-पोषण करते हो, मेरे लिए तकलीफ उठाते

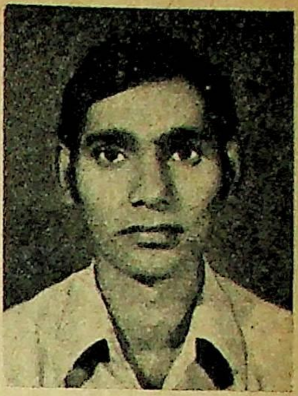

प्रकाश न. खरात : कहानीकार

हो, यह मुझे मालूम है. पर मैं अपने मामले में स्वतंत्र हूं.

पिता और भड़के —मेरे कहने के विपरीत बोलता है. घर की हालत खस्ता करके मैं किस-किस मुसीबत से घर चलाता हूं. तुझे पढ़ना है, तो ठीक से रह, नहीं तो चलता बन ! बहुत उछल मत. जनमते ही इस प्रकार का ढंग ? मेरे रहते फलाने ठिकाने आंदोलन में भाग लेने गया था, यह सब नहीं चलेगा.

पिता ने क्रोध से थाली सरका दी. घर में कुहराम मच गया. कभी न क्रोधित होने वाले पिता यह सब बोल रहे थे. पिता का स्वभाव ऐसा था चिढ़ने पर शिकारी मधुमक्खी की भांति हो जाते.

सुरेश का बढ़ा हुआ स्वाभिमान खत्म-सा हो गया. वह नम्रतापूर्वक बोला—मैं तुम्हारे कहे मुताबिक करूंगा. तुम्हारे द्वारा कही गयी बात के विरुद्ध नहीं जाऊंगा. मुझे क्षमा करो.

वह आधे खाने पर से ही उठ गया. कैफे में जा कर गाने के रेकार्ड तब तक सुनता रहा, जब तक ऊब न गया पहले कभी न पीने पर भी काऊंटर पर जा कर सिगरेट फूंकी. फिर बगल के बगीचे में चला गया.

हमने मन में कितने संकल्प किये थे. लेकिन सारी इच्छाओं पर पानी फिर गया. किसीने विचित्र बंधनों में जकड़ दिया. एक दृष्टि से पिता का कहना ठीक भी है. पिता अस्तित्व सुरक्षित रखने को कहते हैं. लेकिन मन दूसरी ओर दौड़ जाता है. समझता नहीं.

आखिर पिता से ही रहा नहीं गया. वह ढूंढ़ते हुए बगीचे में आये.

—सुरेश, पिता ने गुस्से में उलटा-सीधा बोल दिया तो उसका इतना बुरा मानना चाहिए? और मैं तुम्हारे हित के लिए ही बोलता हूं. मैं कहता हूं, हम भले और पढ़ाई भली. किसी के लेन-देन में न पड़ो. किसी से लड़ाई-टंटा न हो. चाल के लंपट लोगों के मुंह क्यों लगा जाये ? चल, घर चल कर खाना खा. पिता समझौता करने लगे. □□□

(अनुवाद : सुमति मालवीय.)

न्यू बी. डी. डी. चाल, नं. १६, कमरा नं. ४९,
महात्मा फुले रोड, नायगांव, दादर, बंबई – १४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डायरी के कुछ पन्ने

□ अविनाश डोळस

१७ जून, '७३

सबेरे मधु आये. परेशान दिखायी दिये. मधु, औरंगाबाद के कॉलेज के प्रोफेसर.

——क्या हुआ? मैंने सहज ही पूछा. खोली नहीं मिली? मुझे यह प्रश्न ज्यादा गंभीर नहीं लगा. मैंने सीधे-सीधे उसे टाल दिया—— कहीं-न-कहीं देखो. वैसे मैं भी तलाश कर रहा हूं. मैंने आश्वासन दिया. गप्पें हांकीं. मधु का मूड नहीं था, फिर भी. फिर समाज-क्रांति पर गाड़ी आयी. इस विषय पर मैं और मधु हमेशा दो-दो घंटे बोलते हैं.

आज गाली दे कर उठा——साले. . . मस्ट बर्न! एक प्रोफेसर, केवल प्रोफेसर ही नहीं, संतुलित विचारक मधु आज यह कहा रहा है.

बहुत बुरा लगा.

——चलो! मैंने कहा.बाहर आये. बहुत घूमे. डोर टु डोर. नो यूज. यूजलेस.

१८ जून, '७३

घूम कर आये. एक कार्यक्रम देखा. वही-वही बातें सुन कर परेशान था——मनुष्य को विज्ञाननिष्ठ होना चाहिए. विज्ञान को कसौटी मान कर विज्ञान-विरोधी रूढ़ि, संस्कार, विचार छोड़ देना चाहिए. जब तक यह नहीं होता, इस देश का भविष्य अंधकारमय है.

उनका भाषण बहुत अच्छा लगा. दिल में कहीं-न-कहीं आश्वासन मिला. उनका सुकोमल हाथ हाथ में ले कर मैंने अभिनंदन किया.

——यह सब कौन करे? मैंने प्रश्न किया.

प्रो. अरविंद सानप बोले——मैं, आप. हम क्यों वेट करें? हमें ही लीड करना चाहिए. मैं आपके घर आऊंगा. फिर कार्यक्रम निश्चित करेंगे.

चार-दस. बाहर चक्कर लगाना जरूरी है. घंटी बजी. दरवाजा खुला. कोई निमंत्रणपत्र दे कर एक लड़का चला गया. कपड़े बदले. निमंत्रणपत्र पढ़ा :

श्री. . .हमारे यहां दत्त भगवान की कृपा से ता. २० जून, '७३ को प्रातः ११ बजे हमारी द्वितीय विवाह वर्षगांठ पर श्री भगवान सत्यनारायण की पूजा है. आप प्रसाद हेतु अवश्य पधारें.

आपके
प्रो. अरविंद सानप
प्रो. (सौ.) अरुंधति सानप.

२१ जून, '७३

प्रातःकाल से मूड ऑफ. अकेली जान,ज्यादा परेशान. किसी पर भी भरोसा न करे, ऐसा लग रहा है. साली! विवाह करूंगी तो तुम्हीं से, नहीं तो जीवन भर विवाह नहीं करूंगी——कहने वाली लड़की सीधे डी. एस. पी. से शिकायत लिखवाती है. क्या मतलब है इसका? वाह रे जमाना! इसलिए कुछ लिखने की सोचता हूं. मधु को अब तक कमरा नहीं मिला. पता चला, माधव मोरे लेक्चरर हुआ है. बेस्ट लक. है बहुत होशियार. कागज फाड़ते-फाड़ते तंग आ गया हूं, लेकिन एक भी लेख लिख नहीं पा रहा हूं. परसों पाईसराव का पत्र आया है. मैं क्या सहायता कर सकता हूं! उसने लिखा है—— दादा, हर कहीं जाति की दीवार सामने आती है! ऐसा लगता है, कोई-न-कोई इसके विरोध में कुछ करे. आप कहते थे, वह सभी सच था. आज आपका हर वाक्य सत्य लगता है—— अनुभवों के बाद . जीवन में जाति के समान भयानक और कोई बात नहीं. इससे छुटकारा कब मिलेगा?

मेरे पास उत्तर नहीं. मैं भी हेल्पलेस हूं.

२८, जून '७३

आज दहिवले आये हैं. कहते हैं—— कुछ-न-कुछ गड़बड़ हो गयी. समझा नहीं मैं. कल पूछना चाहिए. सोनवणे वकील से मिलना चाहिए. निर्मला से तलाक ले लेना चाहिए, नहीं तो एक मित्र की जिंदगी समाप्त हो जायेगी. उसके पति की तलाश भी करनी चाहिए. बचपन में विवाह होने पर ऐसा पछतावा करना होता है. लोग कितने गधे हैं! उसने, निर्मला के पति ने, विवाह के बाद निर्मला को अपने साथ क्यों नहीं रखा! किसी ने मुझसे यह क्यों नहीं पूछा? कहते हैं, कहीं नौकरी करता है. अरुण कल कह रहा था, बेचारी विवाह के बाद भी विधवा! न पति के घर, न अपने घर! शादी की बात कही,तो उस दिन से पति कभी दिखायी नहीं दिया! उम्र नौ-दस वर्ष. न जाने कैसी शादी! अब कॉलेज का अंतिम वर्ष. गधा! उसके पति ने १९५० में शादी की. लेकिन अब तक तलाक नहीं लिया. उससे पूछा क्यों नहीं? ऐसे जवान रहे तो हमारे समाज का क्या होगा? उससे मिलना चाहिए.

३० जून, '७३

अनिल दहिवले ने किसी बरतन को छू लिया, तो उसे पीटा गया है. पुलिस केस करने पर भी कोई फायदा नहीं. वह नौकरी करे भी तो कैसे! कितना जातिवाद! प्राचार्य से शिकायत करने पर —— यह प्रश्न देहात का है,स्कूल से कोई संबंध नहीं,उत्तर. इसके माथे पर निशान हैं. मार पड़ी है.मुझे कहते हुए भी सकुचाता है.एक बी.ए. आदमी क्या कहे? मैं मातंग हूं, इसीलिए मारा? कैसे कहे? मॉडर्न वर्ल्ड' पढ़ाता है न विद्यार्थियों को. मेरा मस्तिष्क सुन्न हो गया. कुछ भी नहीं सूझता. विचार भी नहीं कर पाता. निर्मला के पति से आज मिलना चाहिए. अब तक तो गंदी गालियों के सिवा दूसरा कोई उपाय मेरे पास नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

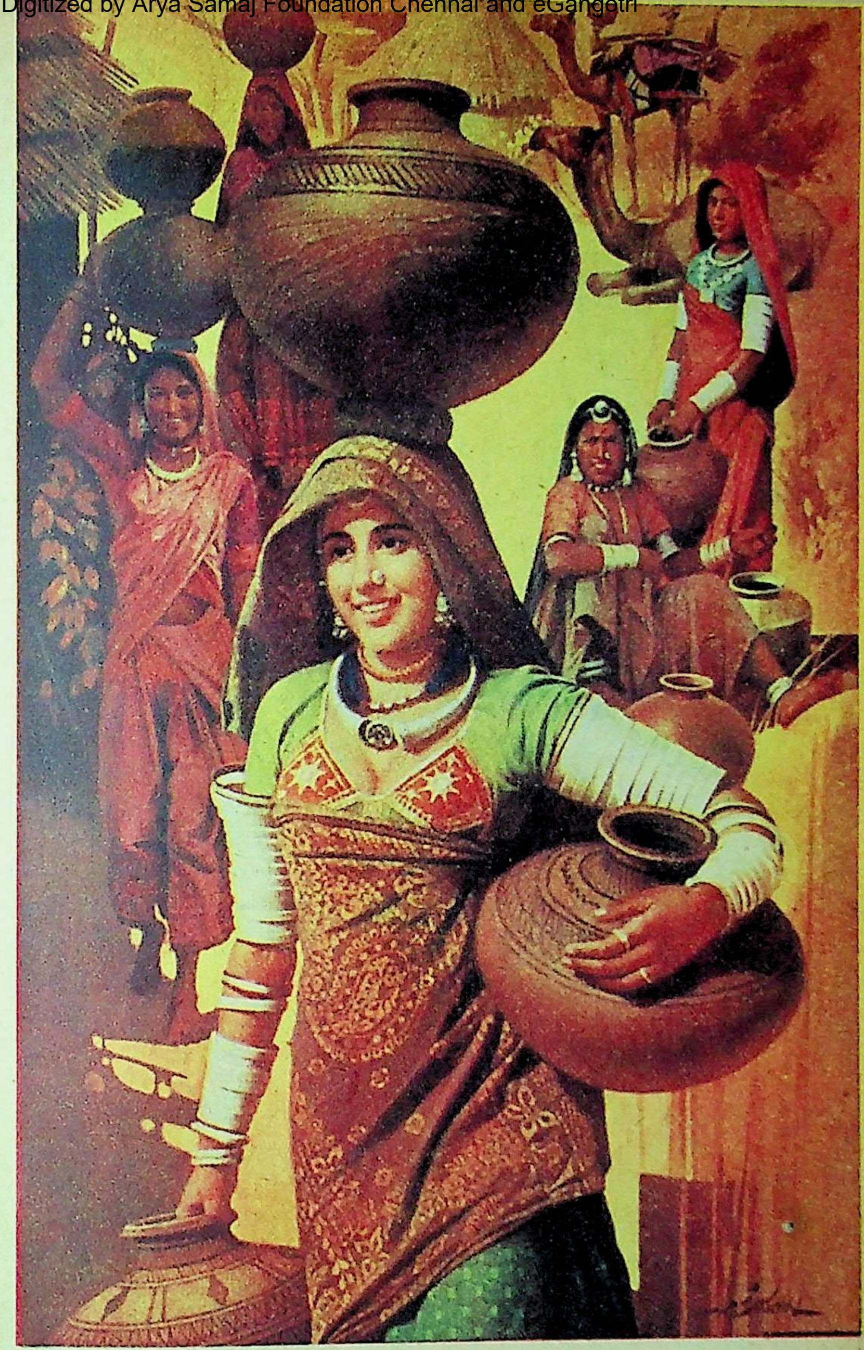

अलवाणी आलीकान के सौजन्य से

४ जुलाई, '७३

कल निर्मला के पतिदेव की खोज की. वाह रे बहादुर! दस साल पहले उसने दूसरा विवाह कर लिया. अब तीन बच्चों का बाप है. इधर निर्मला बेचारी न विधवा, न कुमारी! उसका गला पकड़ कर पूछने को जी चाहता है कि तुमने इतना सब किया, कहां गयी थी तुम्हारी इनसानियत? क्योंकि निर्मला अब अकारण, बिना पति का घर देखे, बिना उसका चेहरा देखे, पुनर्विवाह वाली दुल्हन बनेगी. उसका क्या दोष? उसने क्या गलती की!? अंत में अपराधी कौन? अज्ञानी निर्मला, मां-बाप या प्रथा? यह समाज-रचना कितनी स्वार्थ और नीचता पूर्ण है! मेरा मित्र सुधाकर उसे स्वीकार कर रहा है. कितना विशाल हृदय! सड़ी हुई गंदगी में स्व-विचारों से चमकने वाला एक जुगनू! पट्ठे, करो शादी. निर्मला ने भी उससे सीधे पूछते हुए कहा था—सर, मैं ऐसी न होती तो भी यही पूछती. मानो एक कुमारिका किसी राजपूत से कह रही हो—मैं आपसे प्रेम करती हूं. मेरे जीवन की विश्वासघाती लड़कियों से निर्मला हजार गुना प्रामाणिक और उज्ज्वल है. अनिल आज अपने गांव गया है. बेचारे उसके मां-बाप अपने बेटे को चार दिन भी नहीं खिला सकते. क्या है जिंदगी! निरर्थक बालों की तरह फेंकने जैसी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

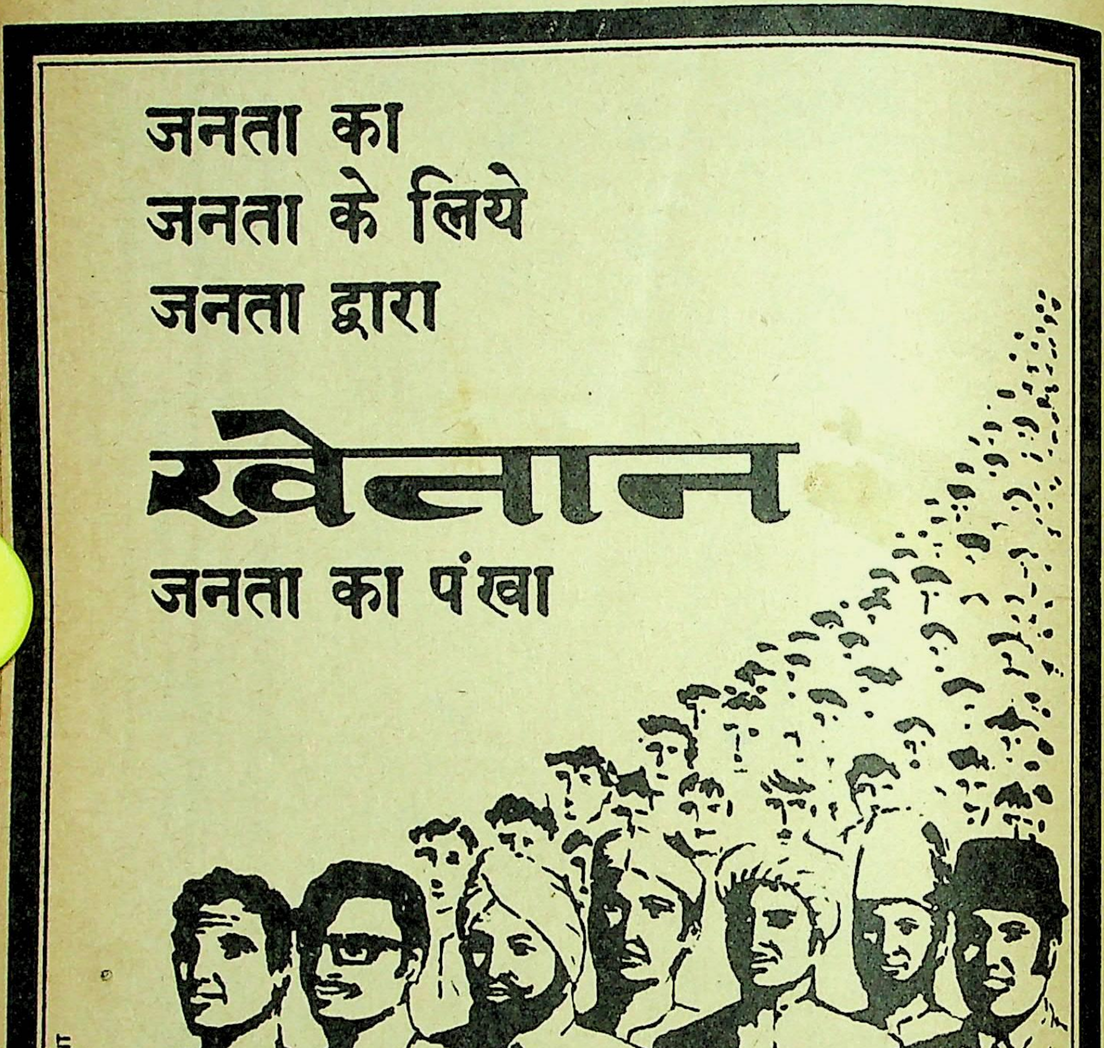

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१० जुलाई, '७३

नासिक हो आया. मनमाड उतरा. औरंगाबाद के लिए दो-तीन घंटे की देर थी. भटका और सीधे माणिकराव के पास गया. सात साल से वह रेलवे पुलिस में है. ड्यूटी पर था. साहब सताता है. बहुत मुसीबत है. कोई रखवाला नहीं! परिवार में तीन व्यक्ति हैं. एक का दो महीने का वेतन रोक रखा गया है. अपराधी का सहायक होने का आरोप है. बेचारे ने चोरी का माल पकड़ लिया, जिससे साहब का 'हफ्ता' बंद हो गया. साहब भड़का. सीधे चार्ज. माणिकराव ने जाति-भेद की शिकायत की, तो सीधे 'खड़ा पहरा' देने की ड्यूटी दे दी गयी. हेडकांस्टेबल पक्का जातिवादी. नगर की गाड़ी के एक डब्बे में घुसा और एक नवपरिणीता स्त्री पर चढ़ बैठा. पकड़ा गया तो नंबर ६६५ बता दिया. नाम माणिकराव कल्हालकर कह कर छूट गया. माणिकराव बेचारा पहरा दे रहा है पुलिस स्टेशन पर. रात को उसे और उसके पति को रोक कर पहचान करायी गयी. हेडकांस्टेबल को पीट डाला. साहब ने केस दबा दिया, लेकिन माणिकराव के पीछे पड़ गया. मैं भी क्या कर सकता हूं? 'मत घबराओ' कह कर निकला. उसे हिम्मत मिली. साला! इस देश में जन्म लेना भी एक सजा है!

१५ जुलाई, '७३

सुबह से लड़की की याद आ रही है. कंट्रोल कब तक कर सकते हैं! प्रेम-वेम करने का अर्थ अपने हाथ से परेशानी मोल लेना है. विवाह में जाति की दीवार आ गयी, प्रेम में नहीं आयी थी! धत् तेरे की! उसके मां-बाप को ढेढ महार से संबंध अच्छा नहीं लगा, तो सीधे पुलिस में शिकायत. वास्तव में उसके प्रति घृणा होनी चाहिए, लेकिन दिल में दया आती है. मेरी समझ में कुछ नहीं आता. कहीं बुद्धि-दोष तो नहीं? उस दिन से रह-रह कर जीसस का वाक्य याद आता है—ईश्वर उन्हें क्षमा करे, क्योंकि उन्हें पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं! परेशान था, तो मधु के पास गया. रामचंद्र कांबले के छोटे-से कमरे में रहता है. बुरा लगा. सीधे कमरे की तलाश में निकला—औरंगपुरा, सरस्वती कॉलोनी, नूतन कॉलोनी, अंत में बहादुरपुरा. एक ब्लॉक मिला. किराया ६० रुपये. ठीक है, कहा, शाम को आता हूं. मालिक पास आया. नाम पूछा. कहा—प्रा. मधुकर कलवणकर और ये डोलस. और प्रश्न, कहां से आये हैं? कहा—अमरावती से. फिर प्रश्न. कौन-से कॉलेज में? उत्तर दिया—फलाने कॉलेज में. फिर भी उसे अर्थ-बोध नहीं हुआ. मैंने सोचा, शाम को सामान ले आऊंगा. किंतु एक सीढ़ी उतर कर बूढ़ा पूछ बैठा—कौन-सा समाज?

—मतलब? हमारा प्रश्न.

—जाति? सीधा प्रश्न.

—हम जाति नहीं मानते, बस, एक आदमी!

—फिर भी. . . ?

—कहना जरूरी है? हमारा प्रश्न.

—समझने से सुविधा रहेगी.

—धर्म बौद्ध, पहले महार.

—घर में पूछता हूं. धोती लपेटते बूढ़ा घर में भागा.

अविनाश डोलस : मराठी कथाकार

हम कुछ देर रुके. कोई बाहर नहीं आया.

अंत में एक मध्यवयीन स्त्री आयी. पल्लू टटोलते बोली—बात यह है कि उन्हें पता नहीं था, ब्लॉक मैंने परसों ही किराये पर दे दिया था.

सीधे लौट आये. साली कैसी लाइफ! मन में आया, विवेक छोड़ कर उस स्त्री को पटक दें. . .

लेकिन साले हम ही नपुंसक! हजारों वर्षों की सभ्यता को सुरक्षित रखने के लिए एक छाता खरीदा.

सुबह से ही परेशानियों से भरा दिन. वह स्त्री और ये बच्चे एक साथ दिखने लगे. □□□

(अनुवाद : र. के. सोनग्रा)

टिप्पणी

विद्यार्थियों के दहकते अनुभव

● डी. यू. कांबले

यह घटना मेरे बचपन की है.

मेरा जन्म अकोला जिले के राजुरा गांव में हुआ था. यह गांव 'रावों के राजूर' नाम से प्रसिद्ध था और बाबाराव राजूरकर इस गांव के प्रसिद्ध राव (राजा) थे. मेरे पिता महारवाड़े के मुखिया थे.

एक बार गांव में एक भैंस मर गयी. महारवाड़े के सभी लोगों ने उसे उठाने से इनकार कर दिया. रावसाहेब चिढ़ गये और उन्होंने महारों के बहिष्कार का आदेश दे दिया. कई दिनों तक महार भूखे रहे, पर झुके नहीं. तब एक दिन स्पृश्यों ने एक युक्ति खोजी और उसके अनुसार हनुमान जी के गले में जूतों की एक माला डाल दी गयी. यह करतूत स्पृश्यों की ही थी, पर उसका दोष मढ़ा गया महारों पर और इसी बहाने उनकी मार-पीट कर दी गयी, उनके घर-बार जला डाले गये. मैं छोटा था, इसलिए ज्यादा तो याद नहीं रहा, पर इतना याद है कि मैं सुबक-सुबक कर खूब रोया था.

स्पृश्यों के इस व्यवहार के कारण उस गांव में जीना मुश्किल हो गया तो घर-बार छोड़ कर अनेक लोग दूसरे गांवों को जाने लगे. हम लोग आज भी दूसरे गांव में ही रह रहे हैं. □

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये सूरज की खोज में

□ योगीराज वाघमारे

ताल्लुकेदार के पास से आया कागज मुकुंद ने सभी बौद्धों को पढ़ कर सुनाया–ताल्लुकेदार ने उन्हें आबादी के लिए जगह दी थी. सभी बौद्ध आनंदविभोर हो गये. एक ने उठ कर, मुकुंद को गले लगा कर प्रेम से कस लिया. खुशी से नाचने लगा. सभी ने तालियां बजायीं. वह अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण था. सभी ने मन-ही-मन ताल्लुकेदार का आभार प्रदर्शित किया.

—देवता आदमी है वह ताल्लुकेदार. . .! बूढ़ा कुशाबा बोला.

—गरीबों पर दयावान है. . .! सखा ने अपनी भावना व्यक्त की.

—अजी, अर्जी ही ऐसी लिखी थी मुकुंद ने कि साहब ने विचार करके सट् से जगह दे दी. जगह का यश मुकुंद को देने के उद्देश्य से मिवा बोला.

—भाइयो, अब हम खुशियां मनायें! भीड़ में किसीने कहा.

—अरे, लेकिन उस मुकुंद को क्या कहना है, यह तो पहले सुन लें!

दूसरा बोला —हां-हां, उसीसे पूछो पहले. . .!

मुकुंद की खुशियां आकाश को छू रही थीं. ताल्लुकेदार के पास से आया हुआ कागज वह बार-बार फड़फड़ा रहा था. बार-बार पढ़ कर देख रहा था. लोगों को अभिमान से समझा रहा था––बस्ती के बौद्धों को आबादी के लिए दो एकड़ जगह मिली है.

गत वर्ष उसीने सब के हस्ताक्षर ले कर ताल्लुकेदार को अर्जी भेजी थी. बीच बीच-में एक-दो बार पूछताछ हुई और अब तो जगह देने का सरकारी पत्र आ गया था.

बस्ती के बौद्ध लोगों के रहने के लिए बिल्कुल जगह नहीं थी. पत्र पढ़ते-पढ़ते मुकुंद की आंखों के सामने अपनी मुसीबतें आ गयीं. हमारे सिर्फ चालीस घर हैं, लेकिन रहने के लिए जगह है पचास हाथ. वर्ष में एक नया घर बना कर रहें कहां? कहीं पीछे बढ़ने की जगह नहीं. रहें भी कैसे, मिवा के पीछे की दीवार चौधरी के खेत की बाड़ से लगी हुई. दूसरी ओर मांग-बस्ती. और एक तरफ चिपकी हुई नदी. नदी से सटी हुई खाली जगह बौद्धों की श्मशानभूमि. घरों के पास की जगह होने के कारण बच्चे औरतें यहां पाखाना करते, मर्द नदी के किनारे. सभी आमने-सामने शरम-लाज दबा कर कितने दिन रहें! कहीं कोई आड़-ओट नहीं. और गंग-मुख से गांव में जाने का रास्ता-एक बैलगाड़ी जाने लायक! उसीसे सट कर ग्राम-सीमा. सभी मुसीबतें! वर्षा में चारों ओर बाढ़ लग जाने पर आदमी अपने घर में ही बंद. पाखाने के लिए भी बाहर नहीं आ सकते. एक पैर घर में तो एक बाड़ की झाड़ी में. . .टट्टी-पेशाब भी वहीं. बहुत बार गांव वालों से कहा, हमें थोड़ी जगह दो रहने के लिए, लेकिन कौन सुनता और कौन जगह देता!

ऐसे ही एक बार सखा का छोटा बच्चा मर गया. बारिश की झड़ी लगी हुई. लोगों के सामने सवाल आया, लाश को दफन करने का, पर कहां? नदी पर जायें तो वह किनारों को रौंद कर बह रही है. फिर क्या करें? मिवा की पिछली दीवार और चौधरी की बाड़ के बीच चार अंगुल झाड़ी थी. अंत में वहीं दफनाया.

रात भर मिवा सो नहीं सका. . पीछे की दीवार से सटा बच्चा दफना है और मैं घर में रोटी खाऊं? छिः! यह ठीक नहीं. कितनी पीड़ा झेल कर दिन बिताये? उसने निश्चय किया, अब जगह देखनी चाहिए. दूसरे दिन उसने मुकुंद से कहा––कितने दिन ऐसी अड़चनों में रहें? अपनी पीढ़ी-दर-पीढ़ी यहां हो गयी! कुछ जगह की सोच, बाबा!

उस दिन मुकुंद ने विचार किया और आबादी के लिए तहसीलदार को अर्जी कर दी. आज उसी अर्जी का उत्तर आया था. . बौद्धों को जगह मिल गयी थी.

लेकिन विश्वास राव पाटिल की जगह. . .और वह बौद्धों को मिले? शेर के मुंह की बकरी मिलना असंभव था.

इसकी कल्पना मात्र से कुशाबा का दिल आशंका से भर गया. उसे भविष्य के दृश्य दिखाई देने लगे. उसने कहा––बच्चो, इसमें मुझे कठिनाई लगती है. . .

—यह देखो, इस बूढ़े का हमेशा कुछ-न-कुछ बुरा सगुन होता है!

—क्या कठिनाई है? एक नौजवान लड़के ने कुशाबा से पूछा.

—वह पाटिल की जगह है. . .

—पाटिल है तो क्या हुआ? कोई शेर तो नहीं! और हम कहां उनकी जगह जबरदस्ती ले रहे हैं. . . सरकार ने दी, हमने ली. सरकार के आगे किसीकी कुछ नहीं चलती. दूसरा बोला.

—सरकार भी क्या करेगी, बच्चो. . .! बूढ़ा कुशाबा बोला.

—बाबा, आप ऐसी बातें न करें. जो होगा, हम देख लेंगे. कितने दिन मुसीबत से रहें. .! मुकुंद कुशाबा को समझाने लगा.

—हां, कब तक इस कैद में रहें. . .! सबने मुकुंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का साथ दिया. कुशाबा चुप हो गया.

दूसरे दिन मुकुंद ने वह कागज सरपंच को दिखाया और पुराने मकान गिरा कर नयी झोपड़ियां बनने लगीं.

★ ★

अभी तक कोई जागा नहीं था. मुकुंद की मां कुएं से खाली मटकी लेकर आयी. मुकुंद निश्चित होकर नये घर में सोया था. उसने जगाते हुए उसने कहा—बाबा, अपने कुएं में किसी ने मरा हुआ कुत्ता डाल दिया है... टट्टी-गोबर और जूते भी हैं...!

मां के शब्द नींद में भी मुकुंद को जबरदस्त धक्का दे गये. वह तड़ाक् से उठ बैठा— आं...क्या कहती हो?

—हां, सच है बाबा...!

अभी वह आंगन में आ भी नहीं पाया था कि सौदा लाने गयी रानबा की मां बड़बड़ाती हुई आयी. उसे देख कर मुकुंद ने पूछा— क्या हुआ मां?

—दुकानदार ने सामान नहीं दिया!

—क्यों?

—वो कहता है, तुम्हारे लिए मेरी दुकान में सामान नहीं है...सामान भी ताल्लुकेदार से ले आओ.

मुकुंद समझ गया, पाटिल के खेत में झोपड़ियां बांधने के कारण यह हुआ था. तब तक रानबा की मां के चिल्लाने पर सभी जमा हो गये. सटवा, भिवा, कुशाबा, निवृत्ति, चोखा मैदान में बैठे थे. मानो दूर लगी आग की लपटें उन्हें छू रही थीं. तभी किसन बनसोडे आया. बंडिग के काम पर गया किसन खाली हाथ लौटा था. बैठते ही उसने कहना शुरू किया—बाजीराव ठोमरे ने कहा है कि खेतों में काम पर मत आओ...हमारी भूमि पर कदम भी मत रखो. नहीं तो मरते दम तक मारेंगे!

लोग और भी घबरा गये. एक दूसरे का मुंह देखने लगे...गांव वालों ने यह दांव लगाया और उसमें हमें जकड़ लिया.

सखा चुप नहीं रह सका. वह कुछ बोलने ही वाला था कि कोई गांव के द्वार से रोते-चिल्लाते आता दिखाई दिया. सभी की दृष्टि उस ओर गयी. भिवा कांबले का रघू सिसक-सिसक कर रो रहा था. गाय हांकते वह घर की ओर आ रहा था और उसकी रुलाई नहीं रुक रही थी. पास आने पर सभी ने एक साथ पूछा—क्या हुआ?

—शामराव गुख ने मारा...

—क्यों?

—कहने लगा कि बांध पर गाय क्यों चरने दी...

गांव वालों ने बौद्धों का गांव में रहना मुश्किल कर दिया था—खेतों में आने से मनाही और सभी बातों का बहिष्कार कर दिया था.

—मुकुंदा! गांव वालों ने पूरा विचार कर लिया

अछवानी आर्लीकान के सौजन्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

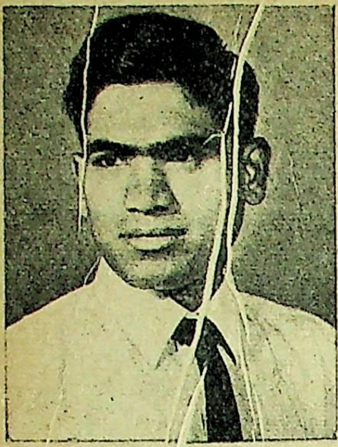

योगीराज वाघमारे : मराठी कहानीकार

है. . . सखा बोलने लगा. सभी घबरा कर एक दूसरे की ओर देख रहे थे. क्या कहें, कैसे कहें! कुछ सूझ नहीं रहा था.

—हां, घेर कर मारने का! मुकुंदा ने सखा की अधूरी बात पूरी की.

—क्या करें. . .? हमारे हाथ में क्या है? सब कुछ उनके हाथों में है! इस गांव में हम रहें या न रहें, यह भी!

—और न जाने क्या करेंगे!

—हम भी कुछ विचार करें. निवृत्ति सभी को ढाढ़स बंधाते हुए बोला.

बीच में एक ने दूसरा संकेत करते हुए —नहीं कौन कहता है. . .

मुकुंदा एकदम बोला—अगर उन्होंने बहिष्कार किया है, तो उनसे आशा न करें. यहां नहीं, काम पर दूसरे गांव जायेंगे.

—लेकिन अगर उन्होंने रास्ते से जाने नहीं दिया, तो. . .?

—वह रास्ता उनके बाप का नहीं, सरकार का है!

सभी चुप थे. शांति छा गयी थी. उस शांति को भंग करते हुए नदी से आने वाली औरतें चिल्लाने लगीं. अजी, दौड़ो-दौड़ो! किसन मामा की बहू को पाटिल का नौकर मार रहा है....

मुकुंद के साथ सभी उधर दौड़े. नदी पर जाते समय बांध पर कुटी को हाथ लगाने पर नौकर ने जाने क्या-क्या गालियां दी थीं और किसन की बहू को मारने दौड़ा था.

जैसे-तैसे तू-तू, मैं-मैं करके झगड़ा मिटाया. बौद्ध जन घर लौट आये. अब वातावरण तपने लगा था. सब समझ गये थे कि पाटिल ने गुस्से में आ कर ये बखेड़े खड़े किये हैं.

* *

—शाम हो गयी थी. लोग अपनी-अपनी झोपड़ी में चूल्हे के सामने बैठे थे. जलती आग की रोशनी में उनके चेहरे और भी चिंताग्रस्त दिखाई दे रहे थे. अचानक पाटिल का नौकर मुकुंद के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ. उसे देख कर मुकुंद अंदर से बोला—कौन है?. . .

—मैं. . .पाटिल का आदमी . बड़े रोब से नौकर बोला .

—क्या काम है. बाहर आते हुए मुकुंद ने पूछा.

—तुम सभी लोगों को पाटिल ने चौपाल पर बुलाया है .

डरते-डरते सभी बौद्ध हनुमानजी के फर्श पर बैठे. पाटिल और दूसरे हिंदू ऊपर बैठे थे. गैस बत्ती जल रही थी. दिनभर की घटनाओं से बौद्धों के हृदय पहले ही दहल गये थे. अब और क्या होगा, इस विचार से वे सहमे हुए थे. तभी पाटिल ने गर्जना की—मुकुंदा, तू नाहक हमसे दुश्मनी मोल ले रहा है. . .!

—मैं समझा नहीं, चौधरीजी . . .! मुकुंद गरदन नीचे करके बोला.

—तेरी मां की. . .वैसा सुद्ध मत बोल. . .बनिये, बम्मन की. . .औ. . .पटेल जल गया.

बौद्ध दिल की धड़कनें गिनने लगे. मुकुंद गरदन ऊपर करके देखने लगा. . .बिना वजह पाटिल ने गाली दी थी. सभी लोगों के सामने उसका अपमान हुआ था. कनपटियां तड़-तड़ करने लगीं. उसकी जबान पर भी एक गाली आयी, लेकिन वह दे नहीं सका. उसने उसे लौटा दिया. थूक निगला और निचला होठ ऊपर के दांत से चबाने लगा. पाटिल फिर बरस पड़ा—याद रखो, मेरी जगह तुम डकार नहीं सकते! तुम्हें सुख-चैन से मैं रहने नहीं दूंगा. तुम कहीं से हुकुम लाओ, पर मुझे की विश्वास राव पाटिल कहते हैं! पाटिल ने मूंछों को बल दिया और पच् से जमीन पर थूक दिया.

—नहीं,- नहीं, चौधरी, हमने क्या किया? हमें भी रहने के लिए जगह चाहिए. सरकार ने जो कहा, वही हमने किया. एक बूढ़ा नम्रता से बोला.

पाटिल का गुस्सा और बढ़ गया— अरे-अरे सरकार वाले, ज्यादा मस्ती चढ़ गयी है क्या? बेमौत मरने पर पता चलेगा. पकड़ो इन्हें. . .इनकी मां की. . .! ढेढ़ चमार सरकार का खा कर फूल गये! पाटिल भड़क गया.

इतना सुनते ही गांव वालों ने नीचे छलांगें मारीं और जो भी बौद्ध दिखाई दिया, उसे मारने लगे. चारों ओर हाहाकार मच गया. रोना-चिल्लाना शुरू हो गया. गांव की सीमा के बाहर चीख-पुकार शुरू हो गयी. पांच मिनट में यह सब हो गया. लाठियों और पत्थरों की मार खाये बौद्ध लंगड़ाते - बिलखते, रोते-चिल्लाते भीमनगर में लौटे.

* *

सभी सिसकते-रोते मुकुंद के द्वार पर जमा हुए. आदमी, औरतें, बच्चे जबान रहते हुए भी कोई बोला नहीं था. सभी डरे हुए थे. उनकी हंसी भाग गयी थी. आंखों में मृत्यु का भय मंडराने से सभी बेहाल हो रहे थे. अचानक मांग बस्ती की दिशा में कुछ गड़बड़ हुई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी के कान खड़े हो गये. क्या होने वाला है, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी.

खलबली बढ़ती गयी. . . भीड़ बौद्धों की नयी बस्ती की ओर आ रही थी. हाथ में जलती मशालें ले कर आती भीड़ को देख कर मुकुंद जान गया कि अब ये घर-बार जलायेंगे. झोपड़ियां सुलगायेंगे. सभी भयातुर दृष्टि से देख रहे थे. पलभर में ही उस भीड़ ने एक झोपड़ी पर मिट्टी का तेल छिड़का और आग लगा दी भयानक लपटों से आग झोपड़ियों को राख कर रही थी. गांव वाले चिल्लाते -धमकियां देते एक के बाद एक झोपड़ी जला रहे थे. पलभर में सारा भीमनगर जल उठा. आंखों के सामने द्वार पर बंधी बकरियां, मेमने मुर्गियां, गाय, बछड़े आग की बलि बन रहे थे. उनका रंभाना, आक्रोश, शोर धुएं की लपटों के साथ ज्वालाओं में मिल कर आकाश को छू रहा था. दौड़ते भागते कोई-कोई आंगन में गया, जो कुछ बचाया जा सकता था, बचाया, लेकिन घर की कोई चीज नहीं बची. आग पूरी फैल रही थी. और बौद्ध लोग उन ज्वालाओं को देख कर खाक हो रहे थे.

घर क्यों जलाये, यह सवाल पूछने के लिए उनका दिल वहां नहीं था. केवल नि:श्वास और हिचकियां बची थीं.

वे फिर वहीं जली हुई झोपड़ियों के पास आये. हाथ-पैरों की शक्ति चली जाने पर भी सहम कर बैठ गये. कोई बोलता नहीं था. हंसता नहीं था. लेकिन अंतरतम में खौल रहा था ज्वालामुखी का लावा. बाहर आने का रास्ता होने पर भी उसका विस्फोट नहीं हो रहा था.

मुकुंद ने सभी की ओर देखा. सभी निरपराध आंखें पानी से भर आयी थीं. यह देख कर उसकी आंखों में भी आंसू भर आये. आंसू आंखों में समा नहीं रहे थे. भावावेश से उसकी हिचकी बंध गयी. वह जोर-जोर से रोने लगा. फिर तो सभी के बांध टूट गये.

—मुकुंदा, तुम्हीं रोने लगे तो फिर हम क्या करें? कुशाबा ने अपनी हिचकी रोकते हुए कहा.

मुकुंदा को अच्छा लगा. शरीर में शक्ति आयी-सी लगी. उसका सिर फट गया था. पैर टूट गया था. उसमें शक्ति आ गयी . झट से अपने आंसू पोंछ कर उसने कहा— कहो दादा, फिर हम क्या करें? तुम जैसा कहोगे हम वैसा ही करेंगे. सभी ने यह निश्चय जाहिर किया.

अब तो मुकुंद में बारह हाथ की शक्ति आ गयी. वह आवेश में आ गया. उसका हृदय विद्रोह कर उठा— यहां रहने के लिए बचा ही क्या है? प्राण मानो नरक में झुलस रहे हैं. यहां क्यों रहें? उसने आवेश में मुट्ठी भींच ली. आवाज बुलंद हो गयी. सभी चकित रह गये. . .मुकुंद को क्या हुआ? उसका लाल अंगारे-सा मुंह देख कर भिवा ने कहा—क्या कहते हो?

—यहां क्यों रहें? मुकुंद ने मानो ध्यान भंग कर पूछा.

—फिर कहां जायें? किसी ने पूछा.

मुकुंद कहने लगा—बहुत दूर जायेंगे. . .जहां हमें कोई ढेढ़-चमार नहीं कहेगा, पानी में विष्ठा नहीं डालेगा. खेत में जाने से कोई नहीं रोकेगा. मां-बहन की इज्जत नहीं लूटेगा, मारपीट नहीं करेगा, वहां. . . आते हो तुम?

—हां, बंध-मुक्ति के लिए किये गये गुलामों के उद्घोष की तरह उन्होंने कहा.

दिन निकलने के पहले बस्ती की सरहद को पार करना था. नदी पार कर सभी दक्षिण की ओर चले. अंधेरी राह में चलने लगे. कहां जाना है, निश्चित नहीं था. सब के आगे मुकुंद था. वह लंगड़ाता चल रहा था. . . चालीस-पचास लोगों का जुलूस लिये वह चल रहा था.

अंत में सीमा आ गयी. पूर्व दिशा में सूर्य आंखें खोल रहा था. जलते हृदय और प्रस्थान करने वाले जीव. . . मुकुंद के साथ सभी ने सूरज को देखा. उनके पेट में मुक्का-सा लगा. . .अब यहां से जल्दी चलना चाहिए. वे चलने लगे. . . दक्षिण की ओर. . .जिधर आर्यों ने अनार्यों को खदेड़ दिया था उधर. . . □□□

शासकीय विद्यालय, उस्मानाबाद

विद्यार्थियों के दहकते अनुभव

● आर. एन. पानपटील

बुलढाना जिले के मौंढाला गांव की बात है. परीक्षा समाप्त करके मैं गांव लौटा था. बौद्धों ने १४ अप्रैल का त्योहार मनाने का निश्चय किया. पर मराठों ने निश्चय किया कि डा. बाबा साहेब आंबेडकर के चित्र का जुलूस न निकलने दिया जाय. बौद्धों ने धाड़ के पुलिस स्टेशन पर अर्जी दी और बैलगाड़ी पर जुलूस रवाना हुआ. उधर मराठा मंडली पूरी तैयारी के साथ जुलूस का इंतजार कर रही थी, परंतु जुलूस के साथ दो पुलिस वालों को देख कर वे चुपचाप अपने घर खिसक गये. पर जुलूस उनके घर के सामने से गुजरा तो वे उन पर दोष लगाने लगे —सीधे क्यों नहीं चलते, हमारे घरों की दीवालों से गाड़ी को टकराकर घर गिराओगे क्या? बौद्धों ने इस पर बैल हटा दिये और खुद जुलूस की गाड़ी खींचने लगे और बाबा साहेब का जय-जयकार करते हुए जुलूस पूरा कर के वापस आ गये. दूसरे दिन सबेरे-सबेरे जब पुलिस के सिपाही वापस लौट गये तो मराठों ने बौद्धों से प्रश्न करना शुरू किया—तुम लोगों ने गांव में जुलूस क्यों निकाला? सारे गांव ने बौद्धों का बहिष्कार कर दिया. उनके लिए दूकानें बंद कर दी गयीं, उनके काम बंद कर दिये गये. जो उन्हें काम पर बुलाता उन्हें दंड दिया जाता. वातावरण गरमाने लगा. कुछ बौद्ध पड़ौस के गांवों में काम के लिए जाने लगे. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्युशाला : पृष्ठ १६ से आगे

अमरसिंह की तलवार कभी स्वार्थ के लिए नहीं लड़ी.

पुरुषोत्तम : अमरसिंह, हमारी तराजू भी कभी स्वार्थ के लिए नहीं झुकी. तुमने तलवार की अपेक्षा हमेशा ढाल का ही ज्यादा उपयोग किया है, इसे न भूलो.

अमरसिंह : पुरुषोत्तम, इस तरह की बातें मेरे लिए असह्य हैं. क्षत्रियों का पराक्रम इतिहास ने स्वीकार किया है. धनुषधारी अर्जुन कौन था? छत्रपति कौन थे. चित्तौड़ का राजा किस वंश में जन्मा था? इस तरह के हजारों नाम दिये जा सकते हैं.

पुरुषोत्तम : मुझे इस तरह का पराक्रम स्वीकार्य नहीं. हम अपनी तराजू का कभी प्रदर्शन नहीं करते हमें ढिंढोरा नहीं पीटना था. हमें तो बस अपने देश की सेवा करनी थी.

(मृत्युदेवता जोरों से हंस पड़ते हैं)

मथुरा : महाराज, ईश्वर ने मनुष्यों का कितना सुंदर विभाजन किया है. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र. हर एक अपनी सीमा में रहे. कोई किसी के मामले में दखलंदाजी न करे. दुनिया में ऐसी सुंदर व्यवस्था कहीं भी नहीं होगी. (सायनाक हंसता है और हंसते-हंसते गंभीर हो जाता है.)

पुरुषोत्तम और अमरसिंह : तुम हंस रहे हो?

सायनाक : हंसूं नहीं तो और क्या करूं ! इस वर्ण-व्यवसाय ने ही हमारे देश को खोखला कर दिया है. मनुष्य मनुष्य का शत्रु हो गया है. वर्ण-व्यवस्था यानी इनसानियत का जनाजा. आंबेडकर बाबा अकसर कहते थे कि वर्ण व्यवसाय का अर्थ श्रमविभाजन नहीं, बल्कि श्रमिकों का विभाजन है.

मथुरा : क्या बकवास करता है! वर्णव्यवस्था पर दोषारोपण करनेवाले शूद्र की जबान काट लेनी चाहिए!

मृत्युदेवता : मथुराबाई इस दरबार में सजा देने का अधिकार किसी को नहीं. मुझे भी नहीं.

अमरसिंह : सायनाक, दुनिया में तुम्हारा सत्कार हो, ऐसी इच्छा तुम क्यों रखते हो? जो तुम्हारे भाग्य में लिखा होगा, वही होगा.

सायनाक : भाग्य? कहां का भाग्य! भाग्य पर भरोसा रख कर ही हम अब तक जीते रहे. कितना बड़ा यह अज्ञान !

पुरुषोत्तम : अज्ञान? हमारे भाग्य में था, इसीलिए हम वैश्य के यहां पैदा हुए,

सायनाक : तुम्हारे सर पर लटकती तलवारें... ब्राह्मण और क्षत्रिय तुम्हारे सर पर बने रहें, यह तुम्हें सह्य है. निम्नों को कुचलना और ऊपर वालों की खुशामद ही तुम्हारा धर्म है!

अमरसिंह -मथुरा : यह कितनी दुष्टता है !

मृत्युदेवता : सत्य सदैव कठोर होता है. उसे स्वीकार करने के लिए मन के दरवाजे तथा भावनाओं के झरोखे दृढ़ होने चाहिए. समझे !

मथुरा : इसका मतलब यह तो नहीं कि आपके दरबार में हमारा अपमान हो.

मृत्युदेवता : यह अपमान नहीं. ये धधकते हृदय के उद्गार हैं. पर मथुराबाई, पृथ्वीलोक में तुमने कितने लोगों का अपमान किया?

मथुरा : मुझे याद नहीं.

मृत्युदेवता : कमंडलु, विवरण पत्र पढ़ो. (कमंडलु विवरण पत्र खोलता है .)

कमंडलु : (पढ़ते हुए) मथुरा नरसोपंत सरदेशपांडे, उम्र ३५, मुकाम देवता के गोठण. पति को शारीरिक दंड, पुरुष जाति के विषय में तिरस्कार और घृणा...

नरसोपंत : हां, इसने मुझे कभी शरीर-सुख नहीं दिया. हमेशा मुझसे नफरत की. मुझे कष्ट दिये.

कमंडलु : सास-ससुर को यातनाएं...

नरसोपंत : कितनी यातनाएं दीं तुमने मुझे! मां-बाप का मैं इकलौता पुत्र था, फिर भी केवल तुम्हारी निर्दयता के कारण उनके लिए मैं कुछ भी न कर सका.

कमंडलु : नीतिमत्ता पालन नहीं की. सार्वजनिक जीवन को तुच्छ समझा. धर्मशास्त्र के नाम पर अशोभनीय वर्तन. शूद्रातिशूद्रों को...

मथुरा: (चीखकर) यह सब झूठ है. मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया !

मृत्युदेवता : इस दरबार का विवरण झूठा नहीं हो सकता, मथुराबाई ! कमंडलु, आगे पढ़ो.

कमंडलु : पति को भोजन में विष दिया.

नरसोपंत : उस दिन मुझे कितनी यातनाएं हुई. मेरा सारा बदन नीला पड़ गया. मैं घंटे भर तक लगातार तड़पता रहा, पर इसने मेरी ओर देखा तक नहीं!

मथुरा : आपकी ओर क्या देखती, मेरा नीति-धर्म दृढ़ रहे, इसलिए मैं ज्ञानेश्वरी पढ़ रही थी.

मृत्युदेवता : मथुराबाई, आपका पति जब मृत्यु की अंतिम घड़ियां गिन रहा था, तब आपसे ज्ञानेश्वरी कैसे पढ़ी गयी? (मथुरा हंसती है. पागल की तरह आंखें नचाते हुए हंसते-हंसते भीतर चली जाती है.) मथुराबाई अंत में पागल हो गयीं और उस पागलपन के दौर में ही उन्होंने आत्महत्या कर ली—कुएं में डूबकर. दूसरे दिन उनकी लाश ऊपर आयी, तब लोगों को पता चला.

नरसोपंत : महाराज, मुझे जाने की आज्ञा दीजिए. मैं उसे मनाऊंगा कि पृथ्वीलोक में जो संभव नहीं हो पाया, वह कम-से-कम यहां तो हो... (नरसोपंत जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं. कुछ क्षण शांति).

मृत्युदेवता : अमरसिंह तुम्हें क्या कहना है?

अमरसिंह : महाराज, झगड़ा है हम दोनों में. उसका विवरण मैं (सायनाक की ओर ऊंगली से इशारा कर) इसके सामने नहीं दूंगा.

सायनाक : महाराज, आपके सामने मेरा यह अपमान! आपके दरबार में तो सभी को समान समझा जाता है!

अमरसिंह : अरे, यह क्या बकवास लगा रखी है! (ताली बजा कर) अरे, कोई है उधर? जरा मेरी तलवार ले आओ. अभी इसके टुकड़े-टुकड़े कर देता हूं!

मृत्युदेवता : (हंस कर) अमरसिंह, यहां तुम्हें तलवार ला कर देने वाला कोई नहीं. यह मृत्युदेवता का दरबार है, तुम यह बात भूल जाते हो.

अमरसिंह : तो इससे क्या, शूद्र को अपनी मर्यादा नहीं भूलनी चाहिए. हमने अपने क्षत्रियत्व की मर्यादा को कभी नहीं भुलाया.

मृत्युदेवता : यह मर्यादा किसने बनायी? क्यों बनायी? कब बनायी? क्या जानते हो तुम?

अमरसिंह : मैं इस झमेले में कभी नहीं पड़ा. हमारे परदादा ने हमारे दादा को, हमारे दादा ने हमारे पिता को, हमारे पिता ने हमें जो कुछ कहा, उसी को हमने शिरोधार्य माना. वही हमारा धर्म. धर्मपालन से मनुष्य स्वर्ग प्राप्त करता है.

पुरुषोत्तम : अमरसिंह के कहने में सचाई है. पूर्वजों ने जो कुछ कहा, उसका पालन ही हमारा धर्म है.

अमरसिंह : महाराज, धर्म का हमने पालन किया, पर कभी-कभी मनस्ताप होता है. परशुराम ने धरती को क्षत्रियविहीन किया--एक बार नहीं, इक्कीस बार. हमारे पूर्वजों की उन्होंने निर्दयता से हत्याएं कीं. इस वेदना से मैं अपने आपको मुक्त नहीं कर पाया. मैं असमर्थ सिद्ध हुआ. उसका स्मरण होते ही मेरी मुट्ठियां भिच जाती हैं. मैं कुछ भी कह सकने में असमर्थ रहा, क्योंकि धर्मग्रंथों की आज्ञा मैंने शिराधार्य मानी. मैं यह दुखः कैसे भूल सकता हूं?

मृत्युदेवता : इस संबंध में मैं क्या कह सकता हूं!

अमरसिंह : तो मुझे इस दुखः को दूर करने के लिए कोई उपाय नहीं मिलेगा?

मृत्युदेवता : इस बारे में भी मुझे कुछ कहते नहीं बनेगा अमरसिंह.

अमरसिंह : तो मुझे दुःख दूर करने के उपायों की खोज करनी होगी. (जाता है.)

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम, तुम्हें क्या कहना है?

पुरुषोत्तम : महाराज! मैं बेचैन हूं. बेचैनी को नष्ट करने का कोई इलाज है क्या, महाराज?

मृत्युदेवता : (हंस कर) इलाज? स्वस्थता, यही एकमात्र इलाज है बेचैनी का. पुरुषोत्तम आखिर हुआ क्या है, वह तो बताओ.

पुरुषोत्तम : बहुत कुछ कहना चाहता हूं, महाराज! हम वैश्य. हमारा तीसरा वर्ण. इसका हमने कभी दुःख नहीं माना. हमने अपनी शक्ति के अनुसार अपने देश की

गंगाधर पानतावणे : कवि, नाटककार, कहानीकार, समीक्षक और पत्रकार

सेवा की और समृद्धि दी. पर इस वर्णव्यवस्था में हमारा स्थान तीसरा ही रहा. वैश्यों को पहला स्थान मिलना चाहिए. ब्राह्मणों और क्षत्रियों को सही अर्थ में सम्मानित जीवन मिला केवल हमारे कारण. हम विशेष पढ़े-लिखे भले न रहे हों, पर बुद्धिमत्ता के बिना तो व्यापार हो ही नहीं सकता. आपके दरबार में हमें शीर्ष स्थान मिलना चाहिए.

मृत्युदेवता : इससे क्या होगा?

पुरुषोत्तम : इससे अगले जनम में तो कम-से-कम हमें प्रथम वर्ण का सम्मान मिलेगा.

मृत्युदेवता : कितने मूर्ख लोग हो तुम! मृत्युशाला और पृथ्वी लोक का कोई संबंध नहीं है, लगता है तुम इसे भूल जाते हो, और, तुम्हारा अगला जन्म मनुष्य योनि में होगा, यह तुमसे किसने कहा?

पुरुषोत्तम : मुझे लगता है. मेरी अपनी श्रद्धा कहती है.

सायनाक : (हंस कर) इसी को कहते हैं पागलपन.

पुरुषोत्तम : छिः-छिः! इस शूद्र को बीच में बोलने की बड़ी बुरी आदत है!

मृत्युदेवता : सायनाक, क्या तुम कुछ देर के लिए अपनी जबान पर लगाम नहीं लगाओगे?

सायनाक : महाराज, हजारों वर्षों से हमने अपनी जबान बंद रखी थी. आज ही तो हम कुछ कहने लगे हैं . . .

मृत्युदेवता : मुझे एक पक्ष का कथन पूरी तरह से सुनना है. तुम्हारा भाषण-स्वातंत्र्य मैं नहीं छीनूंगा.

सायनाक : ठीक है, मेरे लिए आपकी आज्ञा शिरोधार्य है. पृथ्वीलोक पर हमारे देश में अभी-अभी प्रजातंत्र की स्थापना हुई है. हमें अपना मत प्रदर्शित करने का अवसर मिला है, इसलिए मैं. . . .

पुरुषोत्तम : महाराज, इस प्रजातंत्र-फिजातंत्र को हम नहीं मानते! बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग कर यह शूद्र हमें धोखा दे रहा है!

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम, जिनकी जबान हमेशा के लिए काट दी गयी थी, उनको बोलने का अवसर मिलते ही कितना गजब करने लगे हो तुम लोग. तो पुरुषोत्तम, तुम मनुष्य-जन्म चाहते हो न?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषोत्तम : हां, महाराज.

मृत्यु देवता : लेकिन किस जाति में?

पुरुषोत्तम : महाराज, मैं जिंदगी भर वैश्य कहलाता रहा. अब मुझे न इस जाति में जन्म चाहिए, न क्षत्रियों की जाती हमें. अब मेरी एकमेव इच्छा है ब्राह्मण जन्म की. (मृत्युदेवता अट्टहास करता है)

सायनाक : महाराज, मुझे भी ब्राह्मण-जन्म मिलेगा क्या? (मृत्युदेवता फिर अट्टहास करता है.)

पुरुषोत्तम : महाराज, क्या शूद्र को ब्राह्मण-जन्म की अपेक्षा रखनी चाहिए? इससे तो धर्म में और अधिक भ्रष्टता आयेगी!

मृत्युदेवता : और तुम्हारी अपेक्षा से?

पुरुषोत्तम : गुणों के आधार पर श्रेष्ठता संभव है. इस तरह की बात ऋषि-मुनियों ने कह रखी है.

मृत्युदेवता : पर लाख कोशिश के बावजूद तुम्हें मनुष्य-जन्म नहीं मिलेगा. तुम जैसों को गुणों का अहंकार नहीं रखना चाहिए. कमंडलु, इनका विवरण फल निकालो और पढ़ो इनके कृत्य.

कमंडलु : पुरुषोत्तम नरोत्तम, मुकाम बलसाड. अत्यंत स्वार्थी, द्रव्यलोभी. सरकारी अधिकारियों को रिश्वत दे कर सरकार के साथ धोखेबाजी. श्रमदान के नाम पर विद्यार्थियों को अपार कष्ट और धोखेबाजी. अनाज का कालाबाजार. . .

पुरुषोत्तम : नहीं-नहीं, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया. सरकार तथा विद्यार्थियों को तो कम-से-कम मैंने कभी धोखा नहीं दिया.

कमंडलु : अनेक लोगों का व्यापार नष्ट किया. संकल्पित तालाब का निर्माण नहीं किया, उलटे उसकी सारी रकम हजम कर ली. गरीबों का शोषण किया. शासन पर दबाव. . .(कुछ देर खामोशी)

पुरुषोत्तम : महाराज, मेरा भ्रम दूर हो गया. आपके दरबार में इतना विवरण लिखा होगा, मैंने यह नहीं सोचा था. मरते दम तक मैंने कितने कष्ट उठाये!

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम, गुणों के कारण श्रेष्ठता मिल सकती है, ऐसा तुम्हारा कहना है न? फिर तुम्हारी मृत्यु कैसी हुई?

पुरुषोत्तम : मेरे दुःखों की फिर क्यों याद दिला रहे हैं, महाराज! मैं पापी हूं. जिंदगीभर धन ही कमाया मैंने. धन में ही डूबा रहा. विलास में ही मग्न रहा. आगे चल कर दुनिया से नफरत हो गयी मुझे.

मृत्युदेवता : ऐसा क्यों हुआ?

पुरुषोत्तम : मेरे छोटे भाई ने, पत्नी ने, बच्चों ने, सभी ने मुझसे संपत्ति में अपने हिस्से की मांग की, मैंने इनकार किया. फिर भाई ने मुझसे दुश्मनी की. वह घर में एक विषकन्या ले आया. . .किंतु उस युवती से मेरा कोई संबंध नहीं था. . .

मृत्युदेवता : कमंडलु, शांति को दरबार में हाजिर करो. (कमंडलु घंटा बजाता है. शांति प्रवेश करती है. पुरुषोत्तम कांपने लगता है. गरदन दूसरी ओर घुमा लेता है.)

पुरुषोत्तम : कौन है यह? इसका क्या काम है यहां?

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम, तुम घबरा क्यों रहे हो? तुम्हारे पैर कांपने क्यों लगे हैं?

पुरुषोत्तम : नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं.

मृत्युदेवता : नहीं, तुम्हारी सांस रुकने लगी है. शरीर से पसीना छूटने लगा है.

पुरुषोत्तम : नहीं तो. (पुरुषोत्तम पसीना पोंछने लगता है.)

मृत्युदेवता : शांति, इस वैश्यपुत्र को जानती हो तुम? (शांति, सिसकियां भरने लगती है.) क्या हुआ? बोलो?

शांति : महाराज, हम वर्ण के बाहर के लोग हैं— हमारा अपना अलग से कोई अस्तित्व नहीं रहता. हमारा स्वयं का कुछ नहीं होता—न शरीर, न मन और न रिश्ते-नाते.

मृत्युदेवता : मैं पूछता हूं, क्या तुम इसे जानती-पहचानती हो?

शांति : जान-पहचान क्या बताना है, महाराज! हमारी पहचान का भी कोई अर्थ होता है? मेरी शादी हमारे रीति-रिवाज से हुई. माता-पिता को लगा, उनके सर का बोझ दूर हो गया. लेकिन. . .

मृत्युदेवता : लेकिन क्या?

शांति : आनंद के साथ दुःख भी बना रहता है, हमारी परंपरा में. दुःख का यह प्याला आंखें बंद कर चुपचाप पीना पड़ता है हमें. मेरी जिंदगी में भी वही घटित हुआ, जो अन्य, युवतियों के साथ. . . (सिसकियां लेने लगती है) महाराज, मेरी शादी के दिन मुझे अपने पति के साथ जाने का अधिकार नहीं था. परंपरा के अनुसार गांव में अमीर के पास रात भर मुकाम के लिए जाना पड़ा मुझे. मैं युवा-वस्था की दहलीज पर ऐसे ही प्रवेश करने वाली युवती थी. मन में तूफान-सा उठा. लेकिन परंपरा तोड़ना असंभव था, मेरे लिए! जिसने भी परंपरा को तोड़ने की कोशिश की, उसने जिंदगी से हाथ धो लिया. हमारे पड़ोस की कालोनी की युवती का वही हाल हुआ. जैसे ही उसने अमीर के घर से भाग जाने की कोशिश की, चाबुक की मार से उसका शरीर फोड़ दिया गया. वह जोर-जोर से रो रही थी, तड़प रही थी, किंतु किसी ने भी मुक्त नहीं किया उसे. वह डर गयी और अंत में प्राण त्याग दिया उसने.

मृत्युदेवता : शांति, तुमने क्या किया, यह बोलो?

शांति : मुझे भी अमीर के घर पहुंचाया गया. अंधेरी रात थी. मेरे मन में अंधेरे का ही साम्राज्य फैला था. मैं अस्वस्थ थी. बेचैन थी. वेदना से मेरा सर्वांग थर-थर कांप रहा था. उस अमीर की दहलीज पर मैंने कदम रखा. क्षण मात्र के लिए मैंने गरदन घुमा कर देखा तो उस अमीर की पत्नी, बच्चे, बहू, मेरी ओर देख कर व्यंग्य-पूर्वक हंस रहे थे. उस क्षण मात्र में यह सब देख कर मैं जल कर खाक हो गयी. उस समय मुझे लगा, मेरा सारा शरीर कोयला बन चुका है. मेरे पैरों की शक्ति समाप्त हो चुकी है. सर में अनगिनत बिजलियां चमकने लगीं. पैर में शक्ति न होने पर भी मैं एक-एक सीढ़ी मुश्किल से पार करती हुई ऊपर चढ़ती गयी. मेरे साथ और कोई नहीं था. मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी तरह डर गयी थी, फिर भी, आगे बढ़ती जा रही थी. द्वार पर पहुंची, तो वहां मुंह में पान रखे, बेजान-सी हंसी हंसते हुए मेरा स्वागत करने वाले उस अमीर को मैंने देखा. (पुरुषोत्तम घबरा जाता है.) मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था. सर में आंधी-सी उठी. मैंने उस अमीर के पैर पकड़े, प्रार्थना की, याचना की, गिड़गिड़ायी. कहा, मैं तुम्हारी कन्या की भांति हूं, मेरा युवा पति मेरी चातक की भांति प्रतीक्षा कर रहा होगा. लेकिन मेरी सुनने वाला था ही कौन वहां! (सिसकियां. . .क्षणभर रुकती है.)

पुरुषोत्तम : शांति. . .शांति, बस! बस, आगे मत कहो, शांति! मुझे क्षमा करो! अब उस प्रसंग का फिर से स्मरण मत दिलाओ! वह प्रसंग मुझे कांटे-सा सालने लगा है. मुझे पश्चाताप होने लगा है. . .

शांति : अमीर पुरुष क्रूरता से हंस रहा था. दीवारें तक डर गयी थीं. मैं संपूर्णतः असहाय, आधारहीन थी. वहां, अपना यौवन लुटते हुए देखना था वहां मुझे.

पुरुषोत्तम : शांति, मुझे क्षमा कर दो! शांति, क्षमा कर दो!

शांति : क्षण मात्र में ऐसा कुछ घटित हुआ कि मैं सांस तक न ले सकी. और. . और मेरे शरीर को पुरुष बाहुओं ने पूरी तरह से जकड़ लिया. मेरा कौमार्य भग हो गया. मेरी यौवनावस्थ' की अग्नि क्षण मात्र में पूर्ण रूप से बुझ गयी. राख हो गयी. (सिसकियां) अपनी मृत्यु मैंने अपनी आंखों देखी उस समय, महाराज! (सिसकियां.) और फिर बुझे हुए, राख हुए उस यौवन को मन ने ललकारा. मन ने विद्रोह किया. निस्तेज शरीर सतेज हुआ. मन में चेतना की लहर दौड़ पड़ी. शरीर से चिनगारियां निकलने लगीं. महाराज, फिर मैं अपने काबू में न रही. सारी शक्ति जुटा कर कोने में पड़ी लाठी से मैंने अमीर के सर पर जोर से प्रहार किया. और फिर मैं चीखती-चिल्लाती भागती हुई निकली. मेरा सौभाग्य लुट गया था. मैंने मृत्यु को स्वीकार किया—बिलकुल निर्भयता के साथ महाराज! कितनी बेबस, असहाय, मजबूर कोमल युवतियों को यही जीवन जीना पड़ता होगा. (सिसकियां. . .)

पुरुषोत्तम : मृत्युदेवता, मुझे कुछ नहीं चाहिए. . .मुझे मनुष्य-जन्म नहीं चाहिए. . .कुछ नहीं चाहिए! (पुरुषोत्तम चला जाता है. क्षणभर शांति.)

मृत्युदेवता : (स्वागत) मनुष्य का कितना अधःपात! कितनी पराजय!

सायनाक : महाराज, यह मनुष्य की पराजय नहीं. मृत्यु के रास्ते पर लगी पुराणवादी नैतिकता की विजय है. ऐसी यातनाएं भोगते हुए कई पीढ़ियां कुर्बान हो गयीं, महाराज. एक बात पूछूं?

मृत्युदेवता : कौन-सी?

सायनाक : महाराज, शूद्रों के मन में पृथ्वीलोक के प्रति ममता की भावना कब निर्माण होगी?

मृत्युदेवता : सायनाक, बहुत ही जटिल प्रश्न पूछा है तुमने. ममता की भावना मांगने से प्राप्त नहीं होती. इसे मानव के मन में, अंतस में स्थिर होना पड़ता है.

सायनाक : फिर पृथ्वी पर ऐसा क्या कमी घटित नहीं होगा?

मृत्युदेवता : कौन कहे. और मैं वह कैसे कह सकता हूं! मृत्युशाला मेरा घर है, यही मेरा आंगन. यही मेरा परिवार है, यही मेरी दुनिया. यहीं मैं सुख प्राप्त करता हूं, यहीं मैं आराम करता हूं. यहां मेरे लिए सभी समान हैं. समता का सही साम्राज्य यहां पर है. मुझे उसका अहंकार नहीं. ऐसी समता पृथ्वी पर कब आयेगी, मैं कैसे कहूं? (धीमे-धीमे प्रकाश मृत्युदेवता, सायनाक और शांति के चेहरे पर. कमंडलु एक ही स्थान पर स्थिर है, उस पर प्रकाश. फिर कमंडलु घंटा बजाता है. घंटा बजते समय ही परदा गिरता है.) □□□

घटनाकथाएं

पिस्तौल के सहारे

मध्य प्रदेश हरिजन सेवा संघ के अनुसार इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर सागर जिले के एक गांव में एक हरिजन युवक हरलाल चमार को पुलिस ने जेल में मार डाला. इतने पर भी संतोष नहीं हुआ तो उसकी टांगें चीर डालीं.

हरलाल को चोरी के आरोप में गिरफ्तार किया गया था.

जब हरलाल का पिता इस हत्या का विरोध करने पुलीस थाने गया तो उसे हिरासत में ले लिया गया. उसकी चमड़ी भी उधेड़ी गयी. फिर बताया जाता है कि एक सब इंस्पेक्टर ने पिस्तौल तान कर कहा कि अगर तुमने मुंह खोला, तो तुम्हें भी गोली से उड़ा दूंगा.

हरलाल की मां को भी नंगा कर के मारा गया.

फिर भी हरलाल का एक रिश्तेदार सागर चला ही आया. वहां उसने पुलीस की अपराध शाखा को इस अमानवीय दमन की सूचना दी. □

रक्षक या भक्षक?

हरिजन की हत्या, कांग्रेसी नेता के यहां हो, तो कोई ताज्जुब नहीं.

यह घटना है कर्नाटक के गुलबर्गा जिले की एक हरिजन महिला की, जिसका नाम अखबारों में नहीं आया. हत्या कर्नाटक विधानसभा के एक सदस्य सुभाष पाटिल के घर पर हुई.

हत्या के इस षड्यंत्र को छुपाने के लिए उक्त महिला के नाम से एक जाली पत्र लिखा गया जिसमें उसकी ओर से लिखा गया कि उसने आत्म-हत्या की है.

लेकिन हरिजन नहीं माने, उन्होंने आंदोलन किया. महिला के शव का परीक्षण हुआ. तब पाप सामने आया कि उस महिला ने आत्महत्या नहीं की, बल्कि उसकी हत्या की गयी है. उसकी गर्दन मरोड़ कर उसे मारा गया है. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साल भर अकारण घर से बाहर रह कर भीष्म ने घर वालों को अपने खिलाफ कर लिया था. अब उनके कहने के मुताबिक जो गल भीष्म ने खिलाया था, उस पर तो उसका नाम भी सुनने को वे तैयार नहीं थे.

भीष्म दरवाजे पर खड़ा था. कुछ दुबला हो गया था. आंखें बुझी हुई थीं.

—कब आये हो? मैंने पूछा.

—सात-आठ दिन हो गये. ब्रीफ-केस को भीष्म ने दायें से बायें हाथ में ले लिया.

—सुना था श्रीनगर में कहीं . .

—हां, वहीं था. घर पर कौन है? उसने पूछा तो मुझे एहसास हुआ कि मेरे ही पत्र लिखने पर भीष्म ने यहां आने का साहस किया है. मैंने मुसकरा कर कहा—सभी घर पर हैं. और मैं भी.

भीष्म की आंखों में चमक पैदा हुई. लेकिन बुझ गयी.—पिता जी हैं?

—कहा, सभी हैं. माता जी भी. अनु कॉलेज गयी है. आती होगी.

अज्ञात-सा भय मैं भी महसूस कर रहा था कि भीष्म को 'अंदर आओ' नहीं कह पाया. भीष्म मेरे होठों की ओर देख रहा था. शायद वह बेचैन था सुनने को कि 'बाहर क्यों खड़े हो भीष्म! अंदर आओ.'

गली-मोहल्ले के दो-चार आदमी हम दोनों को घूरते हुए चले गये.

मां मुझे पुकारती हुई ड्योढ़ी में आ गयी. मैं एक ओर हट गया और मां के चेहरे को देखने लगा. परंतु उसके चेहरे पर कोई परिवर्तन नजर नहीं आया. मुझे बहुत अजीब लगा. सोचा तो था कि मां तेजी से बढ़ कर भीष्म को छाती से लगा लेगी. फिर भीष्म को जब मैंने पत्र लिखा था, तो मां ने कहा था—उसे लिख दे, घर चला आये! जो कुछ होगा, संभाल लूंगी. उस समय ऐसा न लिख कर मैंने केवल इतना ही

इंतजार

□ ओ.पी. शर्मा

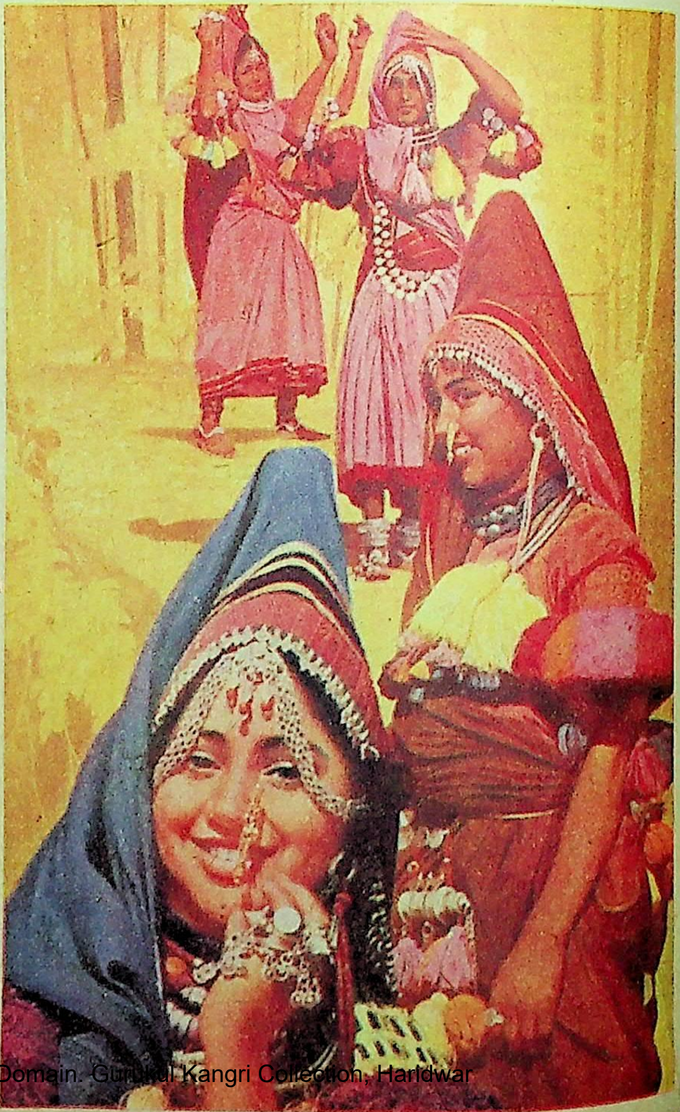

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा था कि मां ने कहा है जो हो गया, सो हो गया बदल तो सकता नहीं. अब खाक डालो!

मां का चेहरा सख्त हो गया. वह साड़ी के पल्लू को सिर पर ठीक करती हुई भीष्म के निकट गयी.

—तू कब आया है? मां ने कठोर और रूखे स्वर में पूछा.

मैंने बीच में कहा—मां! इसे यहां आये हफ्ता हो गया है.

—एक हफ्ता? मां ने शब्द दोहराया. तो तुझे उन लोगों से फुरसत मिल गयी?

भीष्म सिर झुकाये सुनता रहा.

—भाई-बहन, मां-बाप सब भूल गया! पैसे कमाता रहा और उन लोगों में बांटता रहा!

मां के होठ कांपने लगे. आंखें लाल हो गयीं. फिर मां को अचानक ध्यान आया. वह दहलीज से बाहर हो कर गली के दायें-बायें झांकने लगी.

—भीष्म! कोई साथ है क्या? मैंने पूछा. मां ने भी यही पूछा—तेरे साथ कोई नहीं है क्या?

भीष्म नहीं में हलके स सिर हिला कर इधर-उधर देखने लगा.

मैंने मां और भीष्म को एकबारगी देखा. लगा दोनों एक-दूसरे को देख रहे थे. उस क्षण, जब वे आपस में एक दूसरे को न देख रहे हों.

मैंने मां की ओर देखा. उसकी आंखों में तरल भाव तैर आया था.

—भीष्म! अंदर चले आओ. मेरा कहना था कि मां जल्दी से पलट कर अंदर चली गयी. भीष्म ड्योढ़ी में आ गया. मैंने उसे रुकने का इशारा किया और बैठक के दरवाजे के साथ लग कर खड़ा हो गया.

★ ★

बाबूजी अखबार हाथ में लिये तख्तपोश पर अधलेटे-से पंखे को देख रहे थे. मां ने उन्हें पंखे को घूरते देखा तो पूछा—पंखा चला दूं, जी?

—नहीं, कह कर बाबू जी खांस पड़े. खास जरूरत नहीं. पंखे की हालत देख रहा था. भानु को कितनी बार कहा था, इसके पर उतार कर कोई पुराना कपड़ा लपेट दो.

मां ने पंखा चला दिया और बाबू जी के करीब तख्तपोश पर बैठ गयी. बाबू जी ने पंखे को छोड़ मां को सिर से पैर तक देखा. फिर ऐनक उतारते हुए पूछा—क्या बात है? कुछ कहना चाहती हो?

मां चुप रही. बाबू जी ने पहले सवाल को भुला दिया और कहा—एक प्याला चाय बना दो.

मां के चेहरे से सख्त कशमकश जाहिर थी. उसे सचमुच बयान देना था. उन्हीं के सामने जो कई बार कह चुके थे, भीष्म मर गया है. अगर तुम्हें यकीन नहीं आता तो मैं तुम्हें लिख कर दे देता हूं. भीष्म का बाप तुम्हें लिख कर दे देता है कि भीष्म मर गया है. मैं अपनी जगह खड़ा हुआ सोच रहा था कि अगर मां ने भीष्म की बात छेड़ी तो बाबू जी एकदम लाल-पीले हो जायेंगे.

मैंने भीष्म की ओर देखा. वह जानने के लिए बेचैन हो रहा था कि उसकी क्या बात बाबू जी से हुई है. मैंने उसे इशारे से वहीं खड़े रहने को कहा और अंदर बाबू जी के पास गया. बाबू जी उठ कर बैठ गये थे और अखबार की तह बना कर तकिये के नीचे रख रहे थे. मां उनके लिए चाय बनाने चली गयी थी.

—अनु कालेज से लौट आयी? बाबू जी ने पूछा.

—नहीं, बाबू जी. . .भीष्म आया है.

बाबू जी मेरे मुंह को देखने लगे. एकदम उन्होंने ऐनक पहन ली. उनकी आंखों का साइज बड़ा हो गया. मुंह की झुर्रियां ज्यादा गहरी हो गयीं. सिर की गोलाई को घेरे हुए सफेद बाल तन गये.—क्या कहा तुमने भानु? कौन आया है?

—भीष्म आया है, बाबू जी! मैंने अपना स्वर सामान्य रखने का प्रयत्न करते हुए कहा.

—कहां है? क्यों आया है? वह जानता नहीं कि मैंने उसके लिए क्या कहा है? बाबू जी एक ही सांस में कह गये. फिर माथे पर दो उंगलियां घुमाने लगे.

—मिलने आया है, मैंने धीरे से कहा.

—मिलने? बाबू जी ने ऊंचे स्वर में कहना चाहा परंतु बलगम से स्वर पतला-सा निकला.

मां चाय का प्याला ले कर आयी और तख्तपोश पर टिका दिया. बाबू जी का एक हाथ अब कांपने लगा था. दूसरे हाथ से प्याला उठाते हुए उन्होंने कहा—उससे कह दो, चला जाये यहां से. वह नहीं जानता उसने क्या किया है.

—कौन चला जाये? कौन नहीं जानता? मां ने भोलेपन से पूछा.

—तुम्हारा लाड़ला भीष्म! और कौन? जिस की वकालत तुम करने आयी थीं.

बाबू जी अब गरम हो गये थे. पर समय ऐसा भी नहीं था कि बात बीच में छोड़ दी जाती. मां ने कहा—उसने किया ह तो भुगतेगा. लेकिन हमारा रिश्ता भी क्या खत्म हो गया है उससे?

—हां, खत्म हो गया है! उसने हमारे मुंह पर थप्पड़ मारा है. तुम कहती हो, वह खुद भुगतेगा. मैं कहता हूं, इसका भुगतान तुम्हें भी देना पड़ेगा. अनु की बात कहीं चलने दी?

मां एकदम गंभीर हो गयी. बाबू जी ने शायद किसी खतरे की पूर्व-सूचना दे दी थी. मैं बाहर आया. भीष्म को अपने स्थान पर न पा कर मुझे धक्का-सा लगा. झट ही सोच लिया कि भीष्म बाबू जी की बातें सुन कर बाहर ही से लौट गया है. मैं ड्योढ़ी तक आया. देखा, अनु और भीष्म सीढ़ियों में खड़े बातें कर रहे हैं. अनु कुछ कहने को थी, पर मुझे चिंतित-सा देख कर चुप रह गयी.

—अनु! भीष्म को अंदर ले जाओ.

अनु ने भीष्म को बांह से पकड़ा और 'चलो' कहा, पर उसमें आग्रह कम, औपचारिकता अधिक थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे दोनों दरवाजे तक [illegible] बैठक [illegible] से बाबू जी का स्वर सुनायी दिया. वह मां से कह रहे थे—तुम उसकी वकालत मत करो. वह बहुत बिगड़ चुका है. उसे न अब मेरा डर है, न तुम्हारा, न भानु का.

—डर कैसे नहीं है? मां ने धीरे से स्निग्ध स्वर में कहा. घंटे भर से बाहर खड़ा है.

—बेचारा! बाबू जी ने मां की नकल उतारी, यदि उसे डर होता तो खानदान को ऐसा दाग लगाने से पहले डूब मरा होता!

—अच्छा, एक बार मिल लीजिए उससे! मां ने आग्रह किया.

—क्या करूंगा मिल कर?

—सुनिए तो क्या कहता है! माफी मांग रहा था मुझसे. और आपसे भी मांगेगा.

—माफी? बाबू जी तनिक हंसे. माफी मैं दूं? किस बात की? फिर बाबू जी चिंतित हो गये. कांपते हुए स्वर में बोले—गार्गी, उसने रास्ता बंद किया है हमारे वंश की लड़कियों का. बिरादरी में जिस-जिस को पता चलेगा कि उनका सपूत रिश्ते-नाते कुएं में डाल कर एक हरिजन लड़की घर ले आया है, वही इस घर का पानी पीना छोड़ देगा. इस खानदान की हर लड़की क्वांरी बैठी रहेगी और उसे बद-दुआएं देती रहेगी.

मां सेहन की ओर आने लगी. अनु ने भीष्म का हाथ पकड़ा और अंदर ले जा कर चारपाई पर बिठा दिया. उसके हाथ से ब्रीफ-केस ले कर एक ओर रख दिया.

बाबू जी के चेहरे पर कितने ही भाव आये और विलुप्त हो गये. वह बेचैनी महसूस करने लगे. भीष्म को उन्होंने उचटती नजर से देखा. फिर वास्कट पहन, छड़ी को हाथ में घुमाते बाहर निकल गये.

अब कुछ कहने को न मां के पास था, न मेरे पास और न ही अनु के पास शायद. मैं दो कदम चला और रसोईघर में देखा. मां चुप बैठी थी.

—भानु, तेरे बाबू जी ठीक कहते हैं. भीष्म ने जो गलती की है, उसके कारण कहीं...मां ने बात अधूरी छोड़ दी और चाय प्यालों में डालने लगी.

—मां! बात तो सारी उस लड़की की है. अगर वह इस घर में न आये तो कुछ नहीं होगा.

मां ने हाथ रोक लिया.—यह बात तूने अपने बाबू जी से क्यों नहीं कही? जानता है तू पास-पड़ोस के लोग कितनी बातें कर रहे हैं?

—मां, लोग ठीक कहते हैं. मां की ममता अगर छोटा-बड़ा, ऊंच-नीच देखे तो वह ममता नहीं, स्वार्थ हुआ. इसीलिए कहते हैं!...फिर तूने पत्र लिखवाया था कि भीष्म घर आ गये. जो होगा, संभाल लूंगी.

मां ने कुछ उत्तर नहीं दिया.

दस बज चुके थे. बाबू जी अभी नहीं लौटे थे. मां और अनु रसोईघर में थीं. भीष्म मेरे कमरे में चारपाई पर बैठा था. वह दो-तीन बार जाने का आग्रह कर चुका था. मैंने उसे रोक रखा था.

—भानु! इससे कहो, खाना खा ले, मां ने दरवाजे में आ कर कहा. मैंने मां से कहा—मां! तुम स्वयं क्यों नहीं कहती भीष्म से खाने के लिए?

मां बिना कुछ कहे रसोईघर की ओर चली गयी.

भीष्म के घर में आने पर कैसी खामोशी, कैसी निस्तब्धता छा गयी है, मैं सोचने लगा था. साथ ही प्रश्न उठने लगे थे. भीष्म ने यह शादी करके अच्छा किया या बुरा? उसे ऐसा करना चाहिए था या नहीं? और यदि कर डाला है, तो घर वालों का उसके प्रति कैसा रवैया होना चाहिए? आदि. मुझे लगा भीष्म ने कोई जुर्म नहीं किया. बुरा नहीं किया. इसने उस लड़की से विवाह करके उसके साथ पूरा न्याय किया है. पर घर वाले उसके साथ अन्याय कर रहे हैं.

—भीष्म! उठो. खाना खा लो.

भीष्म हिला नहीं. वैसे ही बैठा रहा. मैंने फिर कहा—दस बज चुके हैं, खाना खा लो.

भीष्म के होठों पर व्यंग्यात्मक मुसकान आ गयी. मामूली-सा हंस कर बोला—भानु भैया, कितने-कितने बड़े भाषण होते हैं! जात-पात के कैंसर को जड़ से उखाड़ो. लेकिन सच्चाई क्या है—मैं बहुत तीव्रता से महसूस कर रहा हूं.

—भीष्म! तुमने बहुत बड़ा काम किया है! मैंने भी भाषण देने के अंदाज में कहा. महात्मा गांधी जीवन भर इस अन्याय के खिलाफ आंदोलन करते रहे. और फिर आज तो यह बात उठाना कानूनन जुर्म है.

भीष्म ने छोटा-सा कहकहा लगाया. बोला—भैया, तुम नहीं जानते, मैंने कितना बड़ा अपराध किया है.

—अपराध? यह अपराध नहीं है भीष्म!

भीष्म ने जोरदार इनकार में गरदन हिलायी.—भैया! अपराध ही है. वह लड़की जो यतीम थी, लेकिन सुंदर थी. सुशील थी. पढ़ी-लिखी थी. उसे देखने पर लगता था कि किसी ऊंचे खानदान की है. उसके साथ विवाह करने के पश्चात जानते हो क्या हुआ? जहां वह नौकरी कर रही है, उस कार्यालय में उसके खिलाफ साजिशें शुरू हो गयी हैं, और उसे निकालने के मनसूबे भी बन रहे हैं.

मुझे विस्मय हुआ. मैंने पूछा—उसके दफ्तर वालों को उससे क्या दुश्मनी है?

—वे सब लोग उस पर आरोप लगा रहे हैं कि उसने नीची जात की हो कर एक उच्च कुल के ब्राह्मण लड़के को फांसा है.

यह बात मेरे लिए नयी थी. मुझे केवल एक खतरे का पता था कि भीष्म को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा. पर उस लड़की को भी लोग परेशान करना चाहेंगे, यह सोचा भी नहीं था.

—तो तुमने अब क्या सोचा है? मैंने पूछा.

—अभी कुछ नहीं. अभी चुप हूं. फर्म में लगा हुआ हूं. मेरी फर्म वालों को मेरी शादी का पता चल चुका है. लेकिन उनका खयाल है कि मैंने कोई खराबी नहीं की. लेकिन भैया, एक बात मुझे यहां आ कर समझ में आयी...कह कर भीष्म चुप हो गया.

—क्या बात समझ में आयी है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

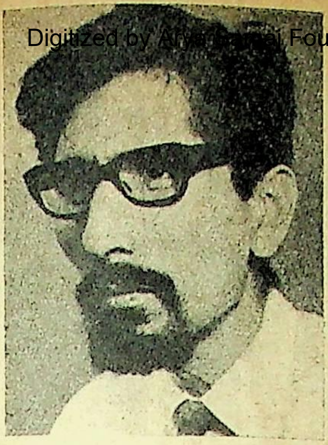

ओ. पी. शर्मा :
डोगरी कथाकार

—अगर मैं यहां आता-जाता रहा तो अनु का. . .

बाबूजी आ गये. खाना खाने बैठे तो मुझे आवाज सुनाई दी.मैंने वहीं से कह दिया——आप खा लें. मैं बाद में खाऊंगा.

रात बारह बज होंगे कि मैंने और भीष्म ने खाना खाया. अपने कमरे में मैंने एक चारपाई और डाल दी.

काफी देर तक बाबूजी और मां की बातें सुनाई देती रहीं. भीष्म करवटें बदलता रहा.

सबेरे मुंह-अंधेरे ही भीष्म ने मुझे जगा दिया. वह जाने के लिए तैयार बैठा था. मैंने उसने कहा——सभी जाग जायें तो मिल कर जाना.

उसने धीरे-धीरे कहा——दरअसल भैया, मैं शायद न भी आता. पर मुझे मेरी पत्नी ने मजबूर किया था कि मैं अपने घर जाऊं. लेकिन यहां आ कर देखा उसको अपनाने जैसे हालात नहीं हैं. उसे बहुत चाव है कि वह इस घर में कदम रखे. एक बहू की हैसियत से. लेकिन मैं उसे समझाऊंगा कि यह बात अभी मुमकिन नहीं.

भीष्म ने ब्रीफ-केस खोला. दो साड़ियां निकालीं. कश्मीरी रेशम की साड़ियां. मुझे देता हुआ बोला—— जानता नहीं मां स्वीकार करेगी कि नहीं. अनु को दे देना. और भीष्म ने मेरे पांव छुए और नर्म-नर्म पांव धरता हुआ निकल गया.

दिन चढ़ने लगा. मां का स्वर सुनाई दिया——आज सारी रात ड्योढ़ी खुली रही. समय कौन-सा है. अगर कोई घुस कर . . .मां मेरे कमरे में आ गयी.

—मां, भीष्म गया अभी! ड्योढ़ी अभी खुली है.

—क्या? मां का मुंह खुला रह गया. उसने दो-चार बार पलकें झपकीं. मैंने साड़ियां उठा कर उसकी ओर बढ़ायीं.——भीष्म दे गया है. एक तुम्हारे लिए, एक अनु के लिए.

मां ने साड़ियां थाम लीं. पर झट चारपाई पर फेंक दीं और पूछा——कब गया भीष्म?

—अभी! कोई आधा घंटा पहले.

मां बाहर की ओर भागी और ड्योढ़ी में खड़ी हो गयी. फिर गली में दायें-बायें देखती रही. □□□

(अनुवादक : सुरजीत)

५९, जैन बाजार (विजयगढ़) जम्मू-तवी

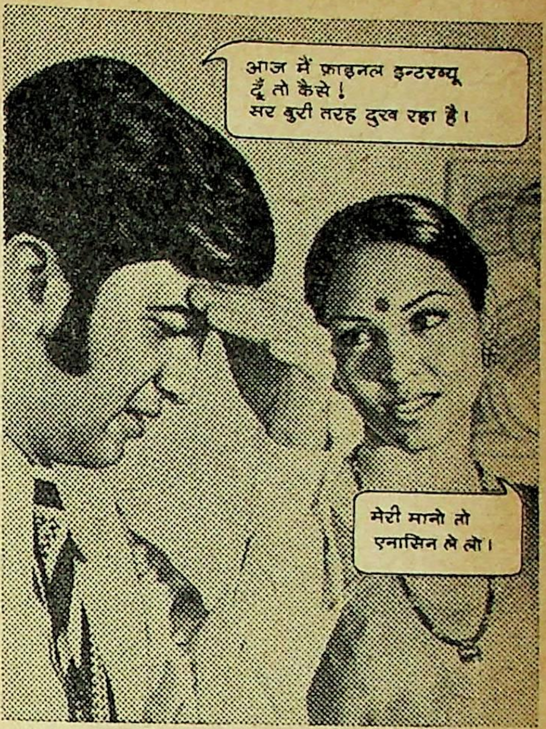

जल्द आराम पाने के लिए तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन लीजिए

तेज़ असर–एनासिन में वह दर्द-निवारक दवा ज़्यादा है, जिस की दुनिया-भर के डॉक्टर सिफ़ारिश करते हैं। इसी लिए एनासिन दर्द से जल्द आराम दिलाती है।

विश्वसनीय–एनासिन आपके डॉक्टर की दवाई की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। इसी लिए एनासिन पर लाखों लोगों को पूरा भरोसा है।

एनासिन बदन के दर्द, दाँत के दर्द, सर्दी-जुकाम और फ़्लू की पीड़ा से भी जल्द आराम दिलाती है।

तेज़ असर और विश्वसनीय
एनासिन
भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

A/2/S-74
Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोरे की रगड़

□ गुरबचन सिंह भुल्लर

हजार हीले संगू ने किये कि आज भी उसका मन यह दे—चल, क्या है! सतनाम, राम-नाम कह कर छक ले. पर उसके भीतर से यह हुंकारा न आया. उसको बाबा मोदन सिंह के साथ भागीदार बने कितने महीने हो गये थे और पहले दिन से ही वह देख रहा था कि उसे रोटी सारे कुटुंब से अलग दी जाती थी. गरमियों में चना और सरदियों में बाजरा उस अकेले के लिए पिसवाया जाता. घर के सभी जीवों के लिए बारह महीने गेहूं के फुलके पकते थे. रोज संगू दांत पीसता. रोज ही उसका मन सलाह दे देता—चल, क्या है, राम-नाम कह कर खा ले. और वह नजरें झुका कर ग्रास गले के नीचे ढकेलने लगता. पर आज जब वह यह सलाह लेने के लिए अपने मन को मना रहा था, तो मन इनकार कर रहा था.

जिस दिन अपनी भागीदारी की बही पर गवाहों के सामने संगू ने दो शब्द ये भी लिखने को कहा था कि अचानक कोई आवश्यकता पड़ने पर उसे बीस-पच्चीस रुपये उधार मिल सकेंगे, बाबा मोदन सिंह ने हंस कर बात टाल दी थी—भागीदार घर का ही जीव होता है. अगर तुझे जरूरत पड़ेगी तो हम देंगे. पगले, लिखित कराने से क्या फायदा! गवाहों ने हां में हां मिला दी थी और संगू चुप हो गया था.

उसने एक-दो दिन में ही देख लिया था कि उसे घर का जीव नहीं समझा जा रहा था. आज जब बेहद बीमार पड़ी मां के इलाज के लिए उसने बीस रुपये मांगे थे, तो मोदन सिंह बिल्कुल मुकर गया था. वह कहता था कि वह भागीदार बनाते समय संगू को बहुत कुछ दे चुका था. जब संगू ने गवाहों के सामने कही गयी जबानी बात की याद दिलायी, तो मोदन सिंह ने यह कह कर मामला ही निबटा दिया कि वह बात तो अचानक आ पड़ने वाली आवश्यकता की थी और तेरी मां तो सदा की बीमार है!

संगू को क्रोध तो बहुत आया, पर उसने उसे दबा लिया. वह उसी तरह उद्विग्न-सा हल जोत कर खेत को चल दिया. उसने करनैल को आवाज भी न लगायी. बाद में आ कर जब करनैल काम पर लगा, तो संगू के जी में आया कि उसे बताये, कैसे उसके बाप ने उसकी बीमार पड़ी मां की दवाई के लिए पैसे उधार देने से इनकार कर दिया था. पर जो कुछ आज उसके दिल में दहक रहा था, इस शिकायत से वह ठंडा पड़ने वाला नहीं था.

चुपचाप संगू बैलों के पीछे चलता रहा. करनैल की ओर से एक-दो बार चुप्पी का कारण पूछे जाने पर भी वह हूं-हां करके टाल गया. अधिक क्रोध उसे इस बात का था कि मोदन सिंह के घर के लिए स्वयं संगू कैसे जी तोड़ कर अपने सामर्थ्य से अधिक परिश्रम करता था, फिर भी उसकी कीमत बीस रुपये के उधार पाने लायक भी नहीं समझी जा रही थी.

साले सरदारियों के. . .! उसने मन-ही-मन में कहा और जीभ पर आयी कड़वाहट को बाहर थूक दिया.

रोटियां आने पर करनैल ने संगू की बाजरे की रोटियां उसके हाथ पर रख दीं और अपनी रोटियां चादर के छोर पर रख कर रोटी वाली को घर भेज दिया. उसे अभी अधिक भूख नहीं लगी थी. अपनी रोटियां लपेट कर उसने बेरी के साथ लटका दीं और दरांती, रस्सी और बैल ले कर अगले खेत से चारा लाने के लिए चला गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगू के भीतर उठ रहा उबाल तीखा हो गया. उसकी छाती में जैसे कोई घूंसे मार रहा था. उसने उठ कर बेरी से करनैल की रोटियां उतार लीं. गेहूं के पतले-पतले फुलकों के बीच आलू-गोभी की भुनी हुई सब्जी रखी थी. एक पल के लिए उसके मुंह में पानी आ गया, पर आक्रोश से तवे की तरह तपती जीभ पर आ कर वह सूख गया. उसने अपनी झोली की ओर देखा—बाजरे के मोटे-मोटे रोट और ऊपर पानी के छींटे दे कर रखा गया नमक-मिर्च. उसके भीतर से घृणा भरे क्रोध की अग्नि उठी, जो सीने से हो कर गरदन और सिर को सेंकती, शिवजी की गंगा की तरह बाहर निकल गयी.

. . .गेहूं के फुलके, जैसे रेशम का स्पर्श और बाजरे के रोट, जैसे बोरे की रगड़. . .

संगू सोच रहा था कि अब करे तो क्या करे.और फिर उसको एकाएक जैसे कोई बात सूझी. वह चुटकी बजा कर जल्दी से उठा. गेहूं के फुलके उसने बड़े बैल के सींगों में लटका दिये, बाजरे के रोट बछड़े के सींगों में और टिच-कारी मार कर उन्हें गांव के रास्ते पर हांक दिया.

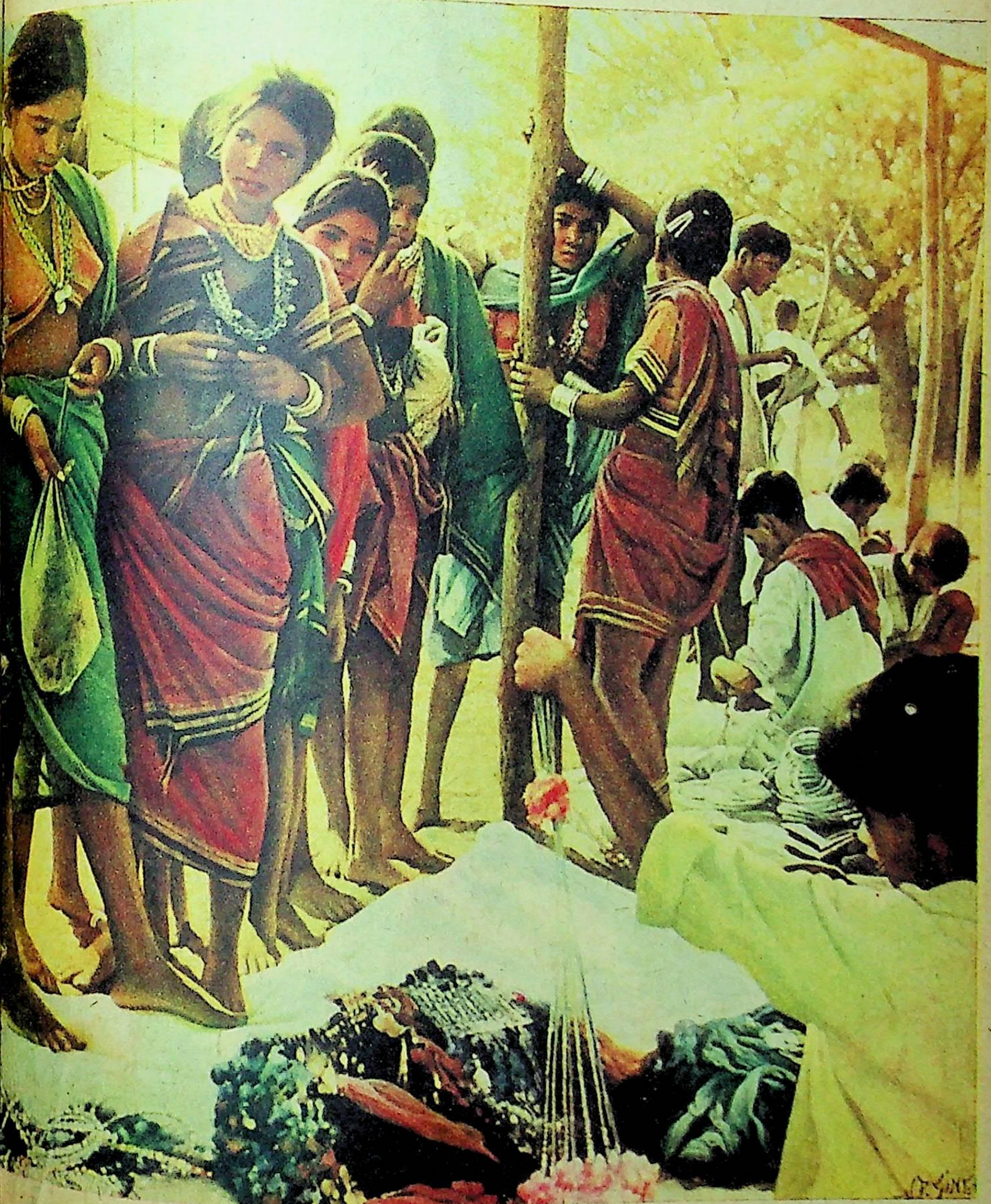

पर्यटन कार्यालय के सौजन्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

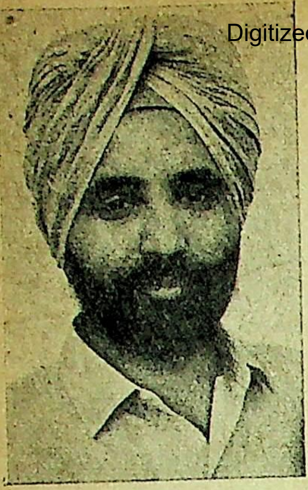

गुरबचनसिंह भुल्लर : पंजाबी कथाकार

चौपाल में तख्तपोश पर बैठे लोग शतरंज खेल रहे थे, खेलते हुओं को देख रहे थे और बीच में बाबा मोदन सिंह भी था. संगू बैलों को चौपाल के सामने करके भीतर से सबको बुला लाया और बोला—देखो भई पंचो! आप मेरे मां-बाप! सभी लोग कहते हैं कि भागीदार बुरे होते हैं, मालिक को बेकार बदनाम करते हैं. मुझे काम करते छह महीने हो गये. सारे परिवार के लोग गेहूं के ये फुलके और सब्जी खाते हैं और मुझे मिलते हैं नमक-मिर्च लगे ये बाजरे के रोट. वही पर बराबर की रोटी की लिखित हुई है कि नहीं, बताओ मुझे, करो न्याय!

चारों ओर खामोशी छा गयी.

मोदन सिंह के सिर पर जैसे पानी के सौ घड़े पड़ गये थे, पर वह समय को संभालते हुए बोला—ओ भाई, रोज बराबर ही देते हैं. आज गेहूं का आटा थोड़ा रहा होगा. अगर आज बाजरे की रोटियां दे दीं, तो एक दिन में तुझे प्लेग तो नहीं हो गयी, ससुरे!

—आज क्यों, मैं गऊ की कसम खाता हूं, अगर इनके घर से कभी भी गेहूं की रोटी खायी हो!

—अरे, कोई बात नहीं, भई! घबराओ मत. बाजरा क्या बुरा है! सब अन्न भगवान के हैं. सतनाम, राम-नाम कह कर खा लो! बीच में से किसीने संगू को उपदेश दिया.

—सतनाम कह कर कैसे खा लूं? देखूं, इनका परिवार खा लिया करे, इस अन्न भगवान को. . .! संगू ने बाजरे की ठीकरी जैसी रोटियां सब के बीच फेंक दीं और गेहूं के फुलके बैलों के मुंह में दे कर उनको थपकियां देता हुआ, उन्हें घर के बाहरी हिस्से में बांधने चल दिया.

रास्ते में उसे लगा जैसे उसके शरीर पर बोरे जैसे खद्दर के स्थान पर रेशम पड़ गया हो. . .मुलायम रेशम. . .और वह मुसकरा दिया. . .!

—यूं ही साला पगला. . .! मन-ही मन खुश हो कर भीड़ में से अनेक ने कहा. बाबा मोदन सिंह को अपने अंदर समा जाने के लिए धरती जगह नहीं दे रही थी. उसने वहां से खिसकने में ही भलाई समझी. उसकी पीठ पीछे अनेक ने खुसर-फुसर की—करते तो ये साले पहले दिन से ही ऐसा हैं. . .अच्छी हुई आज इनकी. . .!

घर आ कर मोदन सिंह के जी में आया कि सारे कुटुंब को जी भर कर गालियां दे. पर कुटुंब का भी क्या कुसूर था? कितने ही वर्षों से वे भागीदारों के साथ इसी तरह करते आ रहे थे और किसीने आज तक जबान खोलने का साहस नहीं किया था. वह चुपचाप जा कर चौबारे में लेट गया. आज पहला अवसर था कि उसका अपमान गांव के सामने, भरी चौपाल में हुआ था और हुआ भी था एक 'कमीन', नीची जाति के आदमी द्वारा. और उसे अपने पचहत्तर-वर्षीय जीवन की कई बातें याद आयीं.

. . .एक साल देवा मजहबी उसके साथ भागीदार बना था. उसे बेहद ज्वर चढ़ा हुआ था. मोदन सिंह ने उसे हल जोतने के लिए कहा तो उसके इनकार के शब्द मुंह पर भी न आये थे कि मोदन सिंह के हाथ में जो छड़ी थी, उसके बदन पर बरसी और उसकी हड्डी टूट गयी. पर उसने कभी 'सी' तक नहीं की थी. . .

. . .उसके भागीदार चंदे का नया-नया विवाह हुआ था. फूलों वाला सूट और मुलम्मे वाले गहने पहन कर बिशनी आंगन की नांदों पर मिट्टी लगाने के लिए आयी तो वह मोदन सिंह को बहुत अच्छी लगी. उसने निर्णय किया कि मुफ्त में बिशनी कोई बुरी नहीं थी और वह उसे बांह से खींच कर तूड़ी वाले कमरे में ले गया. बाद में मोदन सिंह का दिल एक पल के लिए डावांडोल हो गया कि बिशनी कहीं चंदे को बता न दे. . .

शायद इस तरह उसके सदा यों मनमानी करने का ही फल था कि वह पचहत्तर की उम्र पार करने के बाद भी हृष्ट-पुष्ट लगता था.

पर आज उसे लग रहा था जैसे उसके प्राण किसीने उसके भीतर से अंजुली भर-भर कर पी लिये हों. एक बार उसे अपने आप पर भी क्रोध आया कि वह चौपाल में चुप करके ही सब कुछ क्यों सह गया! क्यों उसने संगू की गरदन नहीं पकड़ ली! पर फौरन ही अपने आप शांत हो गया—अब तो जमाना ही बदल गया है! अब ये कमीन, नीची जाति के लोग पहले जैसे कहां थे! . . .

वह खिन्न-सा पलंग पर लेटा था कि घरों के चक्कर लगा कर दोबारा इकट्ठे हुए शतरंज के खिलाड़ियों ने उसे बुलाने के लिए एक लड़के को भेज दिया. उसका जी किया कि इनकार कर दे और बस पलंग पर लेटा रहे. पर उसने सोचा, लोग हंसेंगे कि रोटी वाली बात से शर्मिंदा हो गया.

वह चौपाल की ओर जाने के लिए पलंग से खड़ा हुआ तो उसे लगा, जैसे बीमारी में कई हफ्ते पड़े रहने के बाद उठा हो. आगे बढ़ कर उसने खूंटी पर लटकी छड़ी उतारी. यह छड़ी पहले वह कहीं आते-जाते समय शौक के तौर पर पकड़ा करता था. अब उसने महसूस किया कि यह शौक की बजाय हर रोज के आसरे के तौर पर पकड़नी पड़ेगी. आज वह बूढ़ा हो गया था.

चौबारे की सीढ़ियां उतरते हुए उसे लगा कि संगू ने उसकी बनी-बनायी सरदारी का रेशम उतार कर अपमान के बोरे का खुरदरा पल्ला उसकी देह पर रगड़ दिया है. □□□

(अनुवाद : सुरजीत)

सोवियत दर्पण (पंजाबी),
बारहखंबा रोड, नयी दिल्ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारिका

जून और जुलाई १९७५ अंक

नवलेखन अंक--- एक तथा दो

आज की जिंदगी की सच्चाइयां, तल्खियां और आम आदमी की दारुण स्थितियां!

ये एकदम ताजा और नये लेखक क्या सोचते हैं?

जून तथा जुलाई अंकों में संकलित लेखक आरामदेह कमरों और प्राध्यापकीय प्रकोष्ठों में बैठ कर सोचने, समझने और लिखने के कायल नहीं हैं—बल्कि ये ऐसे लेखक हैं जो फैक्टरियों, मिलों, ख़दानों, दफ्तरों, ट्रांस्पोर्ट कंपनियों और ऐसी ही जगहों पर खुद खट रहे हैं और जो कुछ भी जी रहे हैं, उसी को अपने दौर का रचनात्मक अनुभव बना देने के लिए सन्नद्ध हैं.

इन अंकों की कहानियां मात्र यथार्थ अनुभवों की कहानियां ही नहीं हैं—अनुभवों का अर्थ भी इनमें निहित है!

जून १९७५ के लेखक:

प्रभुनाथ सिंह आजमी, अजय अग्रवाल, उषा व्यास छवि, श्रीकेशव, शैलाभ, सोमेश भरत, ज्ञान चतुर्वेदी, नरेंद्र मौर्य, अरुण मिश्र, सच्चिदानंद धूमकेतु, रामलगन यादव, नर्मदेश्वर, कृष्णकांत प्रवासी, मंदा पांडे, गौरीशंकर कपूर, सुरेंद्र सुकुमार.

स्थायी स्तंभ: पाठकीय, मेरा पन्ना, कबिरा खड़ा बजार में, लघुकथाएं, चंद सतरें और, मीनाकुमारी की डायरी आदि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म □ मधुमगेश कर्णिक

महारवाड़ी के चार लड़के चिलचिलाती धूप में तालाब की ओर जा रहे थे. एक के हाथ में पीतल की गहरी थाली थी और दूसरा कपड़े का एक टुकड़ा लिये हुए था. इसी अंतराल में पगडंडी से एक कुत्ता निकल कर उनके साथ हो लिया. और वे पांचों तेज-तेज कदम उठाते हुए आगे बढ़ने लगे. चलते-चलते भीका को कुछ याद आ गया. और वह बोला—गजा, मरदूद, तेरे मुंह में खाक. . .खली कहां है?

गजा तुरंत रुक गया. लंबे-लंबे नाखूनों से लंगोटी से बाहर निकले हुए कूल्हे खुजाता हुआ बोला—खली? वह तो घर ही पर रह गयी. . .अब?

—अब तेरा बाप! दौड़ कर जा और ले आ जल्दी.

गजा उन्हीं कदमों वापस मुड़ा और जी तोड़ कर दौड़ने लगा. साथ में चलता कुत्ता कुछ देर के लिए दुविधा में पड़ गया. गजा के साथ जाये या बाकी मंडली के साथ? उसने जबान बाहर निकाल कर सोचा. चार कदम वापसी के रास्ते पर चलने के बाद मुड़ा और शेष तीन लड़कों के साथ तालाब की ओर चलने लगा.

तालाब पर पहुंच कर वे सब एक पेड़ की छाया में शरण लेते हुए गजा की प्रतीक्षा करने लगे. पर भीका को चुपचाप बैठना न आता था. उसकी जबान मक्खी को उड़ाने के लिए चलने वाली भैंस की दुम की तरह किसी-न-किसी विषय पर बोलने के लिए कुलबुलाती रहती थी. इस समय भी उसके दिमाग में अचानक किसी खयाल ने सिर उभारा और बेचैन हो कर उसने बाबलिया से पूछा—बाबलिया, ये बौद्ध कहां के हैं रे?

—मुंबई के.

—ठीक . . .पर ये इतने दिनों तक कहां रहे?

—मुंबई में. वहां सबको बौद्ध बनाने के बाद हमारे वतन में आये हैं. . . यहां के महारों और चमारों को बौद्ध बनाने के लिए.

कुछ क्षण मौन में बीत गये. भीका को तसल्ली नहीं हुई थी. उसने बाबलिया से फिर प्रश्न किया—बौद्ध हो जाने से क्या फायदा है?

—क्या फायदा? मराठों और ब्राह्मणों की तरह पाक-साफ हो जाते हैं. मंदिर जा सकते हैं. फिर कोई महारों से नफरत नहीं करता. दूर नहीं भागता.

भीका को बात करने के लिए मैदान मिल गया था. अब इस विषय पर वह बहुत कुछ पूछ सकता था. मन-ही-मन प्रश्नों की तरतीब देते हुए उसने अंगूठा मुंह में रख लिया और तेजी से नाखून कुतरने लगा. लखिया ने सामने बैठे हुए कुत्ते की कनपटी से चिपकी चिचड़ी को तिनके से छेड़ने का प्रयत्न किया और बाबलिया ने उस रास्ते पर नजरें जमा दीं, जिधर से गजा आने वाला था.

थोड़ी ही देर में गजा हांफता हुआ उनके सामने आ खड़ा हुआ. उसके हाथ में मूंगफली की परतदार खली की पोटली-सी थी.

—शी. . .बहुत हैरान होना पड़ा. गजा लंबी-लंबी सांस लेता हुआ बोला.

—क्यों? क्या हुआ?

—खली का बोरा बाहर की पड़वी में था. सबकी आंख बचा कर खली चुराते हुए नाक में दम आ गया. फिर भी मां ने सटकते हुए देख ही लिया. मुझे!

गजा की लायी हुई खली दो ओक भर थी. बंधी हुई पोटली खोलते ही सौंधी खुशबू फैलने लगी. गजा ने मुट्ठी भर खली निकाल कर चार-चार टुकड़े सबके हाथों में थमा दिये. कुत्ता मुंह उठा कर नथुने फुलाने लगा. महक सूंघने लगा. फिर ज्यों ही गजा ने खली का एक टुकड़ा उसके आगे डाला, झपट कर चट कर गया.

—भड़वा! खली भी खाता है! धीरे खा, धीरे!

—चलो, अब देर मत करो.

लखिया ने एक हाथ में थाली पकड़ी और भीका ने उस पर कपड़ा बांध दिया. जिस प्रकार पकवान के थाल पर सरपोश डाला जाता है, उसी प्रकार उस थाली पर कपड़ा डाल कर भीका ने पेंदे में मजबूत गिरह लगायी. फिर बीचों-बीच कपड़े में सूराख बना कर वह बोला—हां, अब उसमें थोड़ी-सी खली डाल.

गजा ने खली के टुकड़े उठा कर यों ही उस सूराख के अंदर डाल दिये. यह देख कर भीका आपे से बाहर होने लगा— अरे बेवकूफ, ऐसी सूखी खली मछलियां खाती हैं क्या?

—न खाने को क्या हुआ?

—तेरा बाप! मरदूद, मछलियों के क्या बड़े-बड़े दांत होते हैं?

गजा ने कोई उत्तर देने की बजाय हाथ में पकड़ी हुई खली के टुकड़े भीका को थमा दिये. भीका ने तुरंत उन्हें मुंह में डाल कर जबड़ा चलाना शुरू कर दिया. अपनी पूरी शक्ति लगा कर वह उस खली के टुकड़ों को डाढ़ों तले कुचल रहा था. खली चबाते देख कर दूसरों के मुंह में पानी आ रहा था.

जब मुंह में रखी खली की लुगदी-सी बन गयी, तो भीका ने उसे हाथ पर उगल कर धीरे-से थाली में सरका दिया.—यह खली तो मुंह से निकाली ही नहीं जाती! साली रोटी से अधिक स्वादिष्ट लगती है!

—चुप रहो अब! मछलियां डर कर भाग जायेंगी.

किंतु चुप बैठे रहने को किसी का जी नहीं चाह रहा था. सामने तालाब में किनारे के पास उथले पानी में असंख्य छोटी-छोटी मछलियां घूम-फिर रही थीं. उनके रुपहले कल्ले धूप में और भी चमक रहे थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीका ने आगे बढ़ कर हाथों में पकड़ी हुई थाली धीरे से पानी में ले जा कर रख दी. पानी में उसके कदम पड़ते ही मछलियां घबरा कर भाग गयीं. फिर खली की महक नथुनों में पहुंचते ही सब थाली पर पिल पड़ीं. भीका तेजी से मुड़ा और अन्य साथियों के पास किनारे पर बैठ कर अधीर नजरों से थाली का निरीक्षण करने लगा. टखनों भर पानी में नन्हीं-नन्हीं मछलियों का जमघट हो गया. एक-एक उंगली की मछलियों ने उथले पानी में तूफान मचा दिया.

—इस साल तालाब में मछली बहुत हो गयी हैं, क्यों?

—बहुत कहां हैं...हर साल ऐसी ही होती हैं... थोड़ी ही ज्यादा होंगी.

—बाबलिया, मछलियां कपड़े के अंदर जायें, तब तक हम केंकड़े पकड़ेंगे. चलो...काली पीठ वाले केंकड़े.

यह खयाल सबके मन को भा गया...इस हंगामे में काली पीठ वाले मजेदार केकड़े जी भर पकड़े जा सकते थे.

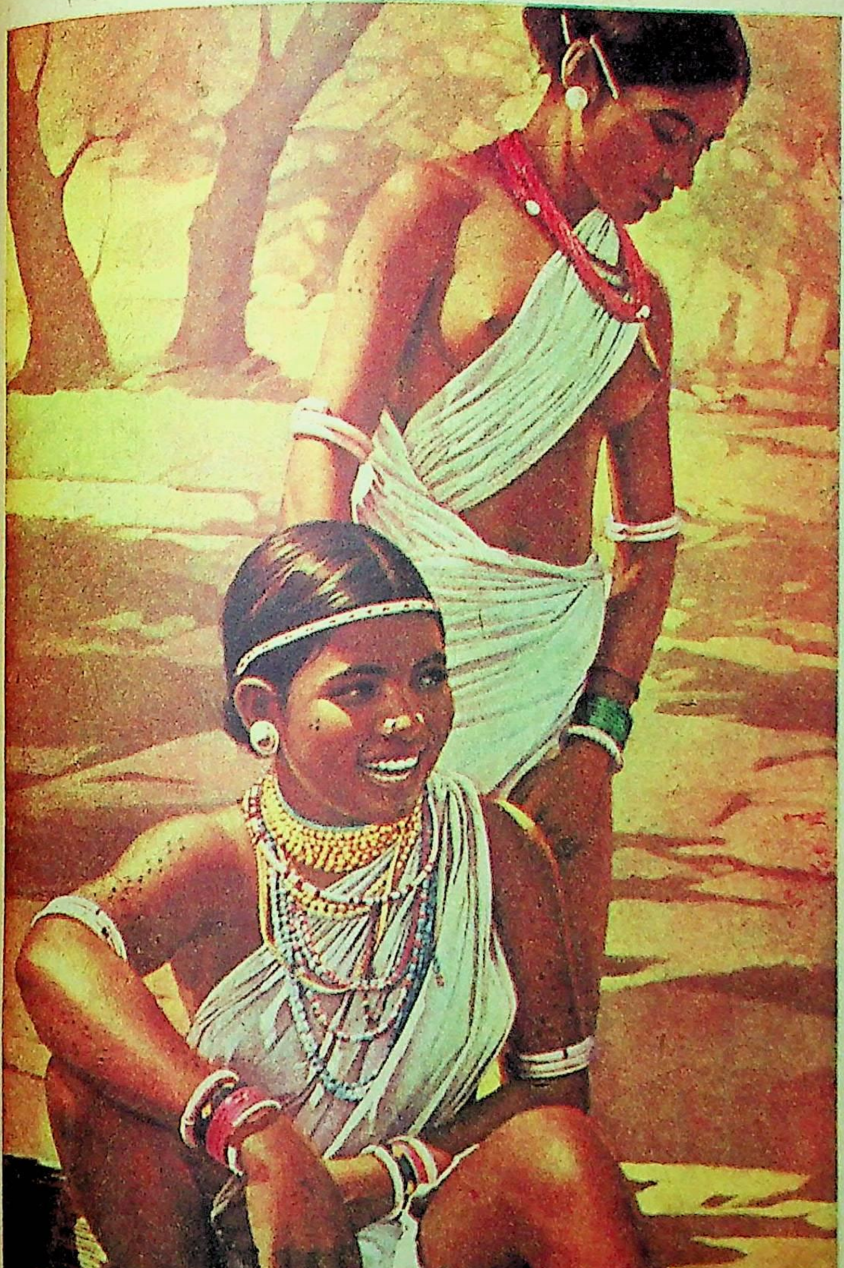

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

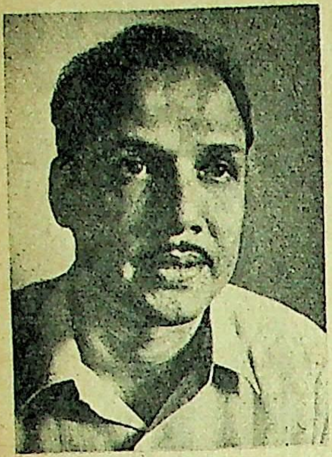

मधु मंगेश कर्णिक : कोंकणी कहानीकार

—चलो. . .चलो.

चारों उठ खड़े हुए और तालाब की मेंड से परे बहने वाले नाले में पड़े पत्थरों को उलटने-पुलटने लगे. बायें हाथ से पत्थर उलट कर उसे दोनों टांगों के बीच में पकड़ा जाता और दायें हाथ से भागते हुए केंकड़े को बड़ी प्रवीणता से धर लिया जाता. पैर के अंगूठे से उसकी पीठ पर दबाव डाला जाये, तो वह अपनी जगह से हिल नहीं सकता. फिर उसके डंक-पैर तोड़ डाले जाते.

—गजा, मरदूद, मुझे दुधारू केंकड़ी मिली हैं !

—देखें. . .देखें.

सब बावलिया को मिली हुई अजीब चीज देखने को दौड़ पड़े. दूध भरी केंकड़ी भाग्य से ही हाथ लगती हैं. जंगल में पांच पंखुड़ियों वाला 'बेंकुल' का फूल और पानी में दूध भरा केंकड़ा, ये चीजें कभी-कभी ही मिलती हैं. वह करौंदे के पत्ते के बराबर था. नरम मखमली शरीर के दूध जैसे, सफेद छोटे केंकड़े को हथेली पर रख कर बावलिया सबको दिखा रहा था. कोमल शरीर का वह डरपोक केंकड़ा पानी से बाहर निकाले जाने पर डर के मारे अधमुआ हो कर घोंघे की तरह उसकी हथेली पर सिमिटा हुआ था.

—शाबाश रे बहादुर? भीका के मुंह में लबालब पानी भर आया.

—चल, इसके चार टुकड़े कर, देखें. खाते में कैसा लगता है.

बावलिया ने उंगलियों के बीच में पकड़ कर उस जिंदा केंकड़े के चार टुकड़े कर डाले. उस समय उसके शरीर से सफेद रस की पिचकारियां-सी उठीं. बावलिया की उंगलियां मानो दूध में नहा गयीं. चारों ने चार टुकड़े अपने-अपने मुंह में रख लिये.

—साली जबान को लगते ही गला तक तर हो गया !

—हुहं, चलो, मुंह का मजा तो बदला!

★ ★

दोबारा वे सब पत्थर उलटने में मग्न हो गये. काली पीठ वाले केंकड़े ढूंढ़ने लगे. बावलिया उंगलियां चाटता हुआ दूसरे दूध भरे केंकड़े की खोज में जुट गया.

इतने में मेंड पर से चल कर ब्राह्मणवाड़ी के कुछ लड़के तालाब पर नहाने के इरादे से आ धमके. नाडकर्णियों का सुरेश सबके आगे था. महारों के लड़कों को केंकड़े पकड़ते देख कर उसे विस्मय हुआ. वह बोला—ओ बावलिया , अब तुम लोगों के लिए मछलियां और केंकड़े खाना क्या जायज हो सकता है? तुम बौद्ध हो गये हो न ?

—बौद्ध किसे कहते हैं, जानते हो तुम लोग? सुरेश के एक साथी ने पूछा.

—मरदूद, अब तुम दोबारा धर्म-भ्रष्ट हो गये! फिर से महार बन गये मछलियां मारने के बाद. . .! सुरेश ने परिणाम से अवगत किया.

महारों के लड़के अपना मनोविनोद छोड़ कर खड़े-के-खड़े रह गये. उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि ब्राह्मणवाड़ी के लड़कों को क्या उत्तर दिया जाये. आखिर भीका बोला —अरे बाबा, वह सब बातें हमसे मत पूछो. हमारी समझ में कुछ नहीं आता. जो चाहता हो तो तुम भी आ कर हमारे साथ केंकड़े पकड़ो आओ, हम मदद करते हैं तुम लोगों की.

ब्राह्मणों के बच्चे अपनी कही हुई बातों को भूल कर नहर में कूद पड़े. महार यदि उन्हें केंकड़े पकड़ कर दें तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी! बड़े बड़े डंक रखने वाले केंकड़े पकड़ने में महारों का मुकाबला कौन कर सकता था !

बावलिया , बड़े डंक वाला केंकड़ा पकड़ देगा, तो तुझे दस पैसे दूंगा. सुरेश ने जेब से एक सिक्का निकालते हुए कहा.

—आ जा. देखते हैं. क्या होता है.

सब मिल कर फिर पत्थर उलटने-पुलटने में मग्न हो गये. बावलिया और भीका सबके आगे और ब्राह्मणों के लड़के उनके पीछे-पीछे. सुरेश भीका को मिलने वाले केंकड़े के अगले दो डंक उसीसे तुड़वा रहा था. सहसा किसी की नजर सामने घास के मैदान पर पड़ी.

—कौन आ रहे हैं रे उधर ?

सबने गरदनें ऊंची करके उस ओर देखा. इतनी दूर से किसीको पहचानना कठिन था. थोड़ी ही देर में आदमियों की एक कतार तालाब के किनारे गहरी खाई में उतर पड़ी और सभी आसानी से पहचान लिये गये. सबके आगे सोमनाथ महार था और उसके पीछे महारवाड़ी के सभी मर्द चल रहे थे. . .शिवनाक, मोनिया, भागिया, यशनाक, रोगिया, आदि. उन्हें महारवाड़ी में रात को बुलायी गयी सभा याद आयी और साथ ही बंबई से आये हुए मेहमानों के भाषण भी. मंत्र और प्रतिज्ञाएं याद आयीं और रात को जलसे में किया गया फैसला उनके मस्तिष्क में गूंजा.

सारे महार - लड़के अपने ब्राह्मण मित्रों को वहीं छोड़ कर जिधर सींग समाये, भागने लगे. सहसा गजा को सामने मडहेशी के पेड पर चढ़ने का खयाल आया और फिर सभी ने उसका अनुसरण किया. देखते-ही-देखते चारों लड़के आसपास के पेड़ों की घनी टहनियों में छिप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गये. महारों ने अपने साथ लायी हुई देवताओं की मूर्तियां पानी में डुबो दीं. बंबई से आये हुए कार्यकर्त्ताओं के जिम्मे यह आखिरी कर्तव्य बाकी रह गया था. महारवाड़ी में धर्म-परिवर्तन की रस्म कल सम्पन्न हो चुकी थी. अब प्रत्येक घर से पुरानी मूर्तियों के हटा दिये जाने पर धर्मांतर पूर्ण हो जाने वाला था. प्रत्येक महार अपने घर से मूर्ति को कपड़े में लपेट कर लाया था. किसी के यहां मंत्र-फुंका नारियल था, तो किसी के घर दत्तात्रय की तसवीर की पूजा की जाती थी. अब ये सारे देवी-देवता घर के बाहर निकाले जा चुके थे और सबके घरों के देव-स्थान और पूजा के कमरे उनसे खाली हो चुके थे.

★ ★

यशनाक अपनी मूर्तियां पानी में छोड़ कर वापस मुड़ने लगा, तो उसकी नजर उस थाली पर पड़ी, जिसमें मछलियों ने ऊधम मचा रखा था. उसके कदम पानी में थम गये. किनारे खड़े महारों की ओर देखे बिना उसने झट से नीचे झुकते हुए थाली पर हाथ रख दिया. कपड़े के सूराख से मछलियां थाली में भर चुकी थीं. यहां तक कि किसीको बाहर निकलने के लिए रास्ता तक मिलना कठिन था. कपड़ा फड़फड़ाने लगा था और जिंदा मछलियां अंदर तड़प रही थीं. यशनाक ने थाली उठा ली और उसे हाथों पर तौलता हुआ बोला—यह थाली पहचानी-सी लगती है. अरे, यह तो हमारे यहां की थाली है. . .यहां कैसे आयी. . . एं? उसने किनारे खड़ी मंडली की ओर देखा. बंबई के मेहमानों को छोड़ कर उसके सारे भाई-बंधु उसे उद्विग्न नजरों से घूर रहे थे. यशनाक कुछ देर के लिए गड़बड़ा गया. हठात उसकी नजर बंबई के मेहमानों पर पड़ी, तो वह होश में आ गया. सफेद कपड़े पहने हुए सभी मेहमान मुंह ही मुंह में बुदबुदा रहे थे. बुद्धम् शरणम् गच्छामि. . .

यशनाक ने खुश्क होठों पर गीली जबान फेरी, मछलियों से लबालब भरी हुई थाली पर बंधा कपड़ा खोला और सारी मछलियां ज्यों-की-त्यों पानी में वापस छोड़ दीं.

—मछलियां थीं भरपूर. . .खैर, जाने दो. . . जैसी आप लोगों की इच्छा ! धीमी आवाज में वह बोला और धोती से थाली पोंछता हुआ किनारे पर आ गया. बंबई के मेहमनों के मुंह से एक बार फिर निकला—बुद्धम् शरणम् गच्छामि. .

उनके पीछे चलने वाले सब लोग उसका पाठ-सा करने लगे. फिर उनका जुलूस दोपहर की तेज धूप में गांव की ओर चल पड़ा.

★ ★

इतनी देर तक पेड़ों के पत्तों में छुप कर बैठे हुए महारों के लड़के नीचे उतरे पड़े. वे आपस में जोर-जोर से बातें करने लगे.——साले! ये बौद्ध इस समय कैसे आ गये!

—अपने भाग्य, और क्या !

—गजा, खली का टुकड़ा हो, तो दे नाखून बराबर बहुत भूख लग रही है. मौत आये उन मछलियों की!

बावलिया ने उकता कर कहा. गजा की खली कभी की खत्म हो चुकी थी. उसने कोई उत्तर नहीं दिया. उसे बहुत गुस्सा आ रहा था. थाली में खलबली मचा देने वाली मछलियों की याद उसके मुंह में पानी ला रही थी और इसका इलाज उसे नहीं सूझ रहा था. फिर उसने अपने पैरों के पास पड़ा एक पत्थर उठाया और तालाब के पानी में टांगें फैला कर तैरती एक मेंढ़की को निशाना बना कर उछाल दिया. पानी में मौजूद सारे मेंढ़कों ने डुबकियां लगा लीं और किनारे पर सुस्ताते हुए मेंढ़क भी क्रमशः पानी में कूद पड़े.

—धत् तेरे की! हरामजादे मेंढ़क! देखा, कैसे भागते हैं ! बावलिया ने बड़बड़ाते हुए एक और पत्थर उठा कर फेंका.

फिर सुरेश से भी न रहा गया. उसकी तबीयत भी लहरायी . हाथ में थामा हुआ छोटा-सा केंकड़ा पत्तों में लपेट कर उसने सावधानी से जेब में रखा और तेजी से पत्थर इकट्ठे किये. भरी दोपहर में फिर पानी पर रोटियां बनाने का खेल खूब जमने लगा. ☐☐☐

(अनुवाद : सुरजीत)

विद्यार्थियों के दहकते अनुभव

● बंसी भालेराव

जिला परभणी, तालुका गंगाखेड में माखणी मेरा गांव है. मैं दीवाली की छुट्टियों में घर गया हुआ था और यों ही अपने मित्र शेष राव बरड के खेत पर चला गया था. वहां मरगील-वाड़ी के कोई कुलीन सज्जन हाथ में रोटी रख कर नाश्ता कर रहे थे. धोखे से मेरा उनसे स्पर्श हो गया. उन्होंने पूछा. . . यह कौन है? शेषराव ने उत्तर दिया, महार का लड़का है. बस मरगली-कर मेरी ओर देख कर बोला—क्यों बे महार के बच्चे मुझे छुआ क्यों ? मैं खाना खा रहा था न ! क्या दिखाई नहीं देता? मेरी रोटी खराब कर दी. चल हट एक तरफ. अरे, तेरी यह होशियारी इस गांव में नहीं चलेगी. मेरा खून खौल उठा. वह मेरे ऊपर लपका. मैं तैयार था, पर बात वहीं दब गयी.

किसन राव बरड गांव का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है. उसके घरवालों का मुझ पर पूरा विश्वास है. मैं बेझिझक उनके घर जा सकता था. उन्होंने कभी भी 'महार' कह कर मेरा अपमान किया हो, मेरी याद में नहीं आता. उनके निमंत्रण पर मैं उनके यहां खाने-पीने को भी जाता था पर दूर बैठ कर ही खाता-पीता था, एक फुट दूर से दिया गया पानी पिया करता था. परंतु अज्ञानावस्था के ये बंधन अब सहन न हो सकने के कारण उनसे बंधना मैंने अस्वीकार कर दिया. ☐☐☐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रिपोर्ताज

अकालग्रस्त दलित

□ अरुणा लोखंडे

महाराष्ट्र भर में कोहराम मचाने वाले अकाल की प्रतिध्वनि कहां-कहां नहीं गूंजी! शायद ही कोई जिला और तालुका अकाल की बीभत्सता से बचा हो, लेकिन मराठवाड़ा की हालत खासतौर से खराब रही. अपने विकराल जबड़ों को कुछ ज्यादा ही फैला कर अकाल ने मराठवाड़ा के कितने ही गांवों को लील लिया. गांव वीरान हो गये. गांवों में बचे हुए कुछ बूढ़े अपाहिज इस क्षीण-सी उम्मीद में जी रहे थे कि शायद मौत के पहले एक शाम भरपेट खाना उन्हें मिल जाये. जी रहे थे, क्योंकि मौत आ नहीं रही थी. जीने के अतिरिक्त चारा भी क्या था! फिर जीवन कीड़े-मकोड़े जैसा भी तो नहीं है कि मसला और खत्म हो गया. ऐसी दारुण परिस्थिति में लड़का एक गांव में अकाल-कार्य में लगा हुआ है, तो उसकी बहू कहीं दूसरी जगह भीख मांग कर पेट भर रही होगी. इन सबकी भेंट कहां कैसे होगी, यह तो प्रारब्ध ही जाने.

पलामू गांव की बूढ़ी कोसाबाई ने आंखों में पानी भर कर कहा—मैं छह दिन से भूखी हूं. मैं तो भूखी रह सकती हूं, पर अपने तीन नन्हें-नन्हें पोते-पोतियों की भूख कैसे बरदाश्त करूं? थोड़े-से जौ के आटे में ढेर सारे पत्ते मिला कर बनायी एक रोटी में से किस-किसको दूं?

तुक्या नवबौद्ध और उसकी पत्नी ने रात-दिन कष्ट उठा कर १५० गाड़ी गोबर-खाद इकट्ठी की थी. भगवान ने पानी बरसा दिया, तो इस खाद की मांग बहुत अधिक होगी, इसी उम्मीद में वह अपनी सारी मेहनत भूल गया. पर इतनी मात्रा में गोबर-खाद देख कर गांव वाले ईर्ष्या से भर उठे. उन्होंने तय किया, तुक्या से गोबर-खाद नहीं लेंगे, किसी दूसरी जगह से खाद खरीद लेंगे. अपने आसपास के गांवों के भाई-बंधुओं को भी कह देंगे कि वे तुक्या से खाद न खरीदें. फिर देखते हैं कि तुक्या को पैसा कैसे मिलता है! इस बात पर सभी एकमत हो गये. और खाद वैसी-की-वैसी ही पड़ी रही. बाद में वह सरपंच ने जब्त कर ली. कारण, तुक्या ने खाद रखने के लिए जगह का अनुमति-पत्र नहीं लिया था, हालांकि सच तो यह है कि तुक्या ने सरपंच से पूछने के बाद ही उस जगह खाद जमा की थी. जब्त होने की वजह से तुक्या उस खाद को हाथ भी नहीं लगा सकता था. इधर अकाल में वह हाथ-पर-हाथ धरे भी नहीं बैठा रह सकता था. उसने सामान बांधा और मजूरी की तलाश में औरंगाबाद चला गया.

जालना तालुके के दुधना गांव में रहने वाले तुलसीराम को इस अकाल में जितना काम मिला, जातिवाद से ग्रस्त गांव वालों ने उसको उतना ही नुकसान पहुंचाया. पाटिल ने नल-योजना हाथ में ली. उसने तुलसीराम बौद्ध को कार्यकुशल और विश्वासपात्र समझ कर इस योजना का मुकादम बना दिया. काम शुरू हुआ.

पास के एक कुएं में सुरंग लगा कर भरपूर पानी निकाला गया. तुलसीराम ने सोचा, इस पानी का किसी तरह से उपयोग करना चाहिए. उसने अपनी योजना पाटिल को बतायी. पाटिल तुरंत भांप गया कि तुलसीराम की योजना को कार्यान्वित करने से फायदा-ही-फायदा होगा. उसने स्वीकृति में सिर हिला दिया. तय हुआ कि दुधना नदी के पास तरबूज की और इधर-उधर फलों की बाड़ी लगायी जाये. लाभ में दोनों का हिस्सा बराबर रहेगा. नल-योजना से भी इसकी अनुमति मिल गयी. तुलसीराम ने भरपूर मेहनत की. उसने अपने स्कूल जाने वाले बच्चे से भी काम कराने में कोताही न बरती. उस बच्चे का स्कूल छूट गया. पानी और तुलसीराम की मेहनत के फलस्वरूप तरबूजों की हरी-भरी बेलें दिखने लगीं. उनमें फल आने लगे. गांव वालों को ये फूटी आंखों नहीं सुहाया. उन्होंने रात में अपने मवेशी फलों की बाड़ी में छोड़ दिये. तुलसीराम सिहर उठा. उसने पाटिल को सारी हकीकत बतायी. पाटिल मूंछों ही मूंछों में हंसा और तुलसीराम से बोला—महार के बच्चे बड़ी योजना सोच कर पैसा बनाने की सोचता है! हमें तो इसी बस्ती में रहना है. चलता बन! नल-योजना के मालिक से कह कर उसने कुएं का पानी बंद करवा दिया. पानी के अभाव में मवेशियों के खुरों से रौंदी-कुचली फलों की बाड़ी सूख कर रह गयी. तुलसीराम की आंखों में सागर जरूर लहरा आया.

जब मैं चौका गांव में अकाल-संबंधी जानकारी एकत्र करने गयी, तो वहां बौद्ध स्त्रियों ने अकाल-कार्य पर अलग-अलग जातियों के लोगों के व्यवहार के बारे में अनुभव सुनाये. मुसलिम स्त्री-पुरुष हमारे साथ ढंग से पेश आते थे, ढंग से बात करते थे, पर कुनबी-मरहाठी तो हमारी छाया तक पसंद नहीं करते थे. बाल-बच्चों की झोली भी यदि किसी पेड़ पर बांधने लगते, तो भी वे लोग आपत्ति करते. उनमें से चेंबीबाई ने कहा—अगर किसी भले मुकादम ने हमारे बच्चे को पानी पिलाने का काम दिया, तो ये लोग उस पर शोर करते और मुसलिम बच्चे को पानी पिलाने को कहते. हम लोगों की जाति से तो एक घर से एक आदमी को ही काम पर रखते हैं, पर उनके बच्चों-लड़कों को काम दे कर आठ आना मजूरी अलग से देते हैं.

वड़ गांव की ६५-वर्षीया बायजाबाई ने कहा—नसीब की कहानी क्या कहूं, बहन! हमारे लिए तो बारहों महीने ही अकाल रहता है! अकाल का यह तेरहवां महीना समझ लो. पेट की भूख मिटाने के लिए मेरी बड़ी बहू ने किसी तरह से पत्ते उबाले और पेट भर कर खा गयी. उसे नींद तो तुरंत आ गयी, पर जब उसे होश आया तो वह पागलों की तरह बकने लगी थी. उसे न अपने कपड़ों की सुधि थी और न ही बाल-बच्चों की. उसका पति जैसे-तैसे घर-परिवार का भरण-पोषण करने लगा. उसने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां बायजाबाई से कहा—तू अब मेरे पास मत रह. अपने छोटे लड़के के पास जा. मुझसे अपना ही पेट नहीं भरता, तेरे लिए इतनी रोटियां कहां से लाऊं? बायजाबाई छोटे लड़के के पास चली गयी, परंतु स्थिति वहां भी अच्छी नहीं थी. छोटी बहू ने तो उसे घर में ही नहीं लिया. उसका तर्क था—इस अकाल के कारण चार महीने से खाली बैठी हूं. मेरे छोटे बच्चे तक के लिए खाने को नहीं है. फिर तेरा बोझ कैसे संभालूं?

निमगांव तालुका के एक गांव में बौद्ध स्त्रियों ने एकाएक अपनी बात नहीं बतायी. उनका खयाल था कि किसी सरकारी काम से आयी हुई बाई है, आंकड़े इकट्ठे करने आयी है. वे मुझे टालने लगीं. मैंने उन्हें बताया कि मैं तुममें से ही एक हूं और यह जानने आयी हूं कि अकाल-कार्यों में तुम्हें कितना और कैसा काम मिला है. इसके बाद तो उन्होंने मुझे अपने पास बिठा लिया. उनमें से एक प्रौढ़ा शेवंताबाई सारी स्थिति बताने लगी. उसने बताया—हमें यह जान कर बहुत खुशी हुई थी कि इस बार अकाल के दिनों में काम मिलेगा, क्योंकि खेत पर तो हर घर से सिर्फ एक आदमी को काम मिलता था और मजूरी के मिलते थे सिर्फ आठ आने, इसलिए यह उम्मीद बंधी थी कि कम-से-कम अकाल के दिनों में तो सुबह-शाम चूल्हा जलेगा. घर के सभी लोग अकाल-कार्य में लग गये. मुकादम ने नाम लिख लिये. हाजिरी ली. पर जब मजदूरी देने की बारी आयी तो बच्चों को कुछ भी नहीं दिया गया. मुकादम ने डांट-डपट कर कम मजूरी हाथ में पकड़ा दी. साथ ही उसने धमकी भी दी कि ज्यादा बड़बड़ करोगी, तो कल से काम बंद कर दिया जायेगा. उसकी ताकीद थी कि बच्चों-लड़कों को भी काम करना चाहिए. मजबूरन हम नन्हें-नन्हे बच्चों को पीठ पर बांध कर काम करती हैं!

जितना कुछ मैंने वहां देखा, उसमें एक विशेष बात यह भी है कि अकाल की परिस्थिति में भी जाति-भेद का पालन किया जाता है. वहां मजूरी कर रहे लोगों को भूखे रहना गवारा था, पर महारों का छुआ अन्न खाना नागवार था. अपने नाम के साथ महार जोड़ने वाला कोई एकाध लड़का यदि अकाल-कार्य के अंतर्गत अन्न बांटने का काम पा जाता, तो दूसरी जातियों के लोगों को यह बरदाश्त नहीं होता. वह लड़का कितना ही क्यों न कहे कि न तो यह अन्न मेरे घर का है और न ही बरतन मेरे हैं, पर उसका यह सब कहना व्यर्थ ही रहा और लोगों ने उसका छुआ भोजन लेने से साफ इनकार कर दिया.

कहा जाता है कि इस अकाल में शहरों के महिला-मंडलों ने भी राहत-कार्य किया. पर मध्यवर्गीय स्त्रियों में स्पृश्य-अस्पृश्य की भावना और भी तीव्र होती है. गांवों में बाल सदन खोले गये. अखबारों में नाम छपाने के लिए मध्यवर्गीय महिलाओं ने इन बाल सदनों में बच्चों के मनोरंजन, उनको पढ़ाने-सिखाने का जिम्मा ले लिया. अकाल के काम पर आने वाले कुनबी, साली, मुसलिम, मराठा बच्चों को पढ़ाने तक तो बात ठीक रही, पर उनमें कुछ महार बच्चे भी थे. शारदाबाई ने एक उपाय सोचा. उन्होंने महार बच्चों से कहा—यह बाल सदन तुम्हारे घर से बहुत दूर है. रास्ते में झाड़-झंखाड़ भी बहुत हैं. मैं तुम्हारे ही मोहल्ले में आ कर तुम्हें पढ़ा दूंगी. दूसरी जातियों के लोगों को भी यह बात ठीक लगी. वह महारवाड़े (महारों की बस्ती) में जा कर बच्चों को पढ़ाने लगीं, पर इस बात का ध्यान रखतीं कि किसी महार बच्चे से वह छू न जायें. महार बच्चे की पाटी पर सही लिखा हुआ है या गलत, यह भी वह दूर से ही देखतीं. यदि कोई बच्चा पास आता, तो वह पीछे खिसकने लगतीं और झिड़कती हुई कहतीं—अरे, वहां से ही कह, तुझे क्या कहना है? एक दिन महार स्त्रियों ने यह सब देखा और अच्छी-खासी झाड़ बतायी— ऐ बाई, तू बच्चों को दूर दूर रहने को कहती है, तो फिर क्यों आयी हमारे महारवाड़े में? क्या तुझे हम बुलाने गये थे?

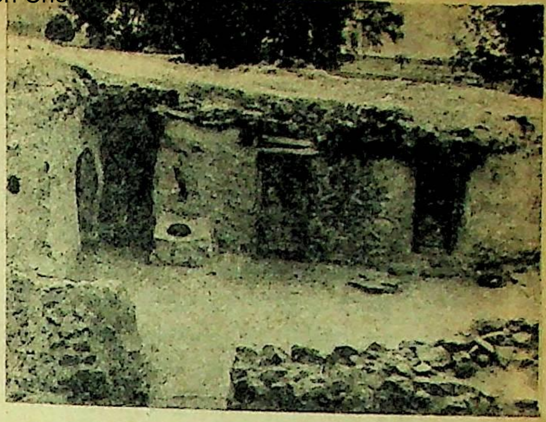
अकाल में लोग अपने घरों को छोड़ कर चले गये

औसत ढोर-मवेशी वाला किसान-वर्ग इस अकाल में हौल-दिल रह गया. कितनों ने तो अपने लाडले मवेशी छोड़ दिये. भूसा मिलता नहीं, मिलता भी तो उसे खरीदने की ताकत नहीं. बेतहाशा बढ़ी हुई कीमतें! कितनों ने सीने पर पत्थर रख कर भूसे की कीमत के बदले अपने मवेशी ही कसाइयों को बेच दिये. जो थोड़ा-बहुत पैसा मिला भी, उसे साहूकार ले भागे. अकाल के काम में जब मजदूरी मिलती, तब अनाज नहीं मिलता. और जब अनाज उपलब्ध होता, तब अकाल-कार्य में हाजिरी नहीं लगती. कैसी विषम परिस्थिति!

इस अकाल ने बहुत कुछ सिखाया. दरिद्रता से जूझने की मानवीय वृत्ति. बंगाल में अकाल पड़ा, तब मनुष्य पशु बन गया था. मनुष्य अन्न बिना, पानी बिना प्राण दे रहे थे. तब कुत्ते मनुष्य की लाश को फाड़ कर खा रहे थे. ऐसा महाराष्ट्र में नहीं हुआ. पर कहीं-कहीं अकाल-कार्य में लगे लोगों की निरीहता का फायदा उठाया गया. जिन लोगों के लिए हर दिन अकाल सरीखा है, उनको इस अकाल के तले भी खास राहत नहीं मिली. चार दिन सुख से बीतेंगे, इस कल्पना से उनके मन को संतोष हुआ. पर यह संतोष भी हवा के एक झोंके की तरह आ कर चला जाने वाला था. जीवन के अनेक शाश्वत प्रश्नों की गांठ खोलने का काम यह अकाल नहीं कर सका. सामाजिक रोग का समाधान करने का प्रयत्न धूमिल रहा. यदि उद्देश्यपूर्ण ढंग से यह प्रयत्न होता, तो क्या महाराष्ट्र की एक अलग निराली छवि नहीं बनती? □□□

(अनुवाद : उषा मंत्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक काल और शूद्र

शूद्रोत्पत्ति और स्वभाव

पहले वर्णों में कोई अंतर नहीं था, ब्रह्माजी से उत्पन्न होने के कारण यह सारा जगत् ब्राह्मण ही था. जो अपने ब्राह्मणोचित धर्म का परित्याग करके. . .शुचि और सदाचार से भ्रष्ट हो कर हिंसा और असत्य के प्रेमी हो गये, लोभवश व्याधों के समान सभी तरह के निंद्य कर्म करके जीविका चलाने लगे और इसीलिए जिनके शरीर का रंग काला पड़ गया वे ब्राह्मण शूद्र भाव को प्राप्त हो गये. (महाभारत शांतिपर्व १८८।१०।१३) लोभ विशेष के कारण शूद्र अज्ञान भाव को प्राप्त हुए—वेदाध्ययन के अनधिकारी हो गये. (शा. प. १८८।१०।१५)

● दास्यु मनुष्यों, देवताओं गंधर्वों अथवा पितरों में से किसी का आत्मीय नहीं होता. यही कहना ठीक होगा कि वह किसी का भी नहीं होता. वह तो मरघट में जा कर मृत शरीर से वस्त्र आदि उतार लाता है और देवता की संपत्ति भी लूट लेता है. जिनकी बुद्धि मारी गयी है वे ही उस पर विश्वास करते हैं. (महाभारत; शांतिपर्व २६७।२१।२२)

● ऋषियों ने मृत राजा वेन की जांघ को बड़े जोर से मथा तो उसमें से एक बौना पुरुष उत्पन्न हुआ. वह कौए के समान काला था. उसके सभी अंग और खास कर भुजाएं बहुत छोटी थीं, जबड़े बहुत बड़े, टांगें छोटी, नाक चपटी, नेत्र लाल और केश तांबे के रंग के समान थे.

उसने बड़ी दीनता और नम्रभाव से पूछा—मैं क्या करूं? ऋषियों ने कहा—निषीद तू बैठ जा!

इसीसे वह निषाद कहलाया. उसने जल लेते ही राजा वेन के भयंकर पापों को अपने ऊपर ले लिया, इसीलिए उसके वंशधर नैषाद अथवा निषाद भी हिंसा, लूट-पाट आदि पाप कर्मों में रत रहते हैं; अतः गांव और नगर में न टिक कर वन और पर्वतों में ही निवास करते हैं. (श्रीमद्भागवत ४।१४।४३–४६)

● चांडाल को गांव के बाहर रहना चाहिए. विष्णुस्मृति १६।४)

● चांडाल को गांव के बाहर, चैत्य वृक्ष के नीचे, श्मशान में, पहाड़ी दर्रों में रहना चाहिए. मुर्दों के वस्त्रों, फूटे बरतनों और लोहे के आभूषणों का उपयोग करना चाहिए. (मनुस्मृति १०–५०)

● अनिरवसित शूद्र वे हैं जिनके द्वारा उपयोग किये गये बरतनों को आग में डाल कर शुद्ध किया जाता है. (पाणिनी अष्टाध्यायी २।४।१०) □

नारद पुराण और शूद्र

जो ब्राह्मण शूद्रों का दिया हुआ अन्न खाता है और शूद्रों का दाहकर्म करवाता है वह महा पाप का भागी बनता है. (१२।१२)

● भोजन करते अथवा अशौच (मल-मूत्र विसर्जन करते हुए) में शूद्र का स्पर्श हो जाये तो त्रिवर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को प्रायश्चित करना चाहिए. मल-मूत्र के त्याग के समय द्विजवर्ण का चांडाल से स्पर्श हो जाये तो तीन रात तक उपवास करे. भोजन करते समय छू जाये तो छह रात तक उपवास करे. रजस्वला अथवा प्रसूता का अन्त्यज से स्पर्श हो जाये तो तीन रात के बाद ही वह शुद्ध होती है. (१४।१०–१२)

● अनजाने में भी चांडाल का अन्न खाले तो पंद्रह दिन तक गोमूत्र में पकाये हुए जौ का भोजन करने से शुद्धि होती है. (१४।२५)

● कोपालिका-अन्त्यजों की एक विशेष जाति का अन्न खाने से, उनकी स्त्री के साथ गमन करने पर तप्तकृच्छ व्रत करके और तेल का होम करने पर ही ब्राह्मण की शुद्धि होती है. (१४।२८–२९)

● धोबी, चमार, नट, बुरुड़, कैवर्त्त, भेद और भिल्ल इन सातों को स्मृतिकारों ने अन्त्यज माना है. जो द्विज भूल से भी इन अन्त्यजों का अन्न खा लेता है अथवा इनकी स्त्रियों से गमन करता है या इनके यहां जलपान कर लेता है या इन जातियों से दान लेता है उसकी शुद्धि पाराशर स्मृति में बताये अर्धकृच्छ व्रत करने पर ही होती है. (१४।३२–३४)

● जो विप्र शूद्र के यहां से बुलावा आने पर उसके यहां भोजन कर लेता है उसे सुरापायी ही समझना चाहिए और ऐसे ब्राह्मण को कभी भी किसी धार्मिक कृत्य करने का अधिकार नहीं देना चाहिए. जो शूद्र की आज्ञा से पुण्य कर्म करता है उस नराधम को भी सुरापान के ही समान पाप लगता है. (१५।३२–३४)

● शूद्र की स्त्री से गमन करने वालों की, शूद्रान्न से पुष्ट शरीर वालों की तो निष्कृति कहीं पर है ही नहीं. (१५।४९)

● जो कोई गौ, अग्नि और ब्राह्मणों के लिए यह कहता है कि इनको कुछ भी मत दो, इनको देने से क्या होता है वह एक सौ जन्मों तक कुत्ते की योनि को भोगता और उसके बाद चांडाल होता है. (१५।६२)

● जो स्त्रियों और शूद्रों के सम्मुख वेदाध्ययन करता है वह ब्रह्मा के एक दिव्य वर्ष पर्यंत नीचे की ओर मस्तक और ऊपर की ओर टांगें करके दो खम्भों के बीच कीलें ठोक कर लटका दिया जाता है और उसे नीचे का धुआं पीना पड़ता है. (१५।१००) □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कंद पुराण

शूद्र, श्वपच (चांडाल) और अधम लोग पिछले जन्मों के संस्कार के ही कारण पापियों की वर्तमान योनियों में उत्पन्न हुए हैं. (१२।३३)

मार्कंडेय पुराण

गर्भपात में ब्राह्मणों के यहां एक दिन-रात में, क्षत्रियों के यहां तीन दिन-रात में, वैश्यों के यहां छह दिन-रात में और शूद्रों के यहां बारह दिन-रात में शुद्धि होती है. (३२।८३)

हरिवंश पुराण

शूद्रों का काम है तीनों वर्णों की सेवा करना (२०।१३५)

श्रीमद्भागवत पुराण

शूद्र का धर्म है द्विजातियों की सेवा. उसकी जीविका का निर्वाह उसका स्वामी करता है (१७।११।१५)

भविष्य पुराण

शूद्र बहुत ही हीन होते हैं. (१।३७) □

शूद्र तपस्वी शंबूक का वध और रामराज्य

भाइयों सहित श्रीरघुनाथ जी धर्मपूर्वक राज्य करते हुए सुख से रहने लगे. इसके कुछ दिनों बाद उस नगर का एक बूढ़ा ब्राह्मण अपने मृत बालक को ले कर राजभवन के द्वार पर आया; और विलाप कर कहने लगा—मैंने पूर्व-जन्म में ऐसा कौन-सा पाप किया था जो मैं आज अपने इकलौते पुत्र को मरा हुआ देख रहा हूं. . ., मुझे स्मरण नहीं कि मैं कभी किसीसे झूठ बोला अथवा जीव हिंसा की अथवा अन्य कोई पाप, निस्संदेह श्रीराम ही का कोई बड़ा दुष्कर्म इसका कारण है, जिससे उनके राज्य में बसने वाला यह बालक मरा है, क्योंकि अन्य राज्यों में तो बालक नहीं मरते. सो हे राजन्, तुम इस मेरे मरे हुए बालक को जीवित करो! नहीं तो मैं अपनी पत्नी सहित अनाथों की तरह राजद्वार पर प्राण दे दूंगा. तब तुम्हें ब्रह्महत्या लगेगी और तब तुम सुखी होना.

उस दुःखी ब्राह्मण का समस्त विलाप रामचंद्र ने सुना; तब अत्यंत दुःखी हो कर उन्होंने मंत्रियों को, वसिष्ठ-वामदेव-नारद आदि ब्राह्मणों को भरत आदि भाइयों को एवं निगम श्रेष्ठियों को ब्राह्मण-पुत्र की अकाल मृत्यु का कारण जानने के लिए आमंत्रित किया.

महाराज को उदास देख स्वयं नारद ने कहा—हे राम, सुनो,पहले सतयुग में केवल ब्राह्मण तपस्या करते थे; त्रेता युग में क्षत्रिय भी तप करने लगे; द्वापर में वैश्य भी तपस्या करने लगेंगे, लेकिन इन तीनों युगों में शूद्रों को तप का अधिकार नहीं है केवल कलियुग में ही शूद्रयोनि में उत्पन्न जीव तप करेंगे. . .यदि त्रेता में भी शूद्र तप करे तो बड़ा अनर्थ है, जबकि आपके राज्य में तो इसी समय एक दुर्बुद्धि शूद्र घोर तपस्या कर रहा है इसीसे इस ब्राह्मण का बालक मरा है. आप अपने राज्य में इस बात की खोज कीजिए; जहां कहीं पाप और अधर्माचरण होता दिखाई दे उसे यत्नपूर्वक रोकिए. तभी धर्म की वृद्धि होगी,मनुष्यों की आयु बढ़ेगी और यह मरा हुआ बालक भी जी उठेगा.

तब श्रीरामचंद्र ने लक्ष्मण से कहा— इस मृत बालक के शव को तेल की द्रोणी में रखवा दो और ऐसा उपाय करो कि शव बिगड़ने या सड़ने न पाये. इतना कह कर उन्हांने नगर की रक्षा का भार भरत एवं लक्ष्मण को सौंपा और चमचमाती तलवार, धनुष तथा बाण ले पुष्पक विमान से शूद्र तपस्वी को खोजने चल दिये.

उत्तर दिशा में उन्हें कोई पाप कर्म नहीं दिखाई दिया. पूर्व दिशा भी निर्दोष दिखाई दी. दक्षिण दिशा में विन्ध्याचल के उत्तर पार्श्व में एक बड़ा तालाब दिखाई दिया. उसके तट पर एक तपास्वी नीचे को मुख कर उलटा लटकता हुआ तपस्या कर रहा था.

श्री रामचंद्र ने उसके पास जा कर कहा—धन्य है आपका तप! मैं दशरथ का पुत्र राम आपसे कौतूहलवश पूछता हूं कि तप किसलिए कर रहे हैं? स्वर्ग जाना चाहते हैं या कोई और अभिलाषा है? और आप ब्राह्मण हैं या क्षत्रिय या वैश्य अथवा शूद्र?

रामचंद्र के ये वचन सुन कर वह तपस्वी नीचे को मुंह किये हुए बोला — मैं शूद्र कुल में उत्पन्न शंबूक नाम का शूद्र हूं और इसी शरीर से स्वर्ग जाने की कामना से यहां पर ऐसा उग्र तप कर रहा हूं.

यह सुनते ही रामचंद्र ने म्यान से चमचमाती तलवार खींच कर उस शूद्र का सिर काट डाला. उसका सिर काटे जाते ही इंद्र और अग्निसहित सभी देवता 'धन्य-धन्य' कहते हुए श्रीरामचंद्र की प्रशंसा करने लगे और बोले—आपकी कृपा से ही यह शूद्र हमारे स्वर्ग में नहीं आने पाया. हमसे इच्छित वर मांगिए.

सत्य पराक्रमी श्रीराम ने हाथ जोड़ कर इंद्र से कहा—आप प्रसन्न हैं तो यही वर दीजिए कि वह ब्राह्मण बालक जी उठे.

देवताओं ने जवाब दिया — हे राघव, वह बालक तो जिस समय तुमने इस शूद्र को मारा उसी समय जी उठा और अपने माता-पिता से मिल भी चुका. अब तुम लौट जाओ. □

(संकलन – श्यामू संन्यासी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंडीदास □ गुरबख्श सिंह

रोज की तरह उस दिन भी मंदिर में पूजा हो रही थी. अंदर और बरामदे में खूब भीड़ थी. मंदिर के बाहर सीढ़ियों के नीचे मैले-कुचैले कपड़े पहने, श्रद्धा से हाथ जोड़े और माथा झुकाये कुछ स्त्री-पुरुष खड़े थे, जो मंदिर में जाने वालों के लिए रास्ता छोड़ देते थे. अंदर जाने वाले उन्हें देख कर त्योरियां चढ़ा लेते थे. पूजा समाप्त होने पर छोटे पुजारी ठाकुर चंडीदास प्रसाद के रूप में सभी को एक-एक, दो-दो फूल देते—सीढ़ियों के नीचे खड़े श्रद्धालुओं को भी. उस दिन उनकी झोली में जब थोड़े-से ही फूल बच गये तो नीचे खड़ी रोज प्रसाद पाने वाली युवती रामी धोबन अधीर हो कर बोल पड़ी—ठाकुर जी, आज मुझे प्रसाद नहीं मिलेगा क्या? और तुरंत उसकी ओर स्नेह से देख कर ठाकुर ने उसे प्रसाद दे दिया. वह आनंद-विभोर होती, हाथ जोड़ कर चली गयी. लोग कानाफूसी करने लगे.

लोगों की वह कानाफूसी तब और बढ़ गयी, जब पूजा के लिए ठाकुर नित्य बागों में न जा कर रामी के घर के पास वाली बगिया से फूल लाने लगे. लोग जलने लगे. ठाकुर और रामी की बदनामी करने लगे. अपनी बदनामी की रामी ने चिंता न की, किंतु ठाकुर की बदनामी उसे सहन न हुई. एक दिन उसने आंखों में आंसू भर कर ठाकुर को यह बात बतायी और प्रार्थना की कि वह बगिया में न आया करें. चंडीदास ने भी आंखों में आंसू भर कर बात मान ली.

रामी जवान थी. सुंदर थी. कस्बे के रंगीले जैलदार की आंखों में वह बस गयी. जैलदार की स्त्री बड़ी धार्मिक और उदार वृत्ति की थी. सब लड़कियां और स्त्रियां उसे मां की तरह मानती थीं. एक दिन वह मंदिर के लिए रवाना हुई, तो जैलदार ने अपने एक नौकर को सिखा-पढ़ा कर रामी के पास भेजा. कहलवाया—माता जी की तबीयत खराब है, मंदिर न जा कर फौरन उनके घर चलो.

भोली-भाली रामी उसके साथ चल दी. किंतु माता जी के कमरे में पहुंची तो देखा, कमरा खाली है. कमरे में जैलदार आया. उसने रामी को बताया कि वह उससे कितना प्यार करता है. गहनों और कपड़ों का लालच दे कर, अपनी ओर खींचते हुए जब उसने रामी से अपनी काम-पिपासा शांत करनी चाही, तो रामी चीख पड़ी और हाथ छुड़ा कर भागने की कोशिश करने लगी. बहुत गिड़गिड़ायी—आप तो गांव की लड़कियों और औरतों की इज्जत के रक्षक हैं, मेरे पिता की तरह हैं. और फिर मैं कुंआरी हूं. मेरी इज्जत चली गयी, तो मैं जान दे दूंगी. किंतु जैलदार ने एक न सुनी. तब वह चीखी—हे भगवान, मेरी लाज बचाओ. मेरी रक्षा करो!

और मानो सचमुच भगवान ने रामी की पुकार सुन ली. जैलदार की स्त्री अपने अंतर की जोरदार आवाज पर उस दिन फौरन घबरायी हुई-सी घर पहुंची. जैलदार स्तब्ध रह गया. कुकृत्य न कर पाया. रामी की लाज बच गयी. उसकी लाज बचाने के बदले, मां के तौर पर, उसने रामी से वचन लिया कि वह इस घटना के बारे में किसी से भी कुछ न कहेगी.

जैलदार ने अपने अपमान का बदला लेने का निश्चय कर लिया. उसने पुजारी को बताया कि ठाकुर चंडीदास का रामी से अनुचित संबंध है और आदेश दिया कि रामी को पूजा के समय बिल्कुल न आने दिया जाये. फिर भी रामी एक दिन किसी तरह पहुंच ही गयी. जैलदार ने देख लिया. उसने फिर रामी को फुसलाने और मनाने की कोशिश की, किंतु जब वह उसके चंगुल में न आयी, तो गुस्से में लाल हो कर, उसकी बांह पकड़ कर, गालियां देते हुए, घसीटते हुए उसने उसे बाहर कर दिया. चंडीदास यह सब देख कर अंदर-ही-अंदर क्रोध से उबल रहा था. किंतु फिर भी चुप रहा. वह बेहद दुखी था और उसे बड़ी ग्लानि हो रही थी. सचमुच वह उसे हृदय से चाहने लगा था. थोड़ी देर में रामी फिर पागल की तरह दौड़ती हुई मंदिर में आयी और आंखों में आंसू भर कर चंडीदास से बोली—आपकी आंखों के सामने मेरी बेइज्जती हुई और आप देखते रहे! मैंने आपको देवता समझा था. लेकिन वह मेरी गलती थी. आप देखते रहे और मेरी बेइज्जती होती रही. . .! यह कहती हुई वह बाहर निकल गयी. चंडीदास बहुत ही दुखी था. उसे बड़ी ग्लानि हो रही थी. उस दिन सारे कस्बे में लोग तरह-तरह की बातें करते रहे.

अब जैलदार ने रामी के भाई के कपड़ों की चोरी करवानी शुरू कर दी. उसका धंधा लगभग समाप्त हो गया. कारण सब को मालूम था, लेकिन भाई विचलित न हुआ.

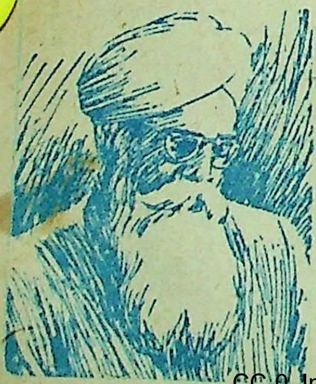

गुरबख्श सिंह: पंजाबी कथाकार व पत्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजवानी आर्टकिान के सौजन्य से

तब एक दिन रात में उनके झोपड़े में आग लगा दी गयी. आग पहले रामी ने देखी. चंडीदास की पसंद की साड़ी पहन कर उसके नाम पर वह सती हो जाना चाहती थी. आग ने उसे और उसके भाई और भाभी को चारों ओर से लपेट में ले लिया था. भीड़ जुट गयी थी, किंतु जलते झोपड़े में जा कर उन्हें बाहर निकाल लाने की किसी में हिम्मत न थी. इतने में उस अंधेरे में एक युवक दौड़ता हुआ आया, झोपड़े में घुस गया और एक-एक कर वह तीनों को कंधे पर लादे बाहर ले आया. सब लोग चकित रह गये. बाद में आग की रोशनी में सबने देखा कि वह युवक ठाकुर चंडीदास था. उसकी बहादुरी की चर्चा के साथ-साथ लोग और भी तरह-तरह की चर्चाएं करने लगे. सबेरा होते होते कस्बे में शोर मच गया.

जैलदार गुस्से में भर कर पुजारी के पास पहुंचा और चंडीदास और रामी के बीच अनुचित संबंध की बात कहते हुए बोला—जब तक चंडीदास अपने पाप के लिए प्रायश्चित न कर ले, तब तक उसे भगवान की पूजा न करने दिया जाये. पुजारी जानता था कि चंडीदास निष्पाप है, पवित्र है. फिर भी आदेश का पालन करने को वह विवश था. आंखों में आंसू भर कर उसने कहा—बेटा, मेरे कारण प्रायश्चित करना स्वीकार कर लो. चंडीदास का मन विद्रोह कर रहा था, किंतु फिर भी उसने पिता-तुल्य पुजारी की बात मान ली.

कस्बे में शोर मच गया—रामी के कारण ठाकुर चंडीदास प्रायश्चित कर रहे हैं. रामी के कानों में खबर पड़ी तो वह पागल-सी हो कर मंदिर की ओर दौड़ी. वह रोती हुई चीख रही थी—नहीं, ठाकुर कभी प्रायश्चित नहीं करेंगे. . .वह पवित्र हैं. . .वह निष्पाप हैं. . .वह कभी प्रायश्चित नहीं करेंगे. . .यज्ञ चल रहा था. आवाज चंडीदास के कानों में पहुंची. मंदिर की दीवार फांद कर रामी अंदर आ गयी थी. कपड़े फट गये थे. शरीर से खून बह रहा था. चंडीदास ने उसे देखा. वह रुक गया. पुजारी के बार-बार कहने पर भी प्रायश्चित न कर सका. रामी पूछ रही थी—ठाकुर, क्या झूठी बात के लिए आप प्रायश्चित करेंगे? क्या मेरे कारण आप प्रायश्चित करेंगे?. . .चंडीदास ने निर्णय कर लिया. पुजारी से बोला—गुरुदेव, अब मुझसे सहन न होगा! मैं असत्य बात के लिए प्रायश्चित न कर सकूंगा, क्षमा करें. यह कह कर चंडीदास ने रामी को बाहों में ले लिया और दोनों उस भीड़ से निकल कर उस कस्बे को छोड़ कर चले गये. □□□

(संक्षिप्तीकरण : नरेंद्र मालवीय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसारीलाल उर्फ उस्मान

● **रतनलाल सोनग्रा**

आज वह फिर आया है—वह एक चाकू छुरी को धार लगाने वाला आदमी है—उसने सायकिल की डंडी पर एक धार लगाने वाला पथरीला चाक लगाया है—जो एक चमड़े की पट्टी से पिछले चाक में लगे छोटे चाक से घूमता है है और वह सायकिल की सीट पर बैठा-बैठा धार लगाता है—मैं उसे बचपन से देखता हूं. . .जब वह किसी कैंची या छुरी को धार लगाता है तब आग की चिनगारियां ऐसे उड़ती हैं जैसे फुलझड़ी जलती है. बचपन में मुझे लगता दिवाली के समय इसी सायकिल पर बैठ कर दिन रात फुलझड़ियां जलायी जायें. . .

आज मैं एक होटल में बैठा हूं चाय पी रहा रहा हूं, अचानक मेरी नजर होटल में लगे एक साईन बोर्ड पर गयी—आजकल मैं होटल में हमेशा भाव देखता हूं—न जाने कब बढ़ जाये—उस बोर्ड पर लिखा था—सभी जाति-धर्म के स्त्री-पुरुषों को मुक्त प्रवेश. मैं उस साइन बोर्ड को देख कर हंसने लगा—श्रीकृष्णविलास हिंदु होटल के ग्राहक मुझे ऐसे देखने लगे जैसे मैंने वहां चाय के बदले ठर्रा पिया हो! मैंने चाकू छुरी वाले उस्मान को भीतर बुलाया, पूछा—चाय पिओगे उस्मान?

—जरूर साब, आप पिलायें और हम न पियें. . .

—दो स्पेशल चाय! मैंने कहा. .

उस्मान ने अपनी जाकिट से चारमीनार निकाली अपनी 'फर कैप' उतार कर टेबल पर रख दी.

—उस्मान, यह टोपी अब पुरानी हो गयी है. बदलते क्यों नहीं?

—नहीं साब, यह तो निशानी है!

मुझे वह दिन याद आया. मैं उस होटल में पच्चीस साल पहले—जलेबी लाने गया था—एक काला सांवला नौजवान उस होटल में आया. उसने चाय मंगायी—मेरी जलेबी बांधी जा रही थी—अचानक किसीने उसके हाथ से चाय की प्याली झटके के साथ गिरा दी—हरामखोर! वेड़ की औलाद —होटल में आ कर चाय पीता है, जानता नहीं, बाहर अलग कप-बसी रखी है.

—यह अछूत आजकल बहुत बेशरम हो गये हैं! किसीने कहा—

होटल का मालिक भट्टी-सा गरम हो कर बाहर आया. उसने तड़-तड़, दो-तीन तमाचे जड़ दिये. दो-तीन नौकर और ग्राहकों ने उसे बाहर खींच कर लातों-घूंसों से रौंद डाला. उसके मुंह से खून बहने लगा—अरे, यह तो उसारीलाल है—हरकत, 'आप रसियां देखता है—झाड़ बनाता है कुछ देर बाद वह जवान उठ कर चला गया.

दूसरे दिन वह 'फर कैप' पहन कर दो-चार मुसलमान दोस्तों के साथ आया—मालिक ने उसकी ओर जलती हुई निगाहों से देखा.

—मैं उस्मान बन गया हूं—कौन हाथ लगाता है अब देखता हूं, उसकी मां की. . .

उसके बाद वह उस्मान बन कर चाकू छुरी पर धार लगा रहा है. वह अब तक वही कर रहा है, जब भी अजीब स्वर में 'चाकू छुरीय' सुनता हूं, लगता है, कोई हमारी समाज व्यवस्था को चीर रहा है. . .

बुद्धिवादी की स्वतंत्रता

रतनलाल सोनग्रा

कालेज के स्टॉफ कॉमन रूम में चाय की चुस्कियों के साथ अखबारों की खबरों पर टिप्पणियां चल रही थीं. नया स्केल घोषित

दत्ता राने

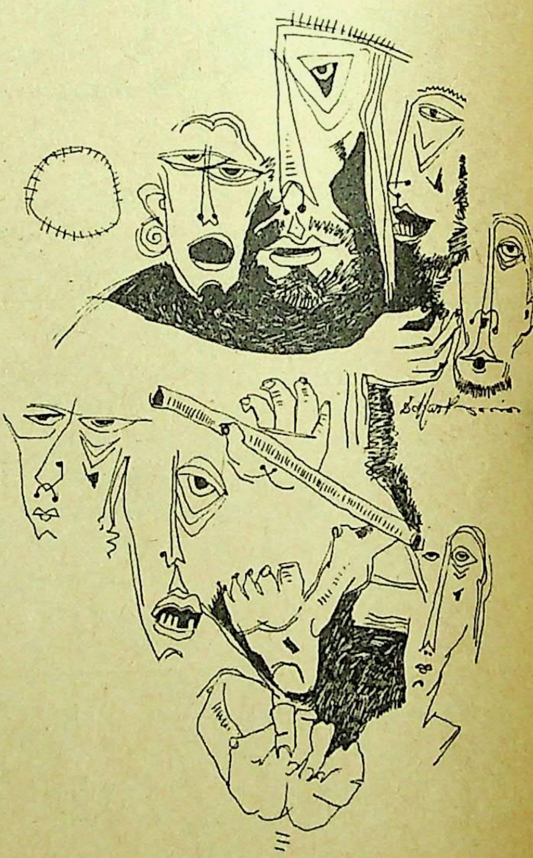

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने पर मध्यवर्गीय प्रशंसित आलोचना चल रही थी.

—अब बुद्धिमान व्यक्ति जरूर इस व्यवसाय में आकर्षित होंगे! प्राचार्य महोदय ने उनकी ओर विचित्र दृष्टि से देखा, मानो कह रहे हों क्या हम निर्बुद्ध हैं?

—नहीं—मेरा मतलब. . .

एक प्राध्यापक महोदय ने झट् से साहब का सिगरेट सुलगा दिया और कहा—वैसे हमें मिलता क्या है?

सिगरेट के कश के साथ प्राध्यापक की तत्परता से उनका अहं तृप्त भाव से चेहरे पर झलक गया— सोल्त्सेनीन को बहुत सताया गया है—बुद्धिवादी की स्वतंत्रता का क्या होगा?

—सर, हमारे कलकत्ता के कस्टम ऑफिस ने 'गुलाग आर्चिपलगो' की प्रतियां रोक ली है. . . हम कहां जा रहे हैं? उन्होंने सर के सुर में अपना-अपना ताल जमाया. उस वक्त उनका चेहरा 'कंटिन्यूशन के एप्लिकेशन' जैसा लाचार लग रहा था.

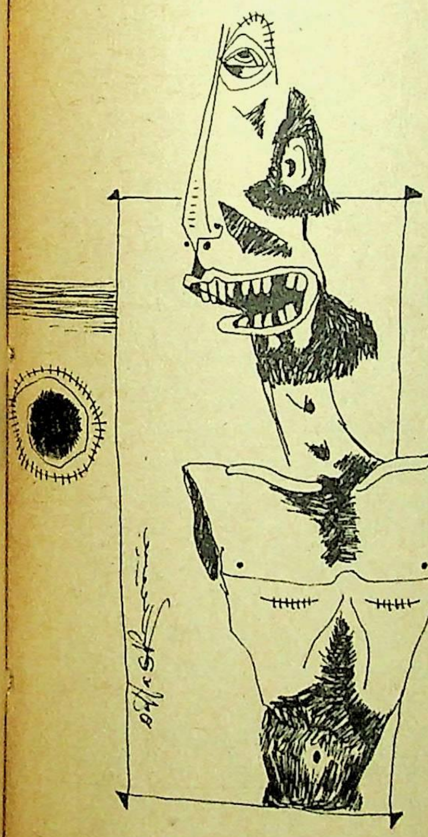

• हरा राने

—ओ, ओय सी, फिर धुआं बाहर आया. चेहरा धुंधला हुआ, साहब चले गये. सोफे पर तन के बैठे प्राध्यापकों ने टांगें फैला दीं.

कुछ ही देर बाद एक नोटिस आयी!

'स्टाफ में मेंबरों को सूचित किया जाता है कि कुछ विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी है. बिना मेरी सूचना के कोई भी अध्यापक विद्यार्थियों से इस विषय में कोई बात न करे. अपना मुंह पूरी तरह बंद रखे.' नोटीस पढ़ने के बाद सारा स्टॉफ रूम अस्वस्थ हो गया. सभी एक दूसरे की ओर ऐसे देख रहे थे मानो कोई 'हत्या का षडयंत्र' चल रहा हो!

साहब अपने ऑफिस में गये. तभी फोन की घंटी बजी.

—मैं प्रिंसिपल. . .

—चेअरमन हिअर—देखिए, जिस अंग्रेजी के प्रोफेसर को हमने डिस्कंटिन्यूशन का नोटिस दिया है उन्हें रहने दो. . .

—लेकिन साहब. . .

—लेकिन वेकिन कुछ नहीं— उसके चाचा हमें बड़ा डोनेशन दे रहे हैं—

—यस् सर् यस्सर. . .मैं अभी नोटिस वापिस ले रहा हूं. . . □

एक पाव चावल

• शेख जैनुल आब्दीन

एक राजा बहुत ही न्यायप्रिय और प्रजापालक था. अन्न-धन से भरा-पुरा उसका राज्य था. प्रजा सुखी थी.

कलांतर में प्रतिवर्ष उसके राज्य में अकाल पड़ने लगा. प्रजा भूखों मरने लगी. गांव उजड़ने लगे. राजमहल का अन्न-बखार भी एक दम खाली हो गया. प्राण रक्षा में राजपरिवार के लोग और कर्मचारीगण भी इधर-उधर जंगलों में भाग गये.

महल में राजा, उसके तीन वफादार कर्मचारी और एक पाव चावल बाकी रह गया. कर्मचारियों में एक ब्राह्मण, एक वैश्य और एक शूद्र था.

राजा और उसके तीनो कर्मचारी जब भूख से मरने लगे तो राजा ने एक पाव चावल स्वयम् अपने हाथ से पकाया. जब चावल पक कर तैयार हो गया तो उसने तीनों कर्मचारियों को पास बुलाकर कहा—हे प्रजाजनो! पका हुआ चावल शूद्र खायेगा. ब्राह्मण मांड पीयेगा. वैश्य हांडी करोयेगा. राजा पत्तल चाटेगा.

प्रजाजनों ने राजा के आदेश का अक्षरशः पालन किया. कहते हैं कि जिस समय राजा शूद्र के आगे की जूटी पत्तल चाट रहा था उसके राज्य में सर्वत्र जल की जगह आकाश से लगातार अन्न-वृष्टि हो रही थी. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिस्सू

□ काजी अब्दुल सत्तार

राम अवतार के द्वारे में चार-चार कोस के आदमी टेटा बांधे खड़े थे. जैसे बेटे का ब्याह रचा रहा हो. कभी वह मंझले लड़के को चिलमें भरने का हुक्म देता और कभी छोटी बहू को शर्बत घोलने का आदेश. रघू का घर तो उसके घर से मिला था. गोमती पार की एक भैंस के सींग बांध कर जब पलटा, तो अच्छे-भले मानकपुर के बाजार को जाते हुए राहगीर उसके अपने गांव की ओर घूम पड़े, फिर वह लेनडोरी राम अवतार के द्वार पर बिखर गयी. जी तो इसका भी उधर आने को चाहा. पर पेट की आतें कुलबुला रही थीं. घिस्सू ने पीठ पर बंधी हुई सीघे की गठरियां पलंग की अध्वान पर पटक दीं और कंधे से अंगोछा खींच कर पांव झाड़ने लगा. इतने में राम अवतार और उसके घर के बीच वाली दीवार के नीचे लगी हुई मांचों पर पांव रख कर उसकी दुलहिन उतर आयी— और छप्पर में झूलते हुए छींके पर से नया बुना हुआ डलवा उतारते हुए बोली—राम औतार चचा हाथी की तरह एक भैंस लाये हैं!

घिस्सू ज्वार की काली-मोटी ठंडी रोटी के बड़े-बड़े निवाले लहसुन की चटनी के सहारे उतारने लगा. जब जरा पेट की आग बुझी तो घिस्सू ने दुलहिन के हाथ से चिलम ले कर कंडे की आग को बराबर करके दम लगाया तो जैसे मीलों के सफर की थकन धुएं के बादल की तरह उड़ गयी. घिस्सू ने चिलम झाड़ कर ताक पर औंधा दी. धूप दीवार पर चढ़ने लगी थी. राम अवतार के दरवाजे से आदमियों की आवाजें आ-आ कर उसके कानों में झूल रही थीं. घिस्सू भी भीड़ में आ कर खड़ा हो गया. खड़ा रहा. रंग-बिरंगे कंचों और छोटी-छोटी घंटियों की हमेलें पहने भैंस खड़ी थी. काले-चौड़े माथे पर छोटा-सा टीका भी था मानो जमे हुए दही का थक्का उड़ कर चिपक गया हो. बिलकुल उसकी 'मुन्नी' की तरह झूम-झूम कर उलझ-उलझ कर खा रही थी. उसकी अपनी मुन्नी में और इस भैंस में एक अंतर था. मुन्नी के सींग सुंदर थे. बिलकुल गोल मुड़े हुए. क्या मजाल दोनों सींगों में कोई सूत बराबर भी अंतर निकाल दे. पर उसका एक सींग तो ऐसा था जैसे तलवार सूंत कर उसके सिर में गाड़ दी गयी हो और दूसरा जैसे हाथ भर का डंडा मस्तक से लपेट दिया गया हो. इस भैंस का भला मुन्नी से क्या मुकाबला ! सींग तो जानवर की शोभा होते हैं—जानवर का रोब होते हैं. हमारे रौनापुर के ठाकुर के मुंह पर मूंछों के सिवा भी कोई चीज है भला? उनकी एक मूंछ मंगल नाई अपनी कैंची से उतार ले तो?...

—चिलम पियो, घिस्सू भाई! राम अवतार का बड़ा लड़का गयादीन चिलम बढ़ाये खड़ा था. फिर उसने पूछा— कैसी भैंस है, घिस्सू भाई?

—हां, हां, घिस्सू, बताओ. तुमरी तो जिंदगी ही बीती है भैंसें देखत. राम अवतार ने खटिया से उठते हुए पूछा.

घिस्सू ने चिलम का एक दम लगाया. भैंस को देख कर इधर-उधर देखा जहां राम अवतार के घर वालों के अलावा कोई न था. भैंस लाख में एक है, नस्लदार है. जवान है, पूरी महारानी है... मुल...तनी....

—मुल तनी का ? राम अवतार गरजा.

—मुल तनी यूं कि सींग बिगड़ गये हैं.

—हुंह ! सींग... सींग का दूध देत हैं ?

—चाचा, सींग जानवर की मूंछ है. जब मूंछ न होय तो सारा आदमी का मुहरिया है... घिस्सू यह कह कर अपनी बायीं मूंछ चूसता हुआ चला गया.

राम अवतार ने गयादीन से कहा—बड़कऊ, घिस्सू का मतलब है कि हम इनसे सींग बनवा लें. हुंह बड़े डाक्टर हैं सरउ !

—अरे, हम इनका हाथ न लगावे देव !

रात में घिस्सू को नींद न आयी. वह राम अवतार के द्वारे से एक घाव लगा लाया था, जैसे कोई किसी के विवाह में जाये और अपनी प्रेमिका को दुलहिन बना देख कर घायल हो जाये. उसकी प्यासी आंखों के सामने बीते दिनों का ताड़ीखाना खुल गया...घिस्सू न जाने कितनी यादों के कुल्हड़ चढ़ाये नशे में धुत पड़ा था. वह तीस-बत्तीस वर्ष के अधेड़ आदमी की जगह दस-बारह वर्ष का चंचल लड़का बन गया था. वह सुबह होते ही खटिया से सीधा उठ कर बाहर के छप्पर में गया जहां रात को खरीद कर आयी हुई भैंस बंधी हुई थी. उस का बाप पड़िया पकड़े बैठा था और मां भैंस दुह रही थी. जब बाप ने काली रेशमी पड़िया को गोद में भर कर उठाया और आंगन में ला कर छोड़ दिया तो वह भी पड़िया की तरह कुलेलें करने लगा था. वह उसे मुन्नी कह कर उसके साथ खेलने लगा. देखते-देखते मुन्नी उसका साया बन गयी. मुन्नी को वह अपने हिस्से का दूध पिलाता. अपने साथ तालाब में नहलाता. अपने हाथ में उसकी रस्सी ले कर बागों में चराता-घूमता. अपनी खटिया के पाए में बांध कर सोता. अपने पैसे जोड़-जोड़ कर उसने मसरख के मेले से मनकों, मोंगों, कंचों और घंटियों की हमेलें खरीदीं और अंधेरियां पहनायीं और पैरों में झांझें बांधीं और झूलें अड़ायीं. मुन्नी जब पहला बच्चा देने वाली हुई तो रास्ता चलते-चलते लोग रुक जाते, और टकटकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांधे देखा करते. देखने वालों की नजरें देख कर घिस्सू की मां डर जाती और मुन्नी पर से नमक मिर्च उतार कर अपने मन को शांत कर लेती. फिर घिस्सू के बाप ने मुन्नी को अंदर बांधना शुरू किया. जब मुन्नी ने दूध दिया और पूरी दो बालटियां गले तक भर गयीं और गांव वालों ने पूछ-ताछ शुरू की तो घिस्सू के बाप अन्नू ने झूठ बोल कर टाल दिया. पर सारे गांव में मशहूर हो गया कि अन्नू महतिया की भैंस मन भर दूध देती है. फिर एक दिन अन्नू महतिया, जो भैंसों के सींग बांधने-बनाने में दूर-दूर तक जाने जाते थे, कत्ल के मुकदमे में फंस गये. जब खेत-पात, जेवर-गहना, घर-गृहस्थी, सब मुकदमे की भेंट चढ़ गये, तब मुन्नी का नंबर आया. गजनीपुर के बाजार में रसीद लिख कर और रुपये गिन कर भी घिस्सू देर तक मुन्नी को बैठा देखता रहा और आंसू पीता रहा. मुन्नी को भी बेच दिया. जब बीस वर्ष की सजा पा कर वह सीतापुर की जेल से फैजाबाद की जेल भेजे जाने लगे, तो उन्होंने अपने रोते-पीटते बेटे को सींग बांधने का नुस्खा बता दिया, जो पुश्तों से उनके घर में चला आता था. चार-छह वर्ष बाद जेल में अन्नू मर कर जिंदगी और कैद से छूट गया, घिस्सू सींग बनाता-बांधता रहा और अपने बच्चों का पेट पालता रहा और दूसरी मुन्नी लाने के सपने देखता रहा. और अब राम अवतार ने यह भैंस खरीद कर मुन्नी के दुःख का बुझा हुआ अलाव सुलगा दिया. लपटें उठने लगीं. घिस्सू

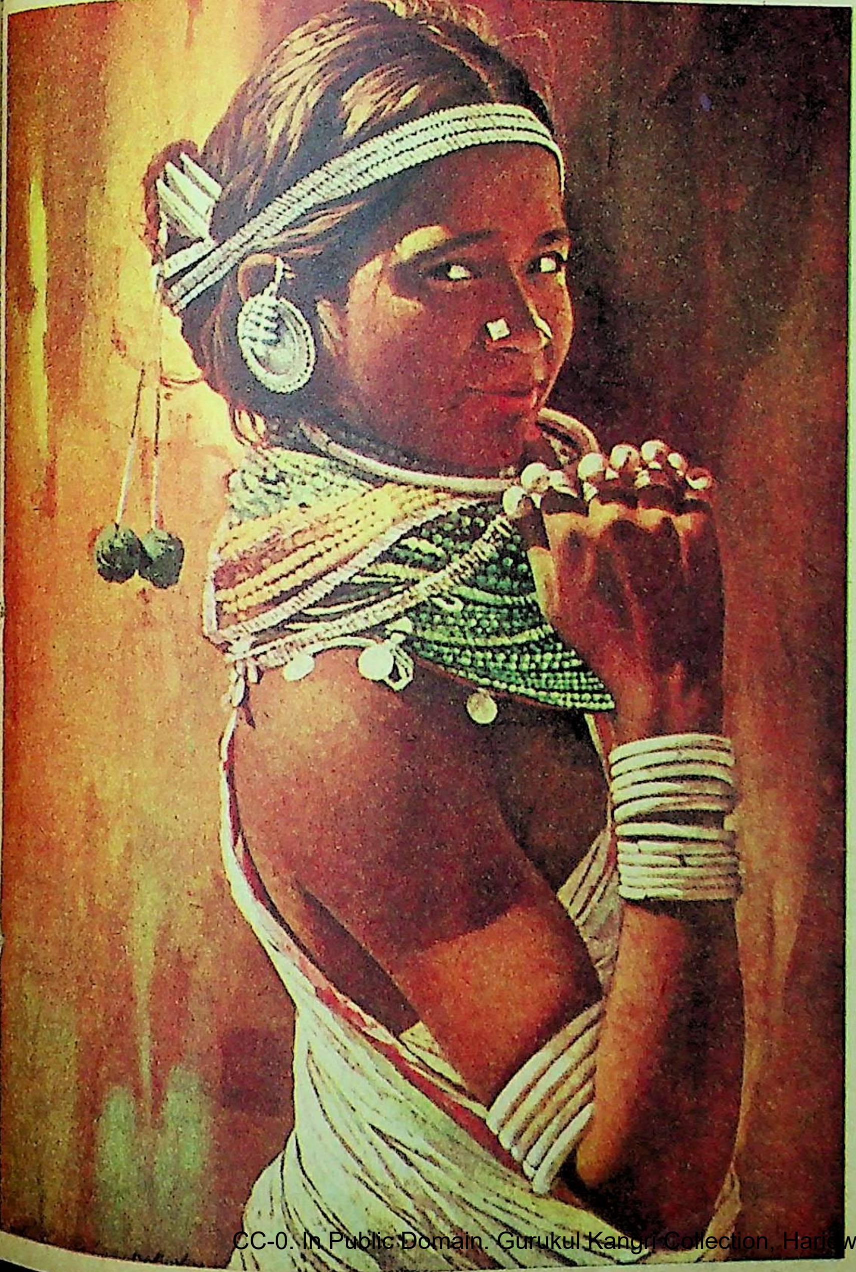

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन बड़ा स्वादिष्ट है !
क्या घरेलू घी से बना है ?
श...श...श...

विजया घी

बिल्कुल घर में बने घी जैसा

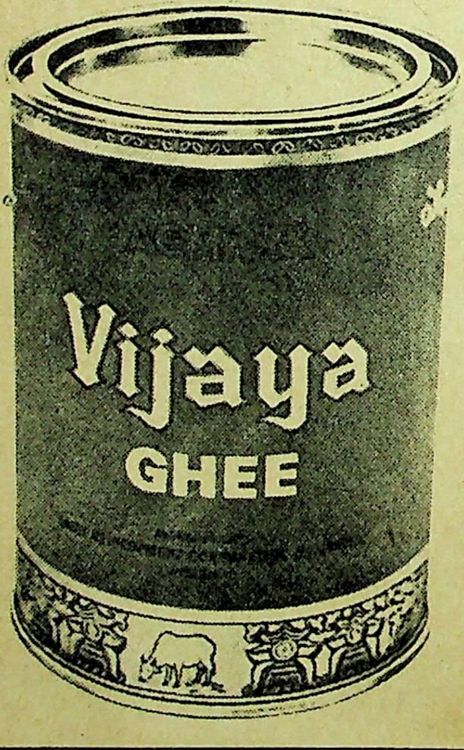

गुणों में उत्तम...
कीमत में कम

हालांकि यह घर में नहीं बनता लेकिन फिर भी आपको लगता है जैसे यह आपके घर में ही बना है क्योंकि विजया घी भरपूर तत्त्वोंवाले ताज़े दूध से आधुनिक फैक्टरी में बनाया जाता है. इसमें विटामिन भी होते हैं जो अच्छी सेहत के लिए आवश्यक हैं.

पोषक तत्त्वों से भरपूर...गाढ़ा और स्वादिष्ट... बस यही है विजया घी

उत्पादक : आंध्र प्रदेश डेरी डेवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड, लालापेट, हैदराबाद ५०० ०४०

विजया घी पर उत्तमता का चिन्ह 'एगमार्क' भी लगा होता है.
यह वैज्ञानिक ढंग से हानिरहित डिब्बों में बंद किया जाता है.
एकमात्र घरेलू घी – जो घर में नहीं बनाया जाता.

ANDHRA PRADESH
DAIRY DEVELOPMENT CORPORATION
PRIVATE LIMITED
(A State Government Undertaking)

kalpa/apd/3/75

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस में जलने लगा. उसी समय आंगन के कोने में झूल के नीचे बंद मुर्गे ने कुड़कुड़ा कर बांग दी और घिस्सू को मौलवी साहब की बात याद आ गयी कि कयामत सिर पर आ गयी, वरना मुर्गे कहीं आधी रात से बोलने लगते हैं ! गांव के अन्य मुर्गे-भी बोलने लगे. टापे में बंद बकरी के बच्चे मिमियाने लगे. राम अवतार महतिया के घर से भी उठा-धरी की आवाजें आने लगीं. घुमर-घुमर चक्कियां चलने लगीं. पिसनहारियों के बोल बजने लगे. उसकी दुलहिन भी कलमा पढ़ कर उठ पड़ी. अब घिस्सू को सुबह होने का यकीन आया. वह जलती पलकें झपकाता, धोती की कांच बांधता हुआ झूमता बाहर चला गया. गयादीन भैंस लगा रहा था. कनखियों से घिस्सू को देखा तो त्योरियों में विष घुलने लगा. राम अवतार भी एक हाथ में हुक्का पकड़े दूसरे हाथ से मुंह में दबाये आ पहुंचा. उसने राम अवतार से कहा——चाचा, तुम कहो तो इसके सींग बना दिये जायें. उसके स्वर में भिखारियों जैसी गिड़गिड़ाहट थी.

राम अवतार रुखाई से बोला—— बड़कऊ से पूछो.

बड़कऊ अटल स्वर में बोला——न भाई. . . हम भैंस नाई छुए दीबा !

घिस्सू फटी-फटी आंखों से उसका मुंह देखता रह गया. फिर बड़कऊ ने अपनी दुलहिन को कुछ इशारा किया. उसने जल्दी से बैलों के मुंह में लोई ठूंसी और लप-झप भीतर गयी और नीले मनकों की हमेल के पास सात गांठों वाला वह काला धागा बांध दिया जिसे खैराबाद के मियां ने पढ़ कर दिया था और बना-बना कर कह दिया था कि जब तक यह 'गंडा' गरदन में है, भैंस को किसीकी नजर नहीं लग सकती. राम अवतार की विष भरी रुखाई गयादीन का टका-सा जवाब और उसकी दुलहिन की थूकती हुई नजरों ने घिस्सू को जैसे अंदर से तोड़ दिया. वह वहीं जमीन पर उकड़ूं बैठ गया और महतिया की दी हुई बीड़ी सुलगाने लगा.

★ ★

थोड़े दिन गुजरने के बाद भैंस के चाव चौंचले खत्म हो गये. राम अवतार मानकपुर की प्रधानता के चुनाव की तैयारियां करने लगा. नये-नये दांव फेंकने लगा. चारों लड़के बाप का हाथ बंटाने लगे. वह उपेक्षित भैंस भी सरजनपुर के अन्य जानवरों की तरह अंगनू चमार की गोढ़ी में शामिल हो कर चराई पर जाने लगी.

सरजनपुर से निकलते ही धंधहारी का वह जंगल शुरू हो जाता है, जिसका सिलसिला किसी-न-किसी तरह लखीमपुर खेरी तक चला जाता है. आस-पास के सभी जानवर इसी जंगल में चराये जाते हैं. कोई चार मील जंगल के अंदर घुस कर गोरों का वह कब्रिस्तान मिलता है, जिसकी दीवारें हाथी बराबर ऊंची हैं और लोहे की सीखों का फाटक हर समय खुला रहता है. पर आदमी तो आदमी, वहां पक्षी भी पर नहीं मारता, क्योंकि वहां उस बेपनाह भय का पहरा लगा रहता है. भोले-भाले देहातियों का विश्वास है कि उस कब्रिस्तान के अंदर गोरे भूत और गोरी चुड़ैलें रहती हैं, जो भूले-भटके राहगीरों को पकड़ कर ले जाती हैं और भून कर खा जाती हैं.

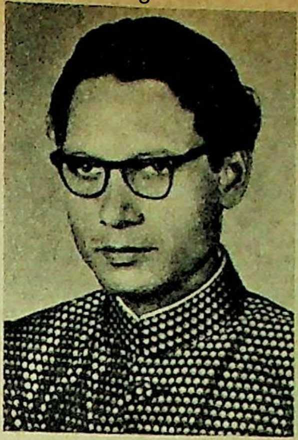

काज़ी अब्दुल सत्तार: उर्दू के कहानीकार

अंगनू चमार का बाप, अपनी गाय ढूंढ़ता हुआ उस शीशम के पेड़ पर चढ़ गया, जो कब्रिस्तान से कोई एक फर्लांग भर दूर खड़ा है. कब्रिस्तान के दरवाजे पर नजर पड़ी, तो क्या देखता है कि गोरे भूत एक मोटे-ताजे आदमी को भून रहे हैं और चुड़ैलें नाच रही हैं. बस, वह तड़ से गिर पड़ा और अपनी जान ले कर भागा. गिरता-पड़ता घर पहुंचा और उसने बिस्तर पकड़ लिया . और ठंडा हो गया.

पर घिस्सू के दिल में मुन्नी की उस हमशक्ल भैंस की मुहब्बत उसी तरह जवान थी, बल्कि उसे रोज देखने से और चमक गयी थी. सींग बांधने और बनाने के हुनर में उस्ताद घिस्सू, जब उसके सींग देखता तो उसके कलेजे पर घूंसा लगता. वह सोचता रहता और कुढ़ता रहता. अब अंगनू चमार से मीठे शब्दों में बोलना शुरू कर दिया. फिर धीरे-धीरे जंगल से गुजरते घिस्सू की अंगनू से मुलाकात हो जाती तो वह बातें करने को रुक जाता. भैंस को ताकने लगता और उसकी गरदन थपथपाया करता. घिस्सू अब चिलम से ज्यादा महंगी बीड़ी पीने लगा था और अपनी दुलहन से चिलम के नुकसान और बीड़ी के फायदे की बातें किया करता.

★ ★

एक शाम घिस्सू अर्जुनपुर से सींग बांध कर आ रहा था. जब वह शीशम के पास सड़क पर पहुंचा तो उसने अंगनू की गुहार सुनी. अंगनू ने घिघिया कर बताया कि एक बकरी शीशम और कब्रिस्तान के बीच में चर रही है और वह कोई घंटे भर से चीख-चीख कर बुला रहा है, पर वह टस से मस नहीं होती. घिस्सू थोड़ी देर सोचता रहा, फिर वह मानकपुर के मौलवी की रटाई हुई कुरान मजीद की सूरतें पढ़ता हुआ शीशम के पेड़ की ओर बढ़ा. जंगल में धंसता कब्रिस्तान के बिल्कुल सामने से बकरी को हांक कर ले आया.

वह रात एक देवी की तरह खामोश, गंभीर और शांतिपूर्ण थी. उस रात देवी ने घिस्सू को एक मंत्रदान किया था. ऐसा मंत्र, जिसे पढ़ कर वह अपनी मुन्नी को देख सकता था. उस मुन्नी को देख सकता था, जिसके साथ उसने अपने घर की बरकत बेच दी थी. जिसके जाने के बाद उसके घर पर श्मशान का सन्नाटा छा गया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिस्सू अपने बीवी-बच्चों को सोता हुआ छोड़ कर उठा. रजाई ओढ़ी. दवा की शीशी ले कर अंधियारे कुहरे में निकल आया.

राम अवतार महतिया ने जानवरों के उस छप्पर के फरके को धीरे से खोला, जिसमें वह भैंस बंधी थी. सींग पर हाथ लगते ही वह भड़की, पर घिस्सू की परिचित खुशबू सूंघ कर और गरदन पर प्यार भरे हाथों की थपकी सुन कर वह घिस्सू की दुलहन की तरह चुपचाप पड़ी रही. वह सींगों पर पानी ऐसी दवा पोत कर साये की तरह बाहर निकल आया.

दूसरे दिन दोपहर में अंगनू अपनी गोढ़ी समेटे कुएं पर बैठा चने चबा रहा था. जगत पर पीतल की लुटिया भरी रखी थी. घिस्सू को सड़क से गुजरता हुआ देख कर अंगनू ने गुहार दी—आओ, पानी-वानी पी लियो.

घिस्सू ने एक गठरी खोल कर गुड़ का चहार निकाला और एक टुकड़ा तोड़ कर अंगनू के अंगोछे पर रख दिया. पास खड़ी भैंस ने गुड़ की सूरत देखी तो डकरा कर और निकट आ गयी. घिस्सू ने थोड़ा-सा गुड़ उसके मुंह में रख दिया. अब तो वह घिस्सू के लस गयी. अंगनू ने डांटा भी पर वह न हिली. आखिर घिस्सू ने डंडा उठाया और धमकाता हुआ अन्य जानवरों की विरोधी दिशा में झाड़ियों की आड़ में छोड़ आया. फिर अंगनू के पास बैठ मीठी-मीठी बातें करने लगा.

झाड़ियों में घिस्सू का यार शेरअली खड़ा था. उसने लपक कर भड़कती भैंस के मुंह में भंग मिला गुड़ रख दिया और घंटियों वाली हमेल उतार कर वहीं जमीन में दबा दी. फिर भैंस को ललचाता हुआ थोड़ी-थोड़ी देर के बाद गुड़ खिलाता हुआ उसी शीशम की ओर चला, जो गोरों के कब्रिस्तान का सामना किये खड़ा था.

घिस्सू समय का हिसाब लगा कर उठा. थोड़ी देर सरजनपुर जाने वाली सड़क पर चला. फिर चक्कर काट कर, आंधी की तरह चलता हुआ शीशम के नीचे जा खड़ा हुआ और शेरअली के साथ भैंस को हांकता हुआ गोरों के कब्रिस्तान में घुस गया. उस कब्र के तावीज से बांध दिया जिसके तीन ओर जालीदार दीवारें खड़ी थीं और उन पर ढलवान काली छत पड़ी थी.

भंग मिले हुए गुड़ की इतनी बड़ी मात्रा भैंस के पेट में पहुंच चुकी थी कि उसने जाते ही जाते गरदन डाल दी. उस सरदी में भी दो जोड़ पसीने में लतपत हाथ सूखी लकड़ियां जमा करते रहे. घिस्सू ने आग जला कर पीतल की लुटिया में लकड़ी की तरह जमी हुई दवा को पिघलाया और सींगों पर लेप दिया.

शेरअली पर तो न जाने क्या बीती, पर शाम होते-होते जब घिस्सू घर पहुंचा तो कोठरी में घुसते ही पलंग पर ढह पड़ा. दुलहिन को पलंग के पास ही अलाव जलाने का हुकम दे कर घर में जो कुछ मिला सब कुछ ओढ़ लिया. अलाव की लपटों में हाथ डाल दिये, पर सर्दी थी कि नस-नस में जम गयी थी और दिल धड़क रहा था. वह चूल्हे पर चढ़े हुए करछे की तरह फुंक रहा था. उसकी दुलहन सारी रात सिरहाने बैठी रही.

★ ★

अंगनू के मुंह से भैंस खोने की खबर सुनते ही राम अवतार बारूद की चरखी की तरह भड़क उठा. चारों लड़कों को सौ-पचास आदमी दे कर चारों खूंटों पर रवाना किया और स्वयं जल्दी से तैयार हो कर थाने पहुंचा. थानेदार की जेब गर्म कर के बड़ी धूम-धाम से तफतीश शुरू करा दी.

सजनपुर मानकपुर के जमीनदार लाला बाज बहादुर का गांव था. इधर लाला मरे, उधर जमींदारी फैल गयी. राम अवतार ने लाला की सारी सिकमी जमीन जो उसकी जोत में थी, हथिया ली और मसरख में चीनी की मिल के लिए कांटा लगते ही गन्ने की खेती शुरू करा दी. चार ही छह बरसों में नोटों का छप्पर छा लिया.

अब नाटे कद के झुके हुए राम अवतार लौध ने जमींदारों के चलन सीख लिये. टूटे-फूटे कच्चे मकान को फैला कर एक पक्का मकान खड़ा कर लिया और मैला-कुचैला फाटक लगा कर महतिया बन बैठे. घर की जवान औरतें पाउडर-सुर्खी लगा कर साड़ियां बांधने लगीं और पान खाने लगीं. मर्द कुर्ते और बूट पहनने लगे और साइकिलों और अद्धों पर सफर करने लगे.

लड़कों की तरह महतिया ने भी सबसे पहले घिस्सू पर ही शक किया पर अंगनू ने ऐसा बयान दिया कि थानेदार तक का दिल घिस्सू की ओर से साफ हो गया. फिर भी दोपहर ढलते-ढलते राम अवतार घिस्सू को देखने के बहाने उसे पढ़ने को गया. पर उसका बुखार देख कर ठंडा हो गया और झूठ-मूठ की लल्लो-चप्पो करके वापस चला आया.

भैंस की चोरी के साथ-साथ यह खबर भी उड़ गयी कि अंगनू की बकरी हांकने घिस्सू कब्रिस्तान के सामने चला गया था, अब गोरे छापे मार बैठे हैं.

अंधेरा बढ़ते ही शेरअली गले में काला धागा बांधे नमक-पारों की सलाई वाला रूई का काला शलूका पहने कंधे पर लठ रखे झूमता हुआ आया. दुलहन कोठरी से हट गयी.

घिस्सू और शेरअली देर तक बातें करते रहे. सुबह तक पुलिस कोई दर्जन भर आदमियों का बयान ले चुकी थी. अंगनू निगरानी में था. घिस्सू खूब ओढ़-लपेट कर निकला और शेरअली की साइकिल के कैरियर पर बैठ गंगापुर के 'नाऊत' माताप्रसाद से प्रेत झड़वाने चला गया.

साइकिल गोरों के कब्रिस्तान की ओर घूम गयी. दोनों कब्रिस्तान में घुस गये. शेरअली ने ठर्रे की बोतल बांस की नाल में उंड़ेल दी, फिर नाल भैंस के मुंह में खाली कर दी. घिस्सू आग जला कर हाथ-पैर सेंकने लगा. जब भैंस पर खूब घनघोर नशा चढ़ गया, तब घिस्सू सींग बनाने लगा.

शेरअली ने लाख समझाया, पर घिस्सू टस-से-मस न हुआ—यह हराम का पैसा ऐसा छूत होता है कि हलाल के पैसे को भी कोढ़ लग जाता है. सीग बन गये. शेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ गयी. हजार की थी, तो बारह सौ की हो गयी. बेचेंगी तो बस महतिया केद्वारे, किसी को इसे बेंचेंगे नहीं.

शेरअली मुंह लटकाये बैठा रहा और चिलम घसीटता रहा. घिस्सू ने राम अवतार महतिया के द्वारे भैंस पहुंचाने की तरकीब सोच ली. बोला--साइकिल उठाओ.

* *

घिस्सू को शेरअली की साइकिल पर जाता हुआ देख कर कुएं पर खड़ा गयादीन चौंक पड़ा. उसे शक हो गया. उसने पानी पीते बैलों को एक नौकर के हवाले किया और चारा काटने वाली मशीन से लगी छुटकऊ की वह साइकिल घसीट ली. वह कच्ची सड़क पर आगे की दो आदमियों से लदी साइकिल के पहियों के गहरे निशानों पर आंखें गड़ाये चलता रहा.

शीशम के पेड़ के नीचे करौंदे की झाड़ियों में साइकिल दबा कर दोनों कब्रिस्तान की ओर चले. शाम छाने लगी थी. सलाखों के फाटक को धीरे-से खोल कर शेरअली ने अपनी लाठी को मजबूती से पकड़ लिया. भैंस के पास आ कर खड़ा हो गया. घिस्सू ने उसके बल खाये चमकीले सींगों पर हाथ फेरा. फिर उसने कब्र के तावीज से उसकी जंजीर खोली और फाटक के सामने खुले हुए आंगन में ला कर खड़ा हो गया. शेरअली ने भैंस की सानी-पानी का सामान समेट कर लाद लिया था.

--चलोर वाले पेड़ों के पास तक पहुंचाए देंई का? वहां से अपने चली जहे. रस्ता जाना-माला है.

घिस्सू भैंस की जंजीर पकड़े हुए कांटेदार झाड़ियों से बचता-बचता शीशम के पेड़ के पास आ गया. शेरअली ने साइकिल निकाल ली. घिस्सू ने भैंस की जंजीर उसकी मोटी-चिकनी गरदन में लपेट दी.

शेरअली साइकिल खड़वड़ाता हुआ सड़क पर चढ़ गया. घिस्सू ने चौंक कर भैंस को देखा. भैंस के खूबसूरत सींगों को देखा और उसकी गरदन में लिपटी हुई जंजीर में हाथ डाल कर सड़क पर चढ़ा लाया. घिस्सू का दाहिना हाथ भैंस की जंजीर में लिपटा हुआ था. और दूसरे हाथ में बीड़ी थी.

अचानक एक लाल साफे ने उसे पीछे से दबोच लिया. दूसरा लाल साफा शेरअली से लिपट गया. गयादीन ने शेरअली के सीने पर बल्लम रख दिया. सिपाही ने झटपट उसे बांध कर घिस्सू के रस्सी डाल दी जो सिपाही के बांहों में भौंचक्का खड़ा था.

गयादीन बल्लम फटकारता हुआ गरज रहा था--देखो दीवानजी, देखो. . . भैंस के सींग देखो. . .भला कोई कह सकता है या भैंस राम अवतार की है? या रौनापुर के मेले से जहांगीराबाद चली जाती. . . तुम जिंदगी भर ढूढ़वा करतियो का या मिलती?

घिस्सू दीवानजी की ठोकर पर चौंका और गालियों में लिपटे हुए हुकम के अनुसार आगे चलती हुई भैंस के पीछे-पीछे चलने लगा. □□□

(अनुवाद : सुरजीत)

विद्यार्थियों के दहकते अनुभव

● अ. नि. गोडवले

मैं बुलढाना जिले के विटाली गांव का रहने-वाला हूं जो मलकापुर के पास है. गांव में चौथी तक पढ़ाई होती थी. १९६४ में मैंने वडणेर (मोलाजी) में प्रवेश लिया. अपने गांव के हम सत्रह बच्चे वहां पढ़ने जाते थे. घर में मुझ पर अच्छे संस्कार डाले गये थे इसलिए मैं अन्य स्पृश्य विद्यार्थियों में सहजता से हिलमिल लेता था. गांव के बच्चे, गुरुजन तथा अन्य लोग मुझसे छिटकते नहीं थे.

पंद्रह अगस्त का दिन आने वाला था. कपड़े टिपटाप होने जरूरी थे. गांव के रास्ते में एक नदी थी. वहां एक धोबी कपड़े धोया करता था. हम सभी विद्यार्थियों ने वहीं नदी पर अपनी चड्ढी और कमीज उतार कर उस धोबी को धोने के लिए दे दीं. सबके साथ उसने मेरे कपड़े भी धोने के लिए स्वीकार कर लिये. परंतु हुआ क्या कि हमारे साथ गोप्या नाम का एक लड़का भी रहता था जो बड़ा आलसी था और गंदा भी रहता था. धोबी की नजर उस पर पड़ी तो उसे कुछ ध्यान आया और वह पूछ बैठा--तुम लोगों में कोई बौद्ध तो नहीं है न? बाबासाहेब की जयजयकार करने के कारण लोग महारों को बौद्ध ही कहने लगे थे. धोबी कपड़े पानी में भिगो चुका था. जिस गोप्या को देख कर धोबी ने प्रश्न किया था वह मराठा था पर पूछताछ में मेरी जाति उस दिन प्रकाश में आ गयी. धोबी ने मुझे अपने कपड़े निकाल लेने का आदेश दिया. मन मसोस कर मैंने अपने कपड़े निकाल लिये. मुझ पर गालियों की बौछार पड़ती रही पर प्रश्न यह था कि भीगे हुए कपड़े कहां रखूं. मैंने किताबों के थैले में ही भीगे कपड़े रख लिये. और वैसे ही पाठशाला पहुंच गया. पीरियड खतम होने पर मैं नदी पर गया. जहां धोबी कपड़े धोता था वहीं एक पटिये पर मैंने अपने कपड़े साफ किये और पेन की शाही से उन पर नील चढ़ाया घर पहुंचते-पहुंचते उन्हें हाथों से उड़ाते हुए सुखा लिया और गरम लोटे से उन पर इस्तरी कर ली. परंतु पंद्रह अगस्त के लिए मेरे पिताजी नयी चड्डी और नया कुरता खरीद लाये थे, उन्हें पहन कर ही मैंने पंद्रह अगस्त मनायी. □□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई सिग्नल केवल दावे ही नहीं करती

पेश है सबूत:

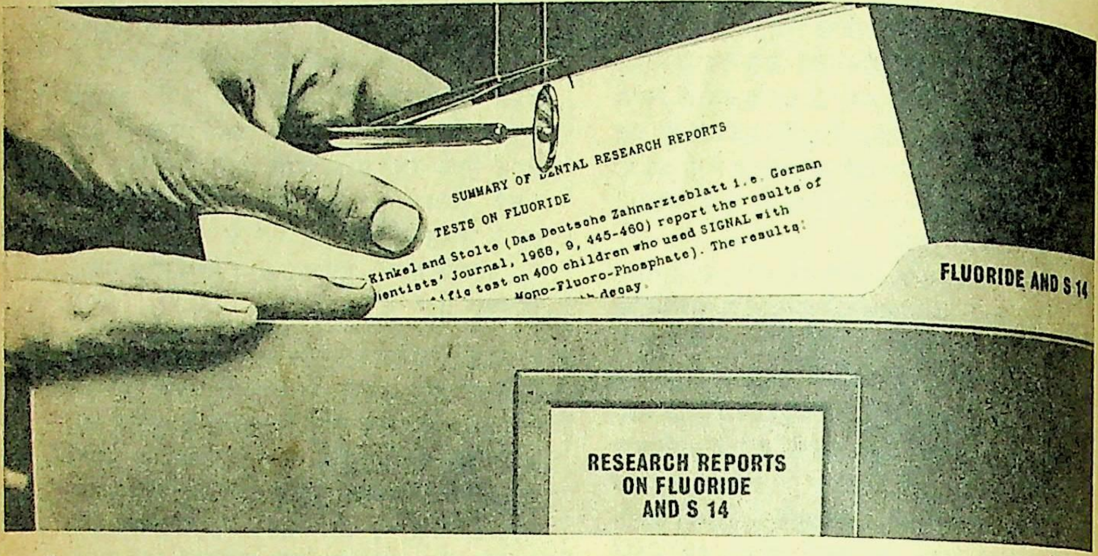

केवल नई सिग्नल (फ़्लोराइडयुक्त) वास्तव में दांतों की सड़न और सांस की बदबू को रोक देती है.

दंत-सफ़ाई के अनोखे आधार में

(पेटेन्ट नं. ११४७१८ के अंतर्गत नई सिग्नल एकमात्र टूथपेस्ट है जो फ़्लोराइड को दंत-सफ़ाई के इस अनोखे आधार में समाविष्ट कर सकती है)

अपने दंतचिकित्सक से पूछिए: वह नई सिग्नल के सिद्ध किए हुए फ़ायदों की पुष्टि करेगा।

फ़्लोराइड पर हुए परीक्षण: वैज्ञानिक किंकेल और स्टोल्ट की रिपोर्ट के अनुसार फ़्लोराइडयुक्त सिग्नल प्रयोग करने वाले ४०० बच्चों के दांतों की सड़न में ३३% तक की कमी हुई है।

S-14 पर हुए परीक्षण: (5 amino-1, 3-di (2-ethylhexyl) hexahydro-5-methyl pyrimidine). भारतीय टूथपेस्ट में पहली बार इस्तेमाल किए गए S-14 ने दिखलाया कि इस के प्रयोग के १५ मिनट बाद ही मुंह की बदबू ९५% कम हो गई। (ये प्रयोग हॉवर्ड ई. लिंड, डायरेक्टर एस. आई. ए. एस. लैबोरेटरीज़, मैसेच्युसेट्स द्वारा किए गए)

कुशल दंत-सफ़ाई की नई दिशा: नई सिग्नल में फ़्लोराइड और S-14 दंत-सफ़ाई के एक अनोखे आधार में कुछ इस तरह मिले हैं कि इस से दांत ऐसे साफ़ जैसे डाक्टर ने किए हों। ऐसा सम्पूर्ण मिश्रण किसी दूसरी टूथपेस्ट में नहीं मिल सकता।

मुफ़्त! दांतों की देखभाल के बारे में सचित्र पुस्तिका मुफ़्त पाने के लिए इस पते पर लिखिए: हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, क्लीनिकल डिपार्टमेंट, पोस्ट बाक्स नं. ४०९, बम्बई-४००-००१ (कृपया डाकख़र्च के लिए २५ पैसे की टिकटें भी भेजिए)

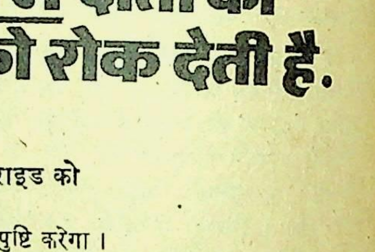

सिग्नल — हिन्दुस्तान लीवर की गारंटी प्राप्त टूथपेस्ट

किसी भी दूसरी टूथपेस्ट में फ़्लोराइड और S-14 एकसाथ मौजूद नहीं.

लिंटास-SGF.64C-140 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चनवा का ओढ़ार

□ नरेंद्र नीरव

मिर्जापुर जिले का दक्षिणांचल भारत की मध्ययुगीन सभ्यता के अवशेषों से भरा पड़ा है. कैमूर की पर्वतशृंखला तथा शोणनद की लाल बालुकाकणों वाली यह बीहड़ वनस्थली बाणभट्ट की रचनाभूमि थी और जातीय संघर्षों से उकताये शैवों-बौद्धों की एकांत साधना-स्थली भी थी. इसे द्वितीय काशी' या 'विजय काशी' (आजकल विजयगढ़) नाम से भी लोक-प्रसिद्धि मिली है. शोण नद (सोन नदी) के तटवर्ती इलाकों में निर्मित बांधों तथा कारखानों का यहां की आदिम आबादी पर एक भी लाभदायक प्रभाव नहीं पड़ा है. औद्योगीकरण के साथ गुजरने वाली सभ्यता के संक्रमण की क्रूर प्रक्रिया में वन्य जातियों की निजी व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी. हिंसक आधुनिकता में लिप्त जंगल के ठेकेदारों और बाहर से आये हुए नौकरीपेशा लोगों ने यहां की भोली जातियों को बेघरबार कर दिया. लगभग एक दशक पूर्व रिहंद बांध (गोविंदवल्लभ पंत सागर बांध) के निर्माण के समय एक लाख आदिवासी उजाड़ दिये गये. रिहंद के जलाशय में डूबी हुई वन्य जातियों की खुशियां अब पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों में मानर और डफ (वाद्ययंत्र) की ताल के साथ भीख मांगती हुई दिखलाई पड़ती हैं. अल्मुनियम के खाली कटोरे में नगरीय उदारता के सिक्के खनकते तो हैं, मगर 'करमा' और 'नटुआ' (नृत्यों) से साक्षात्कार की संवेदना नहीं बटुर पाती. दुसाध, डोमर, बंसफोर, बाल्मीकि, धरकार, चेरो, कंजड़, कलाबाज, खरवार, गोंड, कोल, मुसहर, मझवार, वनमानुष, बसोर आदि अनुसूचित जातियों के ये बदनसीब बनजारे वाराणसी में बड़ी संख्या में प्रवास करते हैं.

स्वर्गीय डा. शिवप्रसाद गुप्त का पैतृक निवास रामनगर किले के सामने गंगा के पश्चिमी तट पर सेवा-उपवन' नाम से आज भी विद्यमान है. बंसफोर जाति के आदिवासियों की एक टोली 'सेवा-उपवन के बगीचे में शरण लेती है. बरसात के दिनों में ये सलखन (राबर्टसगंज के समीप के जंगली गांव) लौट जाते हैं. गरमी और जाड़े में पत्ते बेच कर, बांस की डलिया, मोनिया, पंखा, टोकरी बना कर, लकड़ी काट कर या सामान ढो कर शहर में ही गुजारा करते हैं. छोटे बच्चे और स्त्रियां भीख मांगते हैं. ज्यादातर युवक डफ बजा कर 'लोरिकायन' (लोरिका की कथा) सुनाते हैं. सेवा उपवन की चारदीवारी मेरे मकान से सटी हुई है और रात में चूल्हे पर कन्ना-खुदी पकाती गाना गाती और मारपीट करती यह टोली मेरे एकमात्र सक्रिय पड़ोस का रूप ग्रहण कर लेती है.

अंधेरी रात थी और काले-कलूटे आदिवासियों के चेहरे पहचान में नहीं आ रहे थे. पुरुष और स्त्रियों की दो टोलियां हाथ में लुआठी तान कर खड़ी थीं. गालियां दी जा रही थीं. किशोर और बच्चों की चीख-पुकार के बीच उठती खून-खच्चर की संभावना महसूस की जा सकती थी. ऐसा लग रहा था कि बंसफोरों पर लोरिका का प्रेत सवार हो गया है.

लुआठी को पैंतरे से भांजती दोनों टोलियां किसी प्रश्न पर परस्पर जूझने के लिए तैयार थीं. मैं शीघ्रता-पूर्वक उनके समीप डरते-सहमते पहुंचा. गंगई (एक परिचित बंसफोर) को मैंने नाम ले कर पुकारा. उसने लुआठी फेंक दी और बोला— बोलबि सरकार!

—यह सब क्या हो रहा है? मैंने डांटते हुए पूछा.

उत्तर में बीसों लुआठियां मेरे ईर्द-गिर्द आ गयीं. सब एक-दूसरे को बेलौस गालियां दे रहे थे. मैंने टोकते हुए कहा— कुछ नहीं, मैं पुलिस को बुलाने जा रहा हूं. तुम लोग यहां से जाओ.

—ई डेरा मत कबार साहेब! हाथि बोरिक विनती बाटे. गंगई मेरे पैर पर गिर पड़ा.

लुआठियां चूल्हों में पुनः घुसेड़ दी गयीं और मुझे लगा कि क्षमा-याचना के अनेक स्वरों से एक ही ध्वनि निकल रही है: हमें विस्थापित मत करिए. हममें कोई झगड़ा नहीं है.

★ ★

रात में लगभग बारह बजे मैंने 'चनवा का ओढ़ार' (लोरिक और चनवा का विवाह) की ये पंक्तियां सुनीं, जिन्हें गंगई गा रहा था.

खापीले सउसे गउरवा के
लोगवा सुती जाय.
जब उहां हो गइल
रतिया आ के निसुआर,
घसेलागल राजा
डेवढ़ी पर चौकीदार.

वे जानते हैं कि चनवा से विवाह करने के बाद लोरिका हरदीनगर चला जायेगा. उसकी पेशियों में ताकत है, वह सबको हरा सकता है, लेकिन क्या वह अकाल पर विजय प्राप्त कर लेगा? मिर्जापुर में तीसरे साल अकाल पड़ा है और यहां से विस्थापित होने का मतलब है मौत. नहीं, ऐसा नहीं होगा. हमें मत उजाड़ो. अपनी बेटी की इज्जत बचाने में हम असमर्थ हैं, क्योंकि दुष्काल अपराजेय है. फिर भी 'चनवा का ओढ़ार' सबको सुनाते रहेंगे. वे जानते हैं कि लोरिका काली के मणिकर्णिका घाट पर पत्थर बन कर जम गया है. स्वर्ग में बैठे इंद्र ने शाप दे दिया था. और चनवा ने दुर्गा बन कर उसकी इहलीला को खत्म कर दिया. □□□

सी. के. ६४।७६, हीरापुरा, वाराणसी—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहानी एक ब्याह की

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□ अमृता प्रीतम

कुछ अरसा हुआ गुरु गोविंदसिंह कॉलेज, माहलपुर, पंजाब, में आदम-बू, आदम-बू तथा कलजुग! घोर कलजुग!! की आवाजें उठ खड़ी हुई थीं. धमाका इस बात से हुआ था कि जाट घराने की एक लड़की दलविंदर कौर तथा एक हरिजन परिवार के नौजवान लेक्चरर अजीतसिंह ने अपनी मर्जी से विवाह कर लिया था. कॉलेज के प्रिंसिपल, प्रबंध-समिति, अध्यक्ष तथा अन्य अनेक लोगों को यह विवाह कतई अच्छा नहीं लगा और नवदंपती को कॉलेज की नौकरी से बरखास्त कर दिया गया. पंजाब यूनिवर्सिटी की जांच समिति ने प्रबंध-समिति द्वारा उठाये गये कदम को अनुचित करार दिया और अपना निर्णय दिया कि दोनों लेक्चररों को अविलंब उनकी नौकरी पर फिर से बहाल किया जाये. प्रख्यात पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम ने दलविंदर तथा अजीत से एक भेंटवार्ता की, जिसे हम यहां ज्यों-का-त्यों प्रकाशित कर रहे हैं.

अमृता—दलविंदर, जब कोई लड़की अपना साथी चुनती है,उसके सामने बिल्कुल एकांत में एक घर की कल्पना होती है. वह कुछ देर के लिए तो किसी का दखल नहीं सोच सकती. पर तुम्हारे और अजीत के विवाह की शायद पहली रात भी ऐसी नहीं थी, जिसमें समाज का भयानक दखल नहीं था. . .

दलविंदर—पहली रात भी और उसके बाद कोई दस रातें. अगर सड़क पर से किसी स्कूटर-मोटर की आवाज सुनाई दे जाती, तो लगता, हमें कत्ल करने वाले आ गये हैं. यों हमने एक समझदारी की थी कि हम रात को रहते कहीं थे, और पता किसी अन्य जगह का बता देते थे. दिन में भी अगर बाजार में से कोई चीज खरीदने जाना होता, तो हम इकट्ठे जाते थे. सोचते थे, अगर कत्ल भी हों तो इकट्ठे हों. . .

अमृता—दलविंदर, तुमने अजीत के साथ विवाह करने की बात कब से सोची हुई थी?

दलविंदर—कोई दो साल हो गये हैं. पर घर में इस प्रकार था कि मां-बाप की ओर से तो मनाही थी, पर मेरे भाई मेरे साथ थे. इसलिए वे इतना तो मान गये थे कि हम यहां विवाह न करें, दोनों कनाडा चले जायें, और वहीं जा कर विवाह कर लें. बाद में मैंने और जोर डाला तो यहीं अपने हाथों से विवाह करने के लिए मान गये. पर हम दोनों माहलपुर के कॉलेज में नौकरी करते थे. कॉलेज के प्रिंसिपल को फिक्र हो गयी कि मैं जाटों की लड़की कहीं चमारों के अजीत के साथ सचमुच ही विवाह न कर लूं. सो उसने कॉलेज मैनेजमेंट के चौधरियों को बहकाया. उनमें से आधे तो संत-महंत हैं, वे उसी समय हमारे घर की ओर चल पड़े. रोज ही चक्कर लगायें. यहां तक कि मेरे पिता जी बीमार हो कर अस्पताल गये तो वे लोग अस्पताल में भी जा पहुंचे. कभी मुझे पकड़ कर बैठ जायें कि अरी लड़की, तू तो हमारी दाढ़ियों में राख डालने लगी है. मैंने उन्हें ऐसा कहा कि आप तो महाराज संत हैं, आपको क्या अंतर पड़ता है? उनका जवाब था—हम समदृष्टि हैं, समवर्ती नहीं.

अमृता—हमारे देश में कितना कुछ गलत है. यही कारण उसकी जड़ में है — जिस दृष्टि से देखना, उस दृष्टि से व्यवहार नहीं करना. तुम्हारे गांव का नाम क्या है, दलविंदर?

दलविंदर—पुर हीरां.

इमरोज—फिर उन साधुओं-महंतों के गांव का नाम कैदोपुर होगा— पुर कैदों.

दलविंदर—तभी मुझे वह संत-महंत जाते हुए कह गये—हमारी तो जिंदगी-मौत का सवाल है. अगर तुमने इस तरह किया, अरी लड़की, तो तुम दोनों को हम इलाके में जिंदा नहीं रहने देंगे. सो उन लोगों के साथ मिल कर मेरे डैडी ने भी इनकार कर दिया. फिर बड़ा भाई भी उन लोगों के साथ मिल गया. छोटा कहीं दक्षिण में नौकरी पर है. सो मैं अकेली फैसला करने के लिए रह गयी. दिल बड़ा उदास था. दो दिन रोटी न खायी गयी. तीसरे दिन सुबह कॉलेज के लिए चली, उस दिन अक्तूबर की सोलह तारीख थी, पर रोटी खाने लगी तो न खायी गयी. मां तो प्यार से मनाती रही, पर डैडी गुस्से होने लगे. हाथ से किताबें छीन लीं. कहने लगे—किसी कॉलेज में नहीं जाना. वहां जा कर तुम्हें चमारों के लड़के के साथ ही फिरना है न. . . उन्होंने जोर दिया कि मैं कॉलेज की नौकरी से इस्तीफा दे दूं. मैंने विनम्रता दिखायी. इस्तीफा देना भी मान गयी और कहा—अच्छा आज का दिन जाने दें. फिर, जी, उन्होंने मुझे कॉलेज जाने की इजाजत दे तो दी, पर भाई ने मेरा बटुआ छीन कर देखा – उसमें चार सौ रुपये थे. उसने तीन सौ नब्बे रुपये निकाल लिये. दस रुपये रहने दिये.और मुझे स्वयं जा कर बस में सवार करा आया. फिर जी, मैं कॉलेज पहुंच गयी. एक पीरियड के बाद मैंने देखा कि मेरे बड़े भाई साहब प्रिंसिपल के दफ्तर में से निकल रहे थे. मुझे देख कर कहने लगे—मैं तो प्रिंसिपल की मां के स्वर्गवास पर अफसोस करने आया था. पर मैंने देखा कि वह अजीत को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अडवानी आर्लीकान के सौजन्य से

अपने स्कूटर के पीछे बिठा कर कहीं ले गये. . .

अजीत—मुझे वह बस के अड्डे वाली चाय की दुकान पर ले गये. कहने लगे—पिछली बातें भूल जा कि भई हम विवाह के लिए मान गये थे. यों हम दोस्त-मित्र रहेंगे. साथ ही धमकी भी दी कि उसके ससुर अमृतसर के हैं. वह मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे.

अमृता—सो दोस्ती और धमकी एक ही सांस में दे दी?

अजीत—मैं बात तो समझ ही गया था. उनको किसी तरह वहां से चलता करना था. सो कहा—अच्छा. फिर लड़की को कोई भली-बुरी बात न कहें. साथ ही एक बात यह करना कि जहां भी उसका विवाह करें, धूम-धाम से करें. वह यह सुन कर खुश हो गये. मैंने कहा—मैं इस तरह नहीं मानूंगा. अपने डैडी के सामने ये बातें कहें. उस दिन मंगलवार था. वह कहने लगे, अच्छा. फिर शुक्रवार को गांव आ जायें. डैडी के सामने ये दोनों बातें कह दूंगा.

दर्लविंदर—सो अजीत जब भाई साहब के साथ चाय पी कर आया, मैंने भी उसको बताया कि सुबह मेरे साथ क्या-क्या बीती. और मैंने कहा—अगर मैं आज घर वापस चली गयी तो वे मुझे फिर घर से बाहर नहीं निकलने देंगे. सो आज का दिन ही है. देख लो. बस फिर क्या था! इसे भी पता था कि एक ओर मैं हूं, दूसरी ओर बाकी दुनिया. और मुझे भी मालूम था कि एक ओर यह अजीत है, और दूसरी ओर सारी दुनिया. सो जो कपड़े पहने हुए थे, उन्हीं कपड़ों में बस-स्टैंड को चल पड़े. . . .

अमृता—किसी को जाते समय कुछ बताया ?

दर्लविंदर—अजीत ने अपने एक दोस्त को बताया, और मैंने एक सहेली को. मेरी सहेली की आंखें भर आयीं. कहने लगी– सोचा तो था कि तुझे किसी और तरह से विदा करूंगी. पर इस समय तो तुझे ठूठी-कलीरा शगुन भी नहीं डाल सकती.

अजीत—मेरा दोस्त मुझे बस तक छोड़ने आया. एक बार बस में सवार होते हुए बांह खींच कर कहने लगा—अभी भी सोच ले. न जा. मैंने जो सोचना था, वह तो सोच कर चला था. सो हम दोनों बस में सवार हो गये.

दर्लविंदर–चंडीगढ़ पहुंच कर जिस दोस्त के घर गये, उसने पहुंचते ही कह दिया कि वहां हमारा विवाह नहीं हो सकता. सो हम या जालंधर चले जायें या दिल्ली.

अजीत—फिर हम एक अन्य दोस्त के पास गये. उसने हमारा स्वागत किया, और हम मिल-जुल कर गुरुद्वारा ढूंढने लगे.

दर्लविंदर—जिस गुरुद्वारे में जायें, वहीं वे कहें—हमने तो जी, विवाह करने बंद कर दिये हैं. फिर १५सैक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म एक गुरुद्वारा था, उसका ग्रंथी मान गया. और इतवार, २१ अक्तूबर को हमारा विवाह हो गया.

अजीत—अमितोज ने इसे चूड़ा डाला. मैंने इसके सुहाग-गीत गाये. गुरुद्वारे जाते समय रास्ते भर गाता गया —'बीबी पतलिए, नी पतंग जेहिए, आपणे बाबल कोलों कुझ मंग लइए. . . बाबल वर दिता, सोहणा घर दिता, हरियां बागां विचों फुल्ल तोड़ दिता. . .'

अमृता—और दर्लविंदर, तुमने इसकी घोड़ी नहीं गायी थी?

दर्लविंदर—मुझे तो उस समय शिवकुमार की नज्म याद आ रही थी—'मैं ओ चंदरी जिसदी डोली लुट्ट लई आप कहारां. बन्नण दी थां बाबल जिसदे आप कलीरे लाहे . . .' फिर उसके बाद जी, एक दिन अजीत का छोटा भाई हमें ढूंढता हुआ पहुंच गया. उसने हमें बताया कि पुलिस ने हमें जमानत भेजी है कि हम गांव में आ जायें, वे हमारी हिफाजत करेंगे.

इमरोज—साधु-संतों की अपेक्षा तो पुलिस वाले ही अच्छे निकले!

दर्लविंदर—हम फिर गांव चले गये. . .

अजीत—रास्ते में जो देखता, 'आ गये जी, आ गये' कहता हुआ साइकिल दौड़ा लेता कि जा कर गांव में खबर कर दे. जब गांव पहुंचे, सारा गांव धूम-धाम से हमें देखने आया. स्त्रियां कहतीं– अरे! हमारे तो गले से रोटी नहीं उतरती थी. लोग कहते थे—दोनों को मार दिया गया है. . .कोई कहे– भई जहाज पर चढ़ गये. . .

दर्लविंदर—कई यह भी कहते कि मैं अपने घर से अस्सी हजार ले कर भाग गयी हूं. खैर उन बातों का तो कोई महत्व नहीं. . . पर असल बात तो खतरे की थी. गांव में घुसते ही पहले हम पुलिस-स्टेशन गये. अपने विवाह की तस्वीरें दिखायीं, और उन्होंने हमें यकीन दिलाया कि वे हमारी हिफाजत करेंगे.

अजीत—फिर हम कॉलेज गये, पर जाते ही नौकरी से जवाब मिल गया.

दर्लविंदर—हम यह जवाब ले कर फिर ... गढ़ गये. यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर से अपील ... उन्होंने जब कॉलेज से पूछ-ताछ की तो कॉलेज वालों ... पता लगा कि वह तो गलत काम कर बैठे हैं. हम तो ... स्थायी नौकरी पर थे. वे इस तरह नहीं कर सकते ... सो उन्होंने अपने फैसले को सुधार कर हमें सस्पेंड ... दिया. चार्जशीट भेजी. हम पर लगाने के लिए आरो... गढ़े और तीन महीने बाद दुबारा डिसमिस कर दि...

अमृता—यह बात पंजाब एसेंबली में भी उठी ...

दर्लविंदर—एसेंबली में भी उठी थी और कॉ... के विद्यार्थियों ने प्रदर्शन भी किया था. प्रदर्शन के ड... कॉलेज एक हफ्ते के लिए बंद कर दिया गया था, ... अखबारों में अभी तक बात चल रही है. ज्ञानी जैलसिंह ने हमें सरकारी नौकरी ऑफर की थी, पर हमारी ... तो उसूलों से है. हमें कॉलेज में से क्यों निकाला ... सस्पेनशन के दौरान हमने पंजाब यूनिवर्सिटी ... बार-बार अपीलें की थीं, पर हमारी सुनवाई नहीं ... दूसरे टरमीनेशन के बाद यूनिवर्सिटी ने आरबिट्रे... कमेटी बनायी है. अब देखें. . .जहां तक लोगों का ... है—पहले हमें इतनी हैरानी से देखते थे कि जैसे हम ... दुनिया के न हों. अब हमें कई स्वागत देते हैं, खुश ... कि हमने एस्टेबलिशमेंट के साथ इतनी बड़ी टक्कर ... है. कई बेचारे हैरान भी हैं. सोचते थे—हम दो ... कुछ दिनों के बाद लड़-झगड़ कर अलग हो जायें ... पर सब से मजेदार बातें गांव की औरतें करती ... कोई कहती है—ऐसी लड़की को तो पै... होते ही मार देना चाहिए था. टेलिविजन ... डी' मैलो ने जब हमारा इंटरव्यू लिया, तो बात गां... तक भी पहुंची. औरतें कहने लगी– अरी! उनका तो सिनेमा भी बन गया है. फिर जब प्रधानमंत्री ने लोकसभा में यह बात कही, बेचारी औरतों के खयालों में परिव... आ गया. कहने लगीं– अरी! अब क्या कसर रह गयी ... अब तो इंदिरा ने भी कह दिया. . . कहते हैं, लड़की ... इंदिरा के पास चली गयी. और वह कहने लगीं—तु... फिक्र न करो. मैं एक-एक को देखूंगी. अखबार वालों का अपना ही रंग है. कोई हमें प्यारा जोड़ा कहता है, कोई आधुनिक हीर-रांझा, कोई माहलपुर से निकाला हुआ जोड़ा, कोई इंटरकास्ट कपल और कोई अखबार वाला लिखता है—किस्सा दर्लविंदर-अजीत का. . .

अजीत—हम किसी कॉलेज में एक लेक्चरार ... मिलने गये. वहां कुछ अन्य लेक्चर खड़े थे. मैंने अपने दोस्त के बारे में पूछने के लिए अपना नाम बताया. खैर वह वहां नहीं था. हम लौट पड़े. कुछ देर में एक लड़का पीछे से दौड़ा हुआ आया—कपल साहब! कपल साहब! आपका नाम कपल है न? आपको वह बुलाते हैं. मैं कितनी देर सोचता रहा. फिर जान गया कि मेरे नाम से पहचान कर उन लोगों ने लड़के को कहा होगा कि यह तो वही अख... बारों वाला कपल है, जा, जा कर बुला ला. सो आजकल हम कपल साहब हैं. . . □□□

(अनुवाद : सुरजीत)

प्रणय से परिणय तक : जातिप्रथा के विरुद्ध एक संघर्ष की शुरुआत—नवदंपती अजीतसिंह और दर्लविंदर कौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलित साहित्य : उद्देश्य और वैचारिकता

● बाबूराव बागूल

देवताओं, मंदिरों, ऋषियों का यह देश! इसलिए क्या यहां सब कुछ अमर है? वर्ण अमर, जाति अमर, अस्पृश्यता अमर! दीनता, दासता, दुख और उपेक्षा भी अमर! या फिर यहां के मनुष्य हजारों वर्ष पहले के हैं? सब के सब सैकड़ों साल की आयु के? तब क्या ये यंत्र, ये तकनीक, ये कारखाने, ये रेलवे, ये वायुयान, ये प्रजातंत्र, ये समाजवाद, ये शहर, ये संघर्ष सब कुछ काल्पनिक हैं? मायाजाल हैं? सच क्या है? वर्ण-व्यवस्था, पुराण और ये देवी-देवता या यह क्रांतिरत युग?

युग के बाद युग आये. बड़े-बड़े चक्रवर्ती आये. महाकवि आये. महापंडित आये. दार्शनिक आये. विदेशियों के आक्रमण आये. उनकी सत्ता आयी. धर्म आये. संत आये. पंथ आये. फिर भी अस्पृश्यता, विषमता अमर है.

यह सब कैसे हो गया? किसी भी महाकवि, पंडित, दार्शनिक, सत्ताधारी, संत की आंखों में यह अमानुषिक व्यवस्था चुभी क्यों नहीं? किसी ने भी इस क्रूर व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह क्यों नहीं किया? बुद्धिजीवियों, संतों और सामर्थ्यवानों का यह अंधापन, यह संवेदनशून्यता दुनिया भर में खोजने पर भी नहीं मिलेगी.

इससे एक ही अर्थ निकलता है कि यह व्यवस्था बुद्धिजीवियों, संतों और राज करने वालों को मंजूर थी. यानी इस व्यवस्था को बनाने और उसे बनाये रखने में बुद्धिजीवियों और शासकों का हाथ है.

मनुष्य समाज में जब से स्वामित्व, सत्ता का उदय हुआ, तब से सत्ता और उसकी संरक्षक धर्मसत्ता (अर्थात् ब्राह्मण और शासक) अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए अनेक तत्वों, प्रथाओं, रूढ़ियों, प्रतीकों और व्यवस्थाओं का निर्माण करते रहे हैं. और जन्मजात विषमता दृढ़ होती गयी है. जो लोग अस्पृश्य (अछूत) माने गये हैं, जिन्हें शूद्र-अस्पृश्य (शूद्रातिशूद्र) कहा गया है. मनुष्य के रूप में उनके अधिकारों को नकारा गया है. उनको अवसर, साधन और शिक्षा से वंचित रखा गया है.

जो स्पृश्य हैं, उनके लिए अवसर, साधन, शिक्षा और आत्मविकास का द्वार काफी खुला रखा गया है. इसलिए स्पृश्यों में से तो कोई गरीब अपने गुण और कृत्य के बूते पर आगे बढ़ सकता है, पर अस्पृश्यों में से, शूद्रों में से, गुणी और कर्मठ व्यक्ति भी आगे नहीं बढ़ सकता, क्योंकि धर्मदंड-सत्ता ने सभी क्षेत्रों में उसका प्रवेश निषिद्ध कर रखा है. इतना ही नहीं, पूजनीय माने गये ऋषियों-देवताओं ने पाप, पूर्व-कर्म, पूर्व-जन्म की खोज कर इस क्रूर विषमता के साथ ईश्वरीय न्याय-बुद्धि को भी जोड़ दिया है. पिछले जन्म के पाप-पुण्य के फलस्वरूप सुख-दुख, दीनता-दासता, नीच-ऊंच कुल में जन्म होता है. इसे बार-बार दोहरा कर वे अन्याय-अत्याचार करने वाले शासकों-शोषकों पर परदा डाल देते हैं और सर्वोच्च कर्ता के रूप में परमेश्वर को आगे ला खड़ा करते हैं.

जब सारा दुख, दैन्य, दासता परमेश्वर के दंड-विधान का ही प्रतिफल है, तो जागृति कैसे आयेगी? क्रोध किस लिए आयेगा? शोषक कैसे दिखेगा?

इसलिए, शत्रु है कहां? अत्याचारी तो दिखता ही नहीं. उसके विरुद्ध अपनी कर्मशूरता दिखाने का क्षेत्र ही नहीं है. और न ही है अपनी बुद्धि, शारीरिक शक्ति, ज्ञान के उपयोग के लिए अवसर-अधिकार. क्या ऐसे लोग सड़-गल नहीं जायेंगे? हम कौन हैं, किस हालत में हैं, इसका बोध कैसे होगा? जब बोध ही नहीं होगा, तो वे अपने अस्तित्व के लिए जूझेंगे कैसे?

धर्मदंड-सत्ता की परिकल्पना ही ऐसी रही है कि वे जूझें नहीं, विद्रोह न करें. अस्पृश्यों पर लादे गये बंधनों और वर्ण-व्यवस्था की अमरता से इसकी पुष्टि होती है.

आर्य-अनार्य के सत्ता-संघर्ष, बौद्ध-ब्राह्मण धर्म में सत्ता, सांस्कृतिक और वैचारिक स्तर पर हुए संघर्ष के फलस्वरूप हिंदू धर्म, वर्ण-व्यवस्था, अस्पृश्यता निर्मित हुई है. जिन देवताओं को हिंदू धर्म ने पूजनीय बना कर मंदिरों में बिठाया, उनमें से अनेक युद्धों में लड़े हैं. उनकी युद्धगाथाएं पूजनीय ग्रंथों में शामिल हो गयी हैं. अनेक उत्सव-त्यौहार युद्ध में इन देवताओं की जय-पराजय से जुड़े हुए हैं. सत्ता-संघर्ष, जय-पराजय, विजेता का उदात्तीकरण और पराजित का राक्षसीकरण हिंदू समाज की संस्कृति और वाङ्मय की एक विशिष्टता है.

* *

ये युद्ध युग विशेष में समाप्त हो गये थे. अतः युद्ध की मनःस्थिति को स्थायी रूप देने की कोई आवश्यकता नहीं थी. किसी-न-किसी को युद्ध की मनःस्थिति से हुई इस समाज-रचना को बदलना चाहिए था. जीत-हार पर आधारित इन संबंधों में परिवर्तन होना चाहिए था और प्रेम, करुणा, बंधुत्व को अमर कर आगे आना चाहिए था. पर हजारों वर्षों के इतिहास में इनको अमर कर आगे आने का अवसर नहीं मिला, इनको उभरने नहीं दिया गया.

स्पष्ट ही प्रत्येक सत्ता, प्रत्येक पंडित, कवि और दार्शनिक को यह अमानुषिकता मान्य थी. वह वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार करता था. प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर अपने लेखन को 'दलित साहित्य' कहने वाले कलाकारों-बुद्धिजीवियों को यह विदारक सत्य स्पष्ट रूप से दिखा है. उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हमारा हिंदू धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसकी साहित्य-परंपरा से कोई संबंध नहीं है.

'दलित साहित्य' वह लेखन है, जो वर्ण-व्यवस्था के विरोध में और उसके विपरीत मूल्यों के लिए संघर्षरत मनुष्य से प्रतिबद्ध है. वर्ण-व्यवस्था अर्थात द्वेष, शत्रुता, मत्सर, तिरस्कार की युद्ध-भावना. इसके विपरीत मूल्य अर्थात प्रेम, बंधुत्व, समता, भ्रातृभाव पूर्ण शांति और समृद्धि. 'दलित' शब्द से अनेक प्रकार का बोध होता है, जैसे दुख-बोध, अपमान-बोध, दैन्य-दासत्व-बोध, जाति-वर्ग-बोध, विश्व-बंधुत्व-बोध और क्रांति-बोध.

एक अर्थ में आज के सामान्य मनुष्य के जीवन और शूद्र-अस्पृश्य के जीवन में दुख, दैन्य, अपमान की व्यथा-वेदना भर गयी है. इस दृष्टि से सामान्य मनुष्य, चाहे वह स्पृश्य हो या अस्पृश्य, एक ही धरातल पर आ गये हैं. किसी हद तक यह काम पूंजीवादी व्यवस्था ने किया है. परिवर्तन दोनों चाहते हैं. पर परिवर्तन करेगा कौन?

स्त्री, शूद्र-अस्पृश्यों को सिर्फ राजनीतिक परिवर्तन पर्याप्त नहीं दिखता. उदाहरण के लिए, बरतानवी राज गया और स्वराज आया—प्रजातंत्र आया. फिर भी अस्पृश्यता है. और है आर्थिक तथा मानसिक विषमता.

पुरानी सामंतवादी अर्थ-व्यवस्था कमजोर हो रही है और पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था प्रबल हो रही है. पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध को जीत कर उसने अपना सामर्थ्य दिखला दिया है. फिर भी अस्पृश्यता है, विषमता है.

बरतानवी राज के समय से भारतीय पूंजीवाद का विकास हो रहा है, तब भी अस्पृश्यता, जातिभेद, धर्म-भेद कायम हैं. अलबता, मध्ययुग में ये जितने उग्र थे, उतने नहीं, पर कायम तो हैं. इससे यही अर्थ निकलता है, अस्पृश्यता, जाति-भेद और धर्म-भेद को बनाये रखने से पूंजीवाद के विकास में कोई बाधा नहीं आती है. ऐसा नहीं है कि पूंजीवाद के विकास के साथ अस्पृश्यता का उन्मूलन हो जायेगा, विषमता समाप्त हो जायेगी. अमरीका में पूंजीवाद का विकास पराकाष्ठा तक पहुंचा, तो भी वहां काले लोगों की स्थिति दोयम है. इस दोयम स्थिति को नष्ट करने के लिए गोरों ने गोरों के विरुद्ध एक युद्ध तक लड़ा है. और आज भी कई गोरे कालों के साथ हैं. यहां गांधीजी और कुछ गांधीवादियों को अपवाद के रूप में छोड़ दें, तो दूसरों को तो इस समस्या की जानकारी भी नहीं है.

★ ★

प्रजातंत्र मनुष्य को उसका अधिकार और स्वातंत्र्य देता है. भारतीय गणराज्य ने अस्पृश्यता को अस्वीकार कर वर्ण-व्यवस्था को नकारा है और शूद्र-अस्पृश्यों को सभी मानवीय अधिकार दिये हैं. पर भारत में जैसे प्रजातंत्र है, वैसे ही वर्ण-व्यवस्था भी है. प्रजातंत्र अधर-बीच में, समाचार पत्रों और विद्वानों के मंचों पर व्यक्त होता है. परंतु वर्ण-व्यवस्था मन-ही-मन में, हर क्षण प्रकट होती है. सच कहें, तो दोनों व्यवस्थाएं एक साथ रह नहीं सकतीं, वे परस्पर विरोधी हैं, किंतु भारत में तो चमत्कार दिखता है. इतना ही नहीं, अस्पृश्यता को नकारने वाली भीमस्मृति (आंबेडकर वाद) और अस्पृश्यता का पालन करने वाली मनुस्मृति, ये दोनों ही स्मृतियां एक ही सभागृह में और एक ही घर में साथ-साथ राज करती... यानी देश एक ही समय में दो स्मृतियों, दो सत्ताओं... दो जीवन-पद्धतियों में जीता है.

स्पृश्य और अस्पृश्य दोनों ही तरह के सामान्य... को एकजुट हो कर देश को लोकशाही और भीम-स्मृति (आंबेडकरवाद) के अंतर्गत लोकशाही समाजवाद... ओर ले जाना चाहिए.

सामान्य मनुष्य की ओर से सबसे बड़ा आ... करने वाली शक्ति है शहरी कामगारों और बुद्धिजीवि... की. परंतु कामगारों और बुद्धिजीवियों ने अपना स्वाभाविक कर्तव्य निभाया नहीं.

यह सच है कि आंबेडकर-आंदोलन में भाग... वाले अस्पृश्य कामगारों ने अस्पृश्यता-निवारण के आं...लन में काफी बड़ा काम किया है. लेकिन इस संघर्ष... स्पृश्य कामगारों और बुद्धिजीवियों ने उनका साथ... दिया. संयुक्त महाराष्ट्र का आंदोलन इसका अपवाद... रहा है. परंतु वह वातावरण स्थायी नहीं बन सका. ... दल और वामपंथी तथा दक्षिणपंथी विरोधी दलों ने... वातावरण को बनाये रखने में मदद नहीं की. इस... अर्थ यह हुआ कि प्रहारक कामगार वर्ग में से स्पृश्य का...गार और बुद्धिजीवी वर्ण-व्यवस्था तथा मनुस्मृति के... विरोधी नहीं बने अर्थात वे तानाशाही के प्रबल विरो... बन कर सामने नहीं आये. दूसरे शब्दों में, यदि देश... तानाशाही आयी तो वह युगों-युगों से स्थापित और... व्यवस्था के निर्माता उच्चवर्णीय लोगों द्वारा ही आये... उच्चवर्णीय लोगों और स्पृश्य सामान्य जनता को... भी इतिहास और अतीत गौरवमय लगता है.

अतीत में जिन लोगों को कभी समाज का... स्थान नहीं मिला और जिनकी इतिहास में कोई छोटी... मोटी भूमिका तक नहीं रही, उन्हें उसके प्रति म... कैसे होगा? उसके लिए तो उनके मन में शत्रुत्व ही... उनके लिए तो जो कुछ है, वह वर्तमान है. वर्तमान... जिसमें लोकतांत्रिक समाजवाद की संभावनाएं निहित... वर्तमान, जिसने सामान्य जनता को संघर्ष के श... अस्त्र दिये हैं, जिसने निर्माण और क्रांति का विश... दिया है, समाज बदलने में समर्थ नयी उत्पादन-प्रणाली... दी है और दिया है भविष्य में भ्रातृभाव पूर्ण, संपन्न, सु... जीवन का आशावाद! वर्तमान से अपार प्रेम करने वा... और भविष्य के निर्माण के लिए प्राणपन से जूझने वा... भारत का सबसे प्रभावी वर्ग सिर्फ दलितों का है.

अतः दलित साहित्य ने उन बहिष्कृत लोगों... अपना नायक बनाया है, जिन्हें संपूर्ण वर्ण-व्यवस्था... अमंगल और अपवित्र माना, पूर्वजन्म का अपराधी... कर जिनकी निंदा की गयी, सभी स्मृतिकारों ने जिनके... शत्रुत्व बरता और जिन्हें कभी साहित्य में नायक या उ... नायक का स्थान नहीं मिला. दलित साहित्य ने इ... बहिष्कृतों को अपने विचार-रचना का केंद्रबिंदु बनाया... क्योंकि सम्यक परिवर्तन इनका स्वाभाविक कार्य है.

सम्यक परिवर्तन अर्थात दलितों को अपने साहि... में नायकत्व दे कर दलित साहित्य ने बहुत कुछ हासि... किया है. उदाहरण के लिए —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● उसने प्राचीन पारंपरिक नायक - नायिका को नकारा है. उनके साथ ही दलित साहित्य ने इस नायकत्व को गरिमा देने वाले सांस्कृतिक, नैतिक, पारंपरिक और साहित्यिक आदर्शों-संदर्भों को भी अस्वीकार कर दिया है.

● पौराणिकता को अमान्य किया है.

● वर्ण-व्यवस्था और उसके साथ जुड़ी हुई सत्ता-स्पर्धा, तुल्य को नकारा है.

● प्राचीन काल से जिन्हें खलनायक और राक्षस कहा गया है, उनके खलनायकत्व और राक्षसत्व को भी दलित साहित्य ने नकारा है. उसने उन पूजनीय समझे गये वीरों को भी अस्वीकार कर दिया है, जिनकी अलग-अलग ग्रंथों में गाथा गायी गयी है.

हमारा यह नकार कुछ लोगों को भारतीयता का नकार भी लग सकता है. हम लोग वर्ण-व्यवस्था और मनुस्मृति को मानने वाले भारत के नागरिक नहीं हैं. हम स्त्रियों और शूद्र-अस्पृश्यों को समान दर्जा देने वाले और इन्हें समाजवाद की ओर ले जाने वाले भारत के नागरिक हैं.

भारतीय विचार, समाज और साहित्य-परंपरा वर्ण-व्यवस्था से संबद्ध है. इस परंपरा को दलित साहित्य पूर्णतया नकारता है. वह स्वतः को ज्ञान-विज्ञान और विश्व-साहित्य की उस मानववादी क्रांतिदर्शी परंपरा से जोड़ता है, जिसमें मानव-स्वातंत्र्य के मूल्य पोषित-पल्लवित हुए हैं. वर्ण-व्यवस्था को मानने वाला भारतीय और मातृभाषा भाषी व्यक्ति हमारा कुछ नहीं लगता.पर मनुष्य के लिए संघर्ष करने वाला, मनुष्य को महानता देने वाला व्यक्ति, चाहे वह अभारतीय भी हो, तो भी वह हमारा अपना है. कारण, हमारे लेखन का उद्देश्य ही मनुष्य की मुक्ति और महानता है.

दलित साहित्य में भाषिक, प्रांतीय, राष्ट्रीय दुराभिमान नहीं है. दलित साहित्य तो मनुष्य को सर्वोपरि मानता है. अतः मनुष्य की महानता के लिए जो कुछ भी अच्छा हो रहा है, वह सब कुछ दलित साहित्य का है.

पृथ्वी पर जो कुछ है, उसके निर्माण में जितना योग निसर्ग का है, उतना ही मनुष्य का अपना भी. देश को देशत्व मनुष्य से मिलता है. संपूर्ण विश्व का नामकरण मनुष्य ने ही किया है. वर्ण, जाति, देव, धर्म और देश तो परिकल्पनाएं हैं, जिनको नकारा जा सकता है, परंतु मनुष्य को नकारा नहीं जा सकता.निराकार और अवास्तव को साकार रूप मिलता है उसके मानवीकरण से. तभी वह सत्य का रूप लेता है और प्रिय बनता है. इसीलिए सभी धर्मों में ईश्वर मनुष्य जितना और मनुष्य समान ही है. मानवीय प्रतिमान के बिना उसे पहचाना भी नहीं जा सकता.

इसलिए सभी कला-साहित्य का नायक मनुष्य है. मनुष्य कभी दलित नहीं होता. उसे हिंदू धर्म शूद्र-अस्पृश्य कह कर संबोधित करे, तो भी वह छह विकारों, वासना-भावना, अनेकानेक ऋतुओं, प्रातः-संध्या और रात्रि का साक्षात्कार हर क्षण देता है. कभी तो वह वर्षा ऋतु जैसा होता है, कभी ग्रीष्म ऋतु जैसा और कभी शरद ऋतु जैसा मनुष्य अर्थात सजीव, सुंदर, साकार निसर्ग. वह जिसका नायक होता है, वह लेखन वर्णातीत, धर्मातीत और देशातीत यानी विश्वात्मक होता है.

कला-साहित्य को यह विश्वात्मकता शब्दों से नहीं प्राप्त होती. शब्द तो रूढ़ संकेत और संस्कृतिबद्ध होते हैं. परंतु साहित्य के केंद्र में स्थित मनुष्य असीम होता है. मनुष्य को यह असीमता उसके नश्वर समझे जाने वाले शरीर से मिलती है. सभी धर्मों में स्वर्गघाती कहे गये इस नश्वर शरीर के वासना-विकार ही उसे विश्वात्मकता देते हैं. मानवीय देह में वंश, वर्ण, देश, धर्म की कृत्रिम सीमाओं के पार जाने की सहज क्षमता होती है.

इस मानवीय देह और इसके वासना-विकार, भावना-बुद्धि पर जब कभी भी धर्म-संस्कृति का संस्कार हुआ है तब-तब ही इसका विश्वात्मक चरित्र भी सीमाबद्ध हुआ है. मनुष्य पर देश, धर्म, संस्कृति का बंधन आया है, अर्थात जैसी धर्म-संस्कृति, वैसा ही मनुष्य. वैसा ही हो जाता है उसका सुख-दुख, जन्म-मरण भी. साहित्य में भी उसकी वैसी ही अभिव्यक्ति होती है.

भारत में वर्ण-अधिष्ठित हिंदू धर्म सबसे बड़ा और प्राचीन धर्म है. अनामवादी, अनीश्वरवादी और बुद्धि-प्रामाण्यवादी बौद्ध धर्म का लोप हो जाने के परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति और जन-मानस पर हिंदू धर्म का सर्वाधिक प्रभाव है. भारत की बहुसंख्यक जनता उसकी अनुयायी है. वह आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म-माया, कर्म-पुनर्जन्म, पाप-पुण्य, देवता, अवतार आदि धारणाओं, पोथी-पुराणों को मानती है. वह जाति में ही जीवित है. भारत में अहिंदुओं की तुलना में हिंदुओं का प्रबल बाहुल्य है. इतना अधिक कि अहिंदुओं की प्रार्थना-पूजा और देवताओं के नाम जुदा रहने पर भी उनकी मानसिकता हिंदुओं की ही रहती है. अतः भारतीय साहित्य पूरी तरह से हिंदू साहित्य है.

★ ★

संस्कृत और प्राकृत साहित्य पर ध्यान दें, तो हम यह कह सकते हैं कि जो सत्ताधारी नहीं थे और जिन्हें वरिष्ठ वर्गों में मान्य नहीं किया गया था, उनमें से कोई भी नायक-उपनायक नहीं बन सका. मनुष्य के रूप में उनका जीवन कथा की विषय-सामग्री रहते हुए भी वह हिंदू लेखकों को आकृष्ट नहीं कर सका. अर्थात लेखक-कवि की अपनी स्वतंत्र सत्ता नहीं रही. उनका लेखन धर्मदंड-सत्ता से प्रतिबद्ध था. वह ब्राह्मणों तथा शासकों के हित-साधन के लिए किया गया लेखन था. वह उनकी स्तुति, प्रशस्ति में ही लिखा जाता था. उनका श्रेष्ठत्व साबित करना ही उसका उद्देश्य था. इसलिए इन दोनों सत्ताधारी वर्गों को देवत्व, परमेश्वरत्व देता हुआ भारतीय ललित तथा धार्मिक साहित्य संख्यात्मक दृष्टि से बढ़ता गया. इन दोनों वर्णों के सिवा अन्य कोई वर्ण, अलग विचार-प्रणाली ललित और धार्मिक साहित्य में व्यक्त ही नहीं हुई. वर्ण-व्यवस्था ध्वस्त न होने के कारण और संपत्ति, सत्ता तथा स्वामित्व इन दोनों वर्गों के पास सदैव बना रहने के फलस्वरूप सारा धार्मिक-ललित लेखन इनसे बंधा रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्लामी आक्रमण भारत पर होने लगे. इस्लामी सत्ता की विजय और हिंदू सत्ता की पराजय के संक्रमण काल में संत साहित्य लिखा जाने लगा. एक के बाद एक संत कवि समाज के विभिन्न स्तरों से उभर कर सामने आने लगे. जब हिंदू धर्म और शासन-सत्ता स्वस्थ तथा स्थिर थी,तब समाज के विभिन्न स्तरों, शूद्र-अस्पृश्यों में से संत और कवियों के आने की गुंजाइश ही कहां थी? इस्लामी आक्रमण से हिंदू धर्मदंड-सत्ता का दमन-यंत्र प्रभावहीन हो जाने के कारण ही यह चमत्कार संभव हुआ. समाज, अल्पकाल के लिए, सृजनशील हो सका.

बाद में जब इस्लामी सत्ता स्थिर हो गयी, तो हिंदू सत्ता भी उसकी छत्रछाया में अथवा स्वतंत्र रूप से स्थिर हो गयी. परिणामस्वरूप, हिंदू धर्मदंड-सत्ता का दमन-यंत्र संहार-सिद्ध हो गया. ब्रिटिश सत्ता के आने तक शूद्र-अस्पृश्यों में से कोई प्रतिभावान नहीं पनपा.

देखा जाये तो युद्धकाल में जन्मे संत साहित्य पर युद्ध का कोई प्रभाव नहीं था. वह पूर्ण रूप से वर्ण-व्यवस्था और उसके अंतर्गत रचित धार्मिक तथा ललित साहित्य से जुड़ा हुआ था. इस साहित्य ने रूढ़ धारणाओं, सिद्धांतों, नायकत्व, देवताओं, आदर्शों और शोषण का समर्थन करने वाले तत्वों को जनता की भाषा में अधिक प्रभावी रूप में प्रचारित किया. इससे शोषण-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था और भी पुख्ता हो गयी.

इनकी भक्ति से धार्मिक एवं सामाजिक समता स्थापित न हो सकी. दंभ के विरुद्ध उनकी टीका आदर्श बन कर पौराणिकता से आगे नहीं जा सकी. भक्तिमार्ग का सर्वत्र प्रचार हुआ, पर भक्तों की जातिवार टोलियां जाति तक ही सीमित रहीं. सच कहें तो इन दोनों सत्ताओं के दीर्घ संघर्ष-काल में रचे गये ललित साहित्य का रूप थोड़ा-बहुत अलग होना चाहिए था. इस्लाम धर्म के कई सिद्धांतों, विचारों, हिंदू-मुसलमान समाजों के सत्ता संपर्क, मुसलमान सत्ताधारियों के साथ यहां के राज-घरानों के शादी-ब्याह आदि से नये लेखन के लिए बहुत कुछ मिल सकता था. कम-से-कम कई हिंदू-मुसलमान

बायें से दायें : प्र. श्री. नेरूरकर, जितेंद्र भाटिया, कमलेश्वर

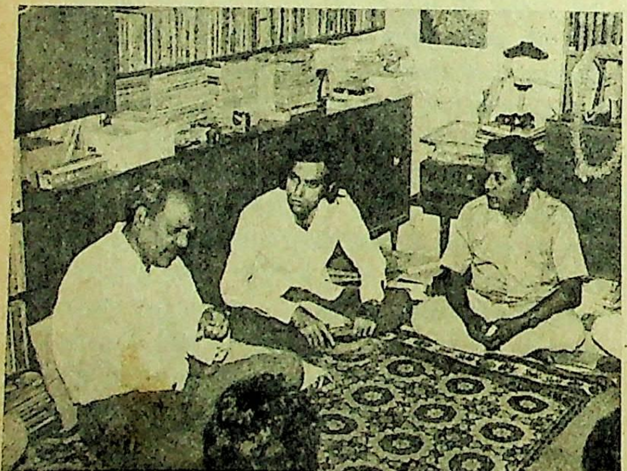

युवक-युवतियों के प्रेम-प्रसंगों, हिंदू से मुसलमान किसी चंड-प्रचंड सामंत के जीवन पर भी लिखा जाना चाहिए था. लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ तो सिर्फ पुराने संस्कृत, प्राकृत साहित्य का ...च्चार तथा अनुवाद.

★ ★

अंग्रेज आये और हिंदू-मुसलमान दोनों सत्ताओं का पूर्ण पराभव कर भारत के शासक बने. उनके साथ विज्ञान आया. क़ानून का शासन स्थापित हुआ. भाषा के माध्यम से यूरोप-अमरीका के नव जागरण का संदेश भी यहां आया. विषय, आशय और ... दृष्टि से नये ललित साहित्य का अध्ययन आरंभ ... आधुनिक साहित्य का सृजन होने लगा. समाज ... साहित्य आध्यात्मिक, धार्मिक प्रश्नों के बजाय ... जिक प्रश्नों पर विचार करने लगे. इनकी परिधि ... के अग्रगणों की कौटुंबिक समस्याओं तक ही सीमित ... कुटुंब में सीमित स्त्री सैकड़ों वर्ष बाद साहित्य की विषयवस्तु बनी. बाल-विधवा, बाल-विवाहिता ... विवाहिता आदि नारी-रूप संयुक्त परिवार में ... जाने वाली स्त्री के रूप में साहित्य में आने लगे.

उत्पीड़ित स्त्री के साहित्य में आ जाने के ... अस्पृश्य को वाङ्मय का विषयवस्तु बनाने में ... बाधा नहीं रह गयी थी. एक बड़ी शक्ति सामाजिक ... लन के पीछे खड़ी हुई थी. अब कोई शासक ... साहित्य में चित्रण करने, शूद्रों का विचार करने, उनके निरुपाय जीवन का चित्रण करने के लिए ... के शिरच्छेद की घटना नहीं दोहरा सकता था. ... शक्ति थी उदारवाद की. शूद्र-अस्पृश्यों के नेता ... ज्योतिराव फुले थे. शूद्रों को नये उद्योग-धंधे ... जाने से ब्राह्मणों के मुंह बंद हो चुके थे. सरकार ... की समर्थक नहीं रह गयी थी. इतनी अनुकूलता ... भी स्त्रियों के साथ शूद्र साहित्य में स्थान नहीं ... क्यों? साम्राज्य के गोरे लेखकों को अपने यहां ... शूद्र तो दिखते थे,वे उनके दुख-दैन्य को महसूस ... पर उनके उपनिवेशों में रहने वाले अश्वेत लेखक ... अपने स्वयं के गांव के शूद्र-अस्पृश्य क्यों नहीं दिखे? ... ये लेखक कलावादी-सौंदर्यवादी थे? क्या वे नव ... नहीं लाना चाहते थे? क्या उनमें अंग्रेज और फ्रेंच ... की तरह दुख-दैन्य, दास्य पर लिखने का सामर्थ्य ...

वे असमर्थ थे, यह नहीं कहा जा सकता. वे ... सुधारों के भी समर्थक थे और नव जागरण के ... भी. इसीलिए तो उन्होंने हिंदू कुटुंब में पिस रही ... व्यथा साहित्य में व्यक्त की. लेकिन महात्मा ज्योतिराव फुले तथा ईसाई मिशनरी जिन शूद्रों को देख सके ... उन्हें ये लेखक नहीं देख पाये. कारण—उनके ... उनके मन की सीमाएं.

ईसाई मिशनरियों, बुद्धिजीवियों, कलाकारों की दृष्टि शूद्रों की ओर गयी, तो उसका कारण ... मानसिकता थी. ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा ने ... दीन-गरीबों को गले लगाया था. वह भी पाप की ... स्वीकार करते थे, परंतु उनके पास प्रेम और करुणा ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लोकशाही के बीजतत्व इस प्रेम और करुणा …ति भी थी. प्रेम, करुणा और क्रोध से ही क्रांतिकारिता निहित थे. …दित होती है.

…ईसाई लेखकों की तरह हिंदू लेखकों की दृष्टि शूद्र-…स्पृश्य तक क्यों नहीं पहुंची? कारण स्पष्ट है——सैकड़ों …ों तक शूद्र-अस्पृश्य परमेश्वर समझे जाने वाले तथा …पौरुषेय ग्रंथों की दृष्टि से भी वंचित रहे थे. अनेक अव-…र हुए. अनेकानेक संत आये. परंतु इनमें से किसी की …दृष्टि स्त्रियों तथा शूद्र-अस्पृश्यों के असहाय जीवन पर …हीं पड़ी, बल्कि इन सभी की दीन-दुखियों से जबरदस्त …त्रुता थी. जब देव, संत, धर्म पग-पग पर शूद्रों-अस्पृश्यों …लिए तुच्छता, शत्रुता प्रकट करेंगे, तो हिंदू पौराणिकता …संस्कार शूद्रों को अपना स्थान कैसे लेने देंगे?

हिंदू धर्म में करुणा, प्रेम, भ्रातृभाव के लिए स्थान …होने के कारण शूद्र-अस्पृश्यों का समाज और साहित्य …स्थान नहीं रहा. परंतु यदि भगवान बुद्ध के धर्म की …लोक-मानसिकता के निर्माण में प्रभावी भूमिका रहती, …तो भारतीय पौराणिकता में प्रेम, करुणा, भ्रातृभाव की …परंपरा भी होती. और तब साहित्य में गरीब, दुर्बल, …शूद्र-अस्पृश्य का भी स्थान रहता. उदाहरण के लिए, …जातक कथाओं, थेर-थेरी गाथाओं को लिया जा सकता …है, जिनमें उपेक्षितों का उल्लेख हुआ है.

परंतु अब तो राजपाट हिंदू धर्म का रह नहीं गया था. …वह अंग्रेजों के हाथों में था. वे धर्म से ईसाई थे और प्रजा-…तंत्र में उनकी आस्था थी. अतः शूद्र-अस्पृश्यों के बारे में …लिखने, महात्मा ज्योतिराव फुले के विचारों की अभि-…व्यक्ति में अब कोई अड़चन नहीं रह गयी थी. कर्म क्या …है? पूर्व-कर्म का अर्थ क्या है? पाप-पुण्य किसे कहते हैं? …आत्मा, पवित्रता, मांगल्य का अर्थ क्या है? इसे अब वे …बता सकते थे. वे दिखा सकते थे कि अस्पृश्यता के पीछे …किस तरह की शत्रुता और शोषण छिपा है. वे प्रमाणित …कर सकते थे कि स्त्री-पुरुष के समागम से जन्म लेने …वाले एक व्यक्ति को श्रेष्ठ और दूसरे को कनिष्ठ मानने …की परंपरा किस तरह खोटी और जाली है. महात्मा …ज्योतिराव फुले ने यह सब करके दिखाया. किंतु उनके …कार्य, उनके विचारों को किसी ने भी आगे नहीं बढ़ाया.

हमारे बुद्धिजीवियों की वर्ण तथा स्थापित व्यवस्था …के प्रति प्रतिबद्धता का यह एक सबूत है. डॉ. बाबासाहेब …आंबेडकर ने ठीक ही पूछा है कि 'ब्राह्मणों की इतनी दीर्घ …ज्ञान-परंपरा रहते हुए भी वे एक भी वॉल्तेयर क्यों नहीं …दे पाये?'

वॉल्तेयर बनने के लिए धर्मसत्ता-दंडसत्ता के विरुद्ध …खड़ा रहना पड़ता है. यह ब्राह्मणों के लिए संभव नहीं था. …हिंदू धर्म के अंतर्गत उनको श्रेष्ठता, सुअवसर, साधन …और एक अद्वितीय स्थान जन्मना रूप से मिला हुआ था. …उनके लिए हिंदू धर्म के विरुद्ध जाने का अर्थ होता अपने …अस्तित्व, अपने श्रेष्ठत्व को नष्ट करना. अपना स्वयं का …यह विनाश कौन करना चाहेगा? हमारे अधिकांश लेखन …के मनुस्मृति की कोटि में आने का भी यही कारण है. …हमारे बुद्धिजीवियों के लिए वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध जाना …संभव ही नहीं था. वर्ण-व्यवस्था का जाप करना, उसका …अधिक सुखकर था.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कभी भी वर्णव्यवस्था के लिए कोई चुनौती आती थी, तभी हमारे बुद्धिजीवियों को अपना इतिहास-पुराण, प्राचीन काल याद आने लगता था. तब ऐतिहासिक, पौराणिक नाटकों, उपन्यासों, काव्यों का थोक सृजन शुरू हो जाता था. राष्ट्रीय नव जागरण के प्रभात काल में भी यही हुआ. सभी क्षेत्रों में अंग्रेज सत्ता की श्रेष्ठता, उनके ज्ञान-विज्ञान की श्रेष्ठता को जैसे-जैसे सारा समाज मान्य करने लगा, हिंदू धर्म और उसके ज्ञान की समीक्षा होने लगी, अनेक सामाजिक आंदोलनों का जन्म होने लगा, स्त्रियों-शूद्रों के प्रश्नों को ले कर महात्मा ज्योतिराव फुले हिंदू धर्म और वर्ण-व्यवस्था को नकारने लगे, समाज के सभी स्तरों में जागृति आने लगी और शासन इस सबको बर्दाश्त करने लगा और ब्राह्मण बुद्धिजीवियों को अपना अस्तित्व बनाये रखने की तीव्र आवश्यकता अनुभव होने लगी. उन्होंने सारे सामाजिक आंदोलन के विरुद्ध एक आक्रामक अभियान छेड़ दिया. वे जिस युग में सर्वश्रेष्ठ थे, वीर थे, नेता थे, समाज के शीर्ष स्थान पर आसीन थे, उस काल को काव्य, नाटक, उपन्यास के रूप में समाज के सामने चित्रित करने लगे. अतीत की गाथा को, पूर्वज-पूजा को उन्होंने राष्ट्रीय नव जागरण का रंग दे दिया.

* *

सच कहा जाये तो अतीत काल सामान्य जन की दृष्टि से एक भयानक युग था. उस युग में सामान्य जन की स्थिति बेगारी-गुलामी करने वाले, हाड़तोड़ मेहनत करने वाले की थी. वह बेमतलब रौंदा जाता था, वह राज्य-विस्तार और लूट के लिए आगजनी का दौर था, कत्ल और आक्रमणों का काल था. संहार को तब पराक्रम कह कर पूजा जाता था. धर्म, जाति के नाम पर कोई भी व्यक्ति पूजनीय बन जाता था. वस्तुतः वह सामंतशाही युग था. उस युग को सामान्य जन, शूद्र-अस्पृश्य के लिए अपना युग समझना संभव ही नही था! इस सामान्य जन, देश के बहुसंख्यक जन के प्रश्नों पर नयी उभरती हुई संस्कृति के संदर्भ में विचार का सूत्रपात महात्मा ज्योतिराव फुले ने किया था. इसे आगे बढ़ाने के लिए सभी सामाजिक वर्गों के लोगों में एकजुट लोकशाही के विचार और भावना भरने की जरूरत थी. भयंकर भूतकाल में थोपे गये दुखों को नष्ट करने के लिए आधुनिकता का सुदृढ़ सहारा लेने की जरूरत थी. परंतु ऐसा कुछ भी नही हुआ. 'शेरनी का दूध पीने वाले शेर बच्चे' बुद्धिजीवी एक हो कर नयी उभरती हुई संस्कृति पर धुआंधार प्रहार करने लगे. वे इतिहास-पुराणों का उदात्तीकरण करने लगे. वर्तमान, भविष्य की नयी संस्कृति को उन्होंने अपना शत्रु घोषित किया. उन्होंने वर्ण-व्यवस्था पर आघात करने वाले, बुद्धि-प्रामाण्यवाद में विश्वास रखने वाले, नयी राष्ट्रीय अर्थ-रचना पर विचार करने वाले, सामाजिक, राजकीय, धार्मिक सुधारों की मांग करने वाले ज्योतिराव फुले, आगरकर, गोखले, रानडे तथा उनकी सहायता करने वाले अंग्रेजी शासन को अपना शत्रु कहा. शत्रु पर आक्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण करने के लिए उन्होंने इस नयी संस्कृति के लिए उद्यम करने वालों पर हमला किया. उनको विदेशी सत्ता का पिट्ठू कहा गया. कारण, आधुनिकता की विजय का अर्थ था सामंतशाही संस्कृति की पराजय, वर्ण-व्यवस्था का पराभव और अंततः लोकशाही की विजय. राष्ट्रीयता को निमित्त बना कर उन्होंने इन सब पर प्रहार किया. विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों में परस्पर शत्रुता भड़कायी गयी. मुसलमानों को खलनायक बना दिया. हिंदू-मुस्लिम जनता को दो धड़ों में बांट दिया और अनेक स्तरों पर व्यक्त हो रही प्रजातांत्रिक चेतना को कुचल दिया. वे इस संघर्ष में सफल रहे, समाज-सुधारकों को अंग्रेजों का पिट्ठू घोषित करने में मिली इस सफलता के जो अनेक कारण हैं, उनमें वर्ण-व्यवस्था और स्पृश्य-अस्पृश्य भेद भी एक बड़ा कारण है.

स्पृश्यता से वर्ग-चेतना नष्ट होती है. वह स्पृश्य गरीब और स्पृश्य श्रीमंत को तो एक करती है, परंतु स्पृश्य गरीब और अस्पृश्य गरीब को विभक्त करती है.

स्पृश्य अर्थात वह जिसे धर्म ने अवसर, साधन, सहूलियतें, विशेषाधिकार दिये हैं. अस्पृश्य अर्थात वह जिसे इन सब से वंचित रखा गया है. स्पृश्यता पुण्य, भाग्य, देवता, धर्म की धारणाओं को सजीव रखती है, उनका पोषण करती है. जो उच्च स्थान पर है, वह अपने प्रारब्ध, पूर्व-पुण्यों के प्रताप, भाग्य के कारण वहां तक पहुंचा है. इसलिए प्रत्येक दरिद्र को अपना वर्ग बदलने की आशा बंधती है. अस्पृश्यता हरेक नव अंकुर, महत्वाकांक्षा, स्वप्न को नष्ट कर देती है. अपने लिए कोई स्थान ही नहीं है, इसे वह भिन्न-भिन्न प्रकार से समझा कर अदृश्य रूप से भयंकर संहार करती है.

जनता की एकता स्थापित करने के लिए यानी मनुष्य को इस संहारलीला से मुक्त कराने के लिए हुआ वैचारिक आंदोलन ही सही अर्थों में राष्ट्रीय उत्थान का आंदोलन हो सकता था. असल में यह कार्य राष्ट्रीय आंदोलन और उसका नेतृत्व करने वाले बुद्धिजीवियों को करना चाहिए था. परंतु उन्होंने यह किया नहीं. वर्ण-व्यवस्था से प्रतिबद्ध

बायें से दायें : कमलेश्वर, राम अरोड़ा, प्र. श्री. नेरूरकर, नारायण सुर्वे, दया पवार, अर्जुन डांगले

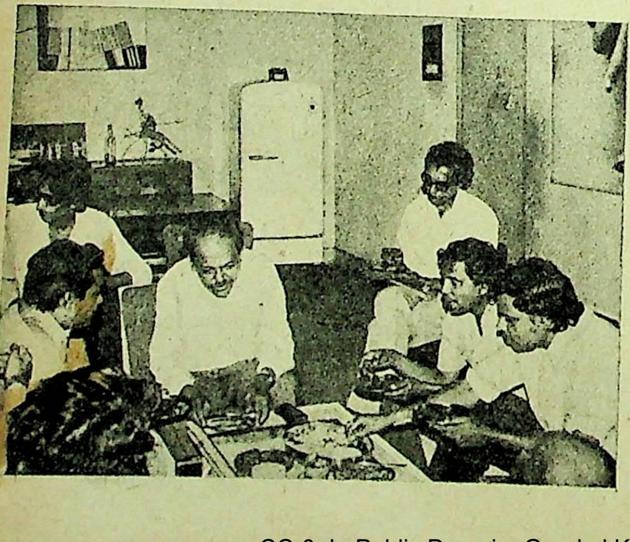

हमारा बुद्धिजीवी वर्ग यह करता भी कैसे?

लेकिन यूरोप में ऐसी बात नहीं रही. नये उत्पादन-साधन, नया तत्व-ज्ञान ले कर वहां के जीवियों ने स्थापित हितों के साथ सतत संघर्ष अपने विचारों, अपनी खोजों को स्थापित करने के जनता के साथ रहे हैं. इसके लिए उन्होंने मृत्यु का किया है. इन दो भौगोलिक इकाइयों, दो संस्कृ धर्मों में यह अंतर क्यों है? इसका उत्तर यही है कि के बुद्धिजीवी यहां की तरह जाति के बूते पर नहीं वे अपनी-अपनी ज्ञान-उपासना के बल पर बुद्धि इसके विपरीत यहां की वर्ण-व्यवस्था ने यहां के जीवियों (ब्राह्मणों) को समाज में एकदम वरिष्ठ पर आसीन कर रखा है. उस व्यवस्था को बनाये उनका हित है. आर्थिक दृष्टि से वे कितने ही कनि पर उनको पुरानी व्यवस्था को नष्ट करने के लि तीव्र आवश्यकता महसूस नहीं होती, जितनी फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को हुई. कारण, जीवी अत्यंत प्रारंभ से ही अपने उच्च स्थान पर हैं. उनके पूर्वज पूजनीय हैं, ईश्वर-तुल्य हैं. पोथि में वे आराध्य देव कहे गये हैं. शासक रहने का हास भी निकट अतीत का ही था. अंग्रेजों की सत्ता पर फिर से सत्ता में आने की संभावना वे साक्षात देख रहे थे. इस मानसिक अवस्था में ही उन्होंने रचना की. स्वाभाविक ही उस साहित्य में पूर्व अतीत-प्रेम, अंहकार और दूसरों के प्रति द्वेष का रहा. उस साहित्य में इकसुरापन भी बहुत रहा, रचनाकारों के संस्कार और, इसीलिए, उनके अनु संसार भी वर्ण-व्यवस्था की चौखट में कैद था.

* *

जिन दिनों यहां के बुद्धिजीवियों के लिए आं के दलित आंदोलन का आकलन करना, उस पर भूतिपूर्वक विचार करना संभव नहीं था, उन्हीं आंबेडकरवादी अस्पृश्यों का आंदोलन तेजी से उ

'. . .अस्पृश्यता का आंदोलन वर्ग-कलह का अं है' . . .'जिसे अस्पृश्यता मान्य है, वह धर्म नहीं है— हो भी, तो वह हमारा धर्म नहीं है'. . .'देवता, धर्म, अपेक्षा मनुष्य बड़ा है.' इस तरह की घोष साथ दलितों का आंदोलन मंदिरों, पनघटों, दे धर्म, गांवों को चुनौती देता हुआ उठ खड़ा हुआ. सत्ता हिंदू धर्म के हाथों में न होने के कारण वह नहीं जा सका.

हिंदू-मुसलमानों की दोहरी संधि नहीं थी. वर्ग का आंदोलन गांधीवादियों के हाथों में नहीं था. णेतर आंदोलन कांग्रेस के बाहर था. और आंबेडक आंदोलन कांग्रेस के वर्गीय और वर्णीय स्वरूप के उसके साथ सहयोग करने को तैयार नहीं था. जि ने कांग्रेस की ओर से होने वाली सामाजिक परि कुचल दिया था, वे ही लोग कांग्रेस के नेता बने तब तक लोकतांत्रिक समाजवाद के ध्येय को स्वीकार नहीं किया था. और डॉ. बाबासाहेब आं को कांग्रेसी नेताओं के स्थापित वर्ग तथा ब्रिटिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलित जनता का हित साधना था.

संघर्ष में से दलित जनता का हित साधना था. दो संघर्षशील राजनीतिक शक्तियों के बाहर खड़े कर डा. बाबासाहेब आंबेडकर जकड़ कर रखी गयी लित जनता के बंधन तोड़ रहे थे. संघर्ष कर रहे थे. उधर ावारपत्रों, नेताओं, साहित्यिकों का डॉ. बाबासाहेब डकर के विरुद्ध जबरदस्त प्रचार चल रहा था. स तरह ज्योतिबा फुले के विचारों की घेरेबंदी गयी थी, वैसे ही बाबासाहेब और उनके सामाजिक ति के आंदोलन की घेरेबंदी की जा रही थी. दलित ादोलन को बिना शर्त-शिकायत के कांग्रेस आंदोलन में ामिल करने के लिए सभी स्तरों पर प्रयत्न चल रहे थे. न विचारों की प्रतिध्वनि साहित्य में भी उभरने लगी ी. इन्हीं दिनों सैकड़ों वर्षों बाद भारतीय साहित्य में द्र-अस्पृश्य को नायक-उपनायक के रूप में प्रवेश मिला. रंतु वे ज्योतिबा फुले अथवा डॉ. आंबेडकर के विचारों प्रतिनिधि न हो कर हिंदुत्ववाद अर्थात गांधीवादी या ावरकरवादी विचारों के प्रतिपादक थे. इस धारा के ंतर्गत प्रायः ब्राह्मण अथवा उसके अनुरूप कुल के किसी ायक-उपनायक, नायिका-उपनायिका का किसी अस्पृश्य के घर में पालन-पोषण चित्रित किया जाता था. या फिर अस्पृश्य बालक-बालिका के ब्राह्मण या तत्सम घर में ालन का चित्रण होता था. बाद में इन्हें किसी-न-किसी रह अपनी स्थिति का भान करा दिया जाता था.

इस तरह के कथानक आने का एक कारण जहां प्रत्यक्ष अनुभव का अभाव था, वहां दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह भी रहा कि गांधीवादी अथवा सावरकरवादी लेखकों ने हिंदुत्व को कभी नहीं नकारा. उनका विचार-पिंड हिंदू पौराणिकता और हिंदू विचार-व्यवस्था में ही गढ़ा हुआ था. कर्ण और एकलव्य जैसे नायक इन लेखकों ने अपने संस्कार और पौराणिकता के माध्यम से ही आत्मसात किये थे. स्वाभाविक ही ये नायक अपने रचनाकारों के मनोगठन के अनुरूप वर्ण-व्यवस्था की शरण में जाते हैं, पर उसमें अपने लिए समुचित स्थान नहीं बना पाने के कारण जन्म को दुख मानने लगते हैं. धर्म प्रतिकूल रहने के कारण प्रारब्ध-विरोधी शूरवीर नायक कथा को नाटकीयता, संघर्ष-प्रसंग, उत्कटता और रक्षात्मकता देता है. इस नायक के माध्यम से भाग्यवादी दर्शन अभिव्यक्त होता है. इस तरह के चरित्र-चित्रण को हिंदू लेखकों के पाठक सहज में ही अनुभव कर सकते हैं. उनको अनुभव की पुनरावृत्ति का सुख मिलता है. इस तरह की कलाकृति हिंदू धर्म की सारी पौराणिकता को पूर्णतया व्यक्त करती है.

हिंदू संस्कारों में विकसित तथा हिंदू पौराणिकता से गढ़े हुए मानसिक गठन वाले लेखक फुले-आंबेडकरवादी नायक, विचार, विषय और इस आंदोलन के अनुभवों को यथार्थ रूप से चित्रित नहीं कर पाते. लेकिन जिनके मन पर हिंदू पौराणिकता का प्रभाव नहीं पड़ा है, जिनका वैचारिक गठन हिंदू संस्कारों के अंतर्गत नहीं हुआ है, वे लेखक इस तरह की असमर्थता नहीं बता सकते. वे फुले-आंबेडकर के विचारों से रूपांतरित जीवन को सशक्त रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं.

हिंदुत्ववादी (सावरकर-गांधीवादी) लेखकों ने दलित आंदोलन में से वर्ण-व्यवस्था के समांतर चलते हुए, हिंदू पौराणिकता की ओर जाने वाले जैसे कथानायक-नायिका चुने हैं, ठीक वैसे ही कथानक और नायक-नायिकाएं मार्क्सवाद के स्वीकारने वाले प्रगतिशील लेखकों ने भी चुने हैं. दोनों के ही नायक हरिजन यानी गांधीभक्त, राष्ट्रीय आंदोलन के निकट जाने वाले और हिंदू-पौराणिकता के अनुसार जन्म को दुख मानने वाले हैं.

जन्म को दुख मानने की बात फुले-आंबेडकरवादी नायक के मन में भी आ सकती है, पर वह जाति-व्यवस्था बनाने वाले धर्म, जाति का पालन करने वाले समाज से जूझता है. वह जिस तरह से अपनी जाति नकारता है, उसी तरह से दूसरे की नीची या ऊंची मानी गयी जाति को भी नकारता है––और वह मार्क्सवाद के लिए अभिप्रेत 'वर्ग' को मानता है. वह मार्क्सवादी विचारों के अधिक करीब है. इतना ही नहीं, जाति के बाहर निकल कर जाति को नकारने की बात श्रमजीवियों के आंदोलन को भी आगे बढ़ाने वाली है. वस्तुतः आंबेडकर का आंदोलन मार्क्सवादी आंदोलन के काफी करीब था. अतः गांधीवादी नायक की तुलना में आंबेडकरवादी नायक का आकलन प्रगतिशील लेखकों के लिए अधिक आसान था. क्रांतिदर्शी विश्व-साहित्य में पुरानी व्यवस्था को नकारने वाले, नयी व्यवस्था की मांग करने वाले अथवा वैचारिक विद्रोह का झंडा उठाने वाले नायक का चित्रण हुआ है. यह नायक प्रगतिशील नायिकाओं के लिए एक आदर्श था. इसके बावजूद फुले-आंबेडकर के आंदोलन को मानने वालों में से प्रगतिशील लेखकों के नायक नहीं निकले. स्वतंत्रता के बाद भी नहीं. स्वातंत्र्य-पूर्व काल के उनके नायक को समझा जा सकता है. वे कह सकते हैं कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता का संघर्ष सबसे प्रगतिशील संघर्ष होता है. इससे इनकार नहीं किया जा सकता, परंतु स्वातंत्र्य के बाद भी उनका ध्यान दलित समाज की ओर नहीं गया. उनमें से प्रत्येक का ध्यान दलित समाज की ओर जाये ही, यह आग्रह नहीं किया जा सकता. यह भी नहीं कहा जा सकता कि वे हिंदुत्ववादी हैं. इससे केवल यह स्पष्ट होता है कि भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग, चाहे प्रगतिवादी हो या यथास्थितिवादी, किस तरह से सामाजिक समस्याओं को देखता है और किस तरह दोनों की ही दृष्टि से सामाजिक समस्याएं उपेक्षित रह जाती हैं.

★ ★

अस्पृश्यता-उन्मूलन का आंदोलन सम्यक परिवर्तन का आंदोलन है. मात्र राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा धार्मिक परिवर्तन से अस्पृश्यता नष्ट नहीं होती. इससे समझा जा सकता है कि यह कितना बड़ा और व्यापक आंदोलन है. यह पूर्ण परिवर्तन हो जाता, तो भारत का सब कुछ बदल जाता. . .एक निराले और महान भारत का निर्माण होता. इतने व्यापक और विराट प्रश्न की जटिलता को जो प्रगतिशील कलाकार नहीं समझ पाते, उनकी क्रांतिकारी संवेदनशीलता पर आश्चर्य होता है.

इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि आर्थिक और राजनीतिक विचार क्रांतिकारी रहने पर भी रक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिले संस्कार मिट नहीं पाते. पौराणिकता छूटती नहीं. वर्ण-वर्ग के बंधन टूटते नहीं. इसीलिए, स्थितिवादी बुद्धिजीवियों और प्रगतिशील बुद्धिजीवियों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों में अधिक अंतर नहीं आता. कारण, दोनों के मानसिक गठन की पार्श्वभूमि एक-सी होती है.

ऐसा नहीं है कि यह कोई बड़ा अपराध हो. परंतु यह तो वस्तुस्थिति है. इस वस्तुस्थिति के फलस्वरूप ही राष्ट्रीय कांग्रेस के रहते हुए, वामपंथी दलों (कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट) के रहते हुए डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व में दलितों का अलग दल बना. उसने दलितों के लिए संघर्ष किया. वह इसमें सफल भी रहा. यह बात कांग्रेस और वामपंथी दलों की कमी को बताती है. इससे सिद्ध होता है कि वर्णीय-वर्गीय मर्यादाएं कितनी शक्तिशाली होती हैं. इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्रगतिशील साहित्यधारा के रहते हुए भी दलित साहित्य की अलग धारा का उदय और निर्माण क्यों हुआ.

एक कवि ने कहा है— हम धन्य हैं, कि हम इस क्रांतिकारी युग में जन्मे हैं. हम धन्य हैं, कि हमारे पूर्व किसी को भी दुख देने वाले नहीं दिखे थे. भगवान बुद्ध को मात्र दुख दिखे थे. परंतु हमें दुख और दुख देने वाले दोनों ही दिखे हैं. . . .

इसीलिए आज यह प्रश्न उपस्थित हुआ है कि साहित्य को किसका विचार करना चाहिए, किसे अपने विचार का केंद्र बनाना चाहिए—अत्यंत प्राचीन और अर्वाचीन काल के प्रारंभ में यह प्रश्न उपस्थित नहीं हो सकता था. ऐसा नहीं है कि तब विषमता नहीं थी. ऐसा भी नहीं था कि तब समाज दो वर्गों में विभाजित नहीं रहा हो. यह भी नहीं कि तब वर्ण नहीं थे. परंतु आज सामाजिक उत्पादन-साधनों—यंत्र-तंत्र—ने जो स्थिति पैदा की है, इस युग तथा इसके क्रांतिकारी विज्ञान ने इन दो वर्णों में संघर्ष सुलगाया है. पुरातन युग से अब तक यह तत्वज्ञान बखाना गया है कि सुख-वैभव, अन्याय-अत्याचार पर विचार नहीं करना चाहिए. वासना-भावना और मानवीय मूलभूत प्रवृत्ति नष्ट करने को, इस संसार में

बायें से दायें : राम अरोड़ा, नारायण सुर्वे, दया पवार, अर्जुन डांगले

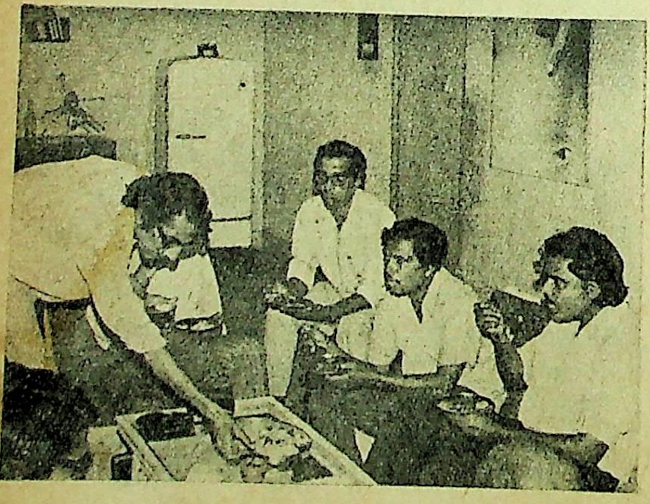

रहते हुए भी इस संसार के नहीं होने की तरह चित्त को शुद्ध रखने, निर्विकार बनने, पुण्य प्राप्त स्थितप्रज्ञ बनने, शांत चित्त हो कर मन की शांति करने और मरने के बाद स्वर्ग मिलने का उपदेश गया है.

इस बखान के पीछे उद्देश्य यही रहा कि पूर्ण रचना को व्यक्तिगत स्तर पर भी विद्रोह न लग सके. असंतोष और बुद्धिवाद का जन्म न हो.

परंतु इस क्रांतिकारी युग ने यह षड्यंत्र दिया है. मनुष्य को न सिर्फ अपने दुख दिख रहे हैं, यह भी स्पष्ट दिख रहा है कि ये दुख देने वाले कौन

यहीं से दो दर्शनों, दो विचारधाराओं, साहित्यधाराओं का आरंभ हुआ.

जहां भारत की तरह की जाति-व्यवस्था नहीं थी, वहां के लेखकों-कलाकारों यहां की परिस्थिति अधिक स्पष्ट रूप से दिखी. भारत में जाति-व्यवस्था के फलस्वरूप, उसके गयी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं रचना के परिणाम स्वरूप भारत के साहित्य बोध जितना प्रखर होना चाहिए था, उतना प्रखर भी नहीं रहा.

भारत के शोषक और शासक उन से उभरे हैं, जिन्हें हिंदू धर्म ने उच्च वर्ण कहा है. भारत का बुद्धिजीवी वर्ग तथा मध्यवर्ग भी उन्हीं जातियों से आता है, जिनसे आज के शोषक. इसलिए भारत में बुद्धिजीवी तथा मध्यवर्ग फ्रेडरिक द्वारा वर्णित मध्यवर्ग की अपेक्षा कहीं अधिक जैसा है. जाति-वर्ण के कारण और सामाजिक-सांस्कृतिक बंधनों के परिणाम स्वरूप उसे उच्च वर्ग अधिक प्रतीत होता है.

इन सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक के साथ ही आर्थिक एवं राजनीतिक कारण देश अर्धविकसित है. देश में सामंती और वादी अर्थ-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था है. प्रबल व्यवस्था है, जिसकी वजह से वर्ग-विभाजन पूर्ण विकसित नहीं हुआ है.

भारतीय प्रजातंत्र का स्वरूप साधारण तौर जातीय है. जो जाति जहां बहुसंख्यक है, वह वहां पर है. और जो सत्ता पर पहुंच जाता है, उसे सत्ता अपने अनुकूल लगती है. उसके अतिरिक्त (गरीबों- श्रीमंतों को) जाति, वर्ण और सत्ता के जुले प्रभाव के कारण धनसत्ता अपनी पहुंच के दिखती है. विकासमान देश होने तथा शासन की कारी राज्य की घोषणाओं के फलस्वरूप, अधिकांश वर्गीयों को धनवान बनने का प्रबल प्रलोभन रहता

इन सारी परिस्थितियों के कारण भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग मोहग्रस्त, दोलायमान, दुविधा की स्थिति में जीता है. वह त्रिशंकु की तरह अधर में रहता है. बल्कि बड़े पैमाने पर वह शासन-सत्ता, और स्थापित वर्ग का शरणागत रहता है. . .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कुहासे में ही भारतीय सिनेमा, नाटक और साहित्य तैयार होता है. महात्मा गांधी द्वारा बताया गया वर्ग-समन्वयवाद, विनोबा जी का सर्वोदयवाद, मध्यवर्ग की अवस्था को और भी त्रिशंकु समान बना देता है. और कुहासा और भी बढ़ जाता है. भारतीय सिनेमा, नाटक, प्रचार-प्रसारण के साधन-संस्थान, शिक्षा-केंद्र, राजनीतिक पक्ष इसी मध्यवर्ग के हाथ में हैं.

आज की समस्त भारतीय कला, साहित्य, इसी मानसिकता में व्यक्त हो रही है. इस कला-साहित्य में आज के भारत का दर्शन होना असंभव है, क्योंकि जो कला-साहित्य के निर्माता हैं, उनको ही संपूर्ण देश दिख नहीं रहा है—संपूर्ण समाज दिख नहीं रहा है. इतना ही नहीं, उनको तो संपूर्ण मनुष्य भी नहीं दिख रहा है.

परंतु ऐसे भी कुछ समर्थ लेखक हैं, जिन्हें दुख दिखते हैं, दुख देने वाले भी दिखते हैं और इन दुखों तथा दुख देने वालों के रक्षक भी दिख रहे हैं. यह दिखना अत्यंत महत्वपूर्ण और मूल्यवान है.

जिन्हें दुख, दुख देने वाले और उनके रक्षक दिखते हैं, उनका लेखन हिंदी में 'समांतर साहित्य' के रूप में व्यक्त हुआ है. आश्चर्य की बात है कि मराठी में 'दलित साहित्य' और हिंदी में' 'समांतर साहित्य' एक ही काल-खंड में सामने आया है.

समांतर साहित्य के लेखकों ने अपने को 'दिखे हुए' को अत्यंत स्पष्ट रूप से लिखना प्रारंभ किया है. उनके लेखन से कई तत्व प्रखर रूप से सामने आये हैं. वे इस प्रकार हैं: (१) सामान्य आदमी से संबद्धता, (२) सामान्य जन की अभिव्यक्ति, (३) क्रांतिकारी युग से प्रतिबद्धता और मार्क्सवाद का स्वीकार, तथा (४) वामत्व.

समांतर लेखन में व्यक्त होने वाले ये तत्व, रचना की दृष्टि से उनके द्वारा घोषित स्वातंत्र्य, क्या कहा गया और क्यों कहा गया को दिया गया महत्व, युग-युगों के उपेक्षितों को अपने लेखन में दिया गया नायकत्व, जीवन से साक्षात संबंध, उसके वैशिष्ट्य को स्पष्ट करते हैं.

'हम सामान्य जन हैं, और हमारा लेखन सामान्य जन से प्रतिबद्ध है. . .' समांतर साहित्य की यह धारणा दलित साहित्य को अत्यंत मूल्यवान प्रतीत होती है. कारण, इस देश की संस्कृति और समाज में सामान्य जन के प्रति तिरस्कार है, उसे तुच्छ माना गया है, उसे अपमानित और अवसर-रहित रखने का आग्रह किया गया है!

शासन-सत्ता, धन-सत्ता और धर्म-सत्ता विषमता को पाल रही हो और वामपंथी आंदोलन संवेदनाशून्य दिख रहा हो, तब यह घोषणा करना कि हम सामान्य जन और वामत्व से संबद्ध हैं, सचमुच वामत्व है. साधारणतया भारतीय मनुष्य की प्रवृत्ति ऊंची जाति या वर्ण धारण करने की है. इस देश में और जातिभेद-ग्रस्त समाज में वर्ग-विमुक्त (डिक्लास) होने को दलित साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है. यह प्रवृत्ति समांतर और दलित साहित्य के माध्यम से प्रकट हुई, यह इसका प्रमाण है कि आधुनिक भारत का नेतृत्व करने और प्रवक्ता बनने का दायित्व साहित्य ने स्वीकार किया है. विश्व-क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में इस प्रकार के नेतृत्व के अनेक उदाहरण मौजूद हैं.

जब साहित्य सामान्य जन के साथ—शूद्र-अतिशूद्र के साथ—संबद्ध होता है, तब वह सम्यक परिवर्तन का अर्थात आर्थिक, राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक परिवर्तन का पक्षधर बन जाता है. इसी पक्षधरता को 'दलित साहित्य' ने भी स्पष्ट रूप से पहचाना है. वह भी इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि शोषण-सत्ता ने सदैव अपने अनुकूल प्रथाओं, व्यवस्थाओं, धारणाओं और व्याख्याओं को जीवंत बनाये रखने की चेष्टा की है तथा उसने प्रतिकूल पड़ने वाली प्रथाओं आदि को नष्ट किया है. इसलिए 'दलित साहित्य' हिंदू पौराणिकता, वैचारिकता, मानसिकता, संस्कार, आदर्शों, धारणाओं, प्रतीकों और उनकी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष परिणतियों को नकारता है. और व्यापक स्तर पर 'समांतर' की तरह हर तरह के शोषण का विरोध करता है.

हमारे इस नकार से साहित्य के कई समीक्षक क्षुब्ध हो उठते हैं. वे हमसे यह अपेक्षा करते हैं कि हम स्थापित साहित्य की किसी-न किसी विचारधारा के झंडे के नीचे ही खड़े रहें अर्थात हम भोगवाद, जंतुवाद, शून्यवाद, नियतिवाद, निराशावाद अथवा अराजकवाद स्वीकारें और साथ-ही साथ स्वीकार करें उनका साहित्यशास्त्र भी. उनके रचना-विधान का पालन करें. इस संबंध में दलित साहित्य का दृष्टिकोण यह है कि कलाकृति पहले आती है और शास्त्र बाद में. अभी दलित साहित्य का सृजन हो रहा है. बाद में इसका साहित्यशास्त्र भी स्वतः विकसित हो जायेगा. वर्ण-व्यवस्था और विषमता की भूमिका पर खड़े हुए वर्तमान साहित्यशास्त्र और सौंदर्य-शास्त्र से दलित साहित्य जैसी परंपरा को नकारने वाली क्रांतिकारी साहित्यधारा की व्याख्या नहीं हो सकती. फुले-आंबेडकरवादी आंदोलन से उभरे नायक-कथानक हिंदू पौराणिकता के प्रतिकूल हैं, परंतु वे समाजवादी, प्रजातंत्रवादी, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा इस युग के समांतर चलने वाली कथा-साहित्य की धारा से एकरूप हैं!

जब हमने सभी कुछ नकारा है, तो पूछा जा सकता है कि हमने स्वीकारा क्या है? इसका यही उत्तर दिया जा सकता है कि हमने सिर्फ मनुष्य, ज्ञान-विज्ञान और अपने समय को स्वीकारा है. आज का युग बड़ा ही विलक्षण है. इस युग का उदय होने के साथ ही अनेक संत, मसीहा, परमेश्वर मृत हो गये हैं. इस युग ने अनेक प्रथाओं, धारणाओं, परंपराओं, सत्ताओं को धूलि-ध्वस्त किया है. यह इस युग का वामत्व है. यह वामत्व और नवनिर्माणत्व हमने स्वीकारा है, जो कि 'समांतर' भी स्वीकारता है! इस स्वीकार से दलित साहित्य स्वतः ही युग-समांतर बन गया है. वह हमारे क्रांतिकारी युग की विशेषताओं का प्रतिबिंब बन गया है. वह विशेषता है—मनुष्य की शोषण-उत्पीड़न, दुख-दैन्य से मुक्ति! उसका स्वभाव-सिद्ध महात्म्य और विश्व-बंधुत्व!

□□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• जतीनदास

राकेश के पहले / राकेश के साथ
राकेश के बाद
यादों का एक लंबा सिलसिला

चंद सतरें और (

• अनीता औलक

पिछले अंकों में आपने पढ़ा है कि देश-विभाजन ने अनीता औलक के परिवार को भी विभाजित कर दिया था. घर जगह-जगह स्थापित हो रहा था और उखड़ भी रहा था. इस बीच राकेशजी से भी परिचय बढ़ रहा था. अनीताजी ने घर में कह दिया कि वह राकेशजी से शादी करना चाहती हैं. घर में हंगमा हो गया और कुछ फैसले किये गये. राजेशजी से उनका मिलना-जुलना बंद कर दिया गया लेकिन फिर भी कालेज के बहाने वे मिलते रहे. एक दिन उन्होंने चुपके से शादी की और बंबई चले आये. उन्हें फिर दिल्ली वापस जाना पड़ा. राकेशजी के मित्रों की महफिलें जुड़ती रहीं. और छोटे-मोटे झगडे भी होते रहे. अब आगे पढ़िए...

कितनी बातें सिर्फ यादें बन कर रह जाती हैं. और यादें अच्छी हों या बुरी, हर हालत में तकलीफ देती हैं.

मुझे याद है कि जब ओमप्रकाशजी ने अचानक राजकमल छोड़ दिया था तो राकेशजी कितने परेशान हो गये थे—आखिर कुछ तो सोचा-समझा होता, उन्होंने कहा था.—लेकिन आप कौन से फैसले जल्दबाजी में नहीं लेते. आखिर हैं तो वो भी आपके ही मित्र. उसके साथ ही कमलेश्वरजी ने भी **'नई कहानियां'** से इस्तीफा दे दिया था.

फिर जब एक दिन बहुत ही ठंडे दिमाग से राकेशजी ने अपना अंतिम फैसला कमलेश्वरजी और चौधरी भाई को सुना दिया कि अब वह राजेंद्र यादव से और नहीं निभा सकते, तो उसके तुरंत बाद उन्होंने यह बात राजेंद्र से जा कर कह भी दी थी.

कमलेश्वरजी का दिल्ली छोड़ कर बंबई चले जाना... उस दिन राकेशजी को लगा दिल्ली वीरान हो गयी है. शाम को टेप रिकार्ड निकाल हम दोनों बैठ गये थे और अवा-तवा बोलते रहे. बिलकुल वैसे का वैसे जो हम दोनों ने बोला था, बीज नाटक **'शायद'** ही है. उसमें जो देव है वह यथार्थ में कमलेश्वर है.

फिर चमन की मृत्यु. मदन ने टेलीफोन पर रात के ग्यारह बजे यह समाचार दिया था. गर्मियों के दिन थे. हम लोग चुपचाप बाहर आ कर वैसे-के-वैसे चारपाई पर लेट गये थे. किसीने कोई बात नहीं की थी. काफी देर के बाद राकेशजी ने आकाश की तरफ देखते हुए कहा था—इतने बड़े ब्रह्मांड में सैकड़ों नक्षत्रों के बीच आदमी का अस्तित्व सिर्फ एक छोटे से बिंदु के अतिरिक्त कुछ भी नहीं—और उस बिंदु का इतने बड़े ब्रह्मांड के बीच कुछ भी अस्तित्व नहीं.

फिर कमलेश्वर और राकेश जी ने जब अंतिम फैसला लिया था कि चौधरी भाई को अब 'अक्षर' कल से ही छोड़ देना चाहिए...

मुझे याद है जब भारत और पाकिस्तान की लड़ाई छिड़ी थी, मैं उन दिनों बंबई में थी. [...] और एयर रेड के दिनों [...] राकेशजी ने जिद करके मुझे [...] जहाज से दिल्ली बुलवा लिया. मेरे दिल्ली पहुंचते ही कैसे [...] मुझे सीने से चिपका लिया [...]

पहला बच्चा बंबई [...] होना चाहिए इसलिए मैं [...] महीने पहले ही बंबई चली [...] थी. इस बीच किसीने राकेशजी को फोन किया कि अनीता [...] हुआ बच्चा हुआ है. राकेशजी तड़प गये थे. उन्होंने शीला (संधू) को फोन किया कि किसी तरह से उनकी जल्दी [...] बंबई के लिए एयर बुकिंग करा[...] फिर टेलीफोन पर बात हुई [...] तसल्ली पा गये थे कि ऐसी [...] बात नहीं हुई—अभी तो [...] वरी में ही दिन बाकी हैं. राकेशजी जानते थे कि मुझे उनके [...] कितनी उत्सुकता थी.

बच्ची का समाचार [...] ही वह बंबई चले आये थे. [...] तब जच्चा के रूप में कितनी [...] आ रही थी. . . दिवाली की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी. जोर-जोर से पटाखे चल रहे थे. मानो हमारी बिटिया की आने की खुशी में लोग जशन मना रहे हों. रात भर भाभी के घर में ताश चलती रही. फिर सुबह जब सब सो गये तो राकेशजी अकेले हमसे मिलने अस्पताल आये. मैंने उन्हें देखकर धीरे से कहा था—राजे, मेरे बच्चा हो गया है.

—तुमने बहुत बड़ा काम किया है मैं देख रहा हूं, उन्होंने जोर से ठहाका लगाया था. . .मैंने यह तीन महीने पता है क्या कह-कह निकाले —बेबीज गोन टु मेक ए बेबी. बेबीज गोन टु मेक ए बेबी. नाउ लुक व्हाट ए बेबी. . .फिर कितनी देर तक वह बैठे बच्ची के हाथ-उंगलियों को देखते-सहलाते रहे थे. पहली बार उन्होंने कभी किसी बच्चे को इतने गौर और स्नेह से देखा था.

बच्ची के आने के बाद मानो हम दोनों ही जिम्मेदार व्यक्ति बन गये थे. मैं अपनी घर-गृहस्थी में जुट गयी थी और राकेशजी अपने काम में. पहली बार उन्होंने एक सीरियलाइजेशन पूरा किया. **'साप्ताहिक हिंदुस्तान'** में **'न आने वाला कल'** फिर जम कर **'आधे अधूरे'** पर काम किया. लगभग तीन महीने तक वह नजरबंद रहे. पुरवा रोड़ू बच्ची थी, इसलिए मैंने इस दौरान लगभग वर्ष भर उसे गोदियों में ही बैठ कर पाला. वहीं गाहे-बगाहे चंद मिनटों के लिए राकेशजी हमें मिलने आ जाते थ. **'आधे अधूरे'** पूरा हुआ तो पुरवा एक वर्ष की हो चुकी थी. भाभी के अनुरोध पर हम उसका पहला जन्मदिन बंबई ही मनाने गये थे. उन दिनों कमलेश्वरजी एक लंबी बीमारी के बाद स्वस्थ हुए थे. कितने मधुर थे वह दिन.

उसके बाद राकेशजी को नेहरू फेलोशिप मिला—साथ ही एक फेलो घर भी आ गया था. हमारा दूसरा बच्चा अर्थात् हमारा बेटा—शालीन. राकेशजी ने जितनी जल्दी बिटिया का नाम रखा था, उतनी ही देर उन्हें बेटे का नाम रखने में लगी. उनका कहना था कि यह मेरी सरासर गद्दारी है कि मैंने बेटा पैदा किया. लड़कियों के नामों का उनके पास ढेर था. लेकिन लड़के का नाम सोचना पड़ेगा.

राकेशजी ने जा कर काम किया **—मैड डिलाइट** पर. एक जबरदस्त एक्स्पैरीमेंट शिमला में हुआ जो अपने तरीके की नयी ही चीज थी. फिर एफ. एफ. सी. की डायरेक्टरशिप सिर में मढ़ गयी थी. उसपर 'ड्रामेटिक वर्ड' पर काम. इस बीच जो थियेटर मूवमेंट उन्होंने शुरू कर दिया था वो अलग. इसी बीच योरप के ट्रिप. **'पैर तले की जमीन'** से पहले उन्होंने किसी न किसी तरह **'अंतराल'** पूरा करके शीला जी को दे दिया था. **'पैर तले की जमीन'** के पश्चात **'चाणक्य'** के लिए सामग्री भी एकत्रित करते जा रहे थे. कि इस बीच बहुत कुछ हो गया.

जून '७२ के अंत में हम अभी मसूरी से लौट कर ही आये थे कि राजेंद्र पॉल ने बताया कि वह और मेरी बहन बबू विवाह करना चाहते हैं. राकेशजी चकित रह गये थे क्योंकि बबू उसी वर्ष दिसंबर में केवल १६ वर्ष की होने वाली थी. पॉल हमारे बहुत निकट का मित्र था जो कि सप्ताह में चार शामें नितांत हम लोगों के बीच काटने वाला एक अभिन्न मित्र था और दूसरी तरफ बबू मेरी अपनी ही बहन थी इसलिए राकेश जी ने सोचा कि शायद इस गुत्थी को सरलता से सुलझा लेंगे. लेकिन वास्तव में वह परिस्थिति इतनी विकट निकली कि बस पूछिए नहीं. इतनी कि राकेशजी को पॉल से यह भी सुनना पड़ा' आइ कैन नॉट गिव अप दिस रिलेशनशिप ईविन एट द कॉस्ट ऑफ ए डेलिकेट फ्रेंडशिप! राकेशजी अवाक रह गय थे.

राकेशजी पुरवा और अनीता के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूंजी लगाने का सुरक्षित साधन जिसमें टैक्सों की भी बचत होती है।

भारत सरकार ने 7 जनवरी, 1975 को एक विशेष अध्यादेश जारी किया। इसके अधीन **केवल यूनिटों** से प्राप्त होने वाली 2,000 रु० तक की आमदनी पर कोई आयकर नहीं लगेगा। यह छूट 3,000 रु० की उस छूट के अलावा है जो यूनिटों और अन्य निर्दिष्ट निवेशों पर पहले ही मिल रही है।

इस नई छूट का सीधा सा अर्थ यह है कि आप 23,500 रु० तक की यूनिटें खरीद कर उनसे निश्चित और नियमित आय प्राप्त कर सकते हैं। इस आमदनी पर आपको कोई आयकर नहीं देना होगा।

यह रियायत कर निर्धारण वर्ष 75-76 के लिए है अर्थात 1.4.74 से 31.3.75 की अवधि के लिए दाखिल किए जाने वाले 'टैक्स रिटर्न' पर मिलेगी।

यूनिटें रुपया लगाने का सर्वोत्तम और सुरक्षित साधन हैं। इनसे नियमित लाभ होता है। आप किसी भी समय अपनी यूनिटें यूनिट ट्रस्ट आफ इंडिया को बेच सकते हैं।

UNIT TRUST OF INDIA

सुविनियोगात् समृद्धिः

देरी न कीजिए फौरन ही यूनिटें खरीदिए

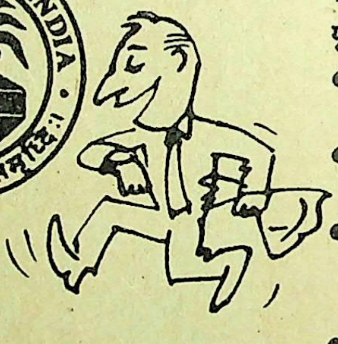

आवेदन फार्म इन जगहों पर उपलब्ध

यूनिट ट्रस्ट आफ इंडिया

- 45, वीर नारिमैन रोड, बम्बई 400023
- 8, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता 700001
- रिजर्व बैंक बिल्डिंग, फोर्ट ग्लेसिस, साउथ बीच रोड, मद्रास 600001
- रिजर्व बैंक बिल्डिंग, 6, पार्लियामेन्ट स्ट्रीट, नई दिल्ली 110001

davp 74/

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मां अब राकेशजी को रोज फोन करने लगीं तो वह यह नहीं समझ पाये कि मां की सुनें, पाल की सुनें या फिर अपनी सुनें. नतीजा, राकेशजी ने दोनों की सगाई कर दी, लेकिन इतना मान कर कि पाल अब दोस्त नहीं रहा.

कितनी-कितनी बातें राकेशजी के मन में घर कर चुकी थीं. पहली बार जब बबू ने स्पष्ट न कह कर राकेशजी से इतना ही पूछा था कि अपने से काफी बड़ी उमर वाले व्यक्ति से विवाह करने पर उनकी प्रतिक्रिया क्या है तो राकेशजी पूरी बात न जान कर भी यही बोले थे कि 'ठीक नहीं है.' आगे उन्होंने यह भी कहा था कि तुम कहोगी कि जब मैंने तुम्हारी बहन को चुना तो फिर कैसे गलत है, तो उसका उत्तर यही है कि वह भी गलत था. इसलिए कि तुम्हारी बहन के साथ मैंने न्याय नहीं किया क्योंकि वो अपनी उमर नहीं जी सकी. सारी जिंदगी वो सिर्फ मेरे कद तक आने की कोशिश करती रही है.

लेकिन उसके बाद भी बबू का यह कहना कि लोग खुद तो अपनी इच्छानुसार जी लेते हैं लेकिन दूसरों के वक्त पता नहीं क्यों न्याय-अन्याय समझाने लगते हैं. फिर मेरी एक बात पर पाल ने कहा था. आप चाहती हैं शादी न हो. आदि आदि. राकेशजी कुछ नहीं बोल सके. उसके तुरंत बाद याने १६ अगस्त को अम्मा का देहांत हो गया. पाल उस समय घर पर ही था. फिर पाल के विदेश जाने से पहले राकेशजी ने अपनी मां के देहांत के बावजूद उन दोनों की सगाई की पार्टी भी दी और पाल विदेश चला गया.

अम्मां के देहांत के बाद राकेशजी बंबई एफ. एफ. सी. की मीटिंग के लिए गये—यों मकसद इस्तीफा देने का ज्यादा था. बंबई भाई-भाभी से मिले और चहाते थे कि मां के लिए फूट-फूट कर रोयें लेकिन उसकी नौबत नहीं आयी. भाभी को मुझे ले कर कुछ मिसअंडरस्टैंडिंग-सी हो गयी थी जिसे सुन कर राकेशजी बोरीवली से आये. लौट कर वह फूटफूट कर रोये. मैंने उनको तसल्ली दी कि आपने भाभी की बात को इतना सीरियसली क्यों लिया. लेकिन वह नहीं माने. उन्होंने भाभी को दो लाइन का खत लिखा, 'भाभी, मैं आपकी इज्जत करता हूं और करता रहूंगा, लेकिन एक बात आपको बताना चाहता हूं कि मैं अनीता की भी बहुत इज्जत करता हूं.'

निश्चय ही मैं राकेशजी को वो खत लिखने से नहीं रोक सकी लेकिन इतना कर सकी थी की भाभी को एक खत अलग से लिख दिया—भाभी आप कब से मुझे इतना बड़ा समझने लगी हैं कि मुझ में पूर्णता ढूंढ रही हैं. मैं हमेशा से छोटी हूं और मुझे छोटा बने रहने में बहुत आनंद मिलता है. आदि आदि.

पत्र चूंकि पहली बार मुझसे ठीक से नहीं लिखा गया, इस से फिर फेयर करके मैंने पहला लिखा पत्र टोकरी में फेंक दिया. अंदाजा लगाइए कि राकेशजी के हाथ वह पत्र पड़ गया जिसे ले लेकर वह हरेक के घर घूमे. ओमप्रकाश जी, जवाहर भाई, कमलेश्वर जी. . . .सबसे यही कहते रहे,देखो अनीता बड़ी हो गयी है—मुझे उसपर नाज है. यही बात करते वह अंतिम बार ओमप्रकाश जी के घर पर गये थे और जब लौटने लगे तो सिढ़ियां से फिर ऊपर चढ़ आये. ओमप्रकाशजी और भाभी ने सोचा कि शायद कोई बात कहने वापस आये हैं तो अचानक होश में आ कर बोले—अरे मैंने तो समझा कि मैं घर से उतर रहा हूं और कोई बात याद आयी थी जिसे अनीता से कहना चाहता था.

घर आये तो मुझसे लिपट गये—अन्ना तू मुझे छोड़ कर तो नहीं जायेगी. . . और वह फूट-फूट कर रो पड़े थे.

अगले अंक में :

एक घर जो बड़ी मुश्किल से बना था, हमेशा के लिए छूट गया. . .

घटना-कथाएं

ट्रेड यूनियनों की नैतिकता

बंबई में १८५४ में पहली कपड़ा मिल स्थापित हुई थी. तब से आज तक, एक शताब्दी से अधिक समय हो गया लेकिन किसी कपड़ा मिल में हरिजनों को बुनाई विभाग में नहीं रखा जाता.

सवर्ण सारे विभागों में हरिजनों को सहन कर सकते हैं, उनके साथ चाय पी सकते हैं, नाश्ता कर सकते हैं, खाना खा सकते हैं लेकिन उनको बुनाई करते नहीं देख सकते.

वजह? वजह यह कि करघे पर जब धागा टूट जाता है तो उसे तुरंत थूक से जोड़ना पड़ता है. ऐसा लगातार होता रहता ह जिसके कारण ढरकी को होठों से लगातार छूना पड़ता है. अगर अगली पारी में उसी मशीन पर किसी सवर्ण मजदूर की ड्यूटी हो तो वह उस पर काम करने से मना नहीं कर सकता.

हजारों मुद्दों पर रोज लड़ने वाली ट्रेड यूनियनों ने भी कभी इस टेढ़े सवाल को नहीं उठाया. □

बच्चों को मारो

महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के आदिवासियों के सौ झोंपड़े, किसी और ने नहीं, खुद सरकार के वन अधिकारियों ने जला दिये.झोंपड़े ही नहीं जलाये उन्हें ट्रक में ठूंस कर आंध्र प्रदेश की सीमा में आवारा कुत्तों की तरह छोड़ दिया. इस सारी प्रक्रिया में एक स्त्री और तीन नवजात शिशुओं की जान ले ली गयी. स्त्रियों को बेरहमी से मारा गया. इनमें गर्भवती स्त्रियां भी थीं. एक स्त्री को इस मारपीट के दौरान ही बच्चा पैदा हो गया, जो कुछ ही देर में मर गया. एक और बच्चा पानी-पानी चिल्लाता मर गया. एक बच्चे को अफसर ने कुचल कर मार डाला. □

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई

इब्राहीम शरीफ

स्वदेश दीपक

उत्तर प्रदेश सरकार ने १९७४ के लिए हिंदी के तीन कहानी-संग्रहों को पुरस्कृत किया है. वे संग्रह हैं—इब्राहीम शरीफ का 'कई सूरजों के बीच', स्वदेश दीपक का 'अश्वारोही' और दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ का 'सत्तारे मौसी'

इब्राहीम शरीफ और स्वदेश दीपक 'सारिका-पाठक-परिवार' के जाने-माने और प्रिय लेखक हैं. स्वदेश दीपक के उपन्यास 'नंबर ५७ स्क्वाड्रन' को पंजाब सरकार ने भी पुरस्कृत किया है.

दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ मूलतः नेपाली के लेखक हैं 'सत्तारे मौसी' उनकी हिंदी कहानियां का संग्रह है. इन तीनों कथाकारों को सारिका परिवार की ओर से बधाई. □□□

...ाई

अभी पिछले दिनों ही हिंदी के दो जनवादी चिंतक साहित्यकार हमारे बीच नहीं रहे. इनमें से एक ...ान्यजन के कवि श्री सुदामा पांडे धूमिल और ...हूं समाजवादी लेखक और समीक्षक श्री ओम-...श दीपक.

धूमिल ने आम आदमी के संघर्ष में बराबर का ...ा लिया है और उसकी तकलीफों को अपनी कवि-...ों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है. उन्होंने हमेशा ...ी और जिंदगी के लिए लड़ रहे इनसानों की भीड़ ...यं को खड़ा पाया है.

ओम प्रकाश दीपक का व्यक्तित्व समाजवादी ...ोलन, लेखन और चिंतन के प्रति समर्पित ...है.

धूमिल

ओमप्रकाश दीपक

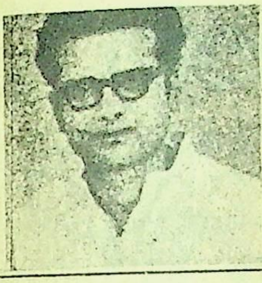

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेट धुलाई की टिकिया
साबुनों के मुक़ाबले १½ गुनी ज़्यादा शक्तिशाली
—खारे पानी में भी.

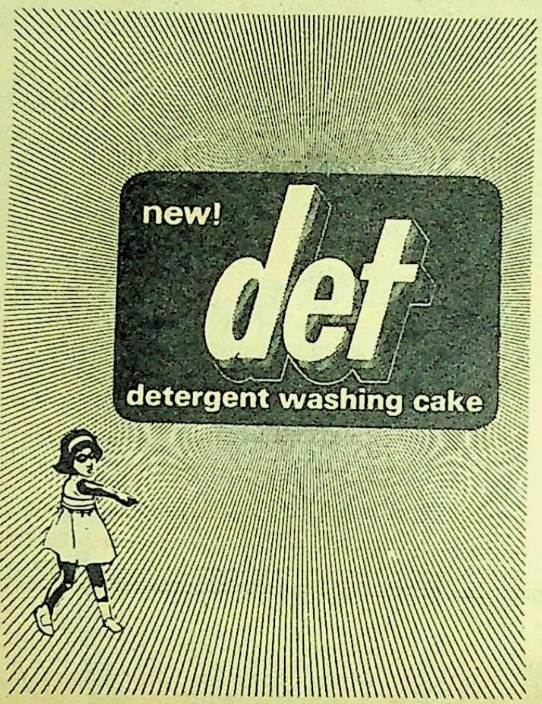

डेट धुलाई का पाउडर
कई साइज़ के पैक में मिलता है. कपड़ों को
इसके घोल में भिगोइये और धो लीजिये.
हाथों को मुलायम भी रखता है.

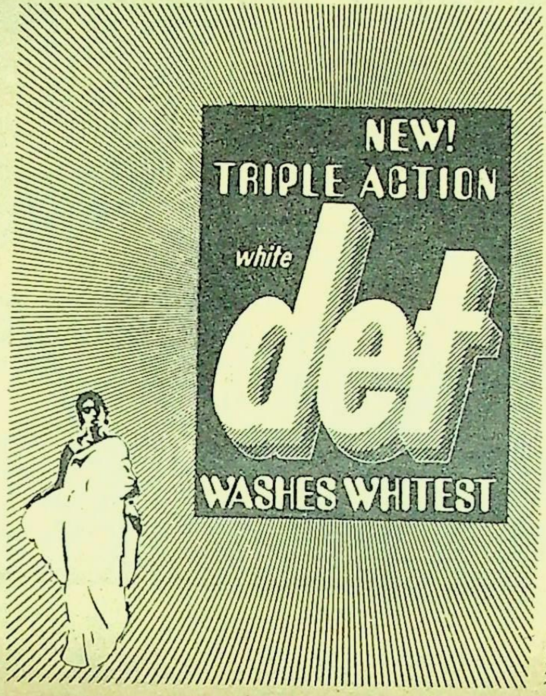

एन-डेट
दाग़-धब्बे नाशक एनज़ाइमयुक्त
धुलाई का पाउडर, सक्रिय लेकिन हानिरहित.

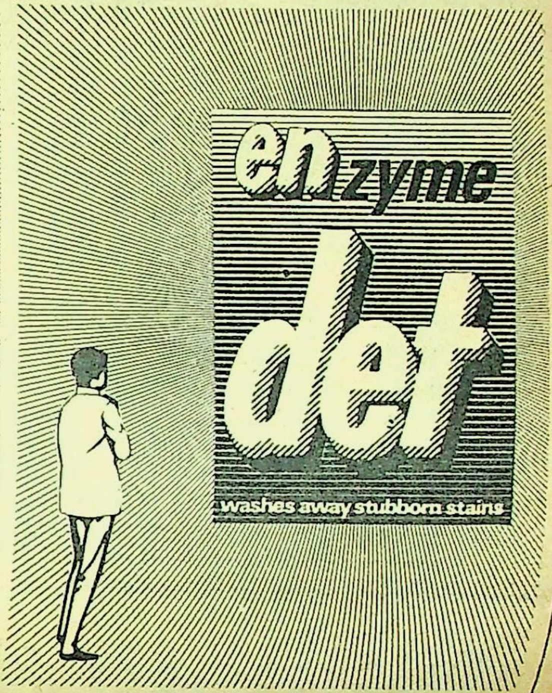

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

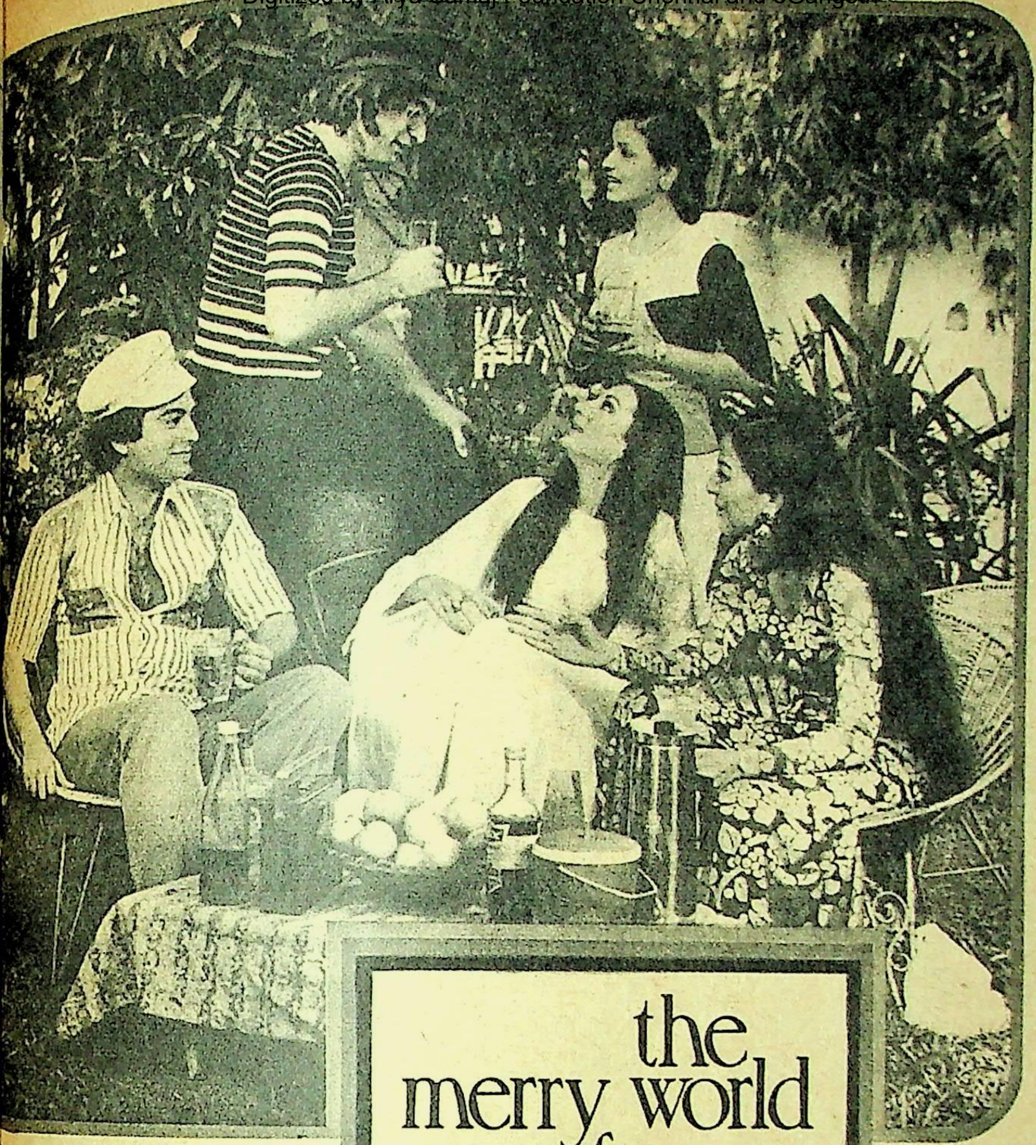

the merry world of
Shreelon & Shreester

the yarns that make beautiful fabrics

नायलॉन यार्न-- जानकार
ओं की मनमोहक साड़ियों और मनोरम ड्रेस मटीरियल्स
ों के कपड़े) बनानेवाला यार्न (धागा)
पोलिएस्टर यार्न– तरक्क़ीपसन्द पुरुषों की
कतम सूटिंग और शर्टिंग बनानेवाला यार्न (धागा)
जब हो श्रीलॉन और श्रीएस्टर का मिलन,
जाता है उमंगभरी खुशियों का सावन!

ाले: श्री सिन्थेटिक्स लि., नौलखा, उज्जैन
ऑफ़िस: श्री निवास हाउस, एच्. एम्. सोमानी मार्ग, बम्बई-४००००१

JAISONS 427 Delhi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर मिलन का सुन्दर साधन

सरसिल्क। ऐसे भड़कते, फड़कते रंग कि मन मचल उठे। ऐसे मनमोहक, हल्के रंग कि मन खिल उठे। सादा, चारख़ाना और धारीदार कपड़े।

सरसिल्क सूटिंग और शर्टिंग में आपको वे सभी ख़ूबियाँ मिलती हैं जो आप एक बढ़िया कपड़े में चाहते हैं। चलने में टिकाऊ। अच्छी पसन्द के अनुकूल। देख-भाल में आसान। और बिलकुल ठीक कीमत।

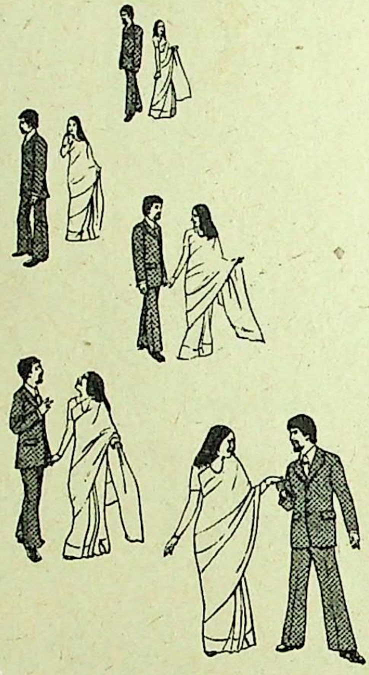

सरसिल्क
पॉलिएस्टर सूटिंग और शर्टिंग

विक्रेता एजेंट : बम्बई तुलसीदास कनोरिया एण्ड कम्पनी, पहली मंज़िल, जाम्बुलवाडी (पूर्व), कालबादेवी रोड, बम्बई। **मध्य प्रदेश, विदर्भ और** ... रथी एण्ड कम्पनी, १७, पाप्युलर होलसेल क्लाथमार्केट; गांधी बाग़, नागपुर। **दिल्ली और हरियाणा :** बाम्बे ट्रेडिंग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, ... चाँदनी चौक, दिल्ली। **राजस्थान :** हरीश एण्ड कम्पनी, मेहता मार्केट; जोधपुर। **पंजाब; हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर:** ओबेरॉय ... कारपोरेशन, कटरा आहलुवालिया, अमृतसर। **उत्तर प्रदेश :** केजरीवाल ट्रेडिंग कारपोरेशन, विशंभर हाउस, २५/२६ ए, कराची ख़ाना, कानपुर। **पश्चिम ...** अश्विनी कुमार एण्ड कम्पनी, ४, इंडियन ऐक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता। **बिहार :** ओरिएण्टल ऐन्टरप्राइज़िज़ एण्ड एजन्सीज़, इंडिया मशीनरी बिल्डिंग (...), ऐग्ज़ीबिशन रोड, पटना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाय गजब!

इस मशहूर सितारे की नयी चमक !

माधुरी

बड़ा मशहूर नाम है इस सितारे का
जी हाँ, जो चमक इस 'सितारे' में है उसकी बात ही और है !

माधुरी, सिने संसार की सबसे सुरुचिपूर्ण और सुलझे विचारों को सुलझे हुए ढंग से पेश करने वाली साहित्यिक पत्रिका होने के साथ-साथ सिने संसार का दर्पण और सितारों और दर्शकों के लिए मार्गदर्शक भी है. माधुरी में सितारों की जिंदगी के दिलचस्प पहलू, संगीत, फिल्म लेखन, संपादन, संकलन क्या नहीं है ।

★ आर्ट पेपर पर कलात्मक मुखपृष्ठ ★ अधिक सामग्री

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

फिल्म पत्रिकाओं की रानी **माधुरी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेट कोलमेन एंड कंपनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए श्रीकृष्ण गोविंद जोशी द्वारा टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, बंबई में मुद्रित व प्रकाशित. पो बाक्स २१३, बंबई–१; दिल्ली आफिस : ७ बहादुरशाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली–१; कलकत्ता आफिस : १३ व और १३/२ गवर्नमेंट [illegible] वेम्बले, मिडिलसेक्स, यू. के.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जी में आता है कभी कभी
क़ालीन हो इक हरियाली का-
शबनम से धुला लहका लहका
श्याम घटाएं छाई हों
आलम हो बस बहका बहका-
और हम-
दुनिया के रंजोफ़िक्र से दूर
कपड़ों की क़ैद से आज़ाद
चले जाएं बहुत दूर जहाँ
मिलते हैं ज़मीनो आसमाँ
रसभरी पुरवाइयाँ सनकती हुई
खेलती हुई
बदन को छेड़ती हुई
लिपट जाएँ हमसे
उनके ख़यालों की तरह!

नवसारी शर्टिंग्स
अनोखा एहसास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar